Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त साहित्य

जीवन ज्वार

गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167911

श्री गुरुदत्त के कुछ चुने हुए उपन्यास

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दासता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के आधार पर

कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं, (राम कथा पर आधारित) अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा, (महाभारत पर) परित्राणाय साधूनाम्।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

विक्रमादित्य, पुण्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबरकालीन), खण्डहर बोल रहे हैं (औरंगज़ेब के काल पर)

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुण्ठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible]
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Religious
All Yog & Organic Products
(M) [illegible]
Web.: [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन ज्वार

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Religious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821469
Web: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन चर्या
में मानव को अन्य
इतर प्राणियों से भिन्नता
प्रदान करने वाले संस्कारों
के महत्व को स्पष्ट करने
वाली शिक्षाप्रद, रोचक
व मनोरंजक
कथाकृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन ज्वार

Central Library
167911
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167911

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
O 89.9143
GUR-J

❑ मूल्य : 200.00 रुपये

❑ प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 डी.बी. गुप्ता मार्ग,
(समीप प्रह्लाद मार्केट), करोल बाग, नई दिल्ली-5
फोन : 51545969
टैली/फैक्स : 23553624
E-mail : indiabooks@rediffmail.com

❑ संस्करण : 2004

❑ मुद्रक : विनायक प्रिन्टोग्राफर, शाहदरा, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

यह बायौलोजी (प्राणी-शास्त्र) का सिद्धान्त है कि प्राणी पैदा होता है, वृद्धि पाता है, सन्तान उत्पन्न करता है, बूढ़ा होता है और निकम्मा हो इस संसार को छोड़ जाता है। यह सिद्धान्त सब जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों में समान है। इस पर भी मनुष्य इतर जीव-जन्तुओं और वनस्पति-जगत से भिन्न है। क्यों और किस बात में? यही इस पुस्तक का विषय है।

समुद्र में ज्वार उठता है और कालान्तर में भाटा आता है। इस पर भी यह सागर के वश की बात नहीं है कि वह उठते ज्वार का विरोध कर सके अथवा भाटे में ज्वार ला सके।

कामान्ध प्राणी काम के आवेग में बह जाता है। इस काम के ज्वार का विरोध करना प्रायः असम्भव होता है। हां, मनुष्य में इस ज्वार के विपरीत जाने की इच्छा और सामर्थ्य होती है। दुर्बल प्राणी ज्वार में बह जाते हैं और कहीं-के-कहीं ले जाकर फेंक दिये जाते हैं। मनुष्य नौका में बैठा ज्वार का विरोध करता हुआ जा सकता है। अपने मार्ग पर जाने में बाधा तो अनुभव करता है, परन्तु आत्म-विश्वास रखने वाला मानव ज्वार का विरोध करने की क्षमता रखता है।

कैसे?

इसे भारतीय शास्त्र में, मनुष्य में एक विकसित मन के कारण माना है। प्राणी में पंचभौतिक शरीर के अतिरिक्त दस इन्द्रियां और ग्यारहवां मन विद्यमान होते हैं। इन्द्रियां विषयों को ग्रहण करती हैं, परन्तु मन इन इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखता है।

उपनिषद् में प्राणी को एक रथ के तुल्य माना है। इस रथ की पांच ज्ञान-इन्द्रियां पांच घोड़ों के तुल्य मानी हैं। मन रथ पर सारथि का कार्य करता है और आत्मा रथ का स्वामी, मन इन्द्रियों से कार्य कराता है।

रथ का सारथि जितना योग्य होता है, रथ उतना ही ठीक मार्ग पर ठीक ढंग से चलेगा। जहां सारथि दुर्बल होता है, वहां रथ के घोड़े अपनी वासनाओं के अधीन रथ को कुपथ पर ले जाते हैं। यही अवस्था प्राणियों की है।

इतर जीव-जन्तुओं में मन दुर्बल, अविकसित होता है। उन्नत प्राणियों में मन अधिक और अधिक शक्तिशाली होता है। इस कारण उन्नत प्राणी, प्राणी-शास्त्र के उस सिद्धान्त का, जो आरम्भ में वर्णन किया है, समर्थन नहीं करते। जीवन का ज्वार अर्थात् वासनाओं का वेग आता है और उस वेग में, जहां इतर प्राणी बह जाते हैं, वहां मानव-मन इन्द्रियों पर नियन्त्रण रख, उस वेग का विरोध कर सकता है।

सब मानवों के भी मन एकसमान सबल नहीं होते। किसी में तो इन्द्रियां दुर्बल होती हैं और वे वासना के भी आवेग के प्रभाव को अनुभव नहीं कर सकतीं और मन सहज ही उनको आवेग से बचा लेता है और कहीं मन दुर्बल होता है और इन्द्रियों पर नियन्त्रण नहीं रख सकता। यही कारण है कि मनुष्य मनुष्य में, समान परिस्थितियों में भी, भिन्न-भिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार दृष्टिगोचर होता है। सबल इन्द्रियों पर सबल मन ही नियन्त्रण रख सकता है।

मन को सबल बनाने के लिए उचित संस्कार ही योग्य होते हैं। संस्कार पूर्व जन्म के कर्मों के फल के अथवा वर्तमान जन्म में शिक्षा-दीक्षा, परम्पराओं तथा परिस्थितियों के अधीन होते हैं।

इस कारण भारतीय जीवन-चर्या में संस्कारों की बहुत महिमा है। गर्भाधान के समय से लेकर मरणापर्यन्त मानव-जीवन को श्रेष्ठ संस्कारों के अधीन रखने का यत्न किया गया है।

ये संस्कार ही मानव जीवन की इतर प्राणियों के जीवन से भिन्नता प्रदान करते हैं। यूं तो कुत्ते-बिल्लियों को भी सिधाया जाता है। उनके मन पर भी संस्कार डालकर, उनसे अपनी प्रकृति के विपरीत कार्य कराने का यत्न किया जाता है, परन्तु इसमें सफलता उतनी नहीं मिलती, जितनी मनुष्य की अवस्था में मिलती है। प्राणी-शास्त्र का सिद्धान्त, कि संतान उत्पन्न कर प्राणी निकम्मा हो जाता है और प्रकृति उसको मौत का ग्रास बना देती है, मानव के विषय में ठीक नहीं बैठता। मानव-मन युवावस्था से ऊपर निकलकर अधिक और अधिक उपयोगी होता जाता है।

भारतीय समाज में तो संन्यासी, जो सन्तानोत्पत्ति की आयु से ऊपर निकल गया होता है, मानव-कल्याण में अधिक उपयोगी कार्य करने के योग्य माना जाता है। संन्यासी की महिमा अन्य तीनों आश्रमवासियों से अधिक होती है। यह इस कारण कि मनुष्य में एक अति उन्नत मन होता है, जो संस्कारों को संचित करने की अपार तथा अद्भुत शक्ति रखता है। ज्यूं-ज्यूं संस्कार संचित होते जाते हैं, मनुष्य अधिक और अधिक उपयोगी बनता जाता है।

यह भाव हैं, जिनको इस 'जीवन-ज्वार' उपन्यास में, व्यक्त करने का यत्न किया गया है।

शेष तो उपन्यास है। पात्र, स्थान इत्यादि काल्पनिक ही हैं।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-ज्वार

प्रथम परिच्छेद

: 1 :

लाहौर चर्च रोड पर एक व्यक्ति सूट-बूट पहने, बाईसिकल भगाता चला जा रहा था। वह चर्च रोड से माल रोड, माल रोड से अनारकली, और म्यूजियम रोड से होता हुआ गवर्नमेन्ट कॉलेज जा पहुँचा। कॉलेज में विद्यार्थी बाईसिकलों पर, पैदल, कोई-कोई मोटरों में, आ रहे थे। प्रायः विद्यार्थी जब उस बाईसिकल पर जाते हुए व्यक्ति से चार आँख होते, तो कोई हाथ जोड़, कोई दाहिना हाथ उठा और कोई-कोई केवल मुख से "गुड मॉर्निंग सर!" बोल अभिवादन करते। वह व्यक्ति सबको, एक हाथ उठा, उनके अभिवादन का उत्तर देता जाता था।

बाईसिकल पर जा रहा व्यक्ति पद्मदेव था। यह कॉलेज में इतिहास का प्रोफेसर था। इसके अतिरिक्त पद्मदेव यूनिवर्सिटी की हिस्टोरिकल सोसायटी का अध्यक्ष, इण्टर कॉलिजिएट ड्रामेटिक क्लब का प्रधान, विद्यार्थी सहायक समिति का प्रधान और कॉलेज की स्पोर्ट्स का प्रबन्धक था।

यह माना जाता था कि प्रोफेसर पद्मदेव कॉलेज के प्रिन्सिपल का दाहिना हाथ है। वह निर्धन, साधन-विहिन विद्यार्थियों का स्वःनिर्मित संरक्षक माना जाता था। वह विद्यार्थियों के प्रत्येक कार्य में सलाहकार होता था।

इसके अतिरिक्त सार्वजनिक वक्ता, समाचार-पत्रों में लेखक और नगर के सार्वजनिक कार्यों में एक जानकार व्यक्ति माना जाता था। इन सब कार्यों में भाग लेता हुआ पद्मदेव 'उच्चकोटि के इतिहास का जानकार' के नाम से प्रसिद्ध था।

कॉलेज के विद्यार्थियों में वह इतना सर्वप्रिय था कि प्रायः प्रोफेसर उससे ईर्ष्या करने लगे थे। उसको कॉलेज में नौकर हुए पांच वर्ष ही हुए थे कि वहाँ की हलचलों में जीवनदाता समझा जाने लगा था। इस सब पर भी विद्यार्थी उसको अपने शिक्षण-कार्य के लिए सदैव तैयार होकर आया पाते थे। किसी भी विद्यार्थी ने कोई भी प्रश्न पूछा कि वह उसके उत्तर के लिए सदा तत्पर रहता था। केवल इतना ही नहीं, जब भी कोई उस द्वारा उपस्थित घटना का प्रमाण माँगता तो वह पुस्तक, प्रायः पृष्ठ और प्रसंग तक बताने के लिए तैयार रहता था।

सबसे विशेष बात उसकी उन घटनाओं की विवेचना होती थी। उस विवेचना पर अन्य विवेचना पर अन्य विशेषज्ञ हँसा करते थे, परन्तु उसके सामने तर्क करते समय झुक जाते थे। इससे ईर्ष्याग्नि पर घृत पड़ जाता था।

पद्मदेव बाईसिकल स्टैण्ड पर पहुँचा, कैरियर पर रखी नोट-बुक ले, बाईसिकल वहाँ खड़ी कर ताला लगा, स्टाफ रूम में चला गया। उस समय वहाँ एक अन्य प्रोफेसर बैठा सिगरेट पी रहा था। वह पद्मदेव को आया देख, मुस्कराकर उसका अभिवादन कर बोला, "पद्मजी! कल से यहाँ प्रचार हो रहा है कि आपको कॉलेज की सेवाओं से मुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किया जा रहा है।"

"और वह क्यों? इस विषय में भी तो कुछ चर्चा होगी।"

"प्रोफेसर ढींगरा कह रहे थे कि प्रिन्सिपल साहब के पास आज्ञा आ चुकी है, परन्तु वे आज्ञा आप तक पहुँचाने में संकोच अनुभव कर रहे हैं।"

"और उन्होंने ढींगरा साहब को बताने में संकोच अनुभव नहीं किया?"

"वह देखो, ढींगरा साहब स्वयं आ गये हैं। क्यों ढींगरा! कल वाली बात में तथ्य क्या है?"

ढींगरा ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर प्रश्नकर्त्ता की ओर देखते हुए कहा, "मिर्जा, तुम्हारे पेट में बात पचती नहीं। मैंने तो अपना अनुमान बताया था, और तुम उसको तथ्य मानकर उगलने लगे।"

पद्मदेव ने हँसते हुए कहा, "मिर्जा साहब की यह 'विशफुल थिंकिंग' (इच्छानुकूल विचार) की सूचक है। देखिए मिर्जा साहब! हम हिन्दू हैं। पूर्वजन्म के कर्मफल को भाग्य का नाम देते हैं और भाग्य को अटल मानते हैं। इससे हम भविष्य के विषय में चिन्ता नहीं करते हुए वर्तमान में विचरते हैं।"

इस पर ढींगरा ने कह दिया, "पद्मदेव! यह तुम्हारा हिन्दूपन, भाग्य, कर्म इत्यादि की मीमांसा ही है, जो पंजाब सरकार को अरुचिकर प्रतीत हो रही है।"

"मुझको इसका भारी शोक है। मैं प्रोफेसर इसलिए नियुक्त नहीं हुआ कि मैं हिन्दू बनकर रहूँगा। अथवा कर्मफल मीमांसा की निन्दा किया करूंगा। मैं इतिहास पढ़ाने के लिए नियुक्त हुआ हूँ और वह मैं पढ़ा रहा हूँ। अपना कर्त्तव्यपालन करता हुआ, मैं अपने अथवा किसी के भविष्य की चिन्ता नहीं करता।"

ढींगरा मुस्कराकर चुप कर रहा। मिर्जा मुहम्मद बशीर अहमद उठकर 'स्टाफ-रूम' से बाहर चला गया। पद्मदेव ने, अपनी नोट-बुक खोल, उसमें से पढ़ना आरम्भ कर दिया। ढींगरा सामने कुर्सी पर बैठा कुछ देर तक पद्मदेव का गम्भीर मुख देखता रहा। तत्पश्चात् वह भी उठकर बाहर निकल गया।

कॉलेज की घण्टी बजी और पद्मदेव नोट-बुक बंद कर, अपनी श्रेणी में पढ़ाने चला गया। मिर्जा 'पर्शियन' पढ़ाता था। वह भी अपनी श्रेणी को पढ़ाने चला गया था। ढींगरा इस पीरियड में खाली था। वह 'स्टाफ-रूम' में से उठकर बाहर पेड़ के नीचे आ खड़ा हुआ था। वह पद्मदेव के साथ उसके कॉलेज से निकाले जाने के विषय पर बात करना नहीं चाहता था। पद्मदेव को मिर्जा साहब की यह सूचना सुनाने पर भी; निश्चिन्तता से बैठे देख, विस्मित-सा वह उसका मुख देखता रहा था।

ढींगरा को बाहर खड़ा देख एक विद्यार्थी सामने आया और 'गुड मॉर्निंग'कर पूछने लगा, "सर! यह हमारे इतिहास के प्रोफेसर के विषय में क्या बात फैल रही है?"

"क्या फैल रही है?"

"यही कि वे कॉलेज से जा रहे हैं।"

"प्रो० पद्मदेव से ही पूछना ठीक रहेगा। मैं कुछ नहीं जानता।"

"मिर्जा साहब प्रोफेसर अन्सारी से कह रहे थे कि आप ही यह बात बता रहे थे। हम विद्यार्थी इससे चिन्ता अनुभव कर रहे हैं।"

"क्यों? तुम लोग क्यों चिन्ता अनुभव कर रहे हो? तुम तो इतिहास के विद्यार्थी भी नहीं।"

"जी, मैं उनकी कृपा से चालीस रुपये मासिक का वजीफा पा रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

‘‘वे अपनी जेब से देते हैं क्या?’’

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

‘‘वे विद्यार्थी सहायक समिति के प्रधान हैं। इस समिति के कोष को वे ही एकत्रित कर रहे हैं।’’

‘‘यह बात तो ठीक नहीं। मैं समझता हूँ कि इस समिति का जो भी प्रधान होगा, वह धन का प्रबन्ध करने लगेगा।’’

एन०सी० ढींगरा ने कह तो दिया और उस विद्यार्थी के प्रश्न का उत्तर दिये बिना उसको टाल भी दिया, परन्तु उसको मिर्जा पर बहुत क्रोध चढ़ आया। वह एक ऐसी बात, जो अभी घोषित नहीं हुई थी, ढींगरा का नाम ले-लेकर प्रचारित कर रहा था।

बात ठीक थी। ढींगरा को यह सूचना श्रीमती चोपड़ा से प्राप्त हुई थी और श्रीमती चोपड़ा ढींगरा की सहेली थी। चोपड़ा कॉलेज का प्रिन्सिपल था।

प्रिसिन्पल की पत्नी नसीम और ढींगरा की पत्नी सुरैया इसलामिया कॉलेज की ग्रैजुएट थीं और कट्टर मुसलमानिन थीं। चोपड़ा और ढींगरा हिन्दू परिवारोत्पन्न थे। पत्नियों की घनिष्ठता के कारण ढींगरा भी प्रिन्सिपल साहब से बहुत सहृदयता से मिलता था। अतः जब भी प्रिन्सिपल साहब की अथवा उनके कार्यालय की कोई बात, ढींगरा के नाम से प्रचारित होती थी, तो वह सत्य माननी ही पड़ती थी।

अतः विद्यार्थी को, जब ढींगरा ने कहा कि विद्यार्थी सहायक समिति का जो भी प्रधान होगा, धन उसको मिलेगा ही, विश्वास हो गया कि पद्मदेव का पत्ता कॉलेज से कट गया है।

पद्मदेव कॉलेज के जीवन की आत्मा थी। अतः यह समाचार ‘जंगल की आग’ की भांति कॉलेज में फैल गया।

कॉलेज की तीन श्रेणियों को पढ़ाकर जब पद्मदेव घर जाने के लिए तैयार हुआ तो कॉलेज के पचास-साठ विद्यार्थी उसको घेरकर खड़े हो गए।

‘‘सर! सर!!’’ वे पूछने लगे, ‘‘हम यह जानना चाहते हैं कि क्या आप कॉलेज छोड़ रहे हैं?’’

‘‘किसने कहा है आपको?’’

‘‘किसी ने भी कहा हो; श्रीमान्, यह बात सत्य नहीं है न?’’

‘‘मुझको अभी कोई आज्ञा-पत्र नहीं मिला और मैं स्वेच्छा से कॉलेज छोड़ नहीं रहा।’’

‘‘आप प्रिन्सिपल साहब से पता करिये। हमें सूचना मिली है कि सरकार की आज्ञा उनके पास आ चुकी है।’’

‘‘तो तुम्हारी यह इच्छा है कि मैं अपना ‘परवाना राहदारी’ लेने के लिए स्वयं हाजिर हो जाऊं? देखो, मुझको इस आज्ञा को लेने जाने की आवश्यकता नहीं है। मुझको इस विषय में चिन्ता भी नहीं। जब भी बात होनी होगी, वह हो जायगी।’’

‘‘परन्तु सर!’’ एक लड़के ने कह दिया, ‘‘हमको चिन्ता है। हम नहीं चाहते कि आप-जैसे विद्वान् और कर्मठ व्यक्ति के पथ-प्रदर्शन से हम वंचित कर दिए जाएँ।’’

‘‘माई डियर स्टूडेण्ट्स! आप लोगों को चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जो भी इस स्थान पर आयेगा, वह आपका पथ-प्रदर्शन करेगा।’’

‘‘तो इसका अर्थ यह है कि आपको अपने यहाँ से जाने की सूचना है?’’

‘‘सूचना नहीं है। इस पर भी यहाँ का वातावरण यह कह रहा है कि मुझको जाना ही होगा।’’

‘‘क्यों?’’

‘‘मैं स्वयं नहीं जानता। जब किसी घटना में कारण प्रतीत न हो, तब उसके विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेचना करनी अति कठिन है। मैं कहता हूँ कि आप लोगों को [illegible] कर, अपनी पढ़ाई में लगे रहना चाहिए।''

इतना कह पद्मदेव ने बाईसिकल के पैडल पर पांव रखा और घर की ओर चल पड़ा।

पद्मदेव का घर चर्च रोड पर एक कोठी में था। वह आते हुए विचार कर रहा था कि यह समाचार जिस प्रकार कॉलेज में विख्यात हुआ है, ठीक नहीं हुआ। वह अपने कॉलेज के कार्य के विषय में बहुत सार्वजनिक प्रदर्शन के पक्ष में नहीं था, परन्तु ढींगरा और मिर्जा की मूर्खता से बात फैल गई थी।

इससे कुछ दिन पूर्व, प्रिसिन्पल ने डायरेक्टर ऑफ एजूकेशन के एक पत्र का हवाला देते हुए उसको कहा था, ''पद्मदेव! सरकार तुम्हारी 'पुलिटिकल ऐक्टिविटीज' (राजनीतिक कार्य) को पसंद नहीं करती और डायरेक्टर महोदय ने लिखा है कि मैं तुम्हारे कार्यों पर प्रकाश डालूँ। तुमको सावधान रहना चाहिए।''

''तो आपने प्रकाश डाला होगा?'' पद्मदेव ने पूछा था।

''हाँ, मैंने लिखा है कि राजनीति का ज्ञान रखना एक इतिहास के शिक्षक का स्वभाविक कार्य है। एक सरकारी नौकर का राजनीति में सक्रिय भाग लेना वर्जित है और दोनों बातों में आकाश-पाताल का अन्तर है।

''जहाँ तक मेरा ज्ञान है,'' मैंने लिख दिया है—''आप राजनीति में किसी प्रकार का सक्रिय भाग नहीं लेते।''

इस पर पद्मदेव ने कहा था, ''आपने ठीक लिखा है। मैं आपका आभारी हूँ, परन्तु सरकार की भावना को भी समझता हूँ। वह जानती है कि इतिहास के शिक्षक राजनीति में सक्रिय भाग भले ही न लेते हों, परन्तु वे भावी राजनीति के निर्माता हो सकते हैं। कदाचित् मुझसे सरकार को इसी बात का भय है।

सरकार चाहती है कि जिस राजनीतिक आधार पर वह स्थापित हुई है, वह आधार हिल न सके। जब हम इतिहासज्ञ उस आधार को इतिहास की घटनाओं से दुर्बल बताते हैं, तो सरकार समझती है कि हम उसकी जड़ों को हिला रहे हैं वह यह नहीं चाहती। अतः वर्तमान राजनीति के विषय में एक शब्द भी कहे बिना, जब इतिहास का ज्ञाता कहता है कि बल के आधार पर स्थापित राज्य सदा निष्फल होते हैं, तो सरकार समझती है कि हम उसकी निन्दा करते हैं।''

मिस्टर चोपड़ा पद्मदेव का मुख देखता रह गया। पद्मदेव ने अपने वक्तव्य को समझाने के लिए कह दिया, ''मेरे कहने का अर्थ यह है कि इतिहासज्ञ वर्तमान के साथ सम्बन्ध न रखता हुआ भी, भविष्य के साथ गहरा सम्बन्ध रखता है। उसकी इतिहास की विवेचना भावी इतिहास की निर्माता होने वाली होती है।''

''ऐनी वे,'' प्रिन्सिपल ने कह दिया, ''मैंने उत्तर भेज दिया है। मेरा कहना यह है कि आप सार्वजनिक पत्रों में अपने लेख न लिखा करिये।''

''मैं भविष्य में सावधान रहूँगा।''

सत्य बात यह नहीं थी। यह न तो पद्मदेव के लेख थे, न ही उसका किसी राजनीतिक कार्य में भाग लेना था। यह उसके प्रति कॉलेज के प्रोफेसरों में ईर्ष्या थी, जिसका परिणाम यह हुआ था।

पंजाब के शिक्षा-मंत्री एक मुसलमान थे, जो मुसलमानों के मतदान से ही निर्वाचित हुए थे। वह अपने मतदाताओं के सम्मुख यह कसम खा चुके थे कि भारत के मुसलमानों को हिन्दुओं के बराबर के अधिकार तथा पद दिलाकर रहेंगे। उस नीति के अन्तर्गत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शिक्षा-विभाग को, पूर्ण रूप में, इस्लाम से ओत-प्रोत करने की योजना में यह एक पग था। इस पग का सुझाव, कॉलेज के मुसलमान प्रोफेसर शिक्षा-मंत्री से मिलकर, दे आए थे। उनमें मिर्जा साहब भी एक थे। मिर्जा मुहम्मद बशीर अहमद मन्त्री महोदय के निर्वाचन-क्षेत्र में रहते थे और अरबी-फारसी के आलम होने के कारण मुसलमानों में बहुत प्रभाव रखते थे।

मिर्जा साहब की बात सुनकर मन्त्री महोदय ने पूछा, "आप एक-आध हिन्दू के भी कॉलेज में रहने को सहन नहीं कर सकते क्या?"

"देखिए साहब! इस समय हिन्दुओं की संख्या कॉलेज और शिक्षा-विभाग में अधिक है।"

"आप शिक्षा-विभाग की बात छोड़िये। कॉलेज में सीनियर प्रोफेसरशिप में कितने हिन्दू हैं?"

"पांच हैं।" मिर्जा साहब ने कह दिया, "प्रिन्सिपल साहब हैं, मिस्टर चोपड़ा, इकनौमिक्स के प्रोफेसर ढींगरा, इतिहास के प्रोफेसर पद्मदेव, गणित में मिस्टर गुप्ता और फिजिक्स के मलहोत्रा हैं। इनके मुकाबले में मैं हूँ, एक केमिस्ट्री के प्रोफेसर और एक फिलौसोफी के प्रोफेसर मुसलमान हैं। पांच के मुकाबले में हम तीन हैं।"

मन्त्री ने हँसते हुए कहा, "मिर्जा साहब! आप चोपड़ा और ढींगरा को हिन्दू समझते हैं क्या? दोनों की पत्नियाँ मुसलमानिन हैं। चोपड़ा तो कलमा भी पढ़ चुके हैं और ढींगरा गोमांस इत्यादि खाते हैं। ये दोनों इस समय तो नास्तिक हैं, खुदा को नहीं मानते, परन्तु इनकी औलाद मुसलमान होने वाली है।"

मिर्जा साहब इसका प्रतिरोध नहीं कर सके। मन्त्री महोदय की गणना के अनुसार तीन हिन्दुओं के मुकाबले में पांच मुसलमान थे, परन्तु मिर्जा साहब तो हिन्दू-मुसलमान के प्रश्न से भी ऊपर पद्मदेव की ख्याति से ईर्ष्या करते थे। इस कारण वे कहने लगे, "पर साहब! यह काफिर तो जाना ही चाहिए। उस दिन कॉलेज की डिबेटिंग क्लब में इसने कहा था कि हिन्दुस्तान की हदूद हिन्दुकुश से लेकर बर्मा इरावती नदी तक है। मौका-मौका पर इन हदूद में बाहरी हमलों की वजह से रद्दो-बदल होते रहे हैं, परन्तु जब-जब भी मुल्क ताकतवर होता रहा है, हिन्दुस्तान, जिसको वह भारत के नाम से याद करता है, अपनी कुदरती हद तक पहुँच जाता रहा है। ऐसे खतरनाक आदमी का तो कॉलेज में रखना ठीक नहीं होगा।"

"पर मिर्जा साहब! बात तो वह ठीक ही कहता है। हिन्दुओं की एक किताब है महाभारत। उसमें युधिष्ठिर के बारे में लिखा है कि उसने अपना चक्रवर्ती राज्य चलाया था और वह राज्य इतनी दूर-दूर तक फैला हुआ था। चक्रवर्ती राजा का मतलब ही यह होता था, जो इतने बड़े मुल्क पर हुकूमत कायम कर सके और हिन्दुओं में अनेकों चक्रवर्ती राजा हुए हैं।"

"कुछ भी हो साहब! इस प्रकार के प्रोफेसर और ऐसी तालीम हमें नहीं चाहिए। मैंने तो लैथब्रिज की तवारीख पढ़ी है। उसमें तो लिखा था कि आर्यों के बुजुर्ग खेती-बाड़ी करते थे, जाहिल थे और हिन्दुस्तान छोटे-छोटे राज्यों में बंटा हुआ था।"

मन्त्री साहब हँस पड़े और बोले, "अच्छी बात है। मैं इसकी बाबत प्रिन्सिपल को लिखूँगा और फिर हम इसके मुतअल्लिक कुछ तो कर सकेंगे।

: 2 :

यह सन् 1922 की बात थी। महात्मा गांधीजी का आन्दोलन समाप्त हो चुका था। कांग्रेस दब चुकी थी। इसके प्रायः सभी नेता जेलों में थे। देश-भर में दफा एक सौ चवालीस लगी थी, जिसके कारण जलसे-जलूस बंद थे। सन् इक्कीस की धारा-सभाओं के निर्वाचनों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान और हिन्दुओं के निर्वाचन पृथक्-पृथक् हुए थे। मुसलमानों के प्रतिनिधि मुसलमानों के सामने उत्तरदायी थे और हिन्दुओं के प्रतिनिधि हिन्दुओं के सामने। इसका परिणाम स्पष्ट था कि मुसलमान सदस्य हिन्दुओं की किसी बात के लिए अपने को उत्तरदायी नहीं मानते थे।

इन निर्वाचनों में एक बात यह हुई थी कि कांग्रेस ने निर्वाचनों का बहिष्कार किया था। जहाँ कांग्रेस ने, प्रत्यक्ष रूप में, अपने प्रतिनिधियों को खड़ा नहीं किया था, वहाँ भंगी, चमार, नाई खड़े कर उनका समर्थन किया था और वे जहाँ रायसाहब, रायबहादुरों को पराजित कर सके थे, वहाँ अनेक खड़े हुए विद्वानों को भी परास्त कर गये थे।

अतः इन विधान-सभाओं में, जहाँ मुसलमान मंत्री मुसलमानों के समर्थक पहुँच गये थे, हिन्दुओं के प्रतिनिधि सर्वथा अयोग्य अनपढ़ तथा वस्तु-स्थिति से अनभिज्ञ बन गये थे। यह बात 1924 तक चली। 1924 में नये निर्वाचन हुए। कांग्रेस ने अपने प्रतिनिधि कौंसिलों में भेजे, परन्तु वे तो वहाँ विघटन करने लगे थे।

पंजाब में शिक्षा-मंत्री एक पढ़े-लिखे मुसलमान थे। उन्होंने शिक्षा विभाग में हिन्दुओं की सफाई करनी आरम्भ कर दी। मुसलमान मन्त्रियों का यह कार्य चलता रहा और सन् 1924 आ गया। इस राजनीतिक भंवर में पद्मदेव की नौका फँस गई और उसके नाम 'डायरेक्टर ऑफ एजूकेशन' का एक पत्र प्रिन्सिपल को मिला। प्रिन्सिपल ने पत्र खोले बिना पद्मदेव तक पहुँचाने का निश्चय कर, चपरासी को वह पत्र, उसके घर पर जाकर दे आने की आज्ञा दी थी।

पत्र पिछले दिन आया था और प्रिन्सिपल का अनुमान था कि यह पद्मदेव को कॉलेज से छुट्टी करने की आज्ञा है। उसने यह अनुमान अपनी पत्नी को बताया तो उसने अपनी सहेली सुरैया को बता दिया। सुरैया से प्रोफेसर ढींगरा को पता चला और वह मिर्जा को कह बैठा।

पद्मदेव घर पहुँचा तो चपरासी उसकी कोठी पर, उसको पत्र देने के लिए खड़ा था। चपरासी ने पत्र दिया तो पद्मदेव ने कहा, "मैं तो कॉलेज से ही आ रहा हूँ। वहीं यह पत्र क्यों नहीं दे दिया?"

"प्रिन्सिपल साहब का हुक्म था कि यह पत्र घर पर ही जाकर दिया जाए।"

पद्मदेव ने पत्र लिया और 'पिअन-बुक' पर हस्ताक्षर कर दिये। चपरासी ने सलाम किया और बाईसिकल पर सवार हो चला गया। पद्मदेव ने बाईसिकल अपने नौकर को दी और बरामदे में रखी कुर्सी पर बैठ, पत्र खोल पढ़ने लगा। लिखा था–

> "श्री पद्मदेव एम०ए०, डी०लिट० की गवर्नमेन्ट कॉलेज लाहौर से और पंजाब सरकार के शिक्षा विभाग से सेवाएँ समाप्त की जाती हैं। उनको अगले दिन से ही कार्य पर नहीं आना चाहिए और इस नोटिस के प्रतिकार में वेतन तथा अन्य हानि-पूर्ति के विषय में डायरेक्टर शिक्षा विभाग से मिलकर बात करनी चाहिए।"

पद्मदेव समझ गया कि क्यों उसको यह आज्ञा कॉलेज में नहीं दी गई। पद्मदेव विद्यार्थियों में बहुत ही प्रिय था और सरकार नहीं चाहती थी कि इस आज्ञा पर विद्यार्थी, किसी प्रकार का प्रदर्शन करें।

पद्मदेव अभी तक अविवाहित था। उसको विद्यार्थियों के हित तथा शिक्षा के कार्य से अथवा अपने पढ़ने के कार्य से अवकाश ही नहीं मिला था। इसी कारण वह इतनी बड़ी कोठी में अकेला रहते हुए भी, किसी प्रकार का अभाव अनुभव नहीं करता था। कॉलेज जाना, पढ़ाना और लिखना तथा खेल-कूद, नाटक, संगीत इत्यादि में लगे रहने से उसका ध्यान कभी विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर गया ही नहीं था।

उसके पिता राधाकृष्ण जगरावाँ गाँव के रहने वाले थे। वह छोटी अवस्था में ही बर्मा चले गये। राधाकृष्ण ने बर्मा में ठेकेदारी कर लाखों रुपये कमाये। बर्मा में अपनी नवविवाहिता पत्नी सुहागरानी को भी वह साथ ले गया था। सुहागरानी के कोई सन्तान नहीं हुई और पति-पत्नी लाखों रुपये एकत्रित करते हुए भी, उसके भोग के लिए सन्तान के अभाव से, अत्यन्त दुःखी रहते थे। वहीं पर उपलब्ध चिकित्सा भी कराई गई थी, परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ था।

बर्मा में राधाकृष्ण ने सागवान के जंगलों की कटाई का ठेका लिया हुआ था और वह अपनी पत्नी को, रंगून में, एक सुसज्जित मकान में रख, स्वयं काम की देखभाल के लिए इरावती नदी के तटवर्ती, दूर उत्तर तक, जंगलों में जाता रहता था। वहाँ जंगल में रहने के लिए उसने एक लकड़ी की कुटिया बना ली थी और उसमें जाकर ठहरा करता था। वहाँ एक चौकीदार रहता था, जो इस कुटिया और उसके सामान की देखभाल किया करता था।

सन् 1898 में राधाकृष्ण लकड़ी कटवाने के लिए जंगल में गया तो उसके पुराने बर्मी नौकर का देहान्त हो चुका था और उसके स्थान पर एक मुसलमान ठहरा हुआ था। राधाकृष्ण ने उस मुसलमान के मुख पर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा तो उसने बताया, "मैं बिजनौर, हिन्दुस्तान का रहने वाला खुदाबख्श हूँ। आपका चौकीदार मेरा श्वसुर था। वह फौत हो गया है और मैं आपके आने तक यहाँ ठहरा हुआ हूँ।"

"तुमने हमको पत्र क्यों नहीं लिखा?"

"हजूर! न तो मेरा श्वसुर लिखना जानता था और न ही मैं जानता हूँ। इसलिए आपके आने की इन्तजार थी।"

"यहाँ मोतबिर नौकर ढूंढना बहुत मुश्किल है। तुम खबर भेज देते तो मैं रंगून से कोई नौकर लेता आता।"

"तो खादिम को नौकर रख लिया जाये। मैं बेकार ही हूँ।"

"तुम पर एतबार किया जा सकेगा?"

"हजूर! परख कर देखिये।"

"क्या तनख्वाह लोगे?"

"जो आप 'ऊ मींग' को देते थे।"

"वह तो तीस रुपया महीना लेता था। यहाँ ही रहता था।"

"मैं भी यहाँ ही रहूँगा। मेरी बीवी, 'ऊ मींग' की लड़की, यहाँ से थोड़ी दूर पर गांव में रहती है और वहाँ खेती-बाड़ी करती है। मैं यहाँ रहूँगा।"

"ठीक है, अभी छः मास तक के लिए नौकरी है। पीछे तुम्हारे काम को देखकर फैसला कर दूँगा।"

कटाई का काम चल रहा था। सूखी लकड़ी के लट्ठे बनाये जाते थे और इरावती नदी में, निशान लगाकर छोड़ दिये जाते थे। रंगून से पांच मील ऊपर, नदी में से, लकड़ी के लट्ठे पकड़कर इकट्ठे कर सूखने के लिए रख दिये जाते थे और फिर वहाँ से देश-देशान्तर को भेज दिये जाते थे।

राधाकृष्ण जेब में दस हजार रुपया लेकर बर्मा में आया था और छः वर्षों में लाखों का स्वामी बन गया था। वह इस काल में कई करोड़ रुपया की लकड़ी बर्मा से बाहर भेज चुका था। उसने कितने ही करोड़ रुपये टैक्स आदि में बर्मा सरकार को दिये थे और उतना ही बर्मा के कार्य करने वाले मजदूरों में बांटा था।

खुदाबख्श बर्मा में आया तो "ऊ मींग" की लड़की से विवाह कर बैठा और धीरे-धीरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेती-बाड़ी करने लगा। उसके तीन सन्तानें थीं। दो लड़के और एक लड़की। खुदाबख्श ने लड़कों का नाम हमीद, वहीद रखा था और लड़की, जो सबसे छोटी थी, फातिमा थी।

जब खुदाबख्श राधाकृष्ण की नौकरी में आया तो हमीद और वहीद बर्मी लड़कियों से विवाह कर, पृथक् हो चुके थे। फातिमा अभी पन्द्रह वर्ष की लड़की थी और खुदाबख्श उसके विवाह के लिए लड़के की खोज में था।

राधाकृष्ण ने सामान रखा और खुदाबख्श से बोला, "देखो, हमारा स्टोव निकालकर, उसमें तेल डलवा लाओ और साफ कर रखो। हम अभी चाय बनायेंगे।"

"हजूर! हुक्म हो तो फातिमा को बुला लूँ। वह चाय, खाना वगैरा बना दिया करेगी। वह बड़ा अच्छा खाना बना लेती है।"

"यहाँ की बर्मी लड़कियाँ क्या खाना बनायेंगी? मैं खुद ही बना लिया करूंगा।"

"हजूर! वह हिन्दुस्तानी खाना बनाना जानती है। बनवाकर तो देखिए।"

राधाकृष्ण ने मन की बात कह दी, "हम सफाई पसन्द करते हैं।"

खुदाबख्श ने कुछ नहीं कहा। उसने गोदाम में से मिट्टी के तेल का स्टोव निकाला, उसमें तेल डालकर सफाई कर दी। इसी बीच, जंगल में कटाई करने वाले मजदूरों में से एक को भेजकर, उसने गांव से फातिमा को बुला लिया। फातिमा आई तो उसको खुदाबख्श ने समझा दिया, "मालिक आये हैं। हाथ-मुख धोकर चाय बना दो।"

फातिमा चाय लेकर राधाकृष्ण के कमरे में आई तो राधाकृष्ण चकित रह गया। हिन्दुस्तानी और बर्मी खून के सम्मिश्रण से एक अति सुन्दर लड़की बनी थी। राधाकृष्ण ने उसको सिर से पांव तक देखा तो उस पर मोहित हो गया। उसने चाय ली और पूछ लिया, "तुम फातिमा हो?"

लड़की ने भूमि की ओर देखते हुए सिर हिला दिया। चाय चखी, तो राधाकृष्ण समझ गया कि लड़की चाय बनाना जानती है। उसने कह दिया, "अच्छी है।"

इस समय खुदाबख्श, जो दरवाजे से बाहर खड़ा, चाय के विषय में राय जानना चाहता था, भीतर आ गया और बोला, "यह खादिम की लड़की फातिमा है। मैं समझता हूँ कि खाना भी अच्छा बना लेती है।"

"आज इसका इम्तिहान हो जाये; परन्तु इसके पांव बहुत गन्दे हैं।"

"हाथ तो साबुन से साफ कर लिये थे।"

अगले दिन फातिमा बीस रुपया महीने पर नौकर रख ली गई। वह कुटिया की सफाई करने और खाना बनाने लगी। खुदाबख्श ने तो रुपया कमाने का तथा अपने और लड़की के खाने-पीने का प्रबन्ध किया था; परन्तु लड़की को राधाकृष्ण ने पसन्द कर लिया और दो महीने पश्चात्, जब वह रंगून लौटा तो वह फातिमा को अपनी पत्नी बनाकर साथ ले गया।

रंगून में सुहागरानी को पहिले तो अपने पति की यह करतूत पसन्द नहीं आई, परन्तु अपने को निःसंतान देख, वह चुप कर गई। राधाकृष्ण ने फातिमा का नाम सुनीति रख दिया।

सुनीति और राधारानी में वैमनस्य कुछ अधिक दिन नहीं चल सका। एक तो सुनीति बर्मी स्त्रियों की भांति घर का काम करने में बहुत सुघड़ थी और दूसरे, रंगून आने के दो मास के भीतर ही उसके गर्भ ठहर गया।

सुनीति की माँ, एक मुसलमान की पत्नी होने पर भी, अपने बौद्ध-धर्म में निष्ठा रखती थी और उसके विचारों का प्रभाव सुनीति पर बहुत गहरा हुआ था। सुनीति के बच्चा होने के समय तक तो सुहागरानी और सुनीति में प्रेम उत्पन्न हो गया था। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह उसके पति को संतान देने वाली थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri.

सुनीति के लड़का हुआ और सुनीति बीमार पड़ गई। सन् 1900 में उसका देहान्त हो गया। उस समय उसके लड़के की आयु छः मास की थी। लड़के का नाम पद्मदेव रखा गया। सुहागरानी ने पद्मदेव का लालन-पालन किया। 1906 में जब पद्मदेव छः वर्ष का था, राधाकृष्ण ने अपना कार्य बर्मा में बंद कर दिया और अपनी सारी सम्पत्ति को लेकर वह हिन्दुस्तान चला आया और अपने गांव जगरावाँ में रहकर अपना शेष जीवन व्यतीत करने लगा। उसके लौटने का मुख्य कारण पद्मदेव की शिक्षा का सुप्रबन्ध करना था।

पद्मदेव सुहागरानी को ही अपनी माँ समझता था। सुहागरानी भी उससे पुत्र-सा ही व्यवहार करती थी। राधाकृष्ण और सुहागरानी ने अपने वचन अथवा कर्म से कभी इस बात का संकेत नहीं दिया था कि पद्मदेव उन दोनों की सन्तान नहीं है। उस बर्मी लड़की सुनीति का कभी नाम तक कहने में नहीं आया।

पद्मदेव ने स्कूल की शिक्षा समाप्त की तो लाहौर में पढ़ने चला गया। वह अभी बी०ए० में पढ़ रहा था कि उसको एक दिन पिता का तार मिला, "अविलम्ब चले आओ।"

पद्मदेव तार के मिलने से बहुत घबराया। उसने अनुमान किया कि पिता अथवा माता बीमार है। अतः तार मिलते ही वह जगरावाँ को चल पड़ा।

वह अपने गांव में पहुँचा तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। उसके माता-पिता संन्यास लेकर उत्तराखण्ड में किसी तीर्थ-स्थान को जाने के लिए तैयार बैठे थे। पद्मदेव यह देख आश्चर्य से उनके मुख पर देखता रह गया। उसके पिता राधाकृष्ण ने, उसको विस्मय में अपनी ओर देखते पा, पूछ लिया, "क्या देख रहे हो?"

"मैं यह सब अभी तक समझ नहीं सका। आपको यहाँ कुछ कष्ट था क्या?"

"हाँ! मेरी आयु इस समय साठ वर्ष की हो गई है। बहुत कमाया है और उसका भोग किया है। जीवन में पितृ ऋण भी उतरने ही वाला है। तुम स्कूल में सदा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होते रहे हो और मुझको पूर्ण विश्वास है कि तुम अपनी पढ़ाई मान के साथ समाप्त कर, किसी बड़ी पदवी पर कार्य करोगे। तुम एक ढर्रे पर चल पड़े हो और मुझे विश्वास है कि तुम कभी पथच्युत् नहीं होगे, परन्तु मैंने तुमको इसलिए नहीं बुलाया कि तुम मेरे कार्यक्रम में मीन-मेख निकालो। इस पर भी इतना तुमको बता देना चाहता हूँ कि मैं अपने इस जीवन के पार का दर्शन करना चाहता हूँ। मुझको यह पता चला है कि योगाभ्यास से यह सम्भव है और इसके सिखाने वाले की खोज में मैं घर से चला हूँ।

जब मैं चला तो तुम्हारी माँ भी चलने को तैयार हो गई। मैं इन्कार नहीं कर सका। अतः हम दोनों जा रहे हैं।

यदि तुम्हारी माँ यहाँ रहती तो तुमको बुलाने की आवश्यकता नहीं थी। यह तुम्हारी देख-भाल करती और एक रहस्य की बात, तुमको अपने मरने से पूर्व बता जाती। अब तो हम दोनों जा रहे हैं, इस कारण तुम्हारे जन्म के रहस्य को तुम्हें बता देना अपना कर्त्तव्य मान, हमने तुमको बुला लिया है।"

इसके पश्चात् राधाकृष्ण ने पद्मदेव के जन्म की कथा सुना दी और कहा, "सुहागरानी ने इसको अपने से दगा समझा था, परन्तु फातिमा, जिसका नाम मैंने सुनीति रखा था, ने सुहागरानी की वह सेवा की थी कि वह प्रसन्न हो गई। हमारे परिवार को चलाने वाले पुत्र का जन्म हुआ। जब सुनीति का देहान्त हुआ था, तो सुहागरानी व्याकुल होकर रोती रही थी और उसकी स्मृति को वह आज तक नहीं भूल सकी। जब हम जाने को तैयार हुए तो यह सुहागरानी का आग्रह था कि मैं तुमको तुम्हारी माँ के विषय में बताकर जाऊं। तुम स्वयं ही बुद्धिशील हो और सद्‌चरित्र हो। इन सब बातों से तुम बिलकुल उससे मिलते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मैंने उसको अपनी पत्नी बनाने की इच्छा प्रकट की तो वह बोली कि अपने धर्म मन्दिर में चलकर विवाह करेगी। उसका पिता खुदाबख्श, हमारा विवाह मस्जिद में ले जाकर पढ़ाना चाहता था। इस पर वह रूठ गई। वह मुझसे कहने लगी कि वहाँ जाने के स्थान पर तो वह बिना विवाह के ही पत्नी बनने को तैयार है। मैंने उससे, अपने पिता के इतने विरोधी होने का कारण पूछा तो उसने बताया कि उसका पिता उसकी माँ को बहुत पीटता है और जब वह बिचारी पूछती है कि तुम मुझे इतनी निर्दयता से क्यों पीटते हो, तो खुदाबख्श कहता है कि औरत को इसी प्रकार काबू में रखा जाता है। मुझको उसके धर्म से घृणा है। यह उसका कथन था।

मैं उसको बिना विवाह के ही, खुदाबख्श को पांच सौ रुपया देकर ले आया। रंगून में लाकर मैंने उससे आर्य समाज में विवाह किया और उसका नाम सुनीति रख दिया। उस समय उसकी माँ वहीं पर थी। वह इस प्रकार के विवाह से बहुत प्रसन्न थी।

सुनीति इतनी निष्ठावान् और कर्मशील थी कि मैं आज भी उसको स्मरण कर पुल्कित हो उठता हूँ।''

पद्मदेव अपनी जन्म-कथा सुन भौंचक्का हो सुहागरानी का मुख देखता रहा। आखिर उसने कहा, ''माँ! तुमने यह कथा सुनवाकर मेरे मन में एक विचित्र अवस्था पैदा कर दी है। मैं तुम्हें अपने मन में एक अति पवित्र स्थान दिये हुए था। तुमने यह कथा सुनवाकर मुझको बेचैन कर दिया है। मैं अपनी माँ को उस स्थान पर बैठाना चाहता हूँ, परन्तु मुझको तो उसका कुछ भी स्मरण नहीं। मैं उसको अपने मन में बैठा नहीं सकता।''

''बेटा! इसीलिए तो तुमको यह कथा सुनाने की आवश्यकता अनुभव हुई है, जिससे उचित स्थान पर उचित व्यक्ति ही बैठ सके। लक्ष्मी का चित्र तो तुमने देखा होगा! बस ऐसी ही तुम्हारी माँ की रूपरेखा थी। अब उसी को अपनी माँ समझो, मुझे भूल जाओ।''

''परन्तु माँ! मेरा पालन-पोषण करके जो कुछ कष्ट तुमने उठाया है, उसको कैसे भूल जाऊं? माँ! मैं कैसे भूल सकता हूँ?''

''ठीक है, परन्तु तुमको विदित होना चाहिए कि तुम्हारी माँ एक देवी थी। वह डेढ़ वर्ष हमारे घर में रही। एक दिन भी उसने मेरी किसी भी बात का उल्लंघन नहीं किया था। बीमार हुई तो भी मेरी सेवा का हठ करती रही।''

इस पर राधाकृष्ण ने बताया, ''अब तुमको अपनी जन्म-कथा का ज्ञान हो गया है। एक बात और समझ लो। मैंने अपनी पूर्ण सम्पत्ति की वसीयत लिख दी है और उसकी रजिस्ट्री करा दी है। उसकी एक नकल मेरी मेज के दराज में रखी है। पढ़ लेना।

मैंने अपने विचार से अपना जीवन एक मनुष्य का जीवन व्यतीत किया है। मैं एक मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ प्राणी मानता हूँ। इस भिन्नता को समझकर चलोगे तो जीवन में सुख पाओगे। मैं देवता बनने का यत्न करता रहा हूँ, परन्तु सफलता प्राप्त नहीं कर सका। भगवान तुमको इस दिशा में सफलता दे, यही मेरी प्रार्थना है।''

अगले दिन पद्मदेव के माता-पिता जगरावाँ से चले गये। पद्मदेव को वसीयत पढ़ने पर पता चला कि पिताजी ने जालन्धर में दो मकान अपने और अपनी मृत्यु के पश्चात् अपनी पत्नी के नाम रखकर, शेष सम्पत्ति का उसको उत्तराधिकारी बना दिया है। पूर्ण सम्पत्ति का, उसके पढ़ाई समाप्त कर जीवन में प्रवेश करने तक, एक ट्रस्टी नियुक्त कर दिया है। उस ट्रस्टी को अपने कार्य के लिए दो सौ रुपया मासिक पारिश्रमिक नियत कर दिया था। प्रबन्ध करने का खर्चा इससे अलग था।

पद्मदेव उस ट्रस्टी से भी मिला। उसका नाम लालचन्द था। वह जालन्धर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वकालत करता था।

पद्मदेव को इस प्रकार अपने माता-पिता से सम्बन्ध-विच्छेद पर आश्चर्य ही हुआ था। इस वियोग में न तो वह दुःख था, जो मरने के समय होता है, न ही कुछ हर्ष की बात थी। इसके साथ ही वह यह समझा था कि उसके पिता ने उसकी वास्तविक माँ की कथा बताकर, अपने को उससे मानसिक स्तर पर भी पृथक् करने का यत्न किया है। पर क्या इससे पृथकता हो सकेगी? वह इसकी सम्भावना नहीं मानता था।

लाहौर में चर्च रोड वाली कोठी भी उसके पिता की सम्पत्ति का ही भाग थी। पद्मदेव पढ़ाई के काल में तो बोर्डिंग हाऊस में रहता रहा, परन्तु गवर्नमेन्ट कॉलेज में नौकरी पाने पर, इस कोठी को खाली करवा, उसमें जाकर रहने लगा। इस समय ट्रस्टी ने सम्पत्ति पर अधिकर उसको दे दिया। मित्र समझते थे कि वह कोठी में गया है तो विवाह भी करेगा, परन्तु माता-पिता के सिर पर न होने के कारण और स्वयं सरल स्वभाव रखने के कारण वह कोई लड़की पा नहीं सका, जिससे विवाह कर सके। राधाकृष्ण के सम्बन्धी तो उससे रुष्ट रहते थे।

स्त्री के अभाव में उसने एक नौकर भोजन बनाने, कोठी को साफ-सुथरा रखने और चौकीदारी करने के लिए रखा हुआ था। इसके अतिरिक्त एक माली भी था, जो कोठी में लगे फूल इत्यादि की देख-रेख किया करता था। पद्मदेव अपना पूर्ण समय कॉलेज में पढ़ाने, लड़कों के खेल-कूद में भाग लेने, उनके संगीत-नृत्यों के आयोजन करने और घर पर पढ़ने में व्यतीत करता था। उसने घर पर ही एक सुन्दर पुस्तकालय बना लिया था, जिसमें अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी-उर्दू की पुस्तकों का बहुत बड़ा संग्रह कर रखा था। वह पढ़ता और अपने जीवन से प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करता था।

उसके बहुत कम ऐसे मित्र थे, जो उसको कोठी पर मिलने आते थे। प्रायः वह अपने मित्रों से होटलों में चाय आदि पीने के समय ही मिल लिया करता था।

: 3 :

पद्मदेव ने जब कॉलेज के काम से मुक्त किये जाने की आज्ञा पढ़ी तो उसके मन में कुछ हल्कापन अनुभव हुआ। उसको निर्वाह की चिन्ता नहीं थी। पिता का धन इतना था कि वह जीवन-भर में समाप्त होने वाला नहीं था। उसको पढ़ने तथा लिखने में इतनी रुचि थी कि उसके मन उकताने की सम्भावना नहीं थी। फिर उसको संगीत का भी शौक था और भ्रमण में रुचि थी।

उसने नौकरी छूटने को सर्वथा साधारण घटना मान, उसका ध्यान ही छोड़ दिया। कई बार ऐसा होता था कि उसको, कहीं किसी सभा-समाज में व्याख्यान इत्यादि के लिए जाना होता था और जाने के समय से पूर्व उसको पता चल जाता कि सभा नहीं होगी; तब वह जिस सुख के भाव से अपनी 'डायरी' में उस कार्यक्रम को काटता था, वैसा ही वह इस नौकरी के छूट जाने से अनुभव कर रहा था।

वह बरामदे में रखी कुर्सी से उठा तो सामने नौकर को खड़ा देख, उसके मुख पर देखने लगा। नौकर ने कह दिया, ''पंडितजी भीतर ड्राइंगरूम में प्रतीक्षा कर रहे हैं।''

पंडितजी का अर्थ पद्मदेव जानता था। संगीत-नृत्य विद्यालय के अध्यापक उसके यहाँ पंडितजी के नाम से विख्यात थे। ''ओह! तुमने पहिले क्यों नहीं बताया?''

''आपके कॉलेज का चपरासी कहता था कि यह पत्र अत्यन्त ही आवश्यक है। इस कारण आपके उसे पढ़ लेने की प्रतीक्षा में था।''

पद्मदेव ने पत्र को लपेट कर जेब में रख लिया और भीतर ड्राइंगरूम में जा पहुँचा। पण्डित शम्भुनाथ गर्ग से वह स्वयं संगीत सीखता रहा था, अतः वह उनका बहुत मान करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था। पण्डितजी ने उठकर पद्मदेव का स्वागत करना चाहा तो उसने उनको पकड़कर आदर से बैठाया और कहा, ''क्षमा करें! मुझको नौकर ने आते ही बताया नहीं। इस कारण मैं बाहर एक पत्र पढ़ने बैठ गया था।''

''बैठिए प्रोफेसर साहब! मैंने कल तीन-चार बार आपको टेलीफोन किया, परन्तु आपसे सम्पर्क नहीं हो सका। लाचार होकर मैंने स्वयं सेवा में उपस्थित होना ही उचित समझा है। आज हमारे विद्यालय के हॉल में सरस्वती सप्रू के नृत्य और संगीत का कार्यक्रम है। हम सब की इच्छा थी कि आपको उस सभा का अध्यक्ष बनाएँ। यदि आप स्वीकार कर लेते तो सभा को चार चाँद लग जाते।''

''यह सरस्वती सप्रू कौन है?''

''आप उसको नहीं जानते, परन्तु वह आपको जानती है। कभी किसी समय आपके कॉलेज की छात्रा रही है।''

पद्मदेव स्मरण करने का यत्न करता रहा, परन्तु सफल नहीं हुआ। इस पर उसने पूछ लिया, ''क्या अच्छा गाती-नाचती है?''

''बहुत तैयार है। सुनने वाले भी बहुत होंगे। है तो हमारा यह साधारण मासिक समारोह ही, परन्तु प्रवेश-पत्र सब बिक गये हैं।''

''तो क्या वह कोई ख्याति प्राप्त गायिका है?''

''जी हाँ? सार्वजनिक समारोह में तो वह पहली बार ही आ रही है। इस पर भी घर पर और पिता के मित्रों के घरों में बहुत चर्चा रही प्रतीत होती है।''

''तो पण्डितजी! मैं आऊंगा।''

''आज सायंकाल ठीक साढ़े-आठ बजे कार्यक्रम आरम्भ होगा। आप सवा-आठ बजे आ जाइयेगा।''

पद्मदेव ने अपनी डायरी निकाली और जब उसमें वह सायंकाल के समारोह के विषय में लिखने लगा, तो उसने देखा कि 'कॉलेज स्पोर्ट्स क्लब' की मीटिंग है। पद्मदेव ने उस कार्यक्रम पर लकीर लगाकर, यह नया कार्यक्रम लिख लिया। पण्डित शम्भुनाथ ने यह देखा तो धन्यवाद करते हुए कहा, ''मैं आपसे ऐसी ही आशा करता था। आप तो सदा हम पर कृपा रखते रहे हैं।''

पण्डित शम्भुनाथ के लिए चाय आई और वे चाय पीने लगे तो पद्मदेव ने अपने चिट्ठी लिखने के पैड को निकाला और उस पर 'स्पोर्ट्स क्लब' के मन्त्री को पत्र लिख दिया—''मंत्री महोदय! ऐसे कारण से, जिसको लिखने की मैं आवश्यकता नहीं समझा, मैं क्लब में नहीं आ सकता। किसी को सामयिक प्रधान बनाकर कार्य चलाइये और बाद में नियमानुसार स्थायी प्रधान का निर्वाचन कर लीजिये।''

यह पत्र नौकर के हाथ कॉलेज कार्यालय में भेजकर, वह अपने पुस्तकालय में आ बैठा। पण्डित शम्भुनाथ चले गये थे।

वहाँ बैठे वह अध्ययन में लग गया, परन्तु ऐसा कर नहीं सका। कॉलेज के विद्यार्थी, एक भारी संख्या में उसको मिलने के लिये आए तो उसको पुस्तकालय से बाहर आना पड़ा। बाहर आया तो विद्यार्थियों ने प्रोफेसर साहब का जयघोष करना आरम्भ कर दिया। पद्मदेव ने हाथ खड़ा कर उनको शान्त किया और सब को कोठी की लॉन में एकत्रित कर पूछने लगा, ''यह जयघोष किस बात का सूचक है?''

''सर! हमने सुना है कि आपको कॉलेज से निकाल दिया गया है?''

''यह सूचना ठीक है; परन्तु इस जयघोष का अर्थ मैं नहीं समझा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर एक लड़के ने, जो एम०ए० की प्रथम श्रेणी में पढ़ता था, कह दिया, ''मिर्जा साहब के कथन से यह बात पूर्ण कॉलेज में विख्यात हो गई है कि कॉलेज में हिन्दू प्रोफेसरों की संख्या कम करने के लिए पंजाब सरकार ने यह किया है।''

''मिर्जा साहब क्या कहते हैं?''

''उन्होंने कैमिस्ट्री के प्रोफेसर अहमद बेग साहब से कहा था—'एक काफिर प्रोफेसर और कम हुआ है।''

पद्मदेव ने हँसते हुए कहा, ''मैं इस बात को इस प्रकार नहीं मानता। इस पर भी मेरा यह कहना है कि मुझको इस बात का पहले ही पता था और मैं इस निर्वासन की प्रतीक्षा कर रहा था।

''यह हिन्दू-मुसलमान का प्रश्न नहीं है। यह एक इतिहास के जानकार और अनजान का प्रश्न है। हिन्दू-मुसलमानों में वैमनस्य तो इतिहास के जानने और न जानने में भेद का परिणाम है। इस कारण मैं यह पहले ही समझ रहा था कि वर्तमान पंजाब सरकार के अफसर मुझको प्रान्त के प्रमुख कॉलेज में सहन नहीं कर सकेंगे। वे इतिहास को नहीं जानते और मैं जानता हूँ। एक शक्तिशाली अल्प-ज्ञानी ज्ञानवान को सहन नहीं कर सकता।''

लड़के जो पद्मदेव के इस प्रकार के सिद्धान्तात्मक प्रवचनों के सुनने का अभ्यास रखते थे, वे समझते थे कि पद्मदेव मुसलमानों को अज्ञानी कहकर पुकारा करता है।

पद्मदेव ने आगे कहा, ''इस समय सरकार मुसलमानों की है। यह ठीक है कि एक-दो हिन्दू भी मन्त्रिमण्डल में हैं, परन्तु इतिहास के एक महान् तथ्य को वे भी नहीं जानते। इसी कारण वे वहाँ पर हैं और मुझको मूर्ख मान, मेरी सहायता करने में अशक्त हैं।

''मन्त्रिमण्डल में हरियाणा के एक चौधरी महोदय भी हैं। वे स्वभाव से सज्जन व्यक्ति हैं, परन्तु ज्ञान में उतने ही कोरे हैं, जितने अन्य हिन्दू मिनिस्टर हैं। अतः परस्पर द्वेष रखते हुए भी, एक ही भूल कर रहे हैं। वह भूल यह है कि मानव इतिहास में पार्थिव अधिकारों पर समझौते कभी भी स्थायी नहीं होते। रोटी, कपड़ा, भूमि, मकान इत्यादि वस्तुओं के उपभोग इत्यादि के बंटवारे पर किये समझौते भावनाओं के उभर आने पर रद्दी की टोकरी में फेंक दिये जाते हैं। इसी प्रकार का समझौता कांग्रेसी नेता अपने ढंग से मुसलमानों के साथ कर रहे हैं।

इन समझौतों का श्रीगणेश कांग्रेस ने 1915 में लखनऊ पैक्ट द्वारा किया था। वे बिना हिन्दू और मुसलमान में भेद का कारण जाने, इन पार्थिव वस्तुओं को बांटने लगे थे। वस्तुएँ बंट गईं, परन्तु समझौता नहीं हुआ। भूमि तथा नौकरियाँ बांटी जा रही हैं, परन्तु समझौता टूट रहा है।

मैं इतिहास के पन्नों में छुपे एक रहस्य को जानता हूँ। वह यह कि मुसलमान और हिन्दू में एक आधारभूत अन्तर है। मुसलमान खुदा का वाहिद-रसूल मुहम्मद साहब को मानते हैं। मुहम्मद साहब की कलाम, कुरान पर इमान न लाने वाले को काफिर मानते हैं और काफिर को मार डालना, उसके माल और उसकी औरतों को लूट लेना, सबाब मानते हैं।

इसके विपरीत हिन्दू परमात्मा तक पहुँचने के कई मार्ग मानते हैं। परमात्मा के ज्ञान को प्रकाशित करने वाली पुस्तकों को प्रमाण मानते हैं। वे ज्ञान को असीम मानते हुए, सब की सुनने को तैयार रहते हैं। हिन्दू मुहम्मद साहब की बात को भी सुनते हैं और ईसा की बात को भी। उनके मन में स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के लिए भी स्थान है और गुरु शंकराचार्य के कथन के लिए भी। भिन्न-भिन्न मार्गों पर चलने वाले, भिन्न-भिन्न आचार्यों को पथ-प्रदर्शक मानने वाले और भिन्न-भिन्न पुस्तकों में लिखी धर्म की विवेचना मानने वाले, एक-दूसरे को काफिर नहीं मानते; न ही मतभेद रखने वालों की सम्पत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अथवा स्त्रियाँ लूट लेने को ठीक मानते हैं।

इसके विपरीत हिन्दू और मुसलमानों में एक अन्य अन्तर भी है। मुसलमान मतभेद को मिटाने के लिये धन, बल और स्त्री का प्रयोग स्वीकार करते हैं, हिन्दू इनके प्रयोग को क्षम्य नहीं मानते।

अन्तर तो इन बातों में है और कांग्रेसी हिन्दू इस अन्तर की अवहेलना कर धन, सम्पत्ति, भूमि इत्यादि के बंटवारे से हिन्दू-मुसलमान मैत्री करना चाहते हैं। यह सब इतिहास से अनभिज्ञता के कारण है।

मुझ जैसे इतिहास को समझने और समझाने वाले से, इनकी सहमति नहीं। अतः मेरा इनकी सेवा में रहना अस्वाभाविक था और वह अस्वाभाविक सम्बन्ध टूट गया है।

इसके कारण आप लोगों को इस अस्वाभाविक सम्बन्ध के टूट जाने का शोक अथवा इस पर रोष करने की आवश्यकता नहीं। आप लोग जाइये और अपने पढ़ने के कार्य में मग्न रहिए।"

एक लड़के का कहना था, "हम तो यह निश्चय कर आये थे कि इसके लिए कल से कॉलेज में हड़ताल कर दी जाए।"

"हड़ताल में कौन समाघोष अर्थात् माँग करोगे?"

"यही कि एक योग्य प्रोफेसर को हिन्दू होने के नाते निकाला गया है।"

"यह तो मैंने बता दिया है कि मेरे निकाले जाने में हिन्दू या मुसलमान का प्रश्न नहीं। यह प्रश्न है ज्ञान-अज्ञान का। वे मुझको अज्ञानी मानते हैं और मैं उनको अनभिज्ञ मानता हूँ। मेरे उनसे मतभेद को मिटाने के लिये, वे मुझको मिटा देना चाहते हैं।

उनके और मेरे ज्ञान में अन्तर के कारण अन्य हिन्दू मन्त्री भी मुझको अयोग्य मान, निकाल देने के पक्ष में हैं। अतः यह हिन्दू-मुसलमान का प्रश्न नहीं।"

"तो हम क्या करें?" विद्यार्थियों का प्रश्न था। उनका कहना था—"हम क्यों आपसे ज्ञान प्राप्त करने से वंचित कर दिए गये हैं?"

"जहाँ तक कॉलेज में पढ़ने का प्रश्न है, अपने संरक्षकों से निश्चय करो। उन्होंने ही तुमको इस कॉलेज में पढ़ने के लिए भेजा है। वे ही तुम्हारा खर्चा देते हैं। जहाँ तक मुझसे ज्ञान-प्राप्ति का सम्बन्ध है, मेरा ज्ञान मेरे लेखों में, मेरी पुस्तकों में और मेरे कारनामों में उपलब्ध होगा। तुम उनसे लाभ उठा सकते हो।"

लड़कों को इससे शान्ति नहीं मिली। इस कारण वे निराश हो, प्रोफेसर का मुख देखते रह गए। एक ने पूछ लिया—"अब आप क्या करने जा रहे हैं?"

"कुछ नहीं। मेरा जीवन-कार्य इस नौकरी छूट जाने से प्रभावित नहीं हुआ। वह तो निरन्तर चलता रहेगा।"

"क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि आपके जीवन का कार्य क्या है?"

"मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है, परम् ज्ञान की प्राप्ति और उसकी प्राप्ति में दूसरों को सहायता देना। सो मैं कर रहा हूँ। वह मैं करता ही रहूँगा।"

"क्या खाना-पीना और इसके साधनों की प्राप्ति, जीवन का उद्देश्य नहीं है?"

"ये जीवन का उद्देश्य नहीं है; हाँ, उद्देश्य की प्राप्ति में साधन हैं। मेरे पास ये साधन उपस्थित हैं। यदि न होते तो भी ये इतने साधारण हैं कि इनकी प्राप्ति के लिए किसी भी समझदार व्यक्ति को चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। चालीस, पचास रुपये में ही भोजन की वस्तुएँ मिल सकती हैं। यदि एक एम०ए० पास और डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की उपाधि प्राप्त व्यक्ति इतना भी प्राप्त नहीं कर सकता तो धिक्कार है ऐसी पढ़ाई-लिखाई पर! मुझको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R0 89.9143
GUR-J
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो इसकी चिन्ता ही नहीं।''

लड़के गये तो पद्मदेव अपने ज्ञान को उपयोगी बनाने के लिये विचार करने लगा। वह अभी ड्राइंगरूम में बैठा अपने जीवन की इस नई करवट पर विचार कर रहा था कि टेलीफोन बजा। उसने उठकर टेलीफोन लिया और पूछा, ''कौन साहब हैं?''

''ट्रिब्यून का सम्वाददाता।''

''फरमाईये, क्या काम है?''

''आपसे इण्टरव्यू लेना चाहता हूँ। किस समय मिल सकता हूँ?''

''मैं घर से पौने आठ बजे चला जाऊंगा और तब तक यहाँ पर ही हूँ। आप आ सकते हैं।''

समाचार-पत्र के सम्वाददाता से वैसी बात नहीं हो सकी, जैसी विद्यार्थियों से हुई थी। सम्वाददाता ने पूछ लिया, ''क्या यह सत्य है कि आपको 'डिसमिस ऑर्डर' मिल चुका है?''

Central Library
167911
Gurukula Kangri University, Haridwar

''यह सत्य है।''

''उसमें कुछ कारण लिखा है?''

''नहीं।''

''क्या लिखा है?''

''लिखा है कि मुझको कॉलेज की सेवा से मुक्त किया जाता है। मुझे कल से कॉलेज नहीं जाना चाहिये और यदि मेरा इसमें किसी प्रकार का दावा है तो मुझे 'डायरेक्टर ऑफ एजूकेशन' से मिलना चाहिए।''

''आप मिलेंगे?''

''मिलना तो है।''

''आप क्या माँग करने वाले हैं?''

''मैं यह समझने का यत्न करूंगा कि मुझको सेवा से एकाएक मुक्त करने में क्या कारण है?''

''मैं आर्थिक हानि की माँग के विषय में जानना चाहता हूँ।''

''मेरी आर्थिक हानि तो हुई नहीं। कदाचित् कुछ लाभ ही होगा। इसके लिए मैं उनका धन्यवाद करूंगा।''

''परन्तु अपमान तो हुआ है?''

''यदि मेरे डिसमिस होने का वही कारण है, जो मैं समझा हूँ, तो मैं इससे अपने को अपमानित नहीं मानता।''

''क्या कारण समझे हैं, आप?''

''कुछ दिन हुए मुझको प्रिंसिपल साहब ने बुलाकर कहा था कि सरकार मेरी राजनीतिक कार्रवाई को पसन्द नहीं करती। सरकार ने उनसे इस विषय में सूचना माँगी थी। प्रिंसिपल ने फर्माया था कि उन्होंने लिख भेजा है कि वे मेरे कॉलेज के काम से सन्तुष्ट हैं और उनको मेरे किसी ऐसे काम का ज्ञान नहीं, जिसको वे राजनीतिक कार्य समझें। उन्होंने यह भी लिखा था कि एक इतिहास के प्रोफेसर का राजनीति का ज्ञाता होना स्वाभाविक है; इस पर भी मैं राजनीति में सक्रिय भाग नहीं लेता।

मैंने प्रिन्सिपल साहब को, मेरे विषय में वस्तुस्थिति लिखने को कहा था। मेरा विचार है कि सरकार को प्रिन्सिपल साहब के कथन पर विश्वास नहीं आया।

मेरा आचरण ठीक है और इस ठीक आचरण के लिए दण्डित होना मानयुक्त बात है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपमान की नहीं।''

''आपका आचरण ठीक है, परन्तु उनका लांछन तो गलत है?''

''मैं समझता हूँ कि यह राजनीति के विषय में उनका लांछन ठीक है। मैं राजनीति में सक्रिय भाग नहीं लेता। इस पर भी इतिहास को ठीक ढंग से पढ़ने के कारण और इतिहास के ठीक प्रतिपादन से, मैं वर्तमान राजनीति की जड़ों में कुठाराघात करता रहता हूँ। वर्तमान सरकार समझती है कि मैं उनकी मूलभूत बात का विरोधी हूँ, अतः वे मुझको अपनी राजनीति का शत्रु मानते हैं।''

''हम चाहते थे कि सरकार से मच रही धांधली में होने वाले अन्याय तथा अत्याचार को, यह उदाहरण देकर, लिखते और मुस्लिम-मिनिस्टरों के विरुद्ध आन्दोलन करते।''

''आप अपनी इच्छा से जो करना चाहें करें केवल मैं इस आन्दोलन को चाहता हूँ, ऐसा नहीं माना जाना चाहिए। मैं इस आन्दोलन से वर्तमान अवस्था में किसी प्रकार के सुधार की सम्भावना नहीं देखता।''

''तनिक अपने विचार व्याख्या से समझाइये।''

''मुसलमानी राज्य बन रहा है, मुसलमानों की अज्ञानता के कारण। वे समझते हैं कि मुसलमानों का अपना राज्य होने से मुसलमानों के सुख में वृद्धि होगी। यह अज्ञानता है। सुख-वृद्धि होने में मुसलमानों के राज्य का कोई भाग नहीं रहेगा। यह उनकी अज्ञानता ही का लक्षण है।

वे यह समझते हैं कि मुसलमानों का अपना राज्य होने से उनके धर्म का प्रचार अधिक वेग से होगा। यह भी उनकी भूल है।

इस भूल और अज्ञानता का भास मुसलमानों को होना चाहिए। इसके लिए मुझको भारत के नेताओं के आन्दोलन लाभकारी प्रतीत नहीं होते। भारत के नेता मुसलमानों को सन्तुष्ट करने का यत्न कर रहे हैं। एक ओर उनके साथ खान-पान, बहू-बेटी का सम्बन्ध बना कर, दूसरे उन के साथ भूमि, सम्पत्ति तथा नौकरियों का बंटवारा करके वे इनको प्रसन्न करना चाहते हैं। ये दोनों वैमनस्य का मूल कारण नहीं हैं। इन दोनों बातों के हो जाने पर भी हिन्दू-मुसलमानों में वैमनस्य मिट नहीं सकेगा। आन्दोलन से तो घृणा उत्पन्न होती है, सुलह नहीं।''

''तो इस भूल को दूर करने का क्या उपाय है?''

''आज से पचास वर्ष पूर्व भारत के एक महापुरुष ने इसके लिए पथप्रदर्शन किया था। दिल्ली में दरबार हो रहा था। भारत के बड़े-बड़े राजा-महाराजा और उच्च पदवीधारी नेतागण उपस्थित हुए थे। वह महापुरुष भी वहाँ एक उद्देश्य से पहुँचा था। नेतागणों से हुई बातचीत में वह यह बात स्पष्ट कर सका था कि एक विदेशी सरकार के राजकीय समारोह में गुलामों का सम्मिलित होकर हर्ष मनाना, यह भारतीयों को शोभा नहीं देता। नेतागणों को बात समझ में आ गई और एक अनौपचारिक गोष्ठी कर बैठे। उसमें इस महापुरुष को भी आमन्त्रित किया गया। जब भारत को स्वतन्त्र कराने पर विचार आरम्भ हुआ, तो उस महापुरुष ने बताया, ''हमको भारत में अपना राज्य और अपने राष्ट्र की स्थापना करनी चाहिए। राज्य से पूर्व एक राष्ट्र की स्थापना आवश्यक है। इस कारण हम सब को मिलकर एक राष्ट्र का निर्माण करना चाहिए?

प्रश्न पूछे जाने पर कि राष्ट्र के क्या अर्थ हैं और वह कैसे स्थापित होगा, उस महापुरुष ने बताया था—'देश का राष्ट्र वह है, जो वेदों से स्रावित होता हुआ लाखों वर्षों के भारत के इतिहास में प्रवाहित होता रहा है। हमारी वे सब धारणाएँ, परम्पराएँ, संस्कार और विश्वास, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इतिहास की इतनी लम्बी शृंखला में बंधे हुए हैं, उस राष्ट्र का रूप होगी, जो यहाँ सत्ताधीश होगा।'

उस महापुरुष का कहना था कि ऐसे राष्ट्र की स्थापना के बिना देश स्वतन्त्र नहीं होगा और यदि होगा भी तो वह स्वतन्त्रता मिथ्या होगी, अस्थायी होगी और दुःख का कारण होगी।

उपस्थित नेतागणों में से किसी के भी मन को यह योजना व्यावहारिक प्रतीत नहीं हुई और उस महापुरुष की आवाज एक जंगल की आवाज की भांति निरर्थक रही। वह महापुरुष थे स्वामी दयानन्द।

तब से नेतागण यहाँ एक राष्ट्र-निर्माण करने का यत्न न कर, भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में भूमि सम्बन्धी तथा नौकरियों और बहू-बेटियों के आधार पर समझौते करने का यत्न करते रहे हैं।

उस महापुरुष का स्वर्गवास हुए आज अगभग पैंतालीस वर्ष हो चुके हैं। ये मिथ्या बातें बहुत अंशों में मिट चुकी हैं। हिन्दू-मुसलमान खान-पान में परहेज नहीं करते। विवाह-सम्बन्ध भी होते हैं। नौकरियों तथा भूमि का बंटवारा भी हो चुका है, परन्तु हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य अर्थात् भारत में द्विराष्ट्र की भावना पहले से अधिक जोरों पर है। एक दिन देश का बंटवारा होगा और इतिहास के प्रणाम से मैं यह भी कह सकता हूँ कि वैमनस्य तब भी नहीं मिटेगा।

यदि देश के नेता हिन्दू-मुसलमान की समस्या, उनके विचारों में अन्तर की दृष्टि से देखते और इसका उपचार इस दृष्टिकोण से करते तो निःसंदेह वैमनस्य कम होता और आज मुसलमानी पृथकत्व कम हो चुका होता।''

इसके पश्चात् पत्र के संवाददाता से भेंट समाप्त हुई।

: 4 :

रात का भोजन कर पद्मदेव संगीत-नृत्य विद्यालय को चल पड़ा। वहाँ पहुँच उसको यह देखकर प्रसन्नता हुई कि नगर का प्रतिष्ठित समाज वहाँ उपस्थित है। विद्यालय के अध्यापक पंडित शम्भुनाथ आने वालों के स्वागत के लिए द्वार पर खड़े थे। पद्मदेव को आया देख पंडितजी ने अपने एक विद्यार्थी को संकेत से कहा कि इनको सबसे आगे बैठायें।

वह विद्यार्थी पद्मदेव को लेकर सबसे आगे की पंक्ति में एक कुर्सी पर ले गया। वहाँ उनको बैठा, स्वयं भी समीप बैठ, वह पद्मदेव से सुख-समाचार पूछने लगा। पद्मदेव ने पूछ लिया, ''आज तो बहुत भीड़-भाड़ है?''

''जी! सरस्वती सप्रू की लाहौर में ख्याति है। इनका स्वयं कोयल की भांति मीठा और इनका नृत्य स्वर्गीय अप्सराओं का-सा प्रिय होता है। यह कला में निपुण हैं और एक धनी बाप की बेटी हैं। इसके अतिरिक्त, प्रोफेसर साहब! यह लड़की है और अति सुन्दर है।''

पद्मदेव इस व्यंग्यात्मक प्रशंसा को सुन हँस पड़ा। उसने पूछ लिया, ''यह अलौकिक विभूति कहाँ है?''

''वे अपना 'मेकअप'कर रही हैं। अभी आयेंगी तो स्वयं अनुमान लगा सकेंगे कि मेरा विवरण सत्य है अथवा नहीं।''

पद्मदेव ने पूछ लिया, ''आज तो विद्यालय को बहुत पैसा मिला होगा?''

''जी, प्रवेश-शुल्क पन्द्रह रुपया, दस रुपया, पांच रुपया और दो रुपया है। सारी टिकटें कल से पहले ही बिक चुकी थीं। इस पर भी मजेदार बात यह है कि कलाकार ने विद्यालय से कुछ भी पारिश्रमिक नहीं लिया। उसने कहा है कि इस विद्यालय में उसने अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कला सीखने का श्रीगणेश किया था। अतः वह यहाँ से कुछ भी पारिश्रमिक नहीं लेगी। एक शर्त उन्होंने की थी। वह यह कि आज के समारोह का सभापतित्व आप करें।''

''क्यों?''

''वे कहती हैं कि आपने उनको इस कला में प्रवीणता प्राप्त करने में प्रोत्साहन दिया था। वे आपके प्रति आभार प्रकट करना चाहती हैं।''

''मुझको तो स्मरण नहीं हो रहा कि वह कौन है। मैं उत्सुकता से उसके दर्शनों की प्रतीक्षा में हूँ।''

इस समय पण्डित शम्भुनाथ भीतर आ गया। भवन खचाखच भर चुका था। पण्डितजी मंच पर चढ़ श्रोतागणों को सम्बोधन कर कहने लगे—''कला में अभिरुचि रखने वाली माताओं, बहनों तथा भाइयों! यह हमारे विद्यालय का सौभाग्य है कि अपने ही विद्यालय की छात्रा सुश्री सरस्वती सप्रू, पण्डित नीलकंठ सप्रू की सुपुत्री, आज इस विद्यालय में कला-प्रदर्शन के लिए तैयार हो गई हैं। वे अभी यहाँ पर आयेंगी और अपना संगीत-नृत्य दिखायेंगी। यह कार्य दो भागों में विभक्त होगा। दो घण्टे का पहले और एक घण्टे का पीछे। बीच में बीस मिनट की विश्रान्ति होगी।

इस समारोह की अध्यक्षता के लिए पंजाब यूनिवर्सिटी और गवर्नमेन्ट कॉलेज के प्रोफेसर श्री पद्मदेव एम०ए०, डी०लिट् पधारे हैं। यह विद्यालय उनके प्रति आभारी है। वे भी हमारे विद्यालय के विद्यार्थी रह चुके हैं और अभी भी संगीत में विशेष रुचि रखते हैं।

मैं प्रोफेसर साहब से मंच पर आकर अपना आसन ग्रहण करने की प्रार्थना करता हूँ।''

मंच पर एक कोने में, एक कुरसी अध्यक्ष के लिए रखी थी। समीप ही एक तिपाई थी और उस पर घण्टी तथा कागज, कलम और दवात रखी थी।

पद्मदेव अपने स्थान से उठकर मंच पर आया और जब वह बैठने लगा तो उसके गले में एक बहुत बड़ी पुष्पमाला डाल दी गई। पद्मदेव ने वह पुष्पमाला स्वीकार की और तत्पश्चात् गले से उतार, समीप पड़ी तिपाई पर रख दी। जनता ने तालियाँ बजाईं। अब तबला, सारंगी, तानपूरा इत्यादि वाद्य यन्त्र मंच पर लाये गये और स्वर किये जाने लगे। इस समय पद्मदेव ने उठकर उपस्थित जन-समूह के समक्ष कहना आरम्भ किया—''मैं विद्यालय के प्रबन्धकों का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे उस कलाकार का अभिवादन करने का अवसर दिया है, जिसके विषय में मुझे बताया गया है कि वे लाहौर में बहुत विख्यात हैं।

मैं संगीत में रुचि रखता हूँ, परन्तु पिछले सात वर्षों से मेरा जीवन-कार्य दूसरी ओर हो जाने से, मैं कलाकारों की ओर कुछ विशेष ध्यान नहीं दे सका। इस कारण ही, मेरे दूसरी ओर व्यस्त रहने के काल में, पंजाब के गगन में उदीयमान इस नवीन तारिका के विषय में मुझको पता नहीं चला। मैं अपनी इस अनभिज्ञता के लिए क्षमा का प्रार्थी हूँ। इस समय एक-दो शब्द मैं श्रोतागणों को कला के विषय में अपने मतानुसार बता देना चाहता हूँ। मैं कला को भावों का कलेवर-मात्र मानता हूँ। जैसे मानव-शरीर में आत्मा छुपी रहती है और आत्मा के शरीर से पृथक् हो जाने पर शरीर अति सुन्दर होता हुआ भी, नष्ट कर देने योग्य होता है; वैसे ही भाव-विहीन कला की भी दशा है।

शरीर में आत्मा पवित्र और पतित भी हो सकती है। आत्मा की उपस्थिति में शरीर त्यागने के योग्य तो नहीं माना जाता, परन्तु उस शरीर की महिमा तो आत्मा की प्रवृत्ति के अनुसार ही होती है। इस मानव-शरीर में वेश्याएँ भी होती हैं और सती-साध्वी भी। इस मानव-शरीर में स्वार्थलोलुप, ईर्ष्या-द्वेष से ओत-प्रोत, काम-क्रोध से भरपूर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लोभ-मोह-अहंकारमयी स्त्रियाँ भी हो सकती हैं और सेवा-भाव वाली सरल-चित्त तथा धर्मपरायण स्त्रियाँ भी हो सकती हैं। अतः केवल शरीर देखकर ही किसी स्त्री के ग्रहण करने में मुख्य बात होनी चाहिए। इसी प्रकार कला अति सुन्दर होते हुए भी, तब ही ग्रहण करने के योग्य होती है, जब वह अपने में सद्भावों को रखती हो।

"भावों का निर्णय मैं नहीं करता। केवल इतना कहकर अपना कथन समाप्त करूंगा कि भैरव राग में यह भी गाया जा सकता है–

'बीत गयी सारी रात, पिय की सेजिया पर!
सखि जगाना न मुझको, बीत गई सारी रात!!'

"और इस राग में यह भी गाया जा सकता है–

'नन्दलाल सखी, प्रेम मादक पिये, यमुना तिमरे वरण!'

"फिर इस राग में यह भी गा सकते हैं–

'उठ जाग मुसाफिर भोर भयी, अब रैन कहाँ जो सोवत है!'

'राग में स्वर-ताल की अभिव्यक्ति श्रेष्ठ होते हुए भी, भाव उस राग की महिमा को बनाने में मुख्य भाग लेता है।"

इतना कह पद्मदेव बैठने लगा तो कलाकार सरस्वती मंच पर आ गई। उसके आते ही पद्मदेव ने मेज पर रखी अपनी पुष्प-माला उठाकर सरस्वती के गले में डाल दी। जब दर्शकगण तालियाँ बजा रहे थे, तो पण्डित शम्भुनाथ एक अन्य पुष्प-माला लिये हुए वहाँ आ उपस्थित हुआ। वास्तव में वह माला कलाकार के लिए थी। पद्मदेव अपनी भूल समझ गया। वह हाथ बढ़ा यह दूसरी माला भी, पण्डित शम्भुनाथ से लेकर सरस्वती के गले में डालने लगा तो सरस्वती ने वह माला हाथों में ले ली और आसर पर बैठने से पूर्व उपस्थित जनों को सम्बोधन कर बोली, "दर्शक गण! अध्यक्ष महोदय ने अपने गले की पुष्प-माला मेरे गले में डाल दी है। उसके प्रतिकार में मैं यह अपनी पुष्प-माला उनके गले में डालती हूँ।"

पूर्ण भवन तालियों से गूंज उठा। सरस्वती दर्शकों के मन में के भावों को समझ हँसती हुई, हार डालने के लिए अध्यक्ष की ओर बढ़ी। पद्मदेव इसको समझ पुनः कुर्सी से उठ, हाथों से उसकी माला को पकड़ने लगा, परन्तु सरस्वती ने वह हार उसको नहीं दिया और अपने स्थान पर आ खड़ी हो गई और दर्शकों से कहने लगी–

"मुझको भारी शोक है कि अध्यक्ष महोदय ने अपनी माला तो मेरे गले में डाल दी, परन्तु इस अपनी शिष्या की मानसूचक माला को स्वीकार नहीं किया। इस पर भी वे मेरे गुरु, प्रेरक और जीवन-निर्माता हैं और उनसे दी गई माला का मैं तिरस्कार नहीं कर सकती। मैं इसको पहने रखूँगी और अपनी इस श्रद्धा, कृतज्ञता तथा आभार को किसी अन्य समय पर प्रकट करने के लिए, यह माला अपने पास सुरक्षित रखूँगी।

प्रोफेसर साहब मुझको भूल गये हैं। मैं इनको कॉलेज में कुछ मास तक पढ़ती रही हूँ। ये मुझको लटूनी के नाम से सम्बोधन किया करते थे। एक दिन इन्होंने मेरे संगीत को सुनकर कहा था कि मैं अपना समय कॉलेज में व्यर्थ गंवा रही हूँ। क्या करूंगी बी०ए० बनकर? मुझमें एक श्रेष्ठ कलाकार बनने की सामर्थ्य है। मुझको संगीत और नृत्य ही सीखना चाहिए। मेरे जीवन का यही उद्देश्य है और मुझे इसे पूर्ण करना चाहिए। मुझको प्रोफेसर साहब का कथन सत्य प्रतीत हुआ था। मैंने कॉलेज छोड़ दिया और इसी विद्यालय में संगीत तथा नृत्य सीखने के लिए भरती हो गई। अतः मैं इनका आभार मानती हूँ।"

इतना कह वह अपने स्थान पर बैठ तानपूरा पकड़ ठीक करने लगी। सरस्वती ने कल्याण गाया। इस राग के ख्याल, आलाप बोलकर उसने एक गीत गा दिया–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गावो-गावो मंगल गीत बधाई!
मोद भरी घड़ी मन भाई!!
ईश कृपा यह अवसर आया!
ताते धन्य धन्य प्रभु माया!! गावो....'

तत्पश्चात् बोलतान और तानालाप हुआ। इस प्रकार पैंतालीस मिनट के संगीत के पश्चात् सरस्वती नृत्य के लिए पांवों में पायल बांध, मंच पर आ गई। वह नाचने के लिए तैयार हुई तो माइक्रोफोन पर एक नृत्य-निर्देशक आकर बैठ गया और वह नृत्य का अर्थ समझाने लगा। कुछ आरम्भिक मुद्राओं के पश्चात् वह नृत्य के साथ गीत गाने लगी। वह बोला, "देखिये कलाकार यह प्रकट कर रही हैः—

'लोचन भये श्याम के चेरे।'

लोचनों के साथ-साथ इस भाव को, हाथ-पांव और शरीर का अंग-अंग प्रकट करने लगा। प्रवक्ता कह रहा था, "लोचन श्याम की दासता स्वीकार कर बैठे।"

सरस्वती अध्यक्ष महोदय की ओर एक टक देखती हुई अंग-प्रत्यंग से स्वामी के प्रति भक्ति-भाव प्रकट करने की मुद्राएँ बनाने लगी।

प्रवक्ता कह रहा था—"लोचन जब दास बने, तो शरीर कैसे मुक्त रह सकता था?

सरस्वती मुद्राओं पर मुद्राएँ दासता का भाव प्रकट करने के लिए बनाने लगी।

प्रवक्ता कह रहा था—"दास स्वामी की भक्ति में लीन है। वह स्वामी को रिझाना चाहता है, परन्तु स्वामी निष्ठुर है, मानता नहीं, परन्तु चाकर तो अपनी स्वामी-भक्ति में लीन है।

'ऐ तो पर सुख भावत कोटिक
मोतन फेर न हेरे। लोचन भये श्याम के चेरे।' "

प्रवक्ता के, कई बार, इस प्रवचन के दुहराये जाने के पश्चात् तथा नृत्य-मुद्राओं के बनाये जाने के पश्चात् नृत्य आगे बढ़ा।

प्रवक्ता ने कह दिया—

"हा ! हा! करत परत हरि चरनन
ऐसे वश भये उनके रे।।"

प्रत्येक मुद्रा पर दर्शक वाह-वाह कर उठते थे। नृत्य की भाषा को प्रवक्ता साथ-साथ समझाता जाता था।

प्रवक्ता ने कहा, "जब लोचन श्याम के चाकर हो गये, तब तन, मन और आत्मा प्रभु की शरण में चले गये। तब—

'पग घुंघरू बांध मीरा नाची री।'

"तब भी हरि नहीं रीझे तो—

'पग घुंघरू बांध मीरा नाची री।'

नृत्य ने उग्रता ग्रहण की। नृत्य में उतावली, व्यग्रता और मादकता आने लगी। प्रवक्ता कह रहा था—

'लोग कहें मीरा भयी बावरी।
सास कहे कुल नासी री।'

"परन्तु मीरा,

'पग घुंघरू बांध मीरा नाची री।'

नृत्य और संगीत साथ-साथ चल रहे थे। नृत्य अंतिम चरणों पर पहुँचा तो प्रवक्ता ने भी गा दिया—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो अपने नारायण की,
हो गई आप ही दासी री।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
वेग मिलो अविनासी री। पग घुंघरू बांध–।'

और अन्त में जब नृत्य पुनः शान्त भाव में पहुँचा तो प्रवक्ता ने गाया–

'लोचन भये श्याम के चेरे।'

इस रात का कार्यक्रम अति सुन्दर रहा। तीन घण्टे की, कला तथा भक्ति-भाव की दावत के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

धन्यवाद करते हुए पद्मदेव ने कहा, "यह सत्य है कि मैंने इस सरस्वती कलाकार में वह छुपी हुई लटूनी नहीं देखी थी, जो आज से छः वर्ष पूर्व फर्स्ट-ईयर में प्रवेश पा, ड्रामेटिक क्लब की सदस्या बनी थी। उस समय यह सर्वथा अल्हड़, मांसरहित हड्डियों का पुँज ही दिखाई देती थी। इस पर भी इसके स्वर में विशेष माधुर्य और आकर्षण था। बिना जाने कि मैं मिट्टी को सोना बनने की प्रेरणा दे रहा हूँ, मैंने, व्यंग्य में वे वाक्य कहे थे, जो सरस्वती देवी ने आज तक स्मरण रखे हैं। मेरा व्यंग्य कॉलेज की नीरस, निरर्थक और विकृत शिक्षा पर था।

"परन्तु भगवान् को कुछ और ही स्वीकार था। मेरे इस अनजाने से कहे वाक्य का यह अद्भुत चमत्कार भगवान् की कृपा का ही फल हो सकता है।

"मैं सरस्वती देवी का धन्यवाद करता हूँ कि उसने प्रयत्न कर मेरे उस कथन को सत्य कर दिया है। भगवान इसको सद्प्रेरणा दे।"

: 5 :

सरस्वती पूर्ण कार्यक्रम में वह पुष्पमाला पहने रही थी, जो पद्मदेव ने उसे पहनाई थी। समारोह समाप्त होने के समय भी वह पुष्पमाला धारण किये हुए थी। अभी दर्शकगण जा रहे थे कि सरस्वती पद्मदेव का धन्यवाद करने उसके पास आई। पद्मदेव ने सरस्वती से कहा, "तो आप लटूनी हैं?"

"जी; वही, जिसके सिर पर हाथ रखकर आपने कहा था, 'तुम कलाकार होंगी' और आपके आशीर्वाद से मैं कलाकार हो गई।"

"सूरत-शक्ल बहुत बदल गई है। इस पर भी परिचय हो जाने के पश्चात् तो पहचान गया हूँ।"

इस समय शम्भुनाथ भी उनका धन्यवाद करने आया तो किसी ने 'फ्लैश लाईट' से तीनों का चित्र ले लिया। इस पर सरस्वी ने उस फोटोग्राफर की ओर संकेत कर कहा, "यह मेरा भाई महादेव है।" दोनों ने हाथ मिलाया तो शम्भुनाथ ने बता दिया–"महादेवजी भी हमारे विद्यार्थी हैं। यह संगीत और बांसुरी-वादन सीख रहे हैं।"

सरस्वती ने पूछ लिया–"आप किस प्रकार अपनी कोठी पर जाएँगे?"

"कोई-न-कोई सवारी मिल ही जाएगी। तांगा तो मिलेगा ही।"

"आइये, हम आपको अपनी गाड़ी में छोड़ आते हैं।"

"तो आप मोटर-गाड़ी में आई हैं?"

"हाँ, महादेव चलाता है। क्यों महादेव! प्रोफेसर साहब को चर्च रोड तक ले जाना होगा। ले चलोगे न?"

महादेव मुस्करा दिया। सरस्वती ने पद्मदेव से कहा–"तो चलिये।"

मार्ग में सरस्वती ने कहा, "देखिये प्रोफेसर साहब! मैंने आपकी पहनाई पुष्पमाला अभी भी पहनी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आखिर तो उतारनी ही पड़ेगी। फूलों के मुरझाने से पूर्व उतार दोगी, तो ही ठीक रहेगा।"

''वह तो विवशता होगी। अच्छा, आप किस समय घर पर मिलते हैं? मैं आपसे मिलने के लिए आना चाहती हूँ।''

''अब तो मैं प्रायः घर पर ही मिला करूंगा। मैं अब प्रोफेसर नहीं रहा। प्रातः सात बजे से रात के नौ बजे तक टेलीफोन से बताकर आ सकती हो।''

''कॉलेज छोड़ क्यों दिया है?''

''छोड़ा नहीं, छुड़ा दिया गया है। मैं डिसमिस कर दिया गया हूँ।''

''यह मुसलमान राज्य का पूर्व रूप दिखाई दे रहा है।''

''जो कुछ भी है, परिणाम स्पष्ट है। मानव होते हुए इसकी प्रतिक्रिया तो अनुभव करते हैं, परन्तु वह प्रतिक्रिया युक्ति-युक्त तथा स्वाभाविक होनी चाहिए। मैं इसको अज्ञानता के राज्य का पूर्व रूप समझता हूँ। बात यह है सरस्वती! कि हमारे हिन्दू नेता भी तो मुस्लिम-तुष्टि की नीति का समर्थन कर रहे हैं। जहाँ उनका राज्य होगा अथवा हुआ है, वह भी तो अज्ञानता का सूचक है।''

महादेव को इस बात से बहुत अचम्भा हुआ। उसने पूछ लिया, ''आप पंजाब में मुसलमानों के राज्य की स्थापना को अज्ञानता का सूचक मानते हैं और यू०पी० इत्यादि में हिन्दू प्रभुत्व रखने को भी अज्ञानता कहते हैं। ये दोनों परस्पर-विरोधी बातें नहीं हैं क्या?''

''जहाँ तक ज्ञान-अज्ञान का प्रश्न है, हिन्दू-मुसलमान एक ही स्तर पर हैं। मुझको इसलिये नहीं निकाला गया कि मैं हिन्दू हूँ। मेरे निकालने में कारण, जहाँ तक मैं पता कर सका हूँ, मेरी इतिहास की विवेचना है। मेरी विवेचना को मुसलमान पसंद नहीं करते तो कांग्रेसी नेता भी पसन्द नहीं करते। इस कारण दोनों का व्यवहार, प्रत्यक्ष रूप में भिन्न-भिन्न होते हुए भी, एक ही आधार पर बना है। वह आधार है अज्ञानता।

''देखिये महादेव जी! जहाँ मुसलमान, इतिहास के इस सत्य को भूल रहे हैं कि भारत की सीमा अफगानिस्तान से लेकर बर्मा तक है और यह स्वाभाविक है कि देश एक होकर रहे, वहाँ हिन्दू नेता मुसलमानों और हिन्दुओं में अन्तर अमीरों और गरीबों का, खान-पान का तथा विवाह-सम्बन्ध का ही मानते हैं। दोनों बातें एक इतिहास के ज्ञाता को गलत ही प्रतीत होती हैं।''

इस समय वे चर्च रोड वाली कोठी के द्वार पर आ पहुँचे। महादेव ने मोटर खड़ी की तो पद्मदेव धन्यवाद कर, उतर पड़ा। इस समय सरस्वती ने कह दिया, ''मैं कल दस बजे आपसे मिलने आऊंगी।''

''कुछ काम है क्या?''

''आप जैसे कर्मशील व्यक्ति से भला कोई बेकाम क्यों मिलने आयेगा?''

''तो ठीक है।''

पद्मदेव समझ न सका था कि वह उससे क्यों मिलने की इच्छा रखती है। इस पर भी वह आई और पद्मदेव को अपना लेखन-कार्य छोड़कर उससे मिलना पड़ा। सरस्वती को पद्मदेव ने अपने स्टडी-रूम में ही बुला, बैठाकर पूछा, ''चाय मंगवाऊं?''

''जी नहीं; यह समय न तो चाय का है, न ही भोजन का। साथ ही मैं इस समय आपसे एक गम्भीर विषय पर बात करने आई हूँ। चाय तथा भोजन के समय तो चितवृत्ति ढीली (मूड लाइट) होती है। मैं चित्तवृत्ति में ढीलापन अपने आज के वार्तालाप में आने नहीं देना चाहती।''

''ठीक है। मैं तो पहले ही ऐसा मानता हूँ कि विषयों पर बातचीत के समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खाना-पीना नहीं होना चाहिए। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि अति गम्भीर विषयों पर बातचीत के समय भी चाय-पानी चलता रहता है।''

''हाँ, तो मैं आपको एक अपने मन की बात बताने आई हूँ। जब मैं कॉलेज में भरती हुई थी, तो आपके एक व्याख्यान से, जो आपने 'स्टूडेंट्स डिबेटिंग सोसायटी' में दिया था, अति प्रभावित हुई थी।

''देखिये, मैं आपको बताती हूँ कि आपने क्या कहा था? आपने यह कहा था, 'जातियाँ जीवित रहती हैं अथवा मर जाती हैं, अपनी स्त्रियों के चरित्र और निष्ठा के बल पर। स्त्री भावी समाज को जन्म देती है और बचपन में उसको संस्कार देती है। यही कारण है कि मुसलमानों के समय में भारी कठिनाई के समय भी हिन्दू जीवित रहे थे। पुरुष तो मुसलमानों के सम्पर्क में आते थे। वे उनके अधीन हो जाते थे अथवा उनसे भिड़ने पर मार डाले जाते थे, परन्तु स्त्रियाँ अपनी पवित्रता, धर्म-परायणता और स्वतंत्रता को स्थिर रख सकी थीं, क्योंकि उन्होंने स्वेच्छा से और सहर्ष पर्दे में चला जाना स्वीकार कर लिया था।'

''आपने आगे कहा था—'समाज को ऐसा बना देने से, जिससे स्त्री की स्वतंत्रता तथा धर्मपरायणता विलुप्त हो जाये, जाति में पतन घटित होगा और जाति की रूप-रेखा ही नहीं बदलेगी, प्रत्युत इसका अस्तित्व ही मिट जाएगा।'

''देखिए! आपके शब्द मुझको कैसे ठीक-ठीक स्मरण हैं! वे मेरे मस्तिष्क पर अंकित हो गये थे और तब से ही आप मेरे पूज्य बन चुके हैं। मैं समझी थी कि आप उचित जीवन साथी बन सकेंगे, परन्तु आप को जीवन-साथी बना सकना कठिन बात थी। मैं उसके लिए यत्न करने लगी। मैं आपकी अध्यक्षता में चल रही 'ड्रामेटिक सोसायटी' की सदस्या बन गई और जब आपने कहा कि मैं एक श्रेष्ठ कलाकर बनने की सामर्थ्य रखती हूँ, तो मैं आपकी आशाओं को पूर्ण करने का यत्न करने लगी।

''अभी तक मैं अभ्यास करती थी। जहाँ कहीं दूसरों के समक्ष गाने तथा नाचने जाती थी, वह भी अभ्यास करने की दृष्टि से ही होता था। कल पहली बार मैं प्रदर्शन के लिए, सार्वजनिक समारोह में आई थी। मेरी उत्कट इच्छा थी कि मेरा पहला सार्वजनिक्र कार्यक्रम आपकी अध्यक्षता में ही हो। इसके लिए पंडित शम्भुनाथ जी को कहा और वह आपको मना लाये।

''कल का कार्यक्रम सफल रहा है और मैं समझती हूँ कि मैंने अपने को आपके योग्य सिद्धकर दिया है। साथ ही मैं यह देख रही हूँ कि यहाँ मेरे लिए स्थान रिक्त भी है। क्या मैं उसको भर सकती हूँ?''

पद्मदेव बहुत देर तक सरस्वती के प्रस्ताव पर विचार करता रहा। इस बीच सरस्वती उसके मुख पर देखती रही। पद्मदेव ने अपने मन के भावों का संकलन कर कह दिया, ''तुम सुन्दर हो, बातें करने में चतुर हो, परन्तु लटूनी! तुम सुघड़ पत्नी हो क्या? यह अभी नहीं कह सकता।''

''तो मैं एक-दो दिन यहाँ रहकर, अपनी परीक्षा दे सकती हूँ। आपके लिए चाय, भोजन आदि बना दूँगी। आपके अन्य घर के कामकर दूँगी। मुझको पूर्ण आशा है कि आप इस विषय में भी सन्तुष्ट हो सकेंगे।''

''ये बातें तो वहुत सरल हैं। कोई भी पढ़ा-लिखा व्यक्ति दो-चार दिन में सीख सकता है। इन सबसे कठिन, कदाचित् संगीत और नृत्य से भी कठिन एक अन्य कार्य है, जो पत्नी को करना पड़ता है। इस बात का विश्वास होना चाहिए कि तुम यहकर सकोगी।''

''आपका अभिप्राय मैं नहीं समझी।'' कुछ विचार कर वह बोली—''मैं आपके बच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की माँ बनने के योग्य हूँ।''

पद्मदेव खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, ''तुम मेरी बात समझी नहीं। माँ तो एक गंवार औरत और यदि मैं यह कहूँ कि एक गाय, भैंस भी बन सकती है, तो कोई अनुचित बात नहीं होगी। मेरा अभिप्राय तो माँ बनने से पहले के व्यवहार से है।''

सरस्वती का मुख लज्जा से लाल हो गया और उसकी आँखें झुक गईं। पद्मदेव समझ गया कि वह गलत अभिप्राय ले रही है। इस कारण उसने तुरन्त अपनी बात समझा दी—''मेरा अभिप्राय पति-पत्नी में सामंजस्य की योग्यता से है। इसको अंग्रेजी में 'अडैप्टेबिलिटी' अर्थात् अनुकूलनशीलता कहते हैं। मेरा प्रश्न यह है कि क्या हम एक-दूसरे के अनुकूल बन सकेंगे?''

''यह कैसे जाना जायेगा?''

''इसके लिये समय चाहिए। परिवारों में मेल-जोल चाहिए। एक-दूसरे के विचारों और आचरण का ज्ञान चाहिए।''

''मैं तो आपके विषय में कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं समझती। मेरा मन कहता है कि मुझको अपने निर्णय पर पश्चात्ताप नहीं करना पड़ेगा।''

''क्या गुण देखा है तुमने मुझमें?''

''मैं वर्णन तो कर सकती हूँ। मैंने पांच वर्ष तक आपके विषय में जाना, समझा और मनन किया है।''

''परन्तु मैंने तुमको देखा मात्र है। तुमको जाना, समझा और मनन नहीं किया।''

''अर्थात् पांच वर्ष तक आप मेरे विषय में जांच-पड़ताल करेंगे? यह तो अति कठोर तपस्या होगी।''

''तो फिर क्या किया जाये?''

''करिये यह कि मुझ पर, मेरे कहने पर विश्वास कर लीजिये। मैं आपकी आज्ञाकारिणी पत्नी बनकर रहूँगी।''

''कितने काल तक तुम प्रतीक्षा कर सकती हो, जिससे मैं तुमको और तुम मुझको जान-बूझ सको?''

''मैं तो और प्रतीक्षा करना व्यर्थ समझती हूँ। मैं तो अभी, इसी समय, विवाह के लिए उत्सुक हूँ।''

''यह तो पशुपन है। मैं तुमको अपने विचार बताता हूँ। मैं चाहूँगा कि तुम अपने पिता से मुझको मिला दो। उनसे बातचीत कर ही अपना निर्णय बता सकूंगा।''

''कुछ लेन-देन की बात है क्या?''

''हाँ, तुम को लेने की। दहेज इत्यादि से तो तुम्हारा मूल्य मैं अधिक मानता हूँ। इस पर भी कितना अधिक है, यही जानना चाहता हूँ। मैं तो लाखों से भी अधिक मूल्य वाली पत्नी चाहता हूँ।''

''आप उसका मूल्य देंगे?''

''हाँ, यदि पत्नी के पिता माँगेंगे तो, परन्तु जानने की बात तो यह है कि वह है कितने मूल्य की?''

''मैं तो घर से यह विचार करके चली थी कि हम पति-पत्नी बनकर ही पिताजी के सम्मुख उपस्थित हों और उनसे अपने नवीन जीवन की सफलता के लिए आशीर्वाद माँगें।''

इस समय पद्मदेव सरस्वती की आँखों में काम-वासना की लाली देख रहा था। वह अपने में इतने वर्षों का संयम टूटता हुआ अनुभव कर रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस परिस्थिति में उसके मन में अपने पिता की उस समय की बात स्मरण आ रही थी, जब वह संन्यासी हो हरिद्वार को जाने के लिए तैयार हुए थे। उन्होंने कहा था, "देखो पद्म! तुम मनुष्य हो, मानवता को छोड़ना नहीं।" वह अपने मन पर से छूट रहे नियन्त्रण को मानवता के विपरीत अथवा इससे भी कुछ इतर, बात मानने लगा था।

एकाएक वह अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और बोला, "मैं इसको ठीक नहीं मानता।"

"क्यों? क्या हम में जीवन नहीं? क्या हम में यौवन भरपूर नहीं आया? क्या हमारा 'नर्वस सिस्टम' (स्नायुमण्डल) दुर्बल पड़ रहा है?"

पद्मदेव अपने स्टडी रूम से बाहर की ओर जाते हुए बोला, "यह सब कुछ है। मैं पूर्ण शक्तिसम्पन्न हूँ, परन्तु सरस्वती! इससे भी प्रबल मेरा मन है। मेरा मन मेरी आत्मा के अधीन है, मेरी इन्द्रियों के नहीं।"

पूर्व इसके कि सरस्वती उसका मार्ग रोक सकती, पद्मदेव कमरे से ड्राइंग-रूम में आ गया और सरस्वती से, जो उसके पीछे-पीछे आ रही थी, बोला, "देखो! शान्त चित्त से अपने भविष्य के विषय में विचार करने के लिए ये बन्द करमे और मकान उचित नहीं हैं। आओ तनिक 'लान' में चले चलें। यदि तुम चाहती हो कि आज ही निर्णयात्मक बात हो जाये, तो वह भी हो सकती है, परन्तु धीरज धरो। तुम मनुष्य जाति में उत्पन्न हुई हो, एक बिल्ली-कुतिया की जाति में नहीं। तुमको अपना व्यवहार मनुष्यों का-सा बनाना चाहिए।"

इस समय तक पद्मदेव ड्राइंग-रूम से बरामदे में आकर, वहाँ से कोठी के खुले लान की ओर चल पड़ा था। सरस्वती अब उसके साथ-साथ ही थी। उसका मुख पीत वर्ण हो गया था। वेग से भागते हुए घोड़े, जिसकी लगाम बींच ली गई हो, के समान वह हाँफने लगी थी।

पद्मदेव ने उसकी इस दशा को देख नौकर को आवाज दी, "सुन्दर! ओ सुन्दर!! दो कुर्सियाँ ले आओ।"

: 6 :

कुर्सी पर बैठ तथा सरस्वती को बैठाकर पद्मदेव ने कहा, "देखो देवी! मैं तुम से आठ वर्ष बड़ी आयु रखता हूँ। मैंने मानव-भावनाओं का तुम से अधिक अध्ययन किया है। संसार में और विद्यार्थी-समाज में ध्यान-पूर्वक अपने चारों ओर देखते हुए रहने से, मैं तुम्हारे मन की अवस्था का एक अनुमान लगा रहा हूँ और उस अनुमान से मुझको तुम्हारे साथ पूरी सहानुभूति है।

"इस पर भी मैं मूर्ख युवकों की भांति, बिना लक्ष्य का ध्यान किये भाग नहीं सकता। इस कारण सुनो। तुम मुझसे विवाह करना चाहती हो न, क्यों?"

इस प्रश्न से सरस्वती का मुख पुनः कामुकता से लाल होने लगा। उसने कांपते हुए कहा, "इसके पूछने की आवश्यकता है क्या?"

"हाँ, इसलिए कि इस समय के तुम्हारे और अपने मन की अवस्था के अतिरिक्त भी तो कुछ विवाहित जीवन से सिद्ध होने वाला है। तुम……।"

सरस्वती अपने स्थान से उठकर बोली, "मुझको विदित नहीं था कि इस इतिहास के प्रोफेसर के भीतर एक फिलौसोफर का मन छुपा हुआ है। फिलौसोफर बातें बहुत करते हैं, परन्तु वे प्रायः कर्म-विहीन होते हैं। देखिये, मेरी एक 'प्रैक्टिकल' (क्रियात्मक) 'प्रपोजल' (प्रस्ताव) है। यदि आपके मन में मेरे लिए कुछ भी अनुराग है, तो चलिये। आज रविवार है। पिताजी घर पर ही हैं। उनके समक्ष बात-चीत कर लेते हैं और फिर जैसा वे कहेंगे, करेंगे।"

पद्मदेव ने इसमें कोई आपत्ति की बात नहीं समझी। वह सोच रहा था कि सरस्वती पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह काम का आवेग, कदाचित् समय व्यतीत हो जाने से शान्त हो जावेगा। वह अपने पिता के समक्ष ऐसी बेहूदा बात कि इसी समय, इसी क्षण विवाह हो जाये, नहीं कह सकेगी। वह सरस्वती के साथ चलने को तैयार हो गया। सरस्वती अपने पिता की मोटर गाड़ी में आई थी। वह स्वयं मोटर चला रही थी। पद्मदेव उसके साथ बैठा हुआ था। दोनों कुछ ही समय में पंडित नीलकण्ठ की कोठी पर, जो फिरोजपुर रोड पर थी, जा पहुँचे।

पण्डित नीलकंठ कोठी के बरामदे में बैठा, बड़ा-सा सिगार पीता हुआ 'ट्रिब्यून' का सण्डे (रविवार) संस्करण पढ़ रहा था। जब ये दोनों वहाँ पहुँचे, तो सरस्वती ने पद्मदेव का परिचय अपने पिताजी से करा दिया। उसने कहा, "पिताजी! यह हैं प्रोफेसर पद्मदेव एम०ए०, डी०लिट्० पंजाब यूनिवर्सिटी। मैंने आपसे इनके विषय में एक बार पहले भी बात की थी।"

पण्डित नीलकंठ ने पद्मदेव को सिर से पांव तक देखा और फिर खड़े होकर हाथ मिलाया और बैठने को कहा। बरामदे में कुछ कुर्सियाँ रखी थीं। पद्मदेव और सरस्वती उनको समीप लाकर पण्डितजी के सामने बैठ गये। पण्डित नीलकण्ठ के सामने तिपाई पर दियासलाई और सिगारकेस रखा था। उसने वह सिगार-केस खोलकर पद्मदेव के सामने कर, सिगार पीने का प्रस्ताव रख दिया। पद्मदेव ने हाथ जोड़ कह दिया, "मैं नहीं पीता।"

"ओह! अच्छा करते हो।"

तुरन्त ही नीलकंठ को समाचार-पत्र में पढ़े एक समाचार का ध्यान आ गया। उसने पद्मदेव की आँखों में देखते हुए पूछ लिया, "यह ट्रिब्यून में आपका ही समाचार छपा है क्या?"

"मैंने अभी समाचार-पत्र नहीं पढ़ा। जिस दिन मुझको कॉलेज नहीं जाना होता, मैं दस बजे तक अपना लिखने-पढ़ने का काम करता हूँ। पश्चात् स्नानादि से छुट्टी पाकर ही समाचार-पत्र पढ़ता हूँ। आज दस बजे ही ये आ गई थीं। अतः अभी तो स्नानादि भी नहीं किया था। अब यह पकड़कर आपके दर्शन कराने ले आई हैं।"

"ओह! तो सरस्वती आपको दर्शन कराने ले आई हैं।" नीलकण्ठ ने हँसते हुए कहा, "यह समाचार है कि आपको नौकरी से डिसमिस कर दिया गया है। यह ठीक है क्या?"

"पत्र का संवाददाता कल मुझसे मिला था और यह समाचार मैंने ही उसको दिया था।"

"परन्तु इसमें लिखा है कि आपको इस कारण निकाला गया है कि आपकी इतिहास की विवेचना भारतीय और यूरोपीय विद्वानों से विलक्षण है।"

"यह बात मैंने नहीं कही है। यह पत्रकार का अपना अनुमान है।"

"तो आप क्या समझते हैं कि आपको क्यों निकाला गया है?"

"मैं तो इसको केवल इस प्रकार समझा हूँ कि एक शक्तिशाली मूर्ख, विद्वान् तथा बुद्धिशील व्यक्ति को उन्नति करते देख नहीं सकता।"

"परन्तु यह क्या एक व्यक्ति का कार्य है?"

"व्यक्ति हो अथवा समाज, सिद्धान्त एक ही है। जब किसी मूर्ख, अज्ञानी व्यक्ति अथवा समाज के हाथ में शक्ति आ जाती है, तो वह विद्वानों का नाश करने को तुल जाता है। उसको बुद्धिशील विद्वानों से भय लगने लगता है। वह अपने अन्तरात्मा में यह अनुभव कर लेता है कि कहीं उसकी अनभिज्ञता सर्वसाधारण पर प्रकट न हो जाये।"

"बहुत खूब!" नीलकंठ ने हँसते हुए कहा, "आप यह समझते हैं कि मुसलमानों और सरकारी अधिकारियों को, महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल और अन्य कांग्रेसी तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हिन्दू महासभा के नेताओं से, जो दिन-रात उनकी निन्दा करते रहते हैं, भय नहीं लगता और आप-जैसे एक अज्ञात, ख्यातिहीन और अज्ञात कॉलेज में पढ़ाने वाले से भय लग रहा है?''

पद्मदेव मुस्कराता हुआ पंडित नीलकण्ठ की ओर देखता रहा। नीलकण्ठ ने अपना कथन इतने जोश में किया था कि उसको अपने 'स्नायुमण्डल' को शान्त करने के लिए सिगार के एक-दो कश लगाने पड़ गये। पद्मदेव कुछ देर तक उसको अपने को शान्त करते देखता रहा। पश्चात् वह कहने लगा, ''मैंने तो निवेदन किया था कि मुझको ऐसा समझ में आया है। यह सम्भव है कि इसमें मेरी भूल हो, परन्तु पंडितजी! आपने जो बात कही है, वह नितांत मिथ्या प्रतीत होती है। मुसलमानों की कभी महात्मा गांधी अथवा किसी भी कांग्रेसी नेता ने निन्दा की है क्या? हिन्दू सभा वालों को छोड़िए! उनके विषय में पीछे विचार कर लेंगे। उनकी गिनती ही कितनी है!

''क्या आप एक भी ऐसा वाक्य बता सकते हैं, जो कभी महात्मा गांधीजी ने बोला अथवा लिखा हो, जिसमें इस्लाम, एतदर्थ मुस्लिम व्यवहार की आलोचना की हो? कम-से-कम मुझको तो कोई ऐसी बात स्मरण नहीं आ रही। इसके विपरीत महात्माजी, मुहम्मद साहब, कुरआन और भारत में मुसलिम राज्य का प्रशंसागान तो करते ही रहते हैं। भला उनसे मुसलमानों को भय क्यों लगेगा? मैं समझता हूँ कि महात्माजी से, पंडित जवाहरलाल से अथवा अन्य कांग्रेसी-नेताओं से यदि किसी को भय खाने की आवश्यकता है तो वह हिन्दू-समाज के लोगों को अथवा हिन्दू संस्कृति को चाहने वालों को है।''

पंडित नीलकण्ठ आँखें मूंद स्मरण करना चाहता था कि कहाँ और कब गांधीजी ने मुसलमानों अथवा इस्लाम के विरुद्ध कहा हो। वह सन् 1922 से 28 तक के भारत के वातावरण से यह तो समझ रहा था कि मुसलमानों का व्यवहार अशुद्ध है और उसकी भर्त्सना होनी चाहिए, परन्तु यह हो नहीं रहा था। इसमें नीति भी हो सकती थी। इस पर भी एक योग्य वकील होने के नाते वह यह समझ रहा था कि नीति का गलत होना दोष के मन में गलत भावना भी उत्पन्न कर सकता है। मुसलमान कदाचित् यह समझ रहे हैं कि उनका व्यवहार ठीक ही है और किसी भी प्रमुख हिन्दू का उनको गलत न कहना, उनके ठीक होने का प्रमाण है।

नीलकण्ठ को चुप देख, पद्मदेव ने कह दिया, ''यह बात स्वयं-सिद्ध है कि कुरआन में काफिरों के साथ अमानुषिक व्यवहार करने को ठीक माना है। भारत के मुसलमान हिन्दुओं को काफिर मानते हैं। इन दोनों धारणाओं के कारण हिन्दुओं पर घोर अत्याचार हुए हैं और उनसे घृणा उत्पन्न होती रही है।

''देखिये, मिश्र के फाऊद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अब्दुल इनान अपनी पुस्तक में लिखते हैं—'मुसलमानी राज्यों की सहन-शीलता, केवल भिन्न मत रखने तक ही सीमित थी। नित्यप्रति के जीवन के कार्यों में यह नहीं थी। मुसलमान सदैव अमुसलमानों को अपने से छोटा अथवा घटिया समझते थे। यह भेदभाव इस्लाम के आदिकाल से है।

''जिम्मीज' अर्थात् गैर-मुसलमान गिरजे अथवा सिनागौगज (यहूदी-मन्दिर) बना नहीं सकते थे। जब कोई बना हुआ गिर जाये तो मुरम्मत नहीं करवा सकते थे। गिरजों पर सलीब खड़ी नहीं कर सकते थे। न ही वे अपनी धर्म-पुस्तकों का प्रदर्शन कर सकते थे। मुसलमानी क्षेत्रों में यदि कोई गिरजा हुआ तो वहाँ धर्म-गीत नहीं गाये जा सकते थे। मोमबत्तियाँ नहीं जला सकते थे। उन्हें शव के जलूसों में चुपचाप शान्ति से जाना होता था।

'जिम्मीज' किसी मुसलमान को धर्म-परिवर्तन के लिये कह नहीं सकते थे। न ही वे किसी अमुसलमान के इस्लाम स्वीकार करने में बाधा डाल सकते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वे अपने अरबी भाषा में नाम नहीं रख सकते थे, न ही वे कभी मुसलमानी पहिरावा पहिन सकते थे। ……जिम्मियों की गर्दन पर सीसा की मुहर से मुहर कर दी जाती थी। वे अपनी कमर नंगी रखते थे। दाढ़ी मुंडा कर रखते थे और घोड़े पर सीधे नहीं बैठ सकते थे।

'मुसलिम राज्य अमुसलमानों को कभी भी राज्य में अधिकार-युक्त पदवी पर नियुक्त नहीं करते थे। हिसाब-किताब रखने के अतिरिक्त और कोई उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य उनसे नहीं लिया जा सकता था।'

"यही लेखक एक अन्य स्थान पर लिखता है—'मिश्र और सीरिया में मुसलमानी विजय के समय ईसाई धर्म का प्रचार था और वह सुगमता से इस्लाम में बदल दिया गया।'

"देखिये पण्डितजी! यह इस्लाम का वह रूप है, जो एक मुसलमान ही वर्णन करता है। यह ठीक है कि वह ऐसे धर्म को श्रेष्ठ और उन्नत धर्म और ऐसा करने वाली समाज को एक उन्नत समाज मानता है, परन्तु यह तो अपने मुख मियाँ मिट्ठू बनने वाली बात है।

"इस समाज और धर्म की धर्म-पुस्तक को महात्मा गांधी अपनी प्रार्थनाओं में पढ़ते हैं। उस पुस्तक और उस धर्म की प्रशंसा करते हैं। इस पर भी आप कहते हैं कि मुसलमान इनसे डरते क्यों नहीं?

"हिन्दू महासभा से मुसलमान डरते हैं, परन्तु उसके विरुद्ध कुछ भी कहने कि उनको आवश्यकता नहीं। हिन्दू महासभा की निन्दा और उसके प्रभाव को निःशेष करने के लिए महात्मा गांधी और कांग्रेसी नेता बहुत कुछ कर रहे हैं।"

नीलकण्ठ ने कहा, "प्रोफेसर साहब! हमने तो इसके विपरीत सुन रखा है। यह बात कही जाती है कि एक मुसलमान का राज्य एक ईसाई अथवा हिन्दू राजा के राज्य से बदरजहा बेहतर होता है।"

"ठीक है! आपका सुना सत्य हो सकता है, परन्तु मैंने जो कुछ कहा है, अपने मन से नहीं कहा और फिर हाथ कंगल को आरसी क्या? आप काश्मीर का इतिहास ही पढ़ लीजिए। जिस प्रकार वहाँ इस्लाम फैला है, वह इतिहास के रक्त-रंजित पन्नों से प्रकट होता है।"

"तो आपका विचार है कि आज के काल में भी मुसलमान वही कुछ कर सकते हैं?"

"साहब! कोहाट, सहारनपुर और मालावार में जो कुछ हुआ है, वह मेरे कथन का समर्थन करता है।

"मैं ये बातें अपने लेखों, पुस्तकों और व्याख्यानों में बताता हूँ। मेरा कहना यह रहा है कि जब तक मुसलमान इस्लाम की तवारीख में इस प्रकार की घटनाओं की निन्दा नहीं करते, तब तक इनसे हम मैत्री कैसे कर सकते हैं? जब तक मुसलमान औरंगजेब की निन्दा नहीं करते, तब तक वे फिर वैसा नहीं करेंगे, इसका क्या भरोसा है? बताइये, मेरा सरकारी नौकरी से निकाला जाना, विस्मयजनक है क्या?"

"बात तो ठीक है। आप सरकारी नौकर नहीं रह सकते थे। जो इस प्रकार घृणा फैलाता है, वह सरकारी कॉलेज में प्रोफेसर नहीं रह सकता।"

"मैं अपने मन से बात तो कभी कुछ कहता नहीं। मैं तो इतिहास लिखने वालों की बातें ही क्लास में पढ़कर सुनाता हूँ। मैं इतिहास का शिक्षक होता हुआ, इन बातों को छुपा सकता ही नहीं। यह काम तो वर्तमान काल के मुसलमानों का है कि वे अपने-आपको उन मुसलमानों से, जिन्होंने पिता, भाई-बन्धु तक को मौत के घाट उतार दिया, अपने से पृथक् करें और उनकी निन्दा करें।

"बात तो यह हो रही है कि वर्तमान काल के मुसलमान औरंगजेब को धर्म-मूर्ति (गाज़ी की उपाधि प्राप्त) मानने लगे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर पिताजी!" सरस्वती ने बात बदलकर कहा—"मैं इनको आपके पास एक प्रयोजन-विशेष से लाई थी।"

"हाँ, तो तुमने पहले क्यों नहीं बताया? देखो सरस्वती! मैं वकील हूँ, ये प्रोफेसर हैं। दोनों में विवाद छिड़ जाना एक स्वाभाविक बात है। अच्छा, तुम बताओ वह क्या प्रयोजन है?"

"ये बतायेंगे।"

पद्मदेव हँस पड़ा। हँसकर बोला, "ये आज मेरे घर पहुँचीं और बोलीं कि मुझसे विवाह करेंगे। इस पर हम सहमत नहीं हो सके। ये कहने लगीं कि इनके पिताजी के पास चलूँ। वे मुझको समझा देंगे। सो मैं चला आया हूँ।"

"तो यह बात है! साथ ही यह हंसने की बात है भी। भाई, विवाह कोई ऐसा विषय नहीं है, जिस पर विवाद हो सके। एक था राजा, एक थी रानी; दोनों ने मिट्टी छानी; मिट्टी का बनाया गारा; गारे से बनाया घर; घर में बनाया चौका और चौके में बनाई रसोई। रसोई रानी ने परोसी और राजा ने खाई। बस हो गया विवाह और उसका अन्त।

"सब संसार करता है। तुम भी कर सकते हो।"

"मतभेद इस विषय पर नहीं था।" पद्मदेव ने हँसते हुए कहा, "मैं तो इसको कह रहा था कि हमको परस्पर समझ लेना चाहिए। समझकर ही विवाह का निश्चय करें। यह कहती है कि इसने मुझको समझा-बूझा है। यह तो तुरन्त विवाह के पक्ष में है; परन्तु मैं एकदम अंधेरे में कूदना नहीं चाहता।"

"अंधेरा कहाँ है? भाई, साढ़े ग्यारह बज रहे हैं और सूर्य सिर पर चढ़ आया है। तुम बेखौफ कूद सकते हो। यह है सरस्वती, पांच फुट चार इंच, ऊंची, सुन्दर, गौर-वर्णीय। बहुत प्यारा मुख है, अत्यंत मधुर स्वर है और फिर अंग-प्रत्यंग में स्फूर्ति है। नृत्य भी बहुत सुन्दर करती है। कल रात इसका नृत्य एस०पी०एस० के० हॉल में हुआ था। हॉल खचाखच भरा हुआ था। रात का समारोह देखने वाले कहते हैं कि टिकटों से प्राप्त दो हजार रुपये की आय हुई है।

"बताओ और क्या जानना चाहते हो?"

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि ये मेरी निष्ठावान पत्नी बनकर रह सकेंगी अथवा नहीं। आज तो मेरे पास पैसा है, कल को वह सब विलीन भी हो सकता है। तब मुझको तथा मेरी पत्नी को आर्थिक कष्ट भी हो सकता है। क्या उस कष्ट में ये मुझको छोड़ तो न जायेगी? मेरे विचार ऐसे हैं कि मैं पंजाब में रह नहीं सकूंगा। कदाचित् हिन्दुस्तान में भी मेरे लिये रहना कठिन हो जाये। तो क्या यह मेरे साथ खाना-बदोश बन यहाँ से चल सकेंगी?

"विवाह कर पत्नी बनाना, तो इन सब बातों पर विचार करने के पश्चात् ही हो सकेगा।"

नीलकण्ठ ने कहा, "पद्मदेवजी! आपको इतिहास का प्रोफेसर किसने बनाया है? आपको तो कोई धर्मगुरु बनना चाहिए। धर्मगुरु लम्बे-लम्बे उपदेश तो दे सकते हैं, परन्तु उन उपदेशों को कर्मों में लाने की उनमें अक्ल नहीं होती।

"देखो यह 'बायौलोजी' (प्राणी शास्त्र) का सिद्धान्त है कि मनुष्य पैदा होता है, बढ़ता है, युवा होता है। युवा होने पर उसमें जनन-शक्ति उत्पन्न होती है और वह सन्तान पैदा करता है। इसके पश्चात् वह समाप्त हो जाता है। उसके जीवन का चरम प्रयोजन सिद्ध हो गया और प्रकृति उसको समाप्त कर देती है। वह बूढ़ा, निकम्मा और शक्तिहीन हो जाता है। बस यह है जीवन की यात्रा, जो प्रत्येक व्यक्ति को पूरी करनी पड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम इस यात्रा में उस मंजिल पर पहुँच गये हो, जहाँ तुममें जनन-शक्ति पूर्ण रूप से आ गई है। जाओ, मैं तुमको आशीर्वाद देता हूँ कि तुम अपने जीवन के चरम प्रयोजन को सिद्ध करो। तुम प्रकृति के विराट नियम का पालन करोगे तो सुख पाओगे।"

इस पर सरस्वती बोल उठी, "अब मान जाइये। इस पर भी मैं वचन देती हूँ कि मैं आपकी सुख-दुःख में निष्ठावान पत्नी बनकर रहूँगी।"

"हाँ; तो प्रोफेसर साहब! मैं आपसे कुछ पृथक् में बात करना चाहता हूँ। जाओ सरस्वती! तुम अपनी माँ से कह दो कि तुम्हारा विवाह आज होगा।"

सरस्वती उठी और कोठी के भीतर चली गई। उसके भीतर जाते ही उसके गाने का स्वर आने लगा।

वह सारंग के स्वर गाने लगी थी। उसने एक आलाप गाया और एक बोल गा दिया—

"घर आयो हैं नन्दलाल,
वे सुन्दर श्याम मुरली बजावें,
अखियन डारत हैं गुलाल—घर आयो हैं नन्दलाल।'

: 7 :

सरस्वती के गाने को दोनों सुनने लगे। वह गाती हुई दूर अपने कमरे में चली गई। इस पर नीलकण्ठ और पद्मदेव दोनों हँस पड़े। हँसकर नीलकण्ठ ने कहा, "देखो पद्मदेव! तुम्हारा भविष्य के विषय में चिन्ता करना ठीक ही है। इस पर भी मैं तुमको अपने अनुभव की बात कहता हूँ। स्त्री का निष्ठावान रहना पुरुष के अपने व्यवहार पर निर्भर करता है। उसकी तीन भूख हैं—काम, लोभ और मोह। कोई विरली होती है, जो क्रोध और अहंकार के वश होती है। मैं तुमको आश्वासन देता हूँ कि सरस्वती में ये दो अवगुण हैं। भविष्य में कुछ अन्य परिस्थितियों से उत्पन्न हो जायें तो कह नहीं सकता, परन्तु अभी तक यह उनसे अछूती है।

"काम जवानी की देन है। लोभ और मोह तो स्त्री जाति के स्वभाव में है। मैं यह समझता हूँ कि तुम्हारे पास इन तीनों भूखों को तृप्त करने की पूरी क्षमता है।

"मुझको यह विश्वास है वह तुम्हरी बहुत अच्छी पत्नी बनेगी। तुम बताओ, और कुछ क्या चाहते हो?"

"यदि आप समझते हैं कि यह मेरी पत्नी बनने योग्य है, तो मैं इसे स्वीकार करता हूँ। मेरे माता-पिता नहीं हैं, कुछ मित्र हैं। वे सब यहाँ लाहौर में ही हैं। कोई सम्बन्धी ऐसा नहीं, जिससे राय करने की आवश्यकता हो।"

"तब तो और भी ठीक है। इस अवस्था में तो विवाह आज सायंकाल से पूर्व ही हो जाना चाहिए। मित्रों को भोज सुविधानुसार दिया जा सकता है। मेरा प्रश्न तो यह था कि तुम कितने दहेज की आशा करते हो?"

"दहेज की न मैं आशा करता हूँ, न ही इच्छा। आपकी कृपा से मैं, आपसे बिना एक पैसा भी लिए, अपने, सपत्नीक निर्वाह के लिए पर्याप्त साधन रखता हूँ।"

"तब तो ठीक है। अब तुम जा सकते हो। सायं चार बजे, यदि इच्छा हो तो, कुछ मित्रों को लेकर आ जाना। विवाह हो जायगा। पश्चात् यहाँ भोजन होगा और फिर विदाई हो जायगी। आज रात से ही तुम्हारा विवाहित जीवन आरम्भ हो जायेगा।"

पद्मदेव इस हलबुली का अर्थ नहीं समझ सका और कुछ विचार करता हुआ बैठा रहा। इस पर नीलकंठ ने गम्भीर हो कहा, "हाँ; एक बात विवाह से पूर्व मैं तुम्हें बता देना चाहता हूँ। वह यह कि सरस्वती मेरी लड़की नहीं है। इस पर भी यह मुझको अति प्रिय है।

"मैं शिमला से कंडाघाट पर जा रहा था। यह आज से इक्कीस वर्ष पूर्व की बात है। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था, मेरी पत्नी थी और महादेव, हमारा लड़का, जो उस समय तीन वर्ष का था। मार्ग में एक बीहड़ जंगल पड़ता है। हम उसमें से होकर जा रहे थे कि एक नवजात शिशु के रोने का स्वर सुनाई दिया। हम ठहर गये और सुनने लगे। एक पेड़ के नीचे, एक कम्बल के टुकड़े में लपेटी हुई यह मिली। महादेव की माँ ने लपक कर इसे उठा लिया। वहीं हमने अपना सामान, जो टट्टुओं पर साथ ही था, खुलवाया स्टोव जलाकर डिब्बे का दूध बनाया। इसको चम्मच से दूध दिया तो यह पीने लगी।

"हम वहाँ किसी को भी न देख, इसे ले आये। तब से ही यह हमारे साथ है। मैंने इसका अपनी लड़की की भांति पालन-पोषण किया है। हमारा स्नेह इससे ऐसा है कि न तो इसको बताने की आवश्यकता पड़ी है कि यह हमारी जन्म-जात लड़की नहीं है, न ही इसकी शिक्षा-दीक्षा में हमने संकोच किया है।

"तुमको यह रहस्य बता रहा हूँ, जिससे कभी किसी समय इसका उद्घाटन हो जाये तो तुमको गिला न हो सके।"

पद्मदेव विचार कर रहा था कि वह स्वयं भी तो अन्तर्जातीय विवाह-सम्बन्ध का परिणाम है। उसकी भी, बनी हुई माँ ने लालन-पालन में कमी नहीं रखी थी। इसलिए उसके मन पर इस कथा का प्रभाव नहीं पड़ा। इस पर भी वह चाहता था कि दो-चार दिन ठहर कर विवाह होता तो ठीक था। वह भी इसके लिए कुछ तो तैयारी करता। वह इस विषय में कुछ कहने का विचार कर ही रहा था कि प्रौढ़ा स्त्री कोठी के भीतर से आई और इनके समीप खड़ी होकर पूछने लगी, "तो आपने सरस्वती को विदा करने का निश्चय कर लिया है?"

"हाँ!" नीलकण्ठ ने कह दिया और साथ ही उसने पद्मदेव को उस स्त्री का परिचय दे दिया—"यह है सरस्वती की माँ। मेरा मतलब है मेरी स्त्री। और यह हैं," नीलकण्ठ ने पद्मदेव की ओर संकेत कर कहा, "पण्डित पद्मदेव, तुम्हारे होने वाले दामाद।"

पद्मदेव ने उनके कथन का संशोधन कर दिया। उसने कहा—"पद्मदेव! मैं ब्राह्मण नहीं हूँ। मेरे पिता क्षत्री थे। हम जाति के खन्ना हैं।"

"आप कर्म से ब्राह्मण हैं आप निःसंकोच अपने को पद्मदेव शर्मा कह सकते हैं, यह मेरा 'फतवा' है।"

पद्मदेव हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "मैं एक निवेदन आपसे करना चाहता हूँ। वह यह कि यदि विवाह कुछ दिन ठहर कर हो तो क्या ठीक नहीं होगा?"

"प्राणी शास्त्र के सिद्धान्तानुसार तो ठीक न होगा। मैं यह मानता हूँ कि जब काम का आवेग हो, तब सम्भोग होना ही चाहिए। मनुष्य-समाज के जीव होने से कुछ विधि-विधान तो करना ही होगा, परन्तु उसको प्रकृति के विरोध में लाने की आवश्यकता क्या है?"

"परन्तु पण्डितजी! आपका यह प्राणी-शास्त्र तो इतर जन्तुओं के अध्ययन पर लिखा गया है। आप इसका मुझ पर बार-बार प्रयोग न करें तो ठीक ही होगा।"

"ओह! तो नाराज हो गये हो! देखिये पद्मदेवजी। वस्तु-स्थिति यह है कि मनुष्य में पशुपन का अंश अभी भी बहुत बड़ी मात्रा में विद्यमान है। कभी तो मनुष्यता पशुपन के साथ-साथ समान्तर रेखाओं में चलती है। तब तो हम पशुता के साथ खिलवाड़कर सकते हैं और कभी ये दोनों एक-दूसरे को काटने वाली रेखाओं में चलने लगती हैं। तब पशुता की अवहेलना करना उचित नहीं। मानवता तो बुद्धि के अधीन रहती है। पशुता बुद्धि का विरोध करती है। ऐसी अवस्था में बुद्धिशील व्यक्ति मानवता की दिशा मोड़, उसको पशुता से समानन्तर दिशा में कर देता है।

"बुद्धिमानों का यही काम है। इसमें ही उनकी सफलता निश्चित होती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो आपके कहने का अर्थ यह है कि मानवता को पशुता की दिशा में कर देना चाहिए।"

"नहीं; मानवता तो मानवता ही रहती है। यह जिस दिशा में भी प्रवाहित होती है; उसको हरा-भरा, पुष्पित और सुरभित करती जाती है। यह पशुता को भी मानवता बनाती चली जाती है।"

पद्मदेव उनकी कोठी से उनकी मोटर में ही लौट आया। अपनी कोठी में पहुँच, उसने पांच पत्र, अपने पांच मित्रों को लिखे। उनमें अपने विवाह की सूचना तथा उसका समय लिखकर आग्रह किया कि वे ठीक समय पर सपत्नीक आ जायें। पत्र भेज, स्नानादि से निवृत होकर, वह एक बार पुनः विचार करने लगा कि यह क्या है, जो उसको धकेलता हुआ एक जीवन-विशेष में प्रवेश करा रहा है।

उसकी नौकरी छूटी और एक नवीन प्रकार की, परन्तु मधुर, नौकरी लग रही है। वह किसी भाग्य-चक्र से विवश हो, एक मार्ग पर चलने जा रहा है। यह सब क्यों, किस कारण और किस अर्थ हो रहा है? वह मन में विचार करता था कि सरस्वती यदि इतनी सुन्दर न होती, जितनी है, तो क्या तब भी वह उससे और इतनी हलबुली में विवाह के लिए तैयार हो जाता? यह बात उसको स्वीकार नहीं थी। वह उसके सौन्दर्य और अन्य गुणों की अवहेलना तो कर चुका था। सरस्वती जो कुछ उसी समय चाहती थी, वह उस पर विजय प्राप्त कर सका था। इसके अतिरिक्त जब वह उसके साथ मोटर में, उसके पिता की कोठी पर जा रहा था, तब वह मनमें निश्चय किये हुए था कि विवाह के विषय में विचार करने के लिए समय माँगेगा; परन्तु पण्डिल नीलकंठ के सामने उसकी एक न चली। वह उसके कहने को टाल न सका। यह क्या हुआ? जहाँ पण्डित नीलकंठ उसके इतिहास-विषयक प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सका, वहाँ वह पण्डितजी की, विवाह-सम्बन्धी युक्तियों का प्रतिकार नहीं कर सका।

वह एक ही बात समझ सका कि पण्डित नीलकंठ एक योग्य वकील है। वह एक प्रोफेसर को वैसे ही भ्रम में डाल सका है, जैसे जजों को प्रायः वकील समझा देते हैं।

इस पर भी पद्मदेव अनुभव करता था कि इस विवाह के निश्चय में उसके मन में भी उल्लास था। एक उमंग थी और इससे उसमें विशेष स्फूर्ति का प्रादुर्भाव हो रहा था। वह अपने मन की अवस्था को, जितना ही समझने का यत्न करता था, उतना ही उसको विश्वास होता जाता था कि यह अवस्था अवर्णनीय है। वह उसके अधीन ही कार्य कर रहा है।

उसने अपने सेवक को चिट्ठियाँ दे आने के लिए भेज दिया था। अतः स्वयं अपने भोजन का प्रबन्ध करने लगा। उसने 'कपबोर्ड' में से डबल रोटी निकाली, टुकड़े किये और फिर उनको स्टोव पर टोस्ट बना, मक्खन लगाकर खाने लगा।

भोजन से निवृत्त होकर, उसने अपने नये कपड़े निकाले—धोती, कुरता, पगड़ी, जुराबें और जूता। सब ठीक कर उसने अपनी पत्नी के कपड़ों के विषय में विचारा। मन में यह सोच कि अपने पिता के घर से कुछ तो पहन कर आयेगी ही, शेष यहाँ आकर बनवा लेगी। वह अन्य प्रबन्ध करने लगा।

इसके पश्चात् वह उसके कोठी में रहने का स्थान, पढ़ने का तथा संगीत आदि के अभ्यास का स्थान और फिर सोने का स्थान, इन सब विषयों पर विचार करने लगा। इस विषय में योजना बनाते हुए उसको अपने में अनुपम उद्यम की अनुभूति होती थी।

अपने रहन-सहन के विषय में उसने कभी भी ध्यान नहीं दिया था। जो कुछ नौकर ने कर दिया, वह उसे ठीक ही प्रतीत होता था। पर आज उसे घर के प्रबन्ध का विषय अति रुचिकर प्रतीत हो रहा था। जब नौकर निमन्त्रण-पत्र देकर आया तो उसने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विचारानुसार प्रबन्ध करना आरम्भ कर दिया। इसमें तीन बज गये। उसने अपने मित्रों को तीन बजे ही बुलाया हुआ था और वह सब, पद्मदेव के स्वभाव से परिचित होने के कारण, तीन बजने में कुछ मिनट रहते ही आ गये।

शिवलाल अपनी पत्नी और एक बच्चे के साथ अपनी मोटर में आया था। अन्य तांगों में सवार होकर वहाँ पहुँचे। कुल पुरुष-स्त्री, बच्चों को मिलाकर, बीस प्राणी एकत्रित हो गये। पद्मदेव ने तांगा स्टैंड पर नौकर भेजकर चार तांगे मंगवा लिये।

शिवलाल की पत्नी रामप्यारी पद्मदेव से भली-भांति परिचित थी। पद्मदेव कई बार उनके घर जा चुका था। उसने आते ही कहा, "भैया! बहू को पहले दिखा तो देते और फिर आज का पता होता तो कुछ उसको भेंट देने के लिए ला सकते।"

"यह प्रोफेसर घोंघा है, भाभी!" सुदर्शन कुमार ने हँसते हुए कहा, "देख लेना, कोई अति कुरूप होगी, जो किसी को दिखाने में लज्जा अनुभव करता है।"

सुदर्शन की पत्नी साधना बोल उठी, "मेरा विचार इनसे भिन्न है। भैया के विचार में वह इतनी सुन्दर है कि नजर लग जाने के भय से ही छुपाये हुए हैं पर दादा! नजर तो अब भी लग जायेगी। भला अब क्या करोगे?"

"साधना बहन! मैं उसको नजर पट्टू बांधने के लिये दे आया हूँ। अब वह किसी की कुदृष्टि में नहीं आ सकती।"

"पर यह हुआ कैसे?" सुदर्शन ने पूछ लिया, "कल नृत्य-समारोह में तुम मिले तो थे। उस समय भी नहीं बताया कि आज हमको बधाई देने आना पड़ेगा।"

"सुदर्शन भैया! तुम देखोगे तो सब समझ जाओगे। मेरी इस अधीरता और लुकाव-छुपाव का कारण स्पष्ट हो जायेगा। अब तो यह सुनो कि इस विवाह का प्रस्ताव आज प्रातः दस बजे पहुँचा, बारह बजे निर्णय हुआ और तुरन्त ही उन मित्रों को जिन पर मुझको पूर्ण भरोसा था, निमंत्रण भेज दिया। इस समय में, मैं उसके स्वागत के लिए कुछ विशेष प्रबन्ध भी कर नहीं सका। अपनी बहनों तथा भाभियों को इस कारण बुलाया है कि कुछ तो मुझको बता दें कि क्या करूं?"

पद्मदेव का नौकर सरस्वती के लिए सोने का कमरा ठीक कर चुका था। सब मित्र, विशेष रूप से उनमें स्त्री वर्ग भीतर चले गये। देख-देख कर सब अपने-अपने विचार से कमरे में संशोधन बताने लगे।

सबकी बातें सुन कर पद्मदेव हँसते हुए बोला, "यदि मैं सभी के सुझाव स्वीकार करूं तो एक तो मुझको विवाह स्थगित करना पड़ेगा क्योंकि श्रीमती जी के आने तक तो यह सब सुझाव कार्य-रूप में नहीं लाए जा सकते। दूसरा यह कमरा एक फर्नीचर की दुकान बन जावेगा। इतनी वस्तुएँ तो यहाँ रखी ही न जा सकेंगी।"

सब हँसे और अंत में यह प्रस्ताव स्वीकार हुआ कि घर की मालकिन को स्वयं अपने विचारानुसार, कमरे को सजाने की स्वतंत्रता प्रदान की जाये। इस पर साधना ने पूछ लिया, "पर भैया, इस हलबुली में कुछ उसके लिये भूषण बनवाये हैं अथवा नहीं?"

"इसके लिए समय ही कहाँ था?"

"और भोजन बनाकर खाने का समय था। देखो, कुछ रुपया दो। मैं भाभी के लिये एक मंगल-सूत्र तो ले आऊं?"

"आज दुकानें खुली होंगी क्या?" रविवार है।"

"ओह! तुमने यह सब कुछ आज ही क्यों किया?"

"मैं ने कुछ नहीं किया। बात यह है कि कोई बलपूर्वक यहाँ आने की योजना बना बैठी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तांगे आये और पांचों परिवार उनमें सवार होकर पंडित नीलकंठ एडवोकेट हाईकोर्ट, पंजाब, की कोठी पर जा पहुँचे। कोठी को इस समय तक सजा दिया गया था। कोठी के प्रांगण में वेदी भी बनाई जा चुकी थी। घर के नौकर-चाकर तथा कुछ मित्र, जो जल्दी-जल्दी में बुलाए जा सके थे, यह सब प्रबन्ध कर रहे थे।

पद्मदेव और उसके साथ बारातियों के आने पर उनको बरामदे में लगी कुर्सियों पर बैठाया गया। उनको जलपान कराया गया। भीतर आँगन में वेदी तैयार हो चुकी थी और जलपान के पश्चात् सब वहाँ जाकर बैठ गये। रामप्यारी यद्यपि आयु में पद्मदेव से छोटी थी, फिर भी वह उसकी माँ अथवा बड़ी भावज का काम कर रही थी। सरस्वती की माँ ने एक ओर बुलाकर उससे पूछ लिया, "आप लड़की के कुछ वस्त्र-भूषण लाई हैं, अथवा नहीं?"

"आपने विवाह का निश्चय रविवार को किया और उसी दिन विवाह सम्पन्न हो रहा है। अतः हम तो कुछ भी नहीं ला सके। आप ऐसा कीजिये कि एक उचित जोड़ा कपड़े और आभूषण हमारे पास भेज दीजिये। हम अभी उसका दाम दे देंगे। आप वे कपड़े और भूषण लड़की को पहना दीजिएगा।"

यह बात सरस्वती की माँ को पसन्द आई। वह रामप्यारी को सरस्वती के कमरे में ले गई। सरस्वती ने अपने विवाह के समय पहनने के लिए लाल रेशमी सलवार, कुरता, दुपट्टा निकाला हुआ था। साथ ही गले की कंठी, कानों के कर्णफूल, हाथों की चूड़ियाँ और सिर पर बांधने का टीका निकाल रखा था और स्वयं पहिनने को तैयार बैठी थी। उसके सामने ही, अनुमान से सब का मूल्य एक सहस्र रुपया बता दिया गया। रामप्यारी बाहर आई और अपने पति को अपनी मोटर में घर भेज, रुपया मंगवा लिया। पन्द्रह मिनट में सब रुपया देकर सरस्वती को विवाह की वेदी पर बैठाने के लिए तैयार कर लिया गया।

जब सरस्वती वेदी पर बैठने के लिए आई तो सुदर्शन खिलखिलाकर हँस पड़ा। वह पिछले दिन की नर्तकी तथा गायिका सरस्वती को पहचान गया। "दादा!" उसने कहा—"विवाह के पूर्व ही जयमाला डालने की बात समझ में आ गई है।"

नवगृह पूजा हुई, विवाह पढ़ा गया और अग्नि के फेरे लेने पर सब ओर से बधाई मिल गई। इस समय तक साढ़े पांच बज चुके थे। बाहर लॉन में भोजन का प्रबन्ध हो गया था। बाजा भी आ गया था।

खाना-पीना हुआ और पद्मदेव सरस्वती को मोटर में ले अपने मित्रों के साथ, बाजा बजवाता हुआ, अपनी कोठी पर आ पहुँचा।

भोजन तो सब पेट-भर खा आये थे। इस कारण केवल पान-सुपारी पर ही बल दिया गया। रात को नौ बजे मित्र और उनके बाल-बच्चे विदा हुए। सब ने बल देकर यह निश्चय करा लिया कि मंगल की सायंकाल पद्मदेव , अपने विवाह के उपलक्ष्य में एक बहुत बड़ा भोज देगा।

जब सब चले गये और पद्मदेव उनको विदा कर 'ड्राइंग-रूम' में सरस्वती के पास आया तो वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। हँसते हुए वह कहने लगी, "यह मेरी पहली विजय है। किसी समर में पहली विजय ही सबसे कठिन होती है। इसमें मुझको पिताजी की सहायता लेनी पड़ी है। आशा है अब आगे, मुझको उनकी सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।"

पद्मदेव ने पहली बार सरस्वती का हाथ पकड़कर कहा, "मैं तो यह समझता हूँ कि तुम्हारी विजय तो पिताजी के हस्तक्षेप से भी पहले ही हो चुकी थी। जब मैं स्टडी-रूम से निकल बाहर लॉन की ओर भागा था, मैं तो तब ही पराजित हो चुका था। यह जो कुछ पीछे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ, वह तो परास्त सेना की मानयुक्त 'रिट्रीट' (अभियान) मात्र ही माननी चाहिए।''

''ओह! तो यदि मैं उस समय थोड़ा और यत्न करती तो आप पूर्ण रूप से परास्त हो जाते और पिताजी की सहायता माँगने के स्थान पर, उनके सम्मुख अपनी विजय की घोषणा करने के लिए जाती।''

''परन्तु क्या वे इससे प्रसन्न होते?''

''हाँ; मैं उनके विचार जानती हूँ। वह अब से अधिक प्रसन्न होते।''

''मुझको संदेह है। मैं समझता हूँ कि वे इस पूर्ण घटना को ऐसा समझते कि तुम मुझसे परास्त हो, उनके सामने हारे हुए मुकदमे की सफाई देने आई हो।

''यूं तो इस घटना का एक दूसरा भी दृष्टिकोण है। वह यह कि तुम आज से बहुत पहले ही मुझसे परास्त हो चुकी थीं। तुम अपनी पराजय को स्वीकार करने आज आई थीं। मुझको, स्त्री जाति के साथ हार्दिक सहानुभूति रखने के कारण, तुम्हारा अपमान रुचिकर न था। इस कारण अपनी विजय का फल भोगने के लिए उतावली रखते हुए भी, मैं तुम्हारा अपमान नहीं कर सका। यदि आज अपनी वासनामय इच्छाओं की पूर्ति कर लेता तो निःसंदेह तुम अपमानित हो जातीं। उक्त परिस्थिति में, तुम्हारे लिए मानयुक्त स्थान बनाने के लिए, मैंने विवाह का आयोजन किया था।

''बताओ, यह दृष्टिकोण ठीक नहीं क्या?''

सरस्वती हँस पड़ी और बोली, ''आप इस समय फिर मीमांसकों की भांति विवेचना करने लगे हैं। यह ठीक है या वह ठीक है? यह रुचिकर है, अथवा वह रुचिकर है? मैं पराजित हुई अथवा आप पराजित हुए हैं? इस प्रकार आप तो बाल की खाल उतारने लगे हैं। मैं यह पूछ रही हूँ कि अब क्या कार्यक्रम है?''

''ओह! मैं तो यह भूल ही गया था। अब बताओ सोना चाहिए न?''

इस पर सरस्वती हँसती हुई भागकर अपने कमरे में चली गई। पद्मदेव उसके पीछे कमरे में जाने लगा, तो उसने दरवाजा बंद कर, भीतर से सांकल लगा दी। पहले तो पद्मदेव युद्ध में इस चाल का अर्थ नहीं समझा। फिर कुछ विचार कर वह रसोईघर में गया। इलैक्ट्रिक जग में पानी गर्म कर कॉफी बनाने लगा। कॉफी बना, एक ट्रे में दो प्याले रख, सरस्वती के कमरे के बाहर जा खड़ा हुआ। उसने दरवाजे खटखटाने के लिए हाथ दरवाजे पर रखा, तो देखा वह खुला था।

जब वह कॉफी बना रहा था, तब सरस्वती ने सांकल खोल दी थी और कमरे में रोशनी बुझा दी थी।

जब पद्मदेव ने बिजली जलाई और कमरे में प्रकाश हो गया तो उसने देखा कि सरस्वती सिर-मुख चादर से छुपाये लेटी है। पद्मदेव ने कहा—''श्रीमती रानी साहिबा के लिये सेवक कॉफी लाया है।''

इस पर तो सरस्वती खिलखिलाकर हँस पड़ी और थोड़ी-सी चादर उतार देखने लगी कि सत्य ही कॉफी आई है अथवा मजाक है। उसने देखा कि 'ट्रे' में कॉफी के दो प्याले रखे, आदरयुक्त मुद्रा में पद्मदेव खड़ा है। उसकी हँस बंद हो गई और बोली, ''तो आपको यह पीने का अभ्या है? आपने पहले क्यों नहीं बताया?''

''मैं यह केवल उस रात ही पीता हूँ, जिस रात देर तक काम करना होता है। कुछ यह समझ में आया था कि रानीजी के द्वार पर, बाहर ही रात-भर बैठना पड़ेगा। इसलिये कॉफी बना डाली। द्वार के बाहर पहुँचने पर पता चला कि द्वार खुला है। सो रानीजी को भी अपने इस कार्यक्रम में सम्मिलित करने के लिये आया हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सरस्वती उठ बैठी और हाथ बढ़ा, कॉफी पकड़ने लगी तो पता चला कि वह अवस्त्र बिस्तर में लेटी थी।

अगले दिन पद्मदेव तो अपने स्वाभावानुसार चार बजे उठ बैठा और कॉफी बना, पी काम पर लग गया। सरस्वती देरी से सोने के कारण अभी सो रही थी।

दिन के नौ बजे सरस्वती उठी और स्नानादि से अवकाश पा प्रातः का अल्पाहार लेने के लिये खाने के कमरे में आई तो वहाँ पद्मदेव बैठा प्रतीक्षा कर रहा था—"तो जाग पड़ी हैं रानीजी?"

"देखिये जी! मुझको रानीजी कह मत बुलाया कीजिये।"

"तो कैसे बुलाऊं?"

"सरस्वती! क्या यह नाम अच्छा नहीं?"

"अच्छा तो है, यदि पसन्द हो तो। अच्छा सरस्वती! यह हमारे संयुक्त जीवन का पहला दिन है। इसको किस प्रकार व्यतीत करना चाहती हो?"

"आज तो लोग आपको और मुझको मिलने आते रहेंगे। आप नौकर को समझा दीजिये कि आये हुओं को जलपान कराता रहे।"

सरस्वती के पिता ने अपनी लड़की के विवाह का समाचार 'ट्रिब्यून' में छपवा दिया था और दस बजे तक पद्मदेव को टेलीफोन पर बधाइयाँ आने लगी थीं। ग्यारह बजे के लगभग पण्डित नीलकण्ठ और उनकी धर्म-पत्नी स्वरूपवती और भाई महादेव आ गये। रात को विदा करते समय तो उन्होंने कुछ नहीं दिया था। अब वे सरस्वती के लिए बहुत-से वस्त्र, आभूषण, उसकी पढ़ने की पुस्तकें और उसके संगीत-नृत्य के उपकरण लेकर आये थे। सब सामान ट्रक में से उतरवा, बरामदे में रखवा कर, वे भीतर चले आये। सरस्वती, जो सामान का रखना देख रही थी, अपनी माँ के साथ अपने सोने के कमरे में चली गई और पण्डित नीलकंठ तथा महादेव, ड्राइंग-रूम में पद्मदेव के साथ जा बैठे। बैठते हुए नीलकंठ ने कहा, "यह विवाह इतने कम नोटिस पर हुआ है कि न तो मैं ही कुछ तैयार कर सका, और न ही मेरे मित्र-सम्बन्धी सरस्वती को कुछ भेंट दे सके। मित्र और सम्बन्धी तो अपने-आप यहाँ आते रहेंगे। मैं जो कुछ भी सरस्वती को देना चाहता था, उसके लिए नकद लाया हूँ।"

इतना कह नीलकंठ ने एक चैक पद्मदेव के नाम, बीस हजार रुपये का, जेब से निकालकर देते हुए कहा—"इससे जो कुछ भी तुमको पसन्द हो, खरीद लेना। और हाँ, एक बात और है।"

नीलकंठ ने आवाज दी, "करीम! ओ करीम!!"

एक चालीस वर्ष के लगभग आयु का पुरुष भीतर आया तो नीलकंठ ने कहा, "अपनी बीवी को बुलाओ।"

करीम अपने साथ एक अति सुन्दर, परन्तु प्रौढ़ावस्था की स्त्री को ले आया। दोनों को सामने खड़ा कर नीलकंठ ने कहा, "ये मेरे घर पर अठारह वर्ष से नौकर हैं। यह करीमन सरस्वती को बचपन से ही खेलाती रही है। इसका लड़की के साथ बहुत नेह हो गया है। यह चाहती है कि इसको आप नौकर रख लें। यूं तो यह सरस्वती की स्वीकृति ले चुकी है, परन्तु मैं समझता हूँ कि आपकी स्वीकृति भी आवश्यक है।"

"सरस्वती की इच्छा मेरी इच्छा है। यदि वह चाहती है तो यहाँ रह सकेगी। वेतन जो आप देते हैं, इसे मिल जाया करेगा।"

"यह करीम तो मेरी कोठी पर चपरासी का काम करता है। यह वहाँ ही काम करेगा। इसको तुम इसकी बीवी के पास आ कर रहने का प्रबन्ध कर देना। कभी करीम यहाँ रहेगा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कभी करीमन वहाँ चली जाया करेगी।"

"इसका प्रबन्ध भी हो जायेगा। मुझको कोठी के पिछवारे में एक कोठरी बनवानी पड़ेगी। शीघ्रातिशीघ्र बनवा दूँगा।"

"और बताओ रात झगड़ा तो नहीं करती रही सरस्वती?"

"जी नहीं, इसकी तो आशा भी नहीं थी।"

करीम तो बाहर चला गया और करीमन भीतर सरस्वती के कमरे में चली गई।

इसके पश्चात् नीलकंठ ने पूछा, "अब क्या काम करने का विचार है?"

"काम तो बहुत है, परन्तु कुछ दिन विचार करने के पश्चात् ही निश्चय करूंगा। मैं यह भी विचार कर रहा हूँ कि आखिर इस लाहौर को कोन सुरखाब का पर लगा हुआ है। दुनिया लाहौर से बहुत बड़ी है। कहाँ अपना कर्म-क्षेत्र बनाऊं, यह भी निश्चय करना है।"

"किसी अन्य कॉलेज में काम पाने का यत्न कर लो।"

"अब नौकरी करने को मन नहीं करता। इस पर भी लिखने-पढ़ने का काम ही तो करना होगा। मैं किसी अन्य काम के योग्य नहीं हूँ।"

"अच्छी बात है विचार कर लो। यदि कहीं सिफारिश आदि की आवश्यकता हो तो बताना। मैं कछ तो सहायता कर ही सकूंगा।"

"आपका बहुत धन्यवाद है। इस पर भी मेरी धारणा आपको विदित हो जानी चाहिए। सिफारिश से मिलने वाली नौकरी भी भला कुछ पाने योग्य वस्तु है?"

नीलकंठ इत्यादि चले गये तो पद्मदेव ने डायरेक्टर ऑफ एजूकेशन को टेलीफोन कर भेंट का समय निश्चय कर लिया। डायरेक्टर ने कह दिया कि उसको दो-दिन तक बहुत काम है। वह बुधवार को साढ़े ग्यारह बजे आ सकता है।"

डायरेक्टर एक विल्जडन नाम का अंग्रेज था। कई वर्षों से वह इस पदवी पर काम कर रहा था। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी का ग्रैजुएट था और पंजाब के भूतपूर्व गवर्नर का सम्बन्धी होने से, उसके जमाने में अच्छी खासी धूम मचा सका था। जब से भारत के विधान में संशोधन हुआ था, वह अपने आप को निस्तेज हो गया अनुभव करता था।

बुधवार के दिन जब पद्मदेव उसको मिलने के लिए वहाँ पहुँचा तो, तुरन्त भीतर बुला लिया गया। पद्मदेव से हाथ मिला, उसको बैठाकर डायरेक्टर ने छूटते ही कहा, "मुझको भारी शोक है कि आपको वह नोटिस देना पड़ा है। आप जानते हैं कि अब हिन्दुस्तान को आँशिक स्वराज्य मिल गया है। मिनिस्टर अयोग्य होते हुए भी विद्वानों के कामों में हस्तक्षेप करते हैं।"

पद्मदेव तो मुंहफट व्यक्ति था। उसने अपने नौकरी से निकाले जाने का दोष हिन्दुस्तानियों को अधिकार मिलने पर, लगते देखकर कह दिया, "परन्तु श्रीमान्! यह अंग्रेजी राज्य के काल की बात ही तो है कि शिक्षा विभाग राजनीतिक नेताओं के अधीन कर रखा है। यह तो सर्वथा विश्वविद्यालय के अधीन होना चाहिए।"

"परन्तु ऐसा तो सब 'डेमोक्रेटिक' देशों में होता है। हाँ, वहाँ पर राजनीतिक नेता इस विभाग में इतना हस्तक्षेप नहीं करते, जितना यहाँ किया जाने लगा है।

"सरकार इस विभाग को धन देती है, तो इसका नियंत्रण अपने हाथ में रखना चाहती है, परन्तु इसका अर्थ यह्र नहीं है कि सरकार पढ़ाने वाले शिक्षकों की पढ़ाई के कार्य में मीन-मेख निकाले?"

"परन्तु क्या इंग्लैण्ड में भी ऐसा हो सकता है?"

"नहीं; वहाँ के विश्वविद्यालयों में प्रोफेसरों की नियुक्ति अथवा निकाला जाना यूनिवर्सिटी का ही काम होता है। यहाँ भी हम यही करना चाहते हैं, परन्तु इस सुधार में तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अभी समय लगेगा। मेरे इस दिशा में सुधारों का मन्त्रीगण विरोध कर रहे हैं।''

''परन्तु ये सुधार तो आपको अपनी जाति के राज्यकाल में ही कर लेने चाहिए थे। क्षमा करें, श्रीमान्! मैं तो यह जानता हूँ कि अंग्रेजी सरकार ने जानबूझकर अपने हाथ में ये अधिकार रखे हुए थे। तब की सरकार, शिक्षकों में अंग्रेजी राज्य के लिए भक्ति में कमी नहीं आने देना चाहती थी। आज की सरकार तो बनी ही फिरकापरस्ती के आधार पर है। अतः यह सरकार फिरकापरस्ती को अधिक और अधिक सुदृढ़ करने के लिए शिक्षा में इस आधार को लाना चाहती है। दोष तो वही है, जो अंग्रेजों के काम में निर्माण हुआ था। अब केवल उसका रूप बदल गया है।

''वर्तमान रूप भी तो अंग्रेजी सरकार ने ही दिया है। उन्होंने ही 'कम्यूनल इलेक्टारेट' (साम्प्रदायिक मतदान) का विधान बनाया है।''

''परन्तु यह तो हिन्दुस्तानी माँग रहे थे। हम इसमें क्या कर सकते थे?''

''यदि यहाँ के बहुसंख्यक लोग डाके डालने का अधिकार माँगें, तो अंग्रेजी सरकार को यह अधिकार दे देना चाहिए क्या? परन्तु मैं तो अपने विषय में ही बातचीत करने आया हूँ।''

''ओह! मैं तो केवल यह बताना चाहता था कि मैं विवश था। अन्यथा मैं तो अपके स्वतंत्र विचारों की प्रशंसा करता हूँ। मुझे मंत्री महोदय की आज्ञा प्राप्त हुए तो दो महीने हो चुके थे। मैंने उनकी आज्ञा को उचित न समझ वापिस भेज दिया था, परन्तु आप जानते हैं कि इस डेमोक्रेटिक संविधान में मंत्री के अधिकार सर्वोपरि हैं। मुझको उसकी आज्ञा माननी पड़ी है।

''मैंने आपको, नोटिस के प्रतिकार में एक मास का वेतन देने की आज्ञा दे दी है। इसके अतिरिक्त, यदि आप चाहें तो आपका नाम किसी अन्य यूनिवर्सिटी में सिफारिश कर भेजा जा सकता है। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार में भी आपकी सेवाएँ स्वीकार की जा सकती हैं।''

''मैं आपकी सहानुभूति के लिए आपका बहुत आभारी हूँ। मैं तो यह जानने के लिए आया था कि आखिर किस कारण मुझको नौकरी से पृथक् कर दिया गया है?''

''यह बात मैं आपको अफसर के रूप में नहीं बता सकता। आपको इसके कहीं प्रयोग की भी स्वीकृति नहीं दे सकता।

''आप हिन्दू विचार रखते हैं और आपके कॉलेज के कुछ प्रोफेसर ही आपके विरुद्ध शिकायतें करते रहते थे। उनकी शिकायतों का मुझ पर तो प्रभाव नहीं पड़ सका, परन्तु मिनिस्टर, एक जनमत से निर्वाचित व्यक्ति होने के कारण, उनके दबाव का विरोध नहीं कर सका।''

पद्मदेव डायरेक्टर के इस प्रकार बातें करने पर विस्मय कर रहा था। इस पर भी वह जानता था कि यह दिखावा-मात्र ही है। यह अंग्रेजों के बोये हुए विष-बीज हैं और इनका यही प्रभाव होना था। अतः इस प्रकार की औपचारिक बातों को छोड़ कहने लगा, ''श्रीमान्! मैंने अभी कहीं नौकरी करने का निश्चय नहीं किया। जब मेरा ऐसा विचार होगा, मैं श्रीमान् की सेवा में पहुँचकर सिफारिशी पत्र प्राप्त कर लूँगा। अब मैं जाने की स्वीकृति चाहता हूँ।''

डायरेक्टर महोदय, पद्मदेव को, अपने वेतन इत्यादि के विषय में किसी प्रकार की माँग उपस्थित न करते देख, विस्मय कर रहा था। वह तो यह समझता था कि पद्मदेव अकारण नौकरी से निकाले जाने के प्रतिकार की माँग करेगा और फिर उस माँग के पूरा न हो सकने पर दावा करने की धमकी देगा। इसी कारण उसने उक्त ढंग से बातचीत चलाई थी, परन्तु पद्मदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को इस विषय में कुछ भी न कहते देख, वह कहने लगा, ''आपको एक मास का वेतन शीघ्र ही मिल जायेगा।''

पद्मदेव ने हल्की हँसी हँसते हुए कहा, ''सागर में तैरने वाले मच्छ-कच्छ ज्वार के भय से नहीं भागा करते, श्रीमान्! ये तीन-चार सौ रुपये मेरे लिए कुछ भी अर्थ नहीं रखते। आपकी कृपा से मेरे पास निर्वाह के लिए पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त यदि मैं निपट निर्धन भी होता, तब भी अपनी आत्मा को न बेच सकता। मैं जो बात जानता, समझता और सत्य मानता हूँ, उसको प्रकट करने में कभी भी नहीं झिझकता। मैं यह जानते हुए ही अपने लेखों में अपने विचार लिखा करता था। मुझको इस बात की पक्की सम्भावना थी कि एक दिन मुझको सरकारी नौकरी से पृथक् होना पड़ेगा।''

यह बात डायरेक्टर से हुई, तो सदा के लिए पद्मदेव का सरकारी नौकरी से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।

घर पर सरस्वती को उसकी इस भेंट का ज्ञान था और वह बड़ी उत्सुकता से इसका परिणाम जानने की प्रतीक्षा कर रही थी। जब पद्मदेव आया तो उसने आते ही पूछ लिया, ''क्या हुआ?''

''वही ढाक के तीन पात। एक अंग्रेज अधिकारी अंग्रेजों के राज्यकाल की महिमा-गान करने लगा था। मैंने उसका मुख बंद किया तो वह विस्मय में मेरा मुख देखता रह गया। मुझको विश्वास है कि वह मन-ही-मन मेरे निकाले जाने पर प्रसन्न है। यदि उस प्रसन्नता में कुछ कमी थी तो मेरे वार्तालाप से वह भी पूरी हो गई होगी।

: 9 :

शिवलाल, सुदर्शन इत्यादि पद्मदेव के कॉलेज के दिनों के मित्र थे। वे सब लाहौर में ही रहने लगे थे। परस्पर मिलते-रहते थे। प्रायः सप्ताह में एक दिन किसी होटल इत्यादि में ही मिलना होता था। पद्मदेव, अपने विवाह से पूर्व तो उनके घरों में आता-जाता रहता था और अपना कोई घर न होने के कारण उनको सदा होटल में ही निमंत्रण देता था। अब विवाह हो जाने के पश्चात् पद्मदेव के घर का द्वार भी मित्रों और उनकी पत्नियों के लिए खुल गया। प्रायः रविवार के दिन पूर्ण मण्डली किसी न किसी मित्र के घर पर एकत्रित हो जाती।

सब मित्रों में सुदर्शन पद्मदेव के अधिक समीप था। वह न केवल मित्र था, प्रत्युत विचारों में भी समीप था। उसने पद्मदेव के साथ ही एम०ए० इतिहास लेकर पास किया था। पास करने के पश्चात् वह डी०ए०वी० कॉलेज में प्रोफेसर हो गया। उसने अपनी नौकरी के अतिरिक्त, स्कूलों के लिए, इतिहास और भूगोल की पुस्तकें लिखने का काम आरम्भ कर दिया था और सदा ही, उसकी एक-न-एक पुस्तक किसी-न-किसी श्रेणी में लगी रहती थी। वह इससे सहस्रों पैदा कर लेता था। इसके अतिरिक्त यूनिवर्सिटी में परीक्षक नियुक्त हो, भारी आय कर रहा था।

सुदर्शन यह मानता था कि इतिहास का अध्ययन राजनीति का आधार बनना चाहिए। बिना इतिहास के तथ्यों को हृदयंगम किये कोई नेता ठीक नेतृत्व नहीं कर सकता।

पंजाब यूनिवर्सिटी की हिस्टोरिकल सोसायटी में दोनों, पद्मदेव और सुदर्शन अपने विशेष विचारों के लिये विख्यात थे। प्रायः अन्य सदस्य इनको उलटी खोपड़ी के व्यक्ति कहते थे। पर जब ये प्रमाण पर प्रमाण देने लगते थे, तो सब चुप रह जाते थे।

एक दिन हिस्टोरिकल सोसायटी में सुदर्शन यह कह बैठा था कि प्राचीन आर्य संस्कृति उच्च कोटि की थी। व्याख्यान तो था भाषा के इतिहास पर और उसमें यह बात प्रसंगवश आ गई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफेसर सुदर्शन का कथन था–"जैसे भाषा के आरम्भिक रूप के विषय में यूरोपीय विद्वान भटक रहे हैं और सत्य परिणामों पर नहीं पहुँच रहे, वैसे ही संस्कृति के इतिहास के विषय में भी है।

"अनन्त खोज के पश्चात् भी ये विद्वान्, जब कोई परिणाम नहीं निकाल पाते, तो इसमें कारण यह होता है कि वे अपनी खोज का आधार ही मिथ्या विचारों को बना कर चलते हैं। एक है डार्विन का विचार कि प्राणीमात्र एक प्रकार के एक कोषाणु वाले जीव 'अमीबा' से उत्पन्न हुए हैं और दूसरे यह कि मनुष्य, सृष्टि के आरम्भ काल में, पशु के समीप था और धीरे-धीरे वह विकास पाता हुआ उन्नति कर रहा है।

"जब वे अपनी खोज में कोई वस्तु अथवा घटना उक्त आधार माने हुए विचारों के विपरीत पाते हैं तो वे उसको छोड़ देते हैं और नवीन खोज आरम्भ कर देते हैं। परिणामतः वे कोल्हू के बैल की भांति एक ही कीले के चारों ओर घूमते-घूमते हताश हो चुप रह जाते हैं। तब वे कह देते हैं कि व्यर्थ के वाद-विवाद के पश्चात् भाषाविज्ञ इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि जो लेख मिलते हैं, वे मानव-वाणी के आरम्भ के विषय में कोई सिद्धान्त का निश्चय नहीं कर पाते। कोलम्बिया यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर स्टरटिंवांट के शब्द इस प्रकार हैं– After much futile discussion linguistics have reached conclusions that the data with which they are concerned, yield little or no evidence about the origin of human speech.

"जब इन्होंने डार्विन के विचार के प्रतिकूल किसी प्रमाण को मानना ही नहीं, तो ये किसी परिणाम पर पहुँच ही कैसे सकते हैं?

"विस्मयजनक बात तो यह है कि जब ये प्रमाणों को देखते हैं तो इनको डार्विन के विचार निराधार प्रतीत होते हैं।

एक विद्वान् ने तो साहस कर कह भी दिया है कि– But the oldest languages, the parental languages, as they are sometimes called, have nothing of the primitive about them. (प्राचीनतम ज्ञात भाषाएँ, जिन्हें बहुधा मूल भाषाएँ कहते हैं, अपने में कुछ भी अविकसितता नहीं रखतीं।)

"डार्विन के तथा विकासवाद के विचार से तो यह होना चाहिए कि पुरानी भाषाएँ कम समृद्ध और उनकी लिपि कम पुष्ट हो, परन्तु उक्त कथन उस विद्वान् का है, जो अपने प्रमाणों का डार्विन के विकासवाद से सामञ्जस्य नहीं कर सका।

"वास्तविक रहस्य जानने के लिए आर्यों की भाषा, धर्म और संस्कृति को आधार बनाकर खोज करनी पड़ेगी। आर्यों की भाषा, धर्म और संस्कृति प्राचीनतम होने पर भी उच्च-कोटि की है।"

उक्त पृष्ठभूमि पर ये वाक्य थे, जो विवाद का विषय बन गए थे। प्रोफेसर सुदर्शन के कथन के पश्चात् कई सदस्य एक साथ प्रश्न पूछने के लिए खड़े हो गये। अध्यक्ष के कहने पर एक-एक कर प्रश्न किया जाने लगा। एक ने पूछा–"आप क्या कार्लमार्क्स की जीवन-मीमांसा से भी आर्य-मीमांसा को श्रेष्ठ मानते हैं?"

"कार्लमार्क्स की भी भला कोई जीवन-मीमांसा है? वह मीमांसा तो दूसरों की कमाई लूट लेने का एक बहाना मात्र है। हाँ, उस बहाने का आधार है नास्तिकवाद, जो यूरोप के कई मीमांसकों द्वारा प्रतिपादित है। भारतीय आस्तिकवाद का आधार है आत्मा। प्रायः भारतीय मीमांसक यह मानते हैं कि प्राणी में एक आत्मा नाम का पदार्थ विद्यमान रहता है, जो कर्म का कर्त्ता है और कर्म-फल का भोक्ता है। यह शरीर इस पृथ्वी पर बनता-बिगड़ता है। अन्य लोकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में इस शरीर के अन्य रूप होते हैं। पर आत्मा सबमें एक समान है। वह अपने कर्म-फल के अधीन भिन्न-भिन्न लोकों में और भिन्न-भिन्न प्रकार के शरीरों को प्राप्त करता रहता है।

"कुछ यूरोपीय मीमांसक एक आदि प्रकृति (प्रिमौर्डियल मैटर) नाम के पदार्थ से, भूमण्डल की सृष्टि हुई मानते हैं। इसमें जीवधारी भी हैं। वे जीवन को उस प्रकृति की एक विशेष अवस्था-मात्र मानते हैं। उस अवस्था में यह जीव कर्म करता है।

"कार्लमार्क्स की कथित जीवन-मीमांसा और मानव-इतिहास, इन्हीं नास्तिकों की मीमांसा की व्याख्या है।"

"भारतीय जीवन-मीमांसा क्या है और वह विकासवाद से कैसे विलक्षण है?" दूसरा प्रश्न था।

"भारतीय मीमांसक यह मानते हैं कि यहपूर्ण चराचर जगत पर-ब्रह्म-परमात्मा नाम के पदार्थ का रूप-रूपान्तर है। वह पर-ब्रह्म नाम का पदार्थ सत्, चित्, आनन्दमय है। इसके इन तीनों गुणों में से कोई गुण सुषुप्ति अवस्था में हो जाता है तो फिर वह पदार्थ केवल सत् गुण वाला अथवा सत् तथा चित् गुण वाला रह जाता है। इस सुषुप्ति अथवा आंशिक सुषुप्ति अवस्था में इसके रूपों को प्रकृति अथवा जीव कहते हैं। जीव की अवस्था में यह कर्म करता है और उस कर्म फल का भोग भी करता है।

"साथ ही, भारतीय मीमांसकों ने इस सुषुप्ति अवस्था को भंग करने के उपाय भी बताये हैं। आस्तिक और नास्तिकवाद में अन्तर उस आदि पदार्थ के गुणों में है। नास्तिक इस पूर्ण चराचर को एक चित् और आनन्द रहित पदार्थ मानता है। इसके विपरीत आस्तिक इसको चित् और आनन्दमय मानता है। इन दो शब्दों के अन्तर से आगे की पूर्ण व्याख्या में अन्तर पड़ जाता है।

"भारतीय मीमांसक सृष्टि की उत्पत्ति के समय ही सब प्रकार के जीवों की उत्पत्ति मानते हैं। वर्तमान ढंग का शरीर भले ही पीछे, जब पृथ्वी को बने पर्याप्त समय व्यतीत हो चुका था, बना हो, परन्तु जीव की सृष्टि-पृथ्वी के बनते ही, कदाचित् अन्य लोकों में उससे भी पूर्व रही है। जब ही जीव की सृष्टि हुई, तब ही वह चेतन होने के कारण स्वतन्त्रता से कर्म करने और उसका फल पाने के योग्य रहा है।

"विकास का प्रश्न जीव की सृष्टि होने के प्रश्न से पृथक् है। यह मानना कि पहले पशु बने, पीछे धीरे-धीरे, विकास पाते-पाते मनुष्य बन गया, प्रमाण रहित है। इसके विपरीत देखने में यह आ रहा है कि मानव की शारीरिक व मानसिक शक्तियों में ह्रास का होना है। प्राचीनतम भाषा, जो हमें ज्ञात है, वैदिक संस्कृत है। वह ग्रीम, लैटिन इत्यादि, पीछे आई भाषाओं से अधिक समृद्ध और भाव प्रकट करने के अधिक योग्य है। हेब्यू, ग्रीक इत्यादि भाषाओं से जर्मन, फ्रैंच इत्यादि पीछे आने वाली भाषाएँ, अक्षरों और शब्दों के विचार से कम मधुर और कम भावपूर्ण है। इसी प्रकार संस्कृत के पश्चात् भारत में प्रचार पाने वाली भाषाएँ अक्षरों एवं शब्दों के तथा माधुर्य इत्यादि के विचार से घटिया ही है।"

"यह सिद्ध करता है कि सृष्टि में विकास नहीं प्रत्युत ह्रास हो रहा है। विकास का अर्थ केवल परिवर्तन नहीं। परिवर्तन तो ह्रास में भी होता है। विकास का अर्थ है उत्तरोत्तर श्रेष्ठ बनते जाना। यह तो कहीं देखने में नहीं आया।

"पूर्ण वेदों अथवा रामायण, महाभारत आदि को स्मरण रखने वाले अब नहीं रहे, अर्थात् स्मरण-शक्ति का ह्रास हुआ है। अनेकों उच्चारण, जिनके लिए प्राचीन भाषा, वैदिक संस्कृत, में अक्षर थे, अब नहीं हो सकते। अर्थात् मनुष्य में उन उच्चारणों के उच्चारण की शक्ति नहीं रही। इसी प्रकार नवीन भाषाओं में स्वरों तथा व्यंजनों में कमी भी यही प्रकट करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है कि शारीरिक शक्तियों में भी ह्रास ही हुआ है।

"विकास के स्थान पर ह्रास का होना माना जाये तो आरम्भ में उन्नत, विकसित, सर्वगण सम्पन्न जीवों की सृष्टि को मानना पड़ता है।

"इस ह्रास हो रही सृष्टि को देख, मार्क्सवाद और उसके जन्मदाता नास्तिकवाद का बंटाधार हो जाता है।"

प्रोफेसर सुदर्शन की इस व्यापक विवेचना के पश्चात् अन्य सब प्रश्नकर्त्ता तो चुप हो गये, परन्तु मार्क्सवादी बोल उठे, "यह सब वितंडा है। इसमें युक्ति नहीं। कदाचित् वक्ता प्रोफेसर सुदर्शन ने मार्क्सवाद का अध्ययन नहीं किया।"

इस प्रकार के वक्तव्यों को अध्यक्ष महोदय ने बन्द कर दिया और मीटिंग समाप्त हो गई।

यह सुदर्शन और पद्मदेव की मैत्री का प्रथम दिवस था। जब वे मीटिंग से लौटने लगे तो पद्मदेव ने सुदर्शन से हाथ मिलाया और कहा "आपकी विवेचना अति व्यापक और अकाट्य थी। मैं इसको सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ।"

"इतिहास का यह निष्कर्ष है कि प्राचीन सभ्यता आज की इस सभ्यता से श्रेष्ठ थी और प्राचीनतम सभ्यता, आर्य संस्कृति श्रेष्ठतम थी। इतिहास से विकासवाद की सिद्धि नहीं होती।"

इस प्रथम परिचय के पश्चात् दोनों में मेल-जोल आज की इस सभ्यता से श्रेष्ठ थी और प्राचीनतम सभ्यता, आर्य संस्कृति श्रेष्ठतम थी। इतिहास से विकासवाद की सिद्धि नहीं होती।"

इस प्रथम परिचय के पश्चात् दोनों में मेल-जोल और मैत्री बढ़ती ही गई। सुदर्शन का विवाह पहले ही हो गया था और सुदर्शन की पत्नी साधना भी पद्मदेव से हिल-मिल गई थी।

पद्मदेव जब भी उनके घर जाता था, साधना जो स्वयं बी०ए० पास थी, उससे अनेकों प्रश्न पूछने लग जाती थी। इसका परिणाम यह हुआ था कि वह पद्मदेव के लिए मन में एक विशेष आदर बना बैठी थी।

पद्मदेव के विवाह के पश्चात् अपनी पद्मदेव से पूर्व सहिष्णुता के कारण, साधना सरस्वती से भी मेल-जोल बढ़ाना चाहती थी। सरस्वती इसका प्रत्याचार करने लगी। वह हृदय से अति स्नेहमयी थी। इस कारण वह जब भी कहीं थोड़ा-सा स्नेह पाती, तुरन्त उसका प्रतिचार करने लगती थी।

प्रायः नित्य ही या तो साधना सरस्वती से मिलने चर्च रोड की कोठी पर आती या सरस्वती साधना से मिलने प्रोफेसर सुदर्शन के घर, मोहनलाल रोड पर, पहुँच जाया करती थी। साधना एक बच्चे की माँ हो चुकी थी। सरस्वती का साधना के बच्चे से बहुत प्रेम था और वह कभी-कभी उसको अपने घर में भी रख लेती थी। साधना के लड़के का नाम मोहन था। मोहन सरस्वती के घर आता था, इसलिए उसको दूध पिलाने की बोतल, दूध का डिब्बा और उसके पहिनने के कपड़े, सब सरस्वती अपने यहाँ से मंगवा अथवा बनवा देती थी। मोहन इन दो स्त्रियों में एक कड़ी बनता जाता था और इस कड़ी के कारण ही दोनों परिवारों में भी घनिष्ठता बढ़ती जाती थी।

पद्मदेव का पुस्तकालय पर्याप्त बड़ा था। उसमें बहुत सी ऐसी दुर्लभ पुस्तकें भी थीं, जो अन्य कहीं नहीं मिलती थीं। इससे सुदर्शन भी दिन-प्रतिदिन पद्मदेव के पुस्तकालय का प्रयोग करने के लिए, अधिक और अधिक, उसके घर आता रहता था।

इस प्रकार दोनों पुरुषों में और उकनी पत्नियों में मेल-जोल बढ़ता जा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 10 :

सरस्वती के विवाह को एक वर्ष से ऊपर हो चुका था। इस सब काल में पद्मदेव को जीवन एक अत्यंत सुखकारक स्वप्न की भांति व्यतीत हुआ था। सरस्वती अति सुन्दर और सुशील थी। सब उससे मिलने-जुलने वाले, उसके स्वभाव की प्रशंसा करते थे। वह अति सभ्य, मृदु भाषी और हंसमुख थी। उससे परिचित सदा उससे आदर पाते थे और उसके लिए मन में सहिष्णुता रखते थे।

पद्मदेव अपनी पत्नी की प्रशंसा सुन फूला नहीं समाता था। इससे उसके मन में भी, उसके लिए आदर बढ़ रहा था। सब से बड़ी बात यह थी कि सरस्वती सदा अपने पति की प्रत्येक इच्छा पूर्ण करने में लीन रहती थी।

अब वह भी पद्मदेव के साथ प्रातः चार बजे उठ पड़ती थी। पद्मदेव हीटर में जल गरम करने के लिए स्विच को ऑन तो पलंग पर बैठे-बैठे ही कर दिया करता था और जब तब वे दोनों शौचादि से छुट्टी पाते, स्नान के लिए जल गरम हो जाया करता था। दोनों स्नान कर पांच बजे से पूर्व ही तैयार हो जाया करते थे। पश्चात् पद्मदेव अपने पुस्तकालय में पढ़ने के लिए जा बैठता था और सरस्वती अपना तानपूरा लेकर संगीत का अभ्यांस करने बैठ जाती थी। एक घण्टा संगीत का अभ्यास करती, और फिर ग्रामोफोन पर कोई वाद्य-संगीत का रिकॉर्ड चला, नृत्य का अभ्यास करने लगती। नृत्य के पश्चात् पुनः संगीत का अभ्यास होता था।

इस समय करीमन उनके लिये प्रातः का अल्पाहार लेकर आ जाती। वे दोनों अपने-अपने काम से उठ अल्पाहार करने आ बैठते। पद्मदेव निरामिष भोजी था। सरस्वती मांस इत्यादि खाती थी। अतः वह प्रातः के अल्पाहार के साथ अण्डे लिया करती थी और पद्मदेव पराठे के साथ दूध लिया करता था।

इसके पश्चात् सरस्वती घर के काम-काम में लग जाती। अब कोठी में चार नौकर हो गए थे। करीमन, सुन्दर, सुखिराम माली और रोशन रसोइया। सरस्वती इनके काम की देख-भाल करती। स्वयं सब्जी आदि खरीदने, रोशन को साथ लेकर चली जाती। इस समय घर के लिये अन्य आवश्यक सामान भी खरीद लाया करती थी। नौ बजे ही मार्केट से लौट आती। रसोइया रसोई बनाने लगता, तो वह कोई उपन्यास लेकर पढ़ने बैठ जाती।

ग्यारह बजे तक साधना अथवा कोई अन्य मिलने वाली सखी आ जाती। एक बजे मध्याह्न का भोजन होता। इस समय प्रायः कोई मेहमान आया होता और वह वहाँ भोजन करता। साधना अपने बच्चे के साथ आया करती थी। कभी उसका पति प्रोफेसर सुदर्शन भी, जब कभी कॉलेज के काम से रिक्त होता, तो आ जाया करता था।

भोजनोपरान्त मेहमानों से बातचीत होती अथवा विश्राम होता।

तीन बजे पद्मदेव पुनः पुस्तकालय में चला जाता था और अपने काम में लग जाता था। सरस्वती इस समय नृत्य-संगीत सीखने विद्यालय में चली जाती थी।

पद्मदेव घर से छः बजे भ्रमणार्थ जाया करता था। वह पहले सरस्वती को संगीत विद्यालय से लेने जाता और फिर दोनों घूमने चले जाते। रात के आठ बजे वे कोठी पर लौटते तो मिलने वाले लोग आये होते थे। उनसे बातचीत के पश्चात् नौ बजे चले जाते। यह समय होता था जो कि उन्होंने केवल अपने परस्पर की संगत के लिए रखा होता था। ग्यारह बजे करीमन उनको कॉफी देने आती और वे कॉफी लेकर सो जाते।

इस प्रकार काम चल रहा था। मोहन घर पर होता तो वह करीमन के साथ सोता। करीमन, जब उसका पति नीलकंठ की कोठी में रहता था, तो कोठी के ही एक कमरे में सोती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थी। जब करीमन आया होता तो वह कोठी के पिछवाड़े में बनी कोठरी में सोती थी और मोहन उस दिन सरस्वती के साथ सोता था।

मोहन अब दो वर्ष का हो गया था। वह तोतली भाषा में तथा अस्त-व्यस्त भावों में बातें करने लगा था। इससे वह बहुत ही प्यारा लगता था।

एक दिन साधना, दिन के ग्यारह बजे आई तो मोहन एक काठ के घोड़े पर सवार, कोठी के बरामदे में खेल रहा था। साधना ने पूछ लिया, "मोहन! क्या कर रहे हो?"

"घोला दौलाता हूँ।"

"पर यह दौड़ता तो है नहीं?"

"दौला था। यह अभी कलकत्ता, बम्बई से होकर आया है। औल अब थक गया है।"

"ओह! तो इसको तबेले में बांध दो। यह आराम कर ले तो सवारी करना। और मौसी कहाँ है?"

"आज नानी आई हैं। उनसे बातें कर रही हैं।"

साधना भीतर गई तो दोनों को लम्बा मुख किये देख, विस्मय में खड़ी रह गई। सरस्वती ने उसको देखा तो बुला लिया, "आओ साधना! बैठो।"

"क्या बात है आज? बहुत चिन्तित प्रतीत होती हैं, माँजी?" उसने स्वरूपवती की ओर देखकर पूछा, "कुशल तो है?"

स्वरूपवती चुप रही। वह निश्चय नहीं कर सकी थी कि साधना की अपनी बात बताये अथवा न। सरस्वती ने कह दिया, "साधना! एक दुर्घटना हो गई है। महादेव मेरा भाई, एक औरत के प्रेम में फँस गया है और वह उससे विवाह कर बैठा है। पिताजी को इससे बहुत ही दुःख हुआ है। माताजी कह रही हैं कि वह उसको फारखती देने वाले हैं। हम दोनों विचार कर रही हैं कि कैसे उस औरत के चुंगल से बचायें?"

"कौन है वह?" साधना का प्रश्न था।

"कपूर्थला हाऊस के सामने एक मियाँ इफ्तिखार हुसैन, बैरिस्टर-एट-लॉ रहते हैं। वह विलायत से ही एक औरत को विवाह कर लाये थे। उस औरत के पहले विवाह से एक लड़की थी। नाम है सूसन नैथानिल। वह अपनी माँ के साथ ही इंग्लैण्ड से आई थी और मियाँ साहब के साथ रहती है। इफ्तिखार की अपनी पत्नी से कोई सन्तान नहीं है। सूसन लगभग बत्तीस-तैंतीस वर्ष की औरत है। महादेव ने उससे विवाह कर लिया है। विवाह मुसलमानी ढंग से हुआ तो दोनों का ही मुसलमानी नाम रख दिया गया। महादेव का नाम महमूद सप्रू और सूसन का नाम 'सोसन' रख दिया गया है।

"महादेव अपनी पत्नी को लेकर पिताजी की कोठी में आया तो उसने अपने नाम का प्लेट कोठी के बाहर से बदल दिया। अब प्लेट पर महादेव सप्रू के स्थान पर महमूद सप्रू हो गया है।"

"लड़की तुमने देखी है?" साधना ने पूछा।

"नहीं, माँ बता रही है कि बूढ़ी प्रतीत होती है। माँ का विचार है कि वह दो बच्चों की माँ प्रतीत होती है।"

"पद्मदेवजी को बताया है?"

"नहीं, अभी नहीं। वे अपनी पढ़ाई में लीन हैं। साढ़े ग्यारह बजे ही मैं उनको बुला सकती हूँ।"

साधना ने कलाई में बंधी घड़ी में समय देखा और कहा, "बारह तो बज गये हैं।"

"हाँ! उनके बाहर आने की प्रतीक्षा कर रही हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो सरस्वती!" साधना ने कहा, "मेरा तो यह दृढ़ मत है कि विवाह तो पूर्व जन्म के कर्मों के अधीन होते हैं। कभी-कभी कर्म-फल ऐसे भी होते हैं कि विवाह दुर्भाग्य का कारण बन जाते हैं। इस पर भी उसको कोई टाल नहीं सकता। हम ऐसे विवाहों के दुष्प्रभाव को कम-तीव्र कर सकते हैं। इस समय ऐसा ही होना चाहिए। यह सब कैसे हो तथा हम इसमें किस सीमा तक सफल हो सकते हैं, यह विचारणीय बात है।"

"पद्मदेवजी को आने दो। इस दिशा में विचार करना चाहिए।"

पद्मदेव आया तो पुनः विचार होने लगा। पद्मदेव ने कहा, "माताजी! इसमें आप चिंता क्यों कर रही हैं?"

"मैं यही विचार रही हूँ कि अब मेरे पोते-पोतियाँ, फातिमा, अनवरी, मुहम्मद इत्यादि नामों वाले होंगे। सरस्वती और महादेव आदि नाम लुप्त हो जायेंगे।"

पद्मदेव हँस पड़ा। हँसकर बोला, "यदि गनी नाम का व्यक्ति वेद मंत्र पढ़े और उस पर विश्वास रखे तो हानि होगी क्या?"

स्वरूपवती इसका उत्तर नहीं दे सकी, इस पर भी वह इसको पसन्द नहीं करती थी। इस कारण मुख पर असन्तोष का भाव बनाये हुए देखती रही। पद्मदेव ने कहा, "मैं महादेव से भोजनोपरान्त मिलने जाऊंगा और फिर उसको अपने यहाँ रात के भोजन का निमंत्रण भी दे आऊंगा।"

"इससे क्या होगा?" स्वरूपवती बोली।

"पहले तो मैं इस विवाह में कारणों को जानना चाहूँगा। इसके पश्चात् इससे उत्पन्न होने वाले दुष्परिणामों को रोकने का यत्न किया जायेगा। यह यत्न पिताजी की सम्मति से करूंगा। हाँ, रोग का निदान तो पहले करना ही होगा।"

स्वरूपवती चुप रही। साधना का प्रस्ताव था कि सब इकट्ठे सूसन से मिलने के लिये चलें। अतः भोजनोपरान्त सब पंडित नीलकंठ की कोठी को चल पड़े।

महादेव ने मैडिकल कॉलेज से एम०बी०बी०एस० किया था, परन्तु अपनी प्रैक्टिस नहीं जमा पाया था। एक धनी बाप का बेटा होने से किसी गन्दी गली में जाकर चिकित्सा-कार्य करना नहीं चाहता था। माल रोड पर उसने एक क्लिनिक खोला था, परन्तु वह अभी चलता नहीं था। सप्ताह में एक-आध रोगी आ जाता था और पन्द्रह रुपये फीस देकर नुसखा लिखा जाता था। इस प्रकार महादेव की प्रैक्टिस सौ-सवा सौ रुपया मासिक से कम ही था। इससे अधिक तो वह उस दुकान का भाढ़ा देता था, जिसमें बैठ चिकित्सा कार्य करता था। एक चपरासी पचास रुपये मासिक पर रखा हुआ था। स्वयं वह वहाँ बैठ प्रायः कोई उपन्यास पढ़ता रहता था। अभी तक वह अपना खर्चा उस ऐलाउंस में ही चला रहा था, जो उसको पिता से मिलता था।

पद्मदेव वहाँ पहुँचा तो महादेव अपनी पत्नी सोसन के साथ कहीं जाने को तैयार खड़ा था। पद्मदेव ने छूटते ही कहा, "महादेवजी, मैं तो आप को तथा मिसेज महादेव को निमंत्रण देने आया था।"

"किस बात का निमंत्रण है?" महादेव ने मुस्कराते हुए पूछा।

"यही, सुना है कि आपने विवाह कर लिया है। अतः इस शुभ अवसर पर हम, मेरा मतलब है कि मैं और सरस्वती, तुमको और भाभी को बधाई देने तथा खाने पर निमंत्रण देने आये हैं?"

महादेव ने पद्मदेव के कथन पर अविश्वास का भाव दर्शाते हुए कहा, "कदाचित् आपको पता नहीं कि पिताजी मुझ पर, इस विवाह के कारण नाराज हैं। उन्होंने तो प्रातः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुझको कोठी छोड़ने का नोटिस दे दिया है। मैं अभी रहने के लिए स्थान ही ढूंढने जा रहा था।''

''मुझको यह सब पता है। माताजी ने पूर्ण परिस्थिति का वर्णन किया है। इसको जानकर मैं यहाँ आया हूँ। पिताजी क्या करते अथवा कहते हैं, मेरे लिये कुछ अर्थ नहीं रखता है। मैं एक स्वतंत्र व्यक्ति हूँ। साथ ही मैं समझता हूँ कि इतनी जल्दी भागने की आवश्यकता नहीं। वे पिता हैं। उनको नाराज होने का अधिकार है, परन्तु हम तो युवा हैं, प्रगति-शील विचारों को रखने वाले हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि पुराने विचारों के वृद्ध-जनों को समझा-बुझाकर, अपने साथ लेकर चलें। एक बात और भी है। वह यह कि जीवन के पगों को विचार-विचार कर ही रखना चाहिए।

''देखो महादेव! हम इन्सान हैं। इन्सान और हैवान में कुछ तो अन्तर है ही। तनिक विचार कर लें कि क्या अन्तर है और फिर अपन जीवन को ऐसा बनायें कि इन्सान और हैवान में अन्तर बना रहे।''

''तो आप भी मुझसे बहस करने आये हैं?'' महादेव ने माथे पर त्योरी चढ़ा कर कहा।

''यह बहस कैसे हो गई? मैंने तो तुमसे कोई प्रश्न नहीं किया। एक बात कही है। यदि वह अयुक्तिसंगत है, अथवा अरुचिकर है तो तुम अस्वीकार कर सकते हो।

''चलो अन्दर कोठी में बैठें। इस प्रकार खड़े-खड़े तो तुम ठीक प्रकार से बात भी नहीं समझ सकोगे।''

''मुझको मकान ढूंढना अत्यावश्यक है।''

''देखो, मैं पिताजी से कहने आया हूँ कि वे तुम्हें मकान ढूंढने पर विवश न करें। यदि वे नहीं भी मानते तो कुछ दिन के लिये, जब तक उचित मकान नहीं मिलता, तुम मेरी कोठी में रह सकते हो। वहाँ तुमको पृथक् सोने-बैठने का स्थान मिल जायेगा। मैं समझता हूँ कि क्रोध-वश किया हुआ काम हितकर नहीं होता।''

वास्तव में महादेव अपने पिता की, कोठी छोड़ने की आज्ञा सुन कई प्रकार की चिन्ताओं में ग्रस्त हो गया था। एक अच्छे मकान का तुरन्त मिलना कठिन था। साथ ही उसके लिये भाड़ा जेब में नहीं था। नीलकंठ खर्चा भी बंद कर सकता था। रोटी के लिये भी तो कोई प्रबन्ध नहीं था।

उसने अपनी कठिनाई अपनी स्त्री सूसन को बताई थी और वह उसको मियाँ इफ्तिखार हुसैन के पास ले जा रही थी। उसका विचार था कि वह अवश्य सहायता करेंगे। इस पर भी यह विचार तो विचार-मात्र ही था। यह विश्वास का स्थान नहीं ले सकता था। अतः जब पद्मदेव ने पिताजी से किसी प्रकार के समझौता करा देने की ओर संकेत किया तो वह मान गया। उसने सूसन की ओर देखकर कहा, ''मेरी बहिन सरस्वती को तो तुम जानती ही हो ये इनके घर वाले मिस्तर पद्मदेव हैं। मैं समझता हूँ कि इनका निमंत्रण हमें स्वीकार कर लेना चाहिए।''

सूसन ने पद्मदेव से हाथ मिलाया तो सरस्वती उसकी बांह में बांह डालकर, उसको कोठी के ड्राइंगरूम में ले गई। वहाँ पहुँच सरस्वती ने सूसन को साधना का परिचय दे दिया, ''यह मेरी परम सहेली है। नाम है साधना। जब माताजी ने बताया कि घर में भाभी आई है तो यह वहाँ मुझसे मिलने आई हुई थी। हम दोनों का विचार हुआ कि भाभी के दर्शन कर लेने चाहिये। सो हम यहाँ चली आई हैं।''

''सुनाओ, कैसे फँस गई हो मेरे भाई के चंगुल में?''

''तो मैं फँस गई हूँ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हाँ, उसके प्रेम-जाल में।"

"तो क्या मैंने ठीक नहीं किया? क्या समझती हैं आप कि आपका भाई एक अच्छा पति नहीं है?"

"यह तो मैंने नहीं कहा। न ही मैं ऐसा समझती हूँ। इस पर भी यह जानती हूँ कि हम औरतें विवश हो पुरुषों के पीछे लगती हैं।"

"यह आपका ज्ञान गलत है। मैं तो समझती हूँ कि पुरुष ही स्त्रियों के पीछे भागते हैं। कम-से-कम आपके भाई की तो यही कथा है।"

: 11 :

"आपके विषय में तो मैं जानती नहीं, परन्तु अपनी बात मैं बताती हूँ। मैंने अपने आदमी को देखा था, जब मैं चौदह वर्ष की लड़की मात्र थी। मैं तब ही उनके मोह-जाल में फँस गई थी। मैं यहाँ के गवर्नमेन्ट कॉलेज में, फर्स्ट ईयर में दाखिल हुई। ये वहाँ प्रोफेसर थे। इनके मुख पर के ओज को मैं सह न सकी और मैं इनसे प्रेम करने लगी।

"यद्यपि मेरी इनसे कभी बात नहीं हुई थी, परन्तु मैं इनके मोह-जाल में ऐसी फँसी कि इनके संकेतों पर नाचने लगी। इन्होंने एक दिन कह दिया कि मैं कलाकार बन सकती हूँ। बस फिर क्या था? कॉलेज छोड़ संगीत विद्यालय में भरती हो गई। पांच वर्ष तक मैंने उनके दर्शन तक नहीं किये, परन्तु उनकी मूरत सदा मेरे मन में विराजमान रही थी। जब मैं वास्तव में कलाकार बन गई तो मैंने इनके सामने प्रस्ताव रखा। ये मानते नहीं थे। मैंने इनको मोह से आच्छादित करना चाहा, इनमें वासना उत्पन्न करने का यत्न किया और फिर अन्त में पिताजी की सिफारिश लगवानी पड़ी। तब कहीं जाकर ये माने। हमारे विवाह को एक वर्ष हो गया है। मैं सर्वथा इनके अधीन हूँ। वे मुझको कुछ भी आज्ञा दे सकते हैं, मैं इन्कार नहीं कर सकती। मैं तो इनके मोह-जाल में ऐसे फँसी हूँ, जैसे मकड़ी अपने जाले में फँस जाती है।"

सूसन विस्मय में सरस्वती का मुख देखती रह गई। एक बात उसके मन में थी। वह उसने पूछ ली, "आप इतनी सुन्दर हैं कि चाहें तो, पूर्ण नगर आपके पीछे पागल हुआ फिर सकता है।"

"मैं जानती हूँ, परन्तु मैं तो स्वयं दीवानी बन चुकी हूँ।"

"मेरा ऐसा प्रेम नहीं है, आपके भाई साहब से।"

"कैसा है?"

"वे मेरे पीछे पागल हुए घूमते थे। जब वे बहुत गिड़गिड़ाने लगे तो मेरे मन में दया आ गई और मैं मान गई। अब वे मेरे खाविन्द हैं। समाज में उनकी मान-प्रतिष्ठा मेरी मान-प्रतिष्ठा बन गई है। हम एक ही नौका में सवार हो गये हें और उसको मन से खेने का हमने प्रण किया है।

"आपके पिताजी ने हमको घर छोड़ने के लिए कहा है। हम परेशान हैं। इस पर भी हम निराश नहीं हैं। मेरे मन में एक योजना है, जिससे मैं आशा करती हूँ कि हम शीघ्र ही निर्वाह के लिए ता कमाने लगेंगे।"

"क्या योजना है?"

"अभी बताने की नहीं है। हाँ, यदि आप अपने पिता से हमारी सुलह करा दें, तो मैं अपनी योजना नहीं चलाऊंगी।"

"प्रोफेसर साहब ने तो कहा है कि वे पिताजी को समझावेंगे। यदि वे मान गये तो आपको भी तो कुछ मानना पड़ेगा।"

"क्या मानना पड़ेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह अभी नहीं बता सकती। उन्होंने कोठी छोड़ने की जो कहा है, उसमें कुछ तो कारण होगा। हमें उस कारण को दूर करने का यत्न करना होगा। इस यत्न में आप दोनों की सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।"

"उन्होंने कारण तो कुछ भी नहीं बताया। बस मुझको देखते ही बक-झक करने लगते थे।"

"वे आयेंगे, तो पता चलेगा। आखिर वे पढ़े-लिखे आदमी हैं। एक सफल वकील हैं। वे अकारण कुछ क्यों कहेंगे?"

"जहाँ तक मैं समझती हूँ, वे मुझको ईसाई औरत जान नाराज हैं?"

"यह तो कोई बहुत बड़ा कारण नहीं है। मैं उनके विचार जानती हूँ। वे ऐसी छोटी-मोटी बातों को नहीं मानते। मेरे विचार में यह कारण नहीं है।"

"तो उनसे पूछ लें। यदि कोई हमारे करने योग्य बात होगी, तो हम कर लेंगे।"

इस समय महादेव और पद्मदेव वहाँ चले आये। महादेव ने कहा, "सूसन डीयर! हम अभी यहाँ से चल रहे हैं। पिताजी हाई कोर्ट गये हैं। वे सायं चार बजे तक लौटेंगे। हमारे लौटने से पूर्व पद्मदेवजी उनसे बात कर छोड़ेंगे। यदि वे मान गये तो हम यहाँ ही रह जायेंगे।"

सूसन और महादेव वहाँ से चले गये। जब वे कोठी से निकल गये तो पद्मदेव ने बताया, "यह सुलह नहीं होगी। महादेव का व्यवहार ऐसा बन रहा है कि सुलह होनी भी नहीं चाहिए।"

इस पर सरस्वती ने भी वही सम्मति दी। उसने कहा, "यह औरत सर्वथा गंवार है। यदि यह यहाँ रही तो माता-पिता का जीवन दूभर कर देगी। क्यों साधना! क्या समझी हो तुम?"

साधना अभी तक चुपचाप बैठी हुई सब की बातें सुन रही थी। वह जब से आई थी, अब पहली बार बोली। उसने कहा, "मैं समझती हूँ कि यह औरत महादेव की पत्नी बनने के योग्य नहीं है। मैं इस औरत के भविष्य के विषय में विचार नहीं कर रही। मैं महादेव के भविष्य के विषय में सोच रही हूँ। इन दोनों का सम्बन्ध-विच्छेद होना चाहिए।"

"परन्तु मैंने आज तक महादेव को इतनी फुहर बातें करते इससे पहले कभी नहीं देखा। उसने कहा, 'मुझको निस्सहाय देख ही पिताजी ने, मुझ पर, अपनी आज्ञा चलाने का यत्न किया है।'

"मैंने जब उससे पूछा कि क्या आज्ञा चलानी चाही है? तो कहने लगा, 'ज्यों ही मैंने पिताजी को बताया कि मैंने सूसन से विवाह कर लिया है, तो पूछने लगे कि मुझको बताये बिना? मैंने कहा कि इसकी क्या आवश्यकता है? सूसन मेरी पत्नी बनी है, उनकी नहीं। तो वे भड़क उठे और बोले, "निकल जाओ मेरे घर से। ले जाओ इस बदकार औरत को यहाँ से।" बस हमने अपना सामान बटोरना आरम्भ कर दिया।'

"मैंने कहा, 'महादेवजी? तुम्हारी पत्नी ने उनको नमस्कार की थी क्या?"

"इस पर वह बोला, 'मैं उसका परिचय कराने वाला था; परन्तु इसके लिए उन्होंने समय ही नहीं दिया। यह अंग्रेज लड़की है। वहाँ के आचार-व्यवहार यहाँ से भिन्न प्रकार के हैं। ये लोग बिना परिचय कराये परस्पर बोलते तक नहीं। मैं समझता हूँ कि मेरे फादर बूढ़े हो गये हैं, सीनाइल (सत्तर-बहत्तर) हो गये हैं। उनको उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रहा।'

"महादेव के इस कथन पर मुझको क्रोध चढ़ आया था। मैंने कह दिया, "महादेव, तुम तो बूढ़े नहीं हुए। तुम तो 'सीनाइल' नहीं हुए। तुम नाराज क्यों हो रहे हो? तुमको पूछना चाहिए था कि उनकी नाराजगी का कारण क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं जानता हूँ कि क्या कारण है उनकी नाराजगी का? वे मेरी पत्नी पर मोहित हो, मुझसे ईर्ष्या करने लगे हैं। मैं उनके स्वभाव को जानता हूँ। वे युवा लड़कियों का भोग करने के लिए पागल रहते हैं।'

''सरस्वती! मैंने यह स्वभाव पिताजी में कभी नहीं देखा। इस कारण मैं यह समझता हूँ कि महादेव के मस्तिष्क में किसी प्रकार की खराबी आ गई है। मैंने अन्तिम प्रयत्न करते हुए उसको कहा, 'महादेव! क्रोध छोड़ो, कुछ अक्ल से काम लो। मैं देख रहा हूँ कि यह तुम्हारी पत्नी कोई स्वर्ग की अप्सरा नहीं, जिसके लिए वे तुमसे ईर्ष्या करें।''

'जीजाजी! आप उनके विषय में कुछ भी नहीं जानते। सरस्वती बहुत कुछ जानती है। वह बता सकेगी। मेरी पत्नी अप्सरा न सही, पर युवती और गौरवर्णीय है। माताजी से तो वह सर्वथा श्रेष्ठ है।''

''उसकी बातों से मेरे मन में उनके लिए घृणा उत्पन्न हो गई। मैं उसकी इन बातों के लिए उसके मुख पर चांटा लगा देता, परन्तु अपने मन पर काबू पा कर मैंने पुनः पूछा, 'तो तुम क्या चाहते हो?'

''उसने कहा, 'एक सौ रुपया, जिससे जीवन आरम्भ कर सकूं।'

''घटनावश मेरी जेब में इतना कुछ था। मैंने जेब से दस-दस रुपये के दस नोट निकालकर उसको देते हुए कहा, 'रुपये तो यह हैं, परन्तु मैं तुम्हारा इसी घर में रह सकने के विषय में तुमसे पूछ रहा था। किस प्रकार तुम यहाँ रह सकोगे?'

'यहाँ रह सकना बहुत कठिन है। एक ही सूरत है। वह यह कि अपनी पत्नी को उनके हवाले कर दूँ।'

'यदि यह बात न हो तो?'

'आप पूछ कर देख लीजिये। मैं समझता हूँ कि मैं कुछ ही महीने में जीवन की गाड़ी चला सकूंगा।'

'परन्तु अभी तक तो तुम्हारी गाड़ी चली नहीं। कितनी आयकर लेते हो अपने चिकित्सालय से?'

'अभी कुछ नहीं; परन्तु इसमें कारण है। मैं हिन्दू था। कल से मैं मुसलमान हो गया हूँ। अब मेरे लिए उन्नति के द्वार खुल जायेगा।'

''देखो सरस्वती! मैंने समझा है कि महादेव तो गया। वह पतन के गड़हे में जा गिरा है। जब तक वह वहाँ की गंदगी से ऊब नहीं जाता, तब तक वह वहाँ से निकल नहीं सकेगा। इस कारण मैं समझता हूँ कि उसे वहाँ की दुर्गन्ध का अनुभव होने देना चाहिये। पीछे ही यत्न करने पर हम सफल हो सकेंगे।''

साधना ने कह दिया, ''मेरा विचार है कि इस औरत ने भैया के मस्तिष्क में खुमार चढ़ा दिया है। शराब अति बदबूदार वस्तु होती है, पर जब वह सिर को चढ़ जाती है तो पीने वाला इसकी दुर्गन्ध को भी सुगन्ध कहने लगता है। यही बात इस महादेव भैया की भी प्रतीत होती है। किसी-न-किसी प्रकार, भैया को इस औरत से अलग करना चाहिये। जब तक यह उपस्थित है, सुन्दर-से-सुन्दर स्त्री भी भैया को इससे छुटकारा नहीं दिला सकेगी।''

पण्डित नीलकंठ अभी नहीं आये थे। इस कारण वे तीनों उनके लौटने की प्रतीक्षा करने लगे। साधना ने अपने घर के नीचे एक दुकानदार को टेलीफोन कर, यह संदेश भिजवा दिया कि वह देरी से आयेगी। और यदि प्रोफेसर सुदर्शन, पण्डित नीलकंठ की कोठी में आ सकें तो आ जायें।

ठीक साढ़े तीन बजे नीलकंठ 'कोर्ट' से लौटा। वह इनको वहाँ बैठे देख समझ गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि महादेव की करतूत को सुनकर आये हैं। इस पर वह हँसकर कहने लगा, ''तो तुम लोग मुझसे सहानुभूति प्रकट करने आये हो?''

पद्मदेव ने कहा, ''पिताजी! सहानुभूति आपसे नहीं, प्रत्युत महादेव से प्रकट करने आये हैं। वह मिला भी है, परन्तु उसकी बातों से तो वह सहानुभूति का पात्र प्रतीत नहीं हुआ। इस पर भी हम यहाँ बैठे हैं यह जानने के लिए कि उसको इस पतितावस्था से निकालने का क्या उपाय किया जा सकता है?''

''देखो पद्मदेव! पांच हजार रुपया खर्च कर उसके लिए 'माल' पर मैंने क्लिनिक खुलवाया। दुकान का भाड़ा और चपरासी का वेतन अपने पास से दे रहा हूँ। इसके अतिरिक्त दो सौ रुपया मासिक उसको अपना जीवन-स्तर बनाये रखने के लिए देता हूँ। कोठी और खाना उसको अलग से प्राप्त हो रहा है।

''मेरा अनुमान था कि उसका काम चलने में दो-चार वर्ष लग जाने सहज ही हैं। इस कारण उसके विवाह के लिए टाल-मटोल कर रहा था। यूं तो तीन-चार सुन्दर, शिक्षित लड़कियों के सम्बन्ध आये हुए हैं। महादेव को तो इस काल में स्वाध्याय तथा अभ्यास कर अपनी योग्यता बढ़ानी चाहिए थी। मैंने इसका परिचय डॉक्टर कौल से करा दिया था। उसने इसे बुलाया था, पर यह गया नहीं।

''मैं नहीं जानता कि कब और कैसे इस औरत से इसका परिचय हुआ है? मैं इसको 'जिमखाना क्लब' में कई बार मिल चुका हूँ। यह वहाँ 'ह्वोर' (बदकार औरत) विख्यात है। महादेव उससे विवाह कर, घर में बिना मुझसे राय किये ले आया। कल रात के साढ़े आठ बजे दोनों आये और चुपचाप अपने कमरे में आकर सो गये। हमको पता नहीं चला। आज प्रातःकाल जब मैं 'ब्रेकफास्ट' लेने के लिए डाइनिंग हाल में बैठा था, तो ये दोनों वहाँ आये। महादेव कहने लगा—'डैडी! यह सोसन है।'

'सोसन!' मैं विस्मय में दोनों का मुख देखने लगा। पश्चात् मैंने कहा, 'सोसन नहीं, इसका नाम सूसन है। मैं इसको बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ।' मैं बताना चाहता था कि यह बदकार औरत है, परन्तु उस समय सरस्वती की माँ वहाँ बैठी थी। इसलिये मैं, अपने क्रोध को वश में कर, चुप कर रहा। केवल इतना संकेत कर दिया कि मैं उसके विषय में पहले से ही जानता हूँ।

''इस पर महादेव ने बताया, ''डैडी! यह पहले ईसाई थी। तब इसका नाम सूसन था। अब इसने इस्लाम स्वीकार कर लिया है और इसका नाम सोसन हो गया है।'

''मेरा कहना था, 'परन्तु ईसाई तथा मुसलमान होने से अथवा सूसन से सोसन हो जाने से किसी मनुष्य की प्रकृति नहीं बदलती। यह है तो वही, जो पहले थी। यह यहाँ किस काम से आई है?'

''उसने उस औरत का हाथ पकड़कर कहा, ''मैंने इससे विवाह कर लिया है। यह आपकी बहू बन यहाँ आई है।'

''मेरे तो सारे शरीर में आग लग गई। यह सूसन, जो कुछ दिन पहले मुझसे 'कोर्टशिप' किया करती थी और यदि मैं पचपन वर्ष का बूढ़ा न होता तो मुझको पथच्युत् करने में सफल हो जाती, मेरे लड़के की पत्नी बन, मेरे घर में आ, मेरे सामने बैठी मुस्करा रही थी। मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि मुझ पर डोरे डालने में असफल हो, अब मेरे पुत्र को प्राप्त कर, मेरी हँसी उड़ा रही है।

''इस पर भी मैंने अपना क्रोध शान्त कर पूछ लिया, 'यह मुसलमान कब हुई है?'

'कल, जब हमारा निकाह पढ़ाया जा रहा था।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'तो तुम्हारा इससे निकाह पढ़ाया गया है क्या?'

''मेरे पूर्ण शरीर में कंपकंपी उठी थी। महादेव मेरे कहने का अर्थ समझ बोल उठा, 'जी, मैंने भी इस्लाम-धर्म स्वीकार कर लिया है। मेरा नाम महमूद सप्रू हो गया है। आप देखेंगे कि मैंने कोठी के बाहर अपनी 'नेम प्लेट' बदल दी है।'

'इससे क्या लाभ होगा?'

'आज पंजाब में राज्य मुसलमानों का है। इस परिवर्तन में कुछ लाभ ही होगा। आपने ठीक ही कहा है कि मजहब बदलने से अथवा नाम बदलने से मनुष्य नहीं बदलता। मैं तो जो हूँ, वही हूँ।'

''मैं ब्रेक-फास्ट छोड़कर उठ खड़ा हुआ। मैंने उन दोनों की ओर संकेत कर कहा, 'मेरे घर से निकल जाओ! मैं इस बदकार औरत का मुख भी देखना नहीं चाहता। देखो, यदि मेरे कोर्ट से लौटने तक भी तुम इस बदकार औरत को यहाँ से ले नहीं गए, तो मैं इसको पुलिस के हवाले कर दूँगा। इस पर ट्रैस पास (अवधिप्रवेश) का मुकदमा चल जायेगा।'

''मैंने भोजन नहीं किया और अपने स्टडी-रूम में चला गया। आज एक मुकदमे में मुझको बहस करनी थी। मैं उसकी तैयारी में लग गया।

''मुकदमा जीतकर आ रहा हूँ। इससे तुम अनुमान लगा सकते हो कि मैं होश-हवास में हूँ और मैंने जो कुछ किया है, ठीक ही किया है।''

इस पर पद्मदेव ने कहा, ''आज प्रातः माताजी वहाँ आई थीं। उनकी पुत्र के प्रति वात्सल्यता उमड़ रही थी। वे हमको महादेव की बात बताकर, यहाँ ले आई हैं। हम महादेव और उसकी पत्नी से मिले हैं। हमारा भी यही विचार है कि यह विवाह ठीक नहीं हुआ। इससे किसी प्रकार के कल्याण की आशा नहीं; परन्तु प्रश्न तो महादेव का है। उसको इस कीचड़ में से निकालना हमारा कर्त्तव्य है।''

: 12 :

इस पर नीलकंठ और पद्मदेव के विचार करने में अन्तर प्रकट हो गया। नीलकंठ ने कह दिया, ''महादेव मेरा लड़का है अवश्य। मैंने उसको जन्म दिया है, परन्तु मैं समझता हूँ कि मैंने अपना, पिता का कर्तव्य पालन कर दिया है। मैंने उसे पढ़ाया-लिखाया और जीवन में प्रवेश होने का अवसर दिया है। मैंने उसका हाथ अभी छोड़ा नहीं था। उसको, जब तक कि वह अपने पांव पर खड़ा न हो जाता, मैं सहायता दे रहा था, परन्तु उसने मेरा अपमान किया है। उसके साथ इतना कुछ कर चुकने के बाद भी उसने मुझसे पूछे बिना, मेरे घर में एक अति घृणित चरित्र की स्त्री को प्रवेश दे दिया है। मैं इसको सहन नहीं कर सकता।''

''ठीक है, सहन करने की आवश्यकता भी नहीं। इस पर भी पिता का एक अंतिम कर्तव्य है कि वह, अपनी संतान के पृथक् घर बनाने पर, उसको आशीर्वाद दे। यह तो करना ही चाहिए।''

''पद्मदेवजी! आप उस औरत को नहीं जानते। वह बहुत खराब है। उससे, मेरे आशीर्वाद देने पर भी, महादेव का कल्याण नहीं होने वाला।''

''देखिये! मेरी धृष्टता के लिए क्षमा करें। मैं हाईकोर्ट के एक विख्यात वकील से बहस छेड़ बैठा हूँ। मैं समझता हूँ कि किसी भी पिता को, अपनी सन्तान के प्रति, सदा और प्रत्येक अवस्था में शुभकामना करनी ही चाहिए।''

''यह हो जायेगी, परन्तु जब तक यह औरत उसके साथ है, उसके कल्याण की आशा नहीं। वह अपना पृथक् मकान बनाकर रहेगा। मैं उसके जीवन में बाधा नहीं बनूँगा और कभी उसको सहायता की आवश्यकता हुई तो उस परिस्थिति में विचार कर लूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"वह सहायता की आवश्यकता में तो अब भी है। उसकी जेब खाली थी। इस पर भी वह जा रहा था। न जाने किस शैतान के पास अपनी आत्मा बेचने चला था।"

"उसने मुझको इस विषय में कुछ कहा नहीं।"

"मैं समझता हूँ कि वह अभी लौटकर आयेगा।"

इस समय सब चाय के लिए बाहर लान में जा बैठे। इसी समय प्रोफेसर सुदर्शन भी आ गए। वह अपने साथ, पद्मदेव की कोठी से, अपने लड़के मोहन को ले आया था। नीलकंठ ने प्रोफेसर साहब को देखा तो उनको भी चाय पर बैठा लिया। मोहन को गोदी में लेकर नीलकंठ ने उससे बातें करनी आरम्भ कर दीं। इस समय बैरा चाय लगा रहा था।

अभी चाय समाप्त नहीं हुई थी कि महादेव अकेला वहाँ आ पहुँचा। सूसन को वह साथ नहीं लाया था अथवा वह उसके साथ नहीं आई थी। पद्मदेव ने महादेव को कहा, "आइये महादेवजी! चाय लीजिये।"

महादेव ने अपने पिता की ओर देखा तो नीलकंठ ने कहा—"आओ बैठो! तुम्हारा मुख सूख रहा है।"

महादेव बैठ गया और अपने लिये चाय बनाने लगा। पद्मदेव ने पूछ लिया, "पत्नी को साथ नहीं लाये?"

"हमको रहने के कमरों का एक सैट बीडन रोड पर, पचाय रुपये मासिक पर मिल गया है। सूसन वहाँ ही रह कर सफाई करा रही है। मैं सामान लेने आया हूँ।"

"बहुत अच्छा किया है।" नीलकंठ ने कहा, "मैं उस औरत को इतनी अच्छी तरह जानता हूँ कि उसको तुम्हारी पत्नी के रूप में देख नहीं सकता। उसको नहीं लाये तो अच्छा ही किया है।"

"जी! मैं जानता हूँ कि आप उसको मेरी पत्नी के रूप में क्यों नहीं देख सकते। जो कुछ उसने मुझको दिया है, वह आपको नहीं दे सकी न? खैर छोड़िये, अब तो वह मेरी पत्नी है। मैं उसके साथ एक न टूटने वाले बंधन में बंध गया हूँ।"

नीलकंठ महादेव के लांछन को सुनकर हँस पड़ा। उसने कहा, "मूर्ख! यदि तुमने विवाह से पूर्व एक दिन भी मुझसे राय की होती तो मैं तुमको बता देता कि वह क्या रखती है, जो तुमको दे रही है। अच्छा, अब बताओ तुम क्या चाहते हो?"

महादेव ने चाय की एक लम्बी चुसकी लगाई और प्याला मेज पर रखकर कहने लगा—"आपका आशीर्वाद चाहता हूँ।"

"मेरी शुभ कामना तुम्हारे साथ है। अब भी और प्रातः भी; जो कुछ मैंने कहा था, वह तुम्हारी शुभकामना का सूचक था। भगवान् तुमको सुमति दे और तुम्हारा कल्याण करे।"

इसके पश्चात् नीलकंठ कुछ काल तक आँखें मूंदकर कुछ विचार करता रहा। तत्पश्चात् वह अपने स्थान से उठा और महादेव से बोला, "ठहरो, मैं अभी आ रहा हूँ।"

वह अपने स्टडी-रूम में चला गया। दो-चार मिनट में ही वह लौटा। उसके हाथ में एक चैक पकड़ा था। उसने तक कर, जिससे कोई देख न ले, वह चैक महादेव को देते हुए कहा, "अब मैं मासिक खर्च देना उचित नहीं समझता। हाँ, यदि फिर भी कभी आवश्यकता हुई तो आ जाना। उस समय की परिस्थितियों के अनुसार, यथासम्भव, सहायता करने का यत्न करूंगा।"

महादेव ने चैक पर रकम पढ़ी और मुख पर सन्तोष का भाव, परन्तु वाणी से असन्तोष प्रकट करते हुए बोला, "इससे अधिक तो आपने सरस्वती को दे दिया था। इस पर भी मैं आपका धन्यवाद करता हूँ यहाँ से हम सूसन की माँ के पास गये थे। उसने भी हमको एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चैक दिया है और अब मैं समझती हूँ कि हमारी गाड़ी चल निकली है।"

इतना कह, वह अपने स्थान से उठा और सबको नमस्ते कर जाने लगा परन्तु कुछ विचार कर पद्मदेव के समीप आकर बोला, "पद्मदेवजी! आपके दिये रुपये से मेरा बहुत काम बना है। उसमें से मकान का भाड़ा पेशगी दिया है। आपका सौ रुपया कल तक सधन्यवाद लौटा सकूंगा।"

"अच्छा एक बात करो।" पद्मदेव ने कहा, "अगले रविवार के दिन का खाना सपत्नीक मेरे घर पर लेना। ठीक है?"

"हम आयेंगे। यदि किसी कारण से न आ सके तो पहले ही सूचित कर देंगे।"

महादेव एक तांगे में आया था। उस तांगें में अपने कपड़ों का ट्रंक और बिस्तर रख वह चला गया। पद्मदेव को कुछ ऐसा समझ में आया कि रुपया मिल जाने से और अपने भविष्य की चिन्ता कम होने से वह अब अधिक शान्त-चित्त था और बात भी युक्ति-युक्त कर रहा था।

इस मन की अवस्था से, पद्मदेव को संतोष नहीं हुआ। वह समझता था कि यह तो निपट पशुपन है। भूख, प्यास अथवा अन्य शारीरिक सुख-सुविधाओं के अभाव में मन का सन्तुलन खो देना मानवता से इतर बात है। मनुष्य होने के नाते तो कठिनाई में बुद्धि को ठीक रखना आवश्यक है। मन का सन्तुलन शारीरिक कष्ट में खो देना, उसको कुछ जंचा नहीं।

जब चाय समाप्त हुई तो पद्मदेव, सरस्वती, साधना तथा सुदर्शन एक तांगे में सवार हो चर्च रोड वाली कोठी को चल पड़े। वहाँ पहुँच साधना, जो विशेष रूप से आज चुप रही थी, बोल उठी, "पद्म भैया! मुझको आज की पूर्ण घटना अति दुःखपूर्ण प्रतीत हुई है। न तो महादेव तथा सूसन का व्यवहार और न ही सरस्वती के पिता का व्यवहार जंचा है। इन सब के विचार और व्यवहार से बहुत कुछ पशुपन टपकता प्रतीत होता है।"

साधना के सन्तुलित मन का ज्ञान तो इन सब को पहले ही था। इस कारण जब वह बोली तो सब ध्यान से सुनने लगे। साधना ने आगे कहा—"वकील साहब का अपने लड़के को एक लम्बा-चौड़ा चैक देकर, उसके होश ठिकाने लाने में देरी उत्पन्न करने वाला सिद्ध होगा। सूसन की माँ ने भी कुछ रुपया दिया है। उसको तो देना ही चाहिये था। उसका लाभ इसी में है कि एक काफी लम्बे काल के लिये धन का अभाव इनके परस्पर-सम्बन्ध को ढीला न कर सके। वकील साहब ने अपना चैक देकर इस काल को और भी लम्बा करने में सहायता दी है।

"मैं तो यह चाहती थी कि हम लोग, जो किनारे पर खड़े हैं, इस नादान युवक को गोते खाते देखते और जब पानी नाक से ऊपर चढ़ने लगता तो थोड़ा सामयिक आश्रय देकर जीवित रखते। यह हम तब तक करते, जब तक वह अनुभव न कर लेता कि सूसन से विवाह करना भूल थी। फिर उसको आश्रय दे, न केवल डूबने से बचाते, प्रत्युत उसको इस पापकुण्ड से बाहर निकाल लेते।

"मुझको पद्म भैया का व्यवहार ठीक प्रतीत हुआ है। एक सौ रुपया दे दिया था। इस प्रकार उससे सम्बन्ध बन गया था और इसी प्रकार थोड़ा-थोड़ा आश्रय देना ही उचित था।"

"और सूसन के विषय़ में हमारी साधना ने क्या समझा है?"

"यह बदकार बेहया है। यह तो उसके मुख पर अंकित है। वह महादेव से आयु में भी बड़ी है। यदि मैं भूल नहीं करती तो एक-दो बार प्रसव कर चुकी है।"

"मुझको विस्मय इस बात पर है," कि सरस्वती ने लम्बी सांस भरकर कहा, "भैया इतना पढ़-लिखकर भी, डॉक्टरी की परीक्षा पास कर भी, सौन्दर्य और कुरूपता में अन्तर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जान सका। वह शिष्टता और अशिष्टता में भेद नहीं जान सका। न ही उसको मान-अपमान में अन्तर प्रतीत हुआ है। मैं उसको ऐसा नहीं समझती थी।

"जहाँ तक पिताजी का सम्बन्ध है, उनकी बात तो समझ में आती है। वह अपने पुत्र के प्रति वात्सल्यता का त्याग नहीं कर सके।"

साधना ने कहा, "यह तो समझ में आया ही है। इस पर भी पिता-पुत्र में अन्तर केवल मात्र का ही है। यूं तो दोनों में ही पशुपन प्रधान दिखाई दिया है। देखो सरस्वती! नाराज होने की बात नहीं। वे पिता हैं, हमारे पूज्य हैं, परन्तु जब तक हम घटनाओं और विचारों को ठीक ढंग से तोलेंगे नहीं, तब तक हम, बुद्धिशील व्यक्ति, उचित मार्ग का कभी अवलम्बन नहीं कर सकेंगे।

"साधारण बुद्धि के मानवों के लिए समाज ने फार्मूले (गुर) बना रखे हैं। जैसे पिता का पुत्र से स्नेह, पुत्र का पिता के प्रति आदर, माँ के विषय में पवित्र-विचार इत्यादि, परन्तु इन फार्मूलों का भी तो आधार होता है। जब फार्मूले उस आधार का ही विरोध करने लगें, तो फार्मूला ठीक होते हुए भी, उसका प्रयोग गलत हो गया समझना चाहिए। यही आज की घटना में हुआ है।

"पिताजी मैटीरियलिस्टिक (भौतिकवादी) विचार के व्यक्ति हैं। उनके विचार की एक विशेष दिशा है। यह दृष्टिकोण उनकी बातों से सदा टपकता रहता है। उसी दृष्टिकोण को सरस्वती और महादेव दोनों ने अपनाया है। अन्तर इनके पूर्व-जन्म के कर्मफल ने बनाया है। सरस्वती का भौतिकवाद एक ढंग पर सुसंस्कृत और महादेव का दूसरे ढंग से है।"

सरस्वती अपने को समालोचना का विषय बनता देख हँस पड़ी। हँसते हुए उसने कहा, "मैं समझती हूँ कि साधना बहन अब लक्ष्य से दूर जा रही है। भला मेरा भौतिकवाद किस ढंग से सुसंस्कृत हो रहा है।"

साधना भी हँस पड़ी। पद्मदेव और सुदर्शन उठ खड़े हुए। इस पर सरस्वती ने कहा, "क्यों जी! अपनी पत्नी की समालोचना सुनने से भय लग गया है? मैं समझती हूँ कि साधना की मेरे विषय में विवेचना सुनने से कुछ मुझको, कुछ आपको लाभ ही होगा। बैठिये सुदर्शनजी! सुन लीजिये अपनी भाभी को बहन साधना की ऐनक में से।"

"तुम नाराज हो रही हो तो मैं नहीं बताती। मैं इस विषय पर उस दिन से ही विचार कर रही हूँ, जब से भैया पद्मदेव ने तुम्हारा पहले दिन का वार्तालाप और व्यवहार सुनाया है। तुम्हारे सामने ही तो उन्होंने सब बात बताई थी। इस पर भी उस विषय में अपने मन के भाव मैं बताना नहीं चाहती थी। आज भी न बताने में हानि नहीं होगी। यह तो यूं ही, बातों-ही-बातों में कहने लगी थी। अब नहीं कहूँगी।"

साधना सोफा पर बैठी थी। सरस्वती उठकर उसके पास जा, उसके गले में बांहें डाल, उसको अपने साथ सटा कर बोली, "साधना! मैं नाराज नहीं हुई। तुम नाराज हो गई हो। यह तुम कैसे कहती हो कि मैं नाराज हूँ? कभी पहले भी तुम्हारी बातों पर रोष हुआ है मुझको? बता दो, मेरी अच्छी बहन! मुझको यह जान कर बड़ा मजा आता है कि दूसरे मुझको किस रंग में देखते हैं।" उसने साधना को और भी अपने समीप खींच, उसके गाल को अपने गाल से सटा कर कहा, "बताओ न। तुमको मुझको किस रंग में पाया है?"

सरस्वती को साधना से इस प्रकार कलोल करते देख, दोनों पुरुष हँसने लगे। साधना अपने मन की बात कहने के लिये विवश हो गई। उसने कहा, "अच्छा छोड़ो, बताती हूँ।

"सुनो! तुम्हारा पहले दिन और पहली रात्रि का व्यवहार पद्मजी से केवल मात्र शरीर की प्रेरणा पर ही था। तुम युवती थीं। वासना जो केवल मात्र शरीर का विषय है, तुम्हारे पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
व्यवहार पर छाई हुई थी। तुम्हारा, अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण टूट चुका था।

"परन्तु," सरस्वती ने गम्भीर होकर पूछ लिया, "यदि यह केवल शरीर के ही अधीन था तो केवल पद्मजी से ही क्यों था और किसी अन्य पुरुष से फलीभूत क्यों नहीं हुआ? मैं दिन-रात पद्मजी के ही स्वप्न लिया करती थी और उस काल में मैं अनेकों पुरुषों से मिलती थी, बातें किया करती थीं; परन्तु यह भावना पद्मजी के ही प्रति क्यों थी? यदि केवल शरीर की हवस ही होती, तो किसी भी पुरुष से तृप्त हो सकती थी।"

सरस्वती को इस प्रकार युक्ति करते देख सुदर्शन ने ताली बजाते हुए कहा, "साधना, यह मत समझना कि यह केवल मैट्रिक पास है और तुमने बी०ए० पास किया है। यह एक योग्य वकील की पुत्री है। युक्ति से तुमको परास्त कर रही प्रतीत होती है।"

"मुझको सरस्वती पर विजय प्राप्त करने की चाह नहीं है। मैं तो केवल अपना दृष्टिकोण बता रही हूँ। देखो सरस्वती! किसी को खटाई पसंद होती है और किसी को मिठाई। कोई नमकीन पसंद करता है तो कोई फीकापन। ये भी इंद्रियों के विषय हैं। अधिक से अधिक तुम इन्द्रियों को मन के वशीभूत कह सकती हो। कई बार तो हम यह जानते हुए भी कि पानी के बताशे खाने से पेट खराब होगा, उनको स्वाद के अधीन खाते हैं। मन कहता है पेट में वायु बनेगी, परन्तु जिह्वा कहती है आज तो खा लो।

"मेरे कहने का अर्थ यह है कि वासना का पात्र निर्वाचन करना भी इन्द्रियों अर्थात् शरीर का ही काम है, मन और आत्मा का नहीं। इसी प्रकार सरस्वती बहन की वासना-तृप्ति पद्मदेवजी से ही हो, यह 'सिलेक्शन' भी शरीर द्वारा ही हुई कही जानी चाहिए। उस दिन के व्यवहार में बुद्धि, मन और आत्मा का हाथ प्रतीत नहीं होता।

"मैं यह कह रही थी कि यह भौतिकवाद है। पिताजी भौतिकवादी हैं। महादेव भी भौतिकवादी है। अन्तर पूर्व-जन्म के संस्कारों का है। एक का चुनाव पद्म है और दूसरे का सूसन। दोनों अपने-अपने पूर्व जन्म के कर्मों के फल के अधीन, अपने पिता की शिक्षा के अनुसार व्यवहार बना रहे हैं।

"अब हुआ यह है कि बहन-भाई दोनों पिताजी की शिक्षा से दूर हो, भिन्न-भिन्न प्रकृति के व्यक्तियों के प्रभाव में पहुँच गये हैं। अतः दोनों में अन्तर बढ़ेगा। सरस्वती तो अभी भी महादेव से अपने को विलक्षण पाती है।"

❑

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: 1 :

मियाँ इफ्तिखार हुसैन जात का अराई, लाहौर के पास एक गांव बगवानपुर का रहने वाला था। मियाँ साहब के पिता चौधरी चिरागदीन सब्जी बेचते-बेचते ईंटों का भट्ठा लगा बैठे और उससे मालामाल हो गये। चौधरी साहब दिन में पांच बार नमाज पढते और अपने धनी हो जाने का, खुदा को शुक्रिया अदा करते थे। घर में एक लड़का और एक लड़की हुई तो खुदा की कुदरत के और भी कायल हो गये। लड़के का नाम इफ्तिखार हुसैन और लड़की का नाम शबनम रख दिया। लड़की का विवाह तो लाहौर के एक डॉक्टर सैयद हमीद एम०बी०बी०एस० से हो गया और वह एक लम्बे-चौड़े परिवार की माँ बन गई। इफ्तिखार हुसैन विलायत, बैरिस्टर बनने चला गया। वहाँ उसकी मित्रता एक अंग्रेज लड़की से, जिसका नाम हैनिरियाटा स्टोव था, हो गई। इफ्तिखार हुसैन ने अपने पिता को, अपनी मित्र स्टोव के विषय में लिखा तो पिता ने, जो एक अनपढ़ धनी व्यक्ति था, लिख दिया—"उसको हिन्दुस्तान में ले आओ। विवाह यहाँ आकर मुसलमानी तरीके से करना। इसमें बहुत आजादी रहती है। तुम एक से अधिक बीवियाँ रख सकते हो। खुदा ने तुमको तौफीक दी है और तुम उस परवरदिगार की उम्मत बढ़ाने के लिए एक से ज्यादा शादियाँ कर सकते हो। इंग्लैण्ड में शादी करने से ऐसा नहीं कर सकोगे।"

इफ्तिखार हुसैन को अपने पिता की सम्मति पसंद आई और वह अपनी अंग्रेज मित्र को लाहौर ले आया और यहाँ आते ही उससे निकाह पढ़ा लिया। हैनिरियाटा आई तो उसकी दस वर्ष की, पहले पति से हुई लड़की भी साथ आ गई। वह उसको अपने नये बनने वाले पति की इच्छानुसार ही लाई थी। उसको सूसन बहुत ही प्यारी लगती थी।

इफ्तिखार हुसैन पंजाब हाई कोर्ट में वकालत करता था। काम चल निकला था और फिर बालिद शरीफ के देहान्त के पश्चात् वह अकेला ही पिता की जायदाद का वारिस बन गया था। जिन्दगी सुख-चैन से गुजर रही थी। हैनिरियाटा विवाह के समय पेंतीस वर्ष की औरत थी। उसमें गुण यह था कि वह बातें करने में चतुर तथा काम-सूत्र की ज्ञाता थी। आयु में दस वर्ष बड़ी होते हुए भी, वह इफ्तिखार हुसैन को अपने मोह में फँसाये हुए थी।

हैनिरियाटा जिसका नाम बैरिस्टर के पिता ने मालिन रख दिया था, के अन्य कोई सन्तान नहीं हुई। चौधरी चिरागदीन के देहान्त होने के छः महीने के अन्दर ही मियाँ साहब एक सोलह साल की, गांव की, अनपढ़ लड़की को विवाह कर घर ले आये। यह 'शान' थी। शान आई तो बच्चों की लहर-बहर लग गई। प्रति वर्ष एक बच्चा होने लगा। पहले तो हैनिरियाटा को यह बात पसंद नहीं आई, परन्तु इस समय तक वह सैंतालीस वर्ष की हो चुकी थी और अपने पेट से किसी बच्चे की उम्मीद नहीं रखती थी। इससे चुप थी। शान बच्चों की माँ होने पर भी इस अंग्रेज औरत से डरती थी। वह सदा इस भय में रहती थी कि वह कहीं अपने पति से तिरस्कार न पा जाये।

हैनिरियाटा पचास वर्ष की हुई, तब तक शान के घर में पांच बच्चे हो चुके थे—तीन लड़के और दो लड़कियाँ। इस समय सूसन, जो बी०ए० पास कर शान के बच्चों को पढ़ाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करती थी, पच्चीस वर्ष की सुन्दर युवती हो चुकी थी। वह लाहौर 'जिमखाना क्लब' के कई सदस्यों से मेल-जोल रखती थी। एक दिन वह घर आई और अपनी माँ को अलग में ले जाकर बोली, "मम्मी! मैं 'कनसीव'कर गई हूँ।"

"अब किस से है?" माँ ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा। यह सूसन की दूसरी बारी थी।

"नहीं जानती।"

"इडियट! किस-किस से तुम्हारा सम्बन्ध रहा है?"

"यूं तो कई हैं, परन्तु मुख्य रूप में तुम्हारे पति से, बैरिस्टर सरवर हुसैन से और प्रोफेसर क्रुक शैंक से।"

सूसन के प्रेमियों में मियाँ साहब का नाम सुना तो हैनिरियाटा हैरान रह गई। उसने कुछ विचार कर कहा, "देखो! तुमको प्रोफेसर क्रुक शैंक से विवाह का यत्न करना चाहिये।"

"परन्तु वह तो विवाहित हैं। उसकी पत्नी इतनी भली है कि मैं उसको तलाक दिलवाने की बात सोच भी नहीं सकती। साथ ही वह मेरे उसके पति के साथ सम्बन्ध की बात जानती है और उसे तलाक देने का विचार नहीं रखती।"

"तो सरवर हुसैन से कहो।"

"वह अपनी पहली पत्नी से डरता है। वह मुझको इस हानि के प्रतिकार में एक सहस्र रुपये तक देने को तैयार है।"

"तो ले लो। तुमको 'एबॉर्शन' करवाना होगा। उसके लिए रुपयों की आवश्यकता पड़ेगी।"

उसी रात मालिन ने अपने पति मियाँ साहब से सूसन की अवस्था बताई तो मियाँ साहब ने कह दिया, "वह तो हरजाई है।"

"पर आपने भी तो उसको छोड़ा नहीं।"

"एक युवा लड़की के घर में रहने से, मैं अपने मन पर काबू नहीं रख सका।"

"मगर वह तो आपकी लड़की-बराबर थी।"

"हाँ, जैसे तुम मेरी माँ-बराबर हो।"

मालिन चुप कर गई। फिर कुछ विचार कर बोली, "तो उससे विवाह कर लो।"

"मैं इतनी छोटी आयु की बीवी रखना नहीं चाहता।"

"तो उसका गर्भपात करा दो।"

"यह तो जुर्म है।"

"तो उससे सम्बन्ध बनाना जुर्म नहीं है, क्या?"

"नहीं! कानून की दृष्टि में जब दोनों पक्ष स्वीकार करें, तो वह सम्बन्ध जुर्म नहीं रहता। वह बालिग है।"

"तब तो गर्भपात कराना ही होगा।"

"तुम उसे किसी डॉक्टर के पास ले जाओ। खर्चा मैं दे दूँगा।"

मालिन ने हाथ बढ़ाकर रुपया माँग लिया। मियाँ साहब ने पूछ लिया, "कितना दूँ?"

"एक हजार से कम क्या लगेगा?"

मियाँ साहब ने इतना रुपया दे, घर में बदनाम होने से अपने को बचा लिया। उधर सरवर हुसैन तथा क्रुक शैंक, दोनों से अपने गर्भपात कराने के लिए सूसन खूब रुपया ऐंठ लाई।

सूसन का पिता मिस्टर नैथनिल भी, जब तक जीवित रहा, लड़की के लिए दो सौ पौंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक भेजता रहा था। वह रुपया हैनिरियाटा के ही द्वारा आता था। हैनिरियाटा उसको अपने बैंक में जमा करा रही थी। मिस्टर नैथेनिल यह रुपया दस वर्ष तक देता रहा। उसके देहान्त के पश्चात् वह रुपया आना बंद हो गया था। अब बैरिस्टर, सरवर हुसैन और प्रोफेसर क्रुक शैंक से भी जो रुपया आया, वह हैनिरियाटा के पास पहुँच गया।''

हैनिरियाटा अपने पति के साथ जिमखाना क्लब में जाया करती थी। वहाँ वह क्लब के युवक सदस्यों के साथ प्रेम-प्रदर्शन किया करती थी। सब उसकी मीठी-मीठी बातों से आनन्द अनुभव करते थे। इन युवकों में डॉक्टर महादेव सप्रू एक था।

एक दिन वह डॉक्टर के पास पहुँच, बोली, ''डॉक्टर! तुम तो मस्जिद के चूहे मालूम होते हो। तुम्हारी जेब प्रायः खाली दिखाई देती है।''

''मदर!'' महादेव ने उससे मजाक करने के लिए कह दिया, ''तुम्हारी जेब और मेरी जब में अन्तर है क्या?''

'मदर' शब्द से पुकारी जाने पर हैनिरियाटा के माथे पर त्योरी चढ़ गई। इस पर महादेव हँस पड़ा और वह भी हंसने लगी। हँसते हुए उसने कहा, ''यू नॉटी चैप (शरारती पट्ठे)! सुनो, मैं तुम्हारे लिए कुछ आय करने का काम लाई हूँ। कुछ साहस का काम है। बताओ कर सकोगे?''

''पहले काम तो बताओ।''

''एक लड़की के 'पीरियड' (मासिक) रुक गया है। कदाचित् वह गर्भ धारण कर चुकी है। उसको ठीक कर दो।''

''यह तो जुर्म है।''

''इसके लिये रुपया मिलेगा।''

''कितना?''

''तुम अपनी कीमत बताओ।''

''पांच सौ रुपया।''

''मिल जायेगा।''

''पेशगी मिलना चाहिये।''

''मुझ पर विश्वास करो।''

''वह तो करता हूँ। उतना ही जितना श्रीमती का पति उस पर करता है।''

''यू सिल्ली क्रीचर (मूर्ख जानवर)! यदि वह विश्वास न करता होता तो अब तक तलाक दे चुका होता। वह मानता है कि मैं उतनी ही पवित्र और निष्ठावान हूँ, जितनी कि उसकी हिन्दुस्तानी बीवी है।

''अच्छा देखो! कल मैं पांच सौ रुपया तुमको क्लब में दूँगी। परसों वह लड़की तुम्हारे क्लिनिक में आयेगी। काम ठीक हो जाने पर और इनाम भी दूँगी, परन्तु उसको नहीं बताना कि कितना रुपया और किसने दिया है।''

''ओह! मालूम होता है कि तुम्हारे पति साहब का यह कारनामा है।''

''नहीं! मेरी रुचि का कारण तुम समझ जाओगे।''

महादेव पन्द्रह दिन से हाथ-पर-हाथ धरे बैठा था। उसके पास कोई रोगी नहीं आया था, अतः वह मान गया।

लड़की को देखा तो वह समझ गया कि हैनिरियाटा की उसके गर्भपात में क्यों रुचि है। सूसन क्लब में आया करती थी और माँ की भांति ही 'फ्लर्ट' विख्यात थी। महादेव की कभी उससे बात-चीत नहीं हुई थी। वह उसको दूर से ही देखता रहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब सूसन उसके क्लिनिक में आई तो उसने आते ही कहा, "मम्मी ने मुझको आपके पास भेजा है।"

"ठीक, समझ गया हूँ।" महादेव ने उसकी परीक्षा की और कहा, "दो मास का गर्भ है।"

"मैं जानती हूँ।"

"किससे है?"

"यह मेरा रहस्य है।"

महादेव ने कुछ दिन तक उसको औषधि दी और गर्भपात हो गया। इसके लिये सूसन को महादेव के चिकित्सालय की कई बार यात्रा करनी पड़ी। जब गर्भस्राव हुआ तो रक्त बन्द करना एक समस्या हो गई। इसके लिए कई औषधियाँ देनी पड़ीं। पीछे ऑपरेशन भी करना पड़ा।

गर्भस्राव और रक्त के प्रवाहित होने से सूसन बहुत दुर्बल हो गई और फिर शक्तिवर्धक औषधि लेनी पड़ी। इस प्रकार सूसन को पूर्ण रूप से स्वस्थ होने में तीन मास लग गये और इस काल में उसने महादेव को अपने मोह-जाल में फँसा लिया।

सूसन ने महादेव को विवाह के लिए तैयार किया तो बात बैरिस्टर इफ्तिखार हुसैन तक पहुँची। उसने कह दिया कि वह सूसन का बाप बन, विवाह करने को तैयार है अगर विवाह मुसलमानी ढंग से हो।

महादेव ने यह बात अपने पिता से चोरी रखी थी। वह जानता था कि उसका पिता, जो स्वयं क्लब का सदस्य है, सूसन के विषय में जानता है। वह इफ्तिखार हुसैन से मिला तो उसने हिन्दूवाना से मुसलमानी विवाह की श्रेष्ठता का वर्णन किया। उसने बताया कि चार विवाह तक वह आसानी से, बिना तलाक के झंझट में पड़े, करा सकेगा।

इससे भी बढ़कर बैरिस्टर साहब ने कह दिया, "बरखुरदार! अब हुकूमत मुसलमानों की है। अंग्रेजों के जाने के बाद पंजाब में मुसलमानों का जोर बढ़ेगा। इसलिए तुमको, मुसलमान हो जाने से, तरक्की करने का मौका मिलेगा।"

महादेव को पद्मदेव का किस्सा विदित था। वह गवर्नमेन्ट कॉलेज से, हिन्दू होने के कारण ही निकाला गया था। इससे उसको बैरिस्टर की बात का विश्वास आ गया। वह अपने बेकार रहने से ऊब चुका था।

पंडित नीलकंठ के घर में हिन्दू-मुसलमान में भेद-भाव नहीं होता था। न ही इन दोनों के अन्तर पर विवेचना होती थी। एक दिन पद्मदेव से बातचीत में हिन्दू-मुसलमान के विषय में चर्चा चली थी, तो इस विषय में अरुचि होने के कारण, महादेव वहाँ से उठ घूमने के लिए निकल गया था।

अब बैरिस्टर इफ्तिखार हुसैन के सुझाव से उसको हिन्दू छोड़कर मुसलमान होना एक लाभकारी व्यापार समझ आया। वह मान गया। अगले दिन महादेव का नाम महमूद रख दिया गया और उसका विवाह सूसन से हो गया। उसकी पत्नी को भी मुसलमानी नाम देने के लिए सूसन से सोसन बना दिया गया।

निकाह पढ़ाने के पश्चात् महादेव सूसन को लेकर अपने पिता की कोठी पर पहुँचा। पहला काम उसने, अपने पत्नी को अपने कमरे में बैठाकर यह किया कि कोठी के बाहर अपने नाम की प्लेट बदलवा दी। वह अपने नाम की प्लेट बनवाकर, पहले ही कोठी में रख गया था। उसका विचार था कि उसका पिता, उसके नये नाम की प्लेट देखकर सबकुछ समझ जायेगा और फिर पीछे उसको सारी बात बताने में सुगमता रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटनावश नीलकंठ बहुत रात गये कोठी में आया। स्वरूपवती भी उसके साथ कहीं बाहर गई हुई थी। रात देरी से आने के कारण उनका ध्यान नाम-प्लेट पर नहीं गया। वे खाना बाहर से ही खाकर आये थे। अतः आते ही अपने कमरे में जाकर सो गये।

जब महादेव को विदित हुआ कि उसके माता-पिता आकर सो गये हैं और उसका अपने नाम की 'प्लेट' लगाना विफल गया है, तो उसने भी अपनी योजना बदल दी। वह रात का खाना करीम को कहकर अपने कमरे में मंगवा, खाकर सो गया।

अगले दिन जब उसका पिता ब्रेकफास्ट पर जाकर बैठा तो वह भी सूसन को लेकर डाइनिंग हॉल में जा पहुँचा।

वहाँ से डांट खाकर वे दोनों अपने कमरे में चले आये। कमरे में पहुँच उसने करीम को बुलाया और ब्रेकफास्ट लाने को कहा। करीम ने विस्मय में पूछ लिया, "पण्डितजी नाराज क्यों हैं?"

महादेव ने करीम को मुसलमान जान, उसक सहानुभूति अपने साथ करने के लिये कह दिया, "मैं मुसलमान बन गया हूँ, इससे नाराज हो गये हैं।"

"सरकार!" करीम ने सूसन की ओर देखते हुए पूछना चाहा; परन्तु कुछ विचार कर चुप कर रहा। महादेव उसका आशय समझ कहने लगा, "यह तुम्हारी मालकिन है। मैं एक जुदा घर लेने का विचार कर रहा हूँ।"

"ठीक है हुजूर! कुदरत में यही तो होता है। परिन्दों के बच्चे भी बड़े हो, अपना अलग घर बनाते हैं।"

"तुम मेरे साथ चलोगे?"

"हाँ! हुक्म होगा तो क्यों नहीं चलूँगा?"

करीम को पंडित नीलकंठ के घर कोई कष्ट नहीं था। इस पर भी एक नौमुसलिम के घर में जाकर रहना, वह एक सबाब का काम मानता था।

महादेव ने कह दिया, "अच्छी बात है। कल तक यहाँ से छुट्टी लेनी होगी।"

ब्रेकफास्ट करते हुए सूसन ने महादेव के पिता की बहुत निन्दा की। उसने ही महादेव को यह बताया था कि उसका पिता उ सको अपनी मिस्ट्रेस बनाने का यत्न करता रहा था।

महादेव ने अपनी आर्थिक स्थिति सूसन को बताई तो दोनों गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगे कि जीवन कैसे चलाया जाये। सूसन का कहना था कि यदि वह गर्भपात का काम करना स्वीकार करे तो उसकी प्रैक्टिस चल सकती है।"

"परन्तु डार्लिंग! अभी तो प्रश्न वर्तमान का है। अब तो मकान चाहिए, खाने-पीने को चाहिए। तुम जो काम कहती हो, वह तो पीछे विचार कर लूँगा।"

"तो ऐसा करो। चलो मेरी माँ के पास। कुछ तो काम चलाने के लिए वह दे ही सकेगी। बैरिस्टर सरवर हुसैन बीडन रोड पर रहता है। उसके बगल में कुछ कमरे खाली हैं। वे भाड़े पर लेकर, आज ही इस कोठी को हम छोड़ सकते हैं।"

महादेव विचार कर रहा था कि यदि कहीं से एक सौ रुपया मिल जाये तो मकान लेकर ही सूसन की माँ के पास जाना ठीक होगा, परन्तु एक सौ रुपया का प्रबन्ध भी तो नहीं था। वह अपनी माँ से माँगने के लिए गया तो उसे पता चला कि वह सरस्वती के घर चली गई है।

सूसन उसको अपनी माँ के पास ले जाना चाहती थी, परन्तु महादेव टालमटोल करता रहा। दिन को भोजन का समय हुआ तो माता-पिता को घर में अनुपस्थित देख, वह अपनी पत्नी को लेकर खाने के कमरे में गया और भोजन कर आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब उसको कोई सूरत, रुपया पाने की दिखाई न दी तो विवश हो, सूसन को लेकर वह चलने को तैयार हो गया। वह अभी कमरे से निकला ही था कि सरस्वती, पद्मदेव, साधना और उसकी माँ, तांगे में वहाँ पहुँच गये।

पद्मदेव से एक सौ रुपया पा, उसका चित्त बहुत हल्का हो गया। वह सूसन के साथ पहले बीडन रोड पर गया और वहाँ एक मकान में, एक फ्लैट पचास रुपये मासिक पर ले लिया। एक मास का भाड़ा पेशगी दे उसने फ्लैट को ताला लगा दिया।

: 2 :

सूसन की माँ, अपनी लड़की से रुपये की आवश्यकता की बात सुनकर विचार करने लगी कि सूसन के पिता के रुपये के विषय में उसको बताये अथवा न बताये। कुछ विचार कर वह चुप कर रही। उसने अपने दामाद की ओर देख पूछ लिया, "कितने रुपये से काम चल निकलेगा?"

"हमने एक पृथक् मकान ले लिया है। उसमें कुछ तो फर्नीचर ही चाहिए। साथ ही कुछ समय के लिए भोजन आदि का प्रबन्ध भी करना है। तक तक बैरिस्टर साहब से किसी काम के विषय में बातचीत कर लूँगा।"

हैनिरियाटा ने एक हजार रुपये का एक चैक काट कर महादेव को दे दिया और कहा, "जरा होशियारी से काम चलाओ। मैं बैरिस्टर साहब से तुम्हारे विषय में कहूँगी।"

महादेव और सूसन चैक लेकर सीधे बैंक गये। बैंक से रुपया लेकर वे फर्नीचर वाले की दुकान पर जा पहुँचे। वहाँ से दो सौ रुपये का सामान खरीदा। फिर क्रौकरी वाले की दुकान पर जा पहुँचे। वहाँ से वर्तन खरीद, सब सामान अपने नये मकान के पते पर भेजने को कह, वे बीडन रोड के मकान पर चले गये।

सूसन वहीं ठहर गई। वह फर्नीचर आदि सामान की प्रतीक्षा कर रही थी। महादेव अपने कपड़े तथा पुस्तकें लेने के लिये पिता की कोठी पर जा पहुँचा।

वहाँ पिता से उसको दस हजार रुपये का एक और चैक मिल गया। यद्यपि यह उससे आधा था, जो उसके पिता ने सरस्वती को उसके विवाह के समय दिया था, इस पर भी प्रातः हुए व्यवहार के कारण वह तो कुछ भी पाने की आशा नहीं रखता था।

बीडन रोड पर पहुँचा तो सूसन कमरों में फर्नीचर लगा सजा रही थी। उसके कमरे सजाने का ढंग महादेव को बहुत पसंद आया। जब उसने अपने पिता का दस हजार का चैक सूसन को दिखाया तो वह बोली, "आखिर बूढ़े को अक्ल आ गई प्रतीत होती है।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि सरस्वती और उसके घरवाले ने समझा-बुझाकर उनका क्रोध शान्त कर रखा था। इस समय उनकी आवाज में मधुरता थी।"

"मैं इससे प्रसन्न हूँ।"

रविवार आया तो वह सूसन को लेकर पद्मदेव के घर जा पहुँचा।

पद्मदेव ने अपने घनिष्ठ मित्रों को भी आमंत्रित किया हुआ था। सबको महादेव के विवाह की कथा पहले ही मालूम थी। इनमें एक डॉक्टर शिवलाल और उनकी पत्नी रामप्यारी थीं। वे दोनों महादेव के इस तरह मुसलमान हो जाने से बहुत अप्रसन्न थे। इस पर भी पद्मदेव और सरस्वती के आग्रह पर आये हुए थे।

महादेव आया तो पद्मदेव ने उसका तथा सूसन का परिचय अपने मित्रों से कराना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, "लीजिए! ये सरस्वती के भाई महादेव सप्रू और सरस्वती की भाभी सूसन सप्रू हैं। आपने भाई साहब को तो पहले देखा है, पर भावज घर में नई आई है और आज के भोज का आयोजन इसके आने के उपलक्ष्य में ही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबने महादेव और सूसन को मुबारिकबाद दी। अब बातचीत भी होने लगी। पद्मदेव के मित्रों में यह बात निश्चय हो चुकी थी कि हिन्दू-मुसलमान के विषय में कोई ऐसी बात नहीं होनी चाहिए, जिससे व्यर्थ में झगड़ा बढ़े, परन्तु उनके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब सूसन ने स्वयं इसकी चर्चा चला दी।

उसने प्रोफेसर सुदर्शन से कहा, ''आप मेरे विवाह के पहले दिन आये थे और आप लोगों के प्रयत्न से हमारी इनके पिताजी से सुलह हो गई है। उन्होंने हमको अपना जीवन चलाने के लिए दस हजार रुपया नकद दिया है।''

''तब तो बहुत-बहुत बधाई हो।''

''कल वे और इनकी माताजी हमसे मिलने, हमारे नये मकान में भी आये थे।''

''ओह!'' सुदर्शन के मन में विस्मय हुआ। इस पर भी उसने इस विस्मय को प्रकट होने नहीं दिया। उसने कह दिया, ''इससे तो यह समझना चाहिये कि अब पूर्ण रूप से सुलह हो गई है। आपके पिता भी आते होंगे।''

''मियाँ इफ्तिखार हुसैन साहब मेरे असली पिता नहीं हैं। इनसे मेरी माँ का दूसरा विवाह है। मैं पहले विवाह से हूँ। मेरे पिता का देहान्त हो चुका है। इस पर भी हम नित्य मियाँजी के घर जाते हैं। प्रायः रात का खाना वहाँ ही होता है। वे इनको आशा दिला रहे हैं कि इनको सरकारी हस्पताल में सिविल सर्जन की नौकरी मिल जायेगी। वे इसके लिए यत्न कर रहे हैं।''

इस पर शिवलाल ने कह दिया, ''इस बार स्थान खाली होने पर मेरा चान्स है। 'वेटिंग लिस्ट' (प्रतीक्षा करने वालों की सूची) में मेरा नाम सबसे ऊपर है।''

''इस पर भी,'' सूसन ने कहा, ''पहले नौकरी इनको मिलेगी। ये मुसलमान हैं। आज मुसलमानों के पौ बारह हैं। वास्तव में ये मुसलमान तो इसलिये ही बने हैं।''

''तो अपनी पत्नी के लिये नहीं बने?''

इस पर सूसन हँस पड़ी। उसने कहा, ''मेरे लिये ये हिन्दू रहते अथवा यहूदी, कुछ अन्तर नहीं पड़ता था। मैं मुसलमान नहीं हूँ। न तो मुझको नमाज ही पढ़नी आती है न ही कलमा। केवल नाम भर बदल दिया गया है। वह भी 'यू' अक्षर को 'ओ' में बदलने से।

''मैं हैरान हूँ कि हिन्दुस्तान में ये कैसे आदमी रहते हैं। सूसन को सोसन पुकारने से क्या कोई ईसाई से मुसलमान हो जाती है।''

''तो आप अभी भी मन से ईसाई हैं?''

''मैं ला-मजहब हूँ। मैं अपने को मानव मानती हूँ। एक मनुष्य को जहाँ से लाभ हो, वह ही करना उसका मजहब है। सबसे पहले अपना, पीछे परिवार का, तदनन्तर मुहल्ला, फिर देश का और फिर सारे संसार का कल्याण करना ही मानवता है।''

पद्मदेव समझ रहा था कि यह एक अति भयंकर सिद्धान्त है। इस पर भी वह मानता था कि यह भौतिकवाद का एक रूपमात्र ही है। भौतिकवादी इसी प्रकार स्वार्थरत होते हैं, परन्तु वह आज इनसे विवाद में पड़ना नहीं चाहता था। अतएव वह चुप रहा।

भोजन परसा गया तो सब ड्राइंगरूम से उठकर डाइनिंग हाल में चले गये। हिन्दू-मुसलमान तथा मजहब की बात समाप्त करने के लिये पद्मदेव ने एक नये विषय पर चर्चा चला दी। उसने पूछा, ''आप कब से हिन्दुस्तान में हैं?''

''मैं दस वर्ष की आयु की थी, जब यहाँ आई थी। अब मैं पच्चीस वर्ष की हूँ।''

डॉक्टर शिवलाल ने कह दिया, ''पच्चीस? परन्तु आप तो अभी पन्द्रह-सोलह वर्ष की प्रतीत होती हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवलाल ने हँसी की थी। देखने में तो वह तीस-बत्तीस वर्ष की प्रतीत होती थी। शरीर विज्ञान के जानकार व्यक्ति यह कह सकते थे कि सूसन ने यौवन को खुले हाथों लुटाया है। शिवलाल के व्यंग्य को समझ सब हँसने लगे थे, परन्तु सूसन ने इसको औपचारिक प्रशंसा ही समझा। इस पर भी वह समझी थी कि यह उसके सौन्दर्य का ही प्रभाव है, जिससे यह भ्रम उत्पन्न हो सका है।

पद्मदेव ने पुनः वार्तालाप की दिशा बदलने के लिए पूछ लिया, "तो इन पन्द्रह वर्षों में आपने हिन्दुस्तान तो खूब देखा होगा?"

"जी नहीं; मैं लाहौर से बाहर बिल्कुल नहीं गई। अब मैं समझती हूँ कि हम इस नगर से बाहर घूम-फिर सकेंगे। यदि कोई ऐसा काम मिल गया, जिसमें घूमना-फिरना हो सका, तब तो मौज बन जायगी।"

"परन्तु इफ्तिखार हुसैन साहब तो अभी विलायत गये थे। वे आपको साथ नहीं ले गये क्या?"

"बात यह है कि मेरी माँ, उनकी प्रथम पत्नी, उनके साथ गई थी। मुझको वे साथ नहीं ले गये थे। उनकी दूसरी बीवी के बच्चा होने वाला था। वे मुझको उसकी देखभाल के लिए छोड़ गये थे।"

"तो मियाँ साहब की एक अन्य बीवी भी हैं?"

"हाँ! यदि उनकी सेहत इजाज़त देती तो अब तक उनकी दो बीवियाँ और हो सकती थीं।"

"हाँ, स्मरण हो आया है। मुसलमानों में चार पत्नियाँ एक साथ रखने की इजाजत है, परन्तु सूसनजी! आप महादेव को भी ऐसा करने की स्वीकृति देंगी क्या?"

इस पर बात पुनः हिन्दू-मुसलमान के आचार-व्यवहार पर आरम्भ हो गई। सूसन ने कह दिया, "मैं इसमें हानि नहीं मानती। पूर्वी देशों में इस बात का रिवाज है। मैं समझती हूँ कि यहाँ की जलवायु इसके अनुकूल है।"

अब सुदर्शन ने कह दिया, "यह तो मजहब के दृष्टिकोण से ही उचित-अनुचित बात है। इस्लाम में चार पत्नियों की स्वीकृति है, चाहे मुसलमान आइसलैंड का ही रहने वाला क्यों न हो।"

"यह इस कारण कि इस्लाम एक 'ओरिएण्टल' (पूर्वी देशों का) मजहब है। हिन्दुओं में भी तो एक से अधिक पत्नियाँ रखने की इजाजत है।"

"मैं समझता हूँ कि यह नहीं है।"

"नहीं है? मुझको तो मिस्टर सप्रू बता रहे थे कि है।"

"वे हिन्दू-समाज के जीवन ढंग को समझे नहीं। इसी से ऐसा कहते हैं। हिन्दुओं में सामाजिक नियम देश के कानून के अन्तर्गत नहीं है। हममें दूसरे विवाह को, जब तक पहली पत्नी जीवित हो, पसंद नहीं किया जाता। ऐसा विवाह करने वाले को समाज का एक निम्नकोटि का घटक माना जाता है। इस पर भी देश के कानून को अपनी सामाजिक प्रथाओं में हस्तक्षेप करने की स्वीकृति हम नहीं देते। जो पुरुष दूसरा विवाह करते हैं, वे समाज में अपना मान खोने पर तैयार हो जाते हैं।"

"बहुत विचित्र है आपकी समाज! वह किसी बात को पसंद भी नहीं करते और फिर कानून का हस्तक्षेप भी नहीं चाहते?"

"हाँ! हम इस बात को सामाजिक व्यवहार मे लचक का नाम देते हैं। कुछ कार्य हैं, जिनकी संख्या दस तक है, जिनको हम राजा अथवा राज्य के दण्डनीय मानते हैं। इनमें चोरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना, झूठ बोलना, बलात्कार करना इत्यादि कार्य हैं। इनके करने पर तो राज्य हस्तक्षेप करता है, परन्तु अन्य बातों में हम समाज को निर्णय का अधिकार देते हैं। समाज अपनी पसंद अथवा न पसंद, मान, प्रतिष्ठा देकर अथवा न देकर प्रकट करती है।''

''यह तो कुछ न हुआ।'' महादेव ने कह दिया, ''इससे तो कभी किसी पर घोर अत्याचार हो जाने की सम्भावना हो जायेगी और कोई घोर पाप करने पर भी बच जायेगा।''

''अत्याचार भला कैसे हो जायेगा?'' पद्मदेव ने समझाने के लिये कहा—''मान लीजिये कोई विधवा दूसरा विवाह करती है। लोग इसको पसंद नहीं करते। वे इस औरत से घृणा करते हैं, परन्तु जब इस घृणा के कारण लोग उस विधवा पर पत्थर मारेंगे, तभी तो अत्याचार होगा। यह अधिकार समाज को नहीं। समाज दण्ड नहीं दे सकता। वह पसंद अथवा न पसंद तक ही अपने व्यवहार को सीमित रखता है। पत्थर मारकर किसी को घायल करना तो कानून को अपने हाथों में लेना हो जायेगा।''

''इससे तो समाज में बहुत गड़बड़ मच जायेगी। धनी और बलशाली लोग तो अनेकों विवाह कर लेंगे। वे अपने बल अथवा धन के बल पर दूसरों को पसंद न पसंद की अवहेलना कर सकेंगे।''

''इसका अर्थ तो यह हुआ कि धन और पशुबल की महिमा और प्रभाव को कम करना चाहिए, न कि समाज की लचक को निकाल कर उसको एक शुष्क और मृत-प्रायः वस्तु बना दिया जाये। देखो मिसेज सप्रू! पुरुष द्वारा अथवा स्त्री द्वारा दूसरा विवाह मनुष्य की अपनी-अपनी आवश्यकताओं पर निर्भर है। उन आवश्यकताओं का अनुमान न तो समाज के दूसरे घटक लगा सकते हैं न ही राज्याधिकारी। समाज अधिक से अधिक यह ही कह सकती है कि उस व्यक्ति—पुरुष अथवा स्त्री ने ठीक नहीं किया; परन्तु दण्ड देना, बिना वास्तविक परिस्थिति का अनुमान लगाये तो अन्याय होगा। इस कारण इसको राज्य-दण्ड-विधान से मुक्त रखा है।

''रहा धनी और बलशाली का समाज की अवहेलना करने का प्रश्न। यह समाज के दुर्बल तथा विकृत होने के कारण ही हो सकता है। समाज के विचारों को ठीक रखना और इसे एक स्वस्थ तथा सबल बनाकर रखना तो ब्राह्मणों अर्थात् शिक्षकों का काम है, राजा का नहीं।

''देखो सूसन! मैं तुमको एक घटना, जो आँखों देखी है, सुनाता हूँ। पिछले वर्ष मैं दिल्ली गया था। वहाँ एक बहुत धनी-मानी व्यक्ति की माँ का देहान्त हो गया और उसकी शव-यात्रा श्मशान भूमि को जा रही थी। अर्थी को चार नौकर उठाये हुए थे। अर्थी के पीछे मृत का वह धनी पुत्र सिर मुंडाये, नंगे पांव जा रहा था और उसके पीछे सौ से ऊपर खाली गाड़ियाँ, रईसों के घर की तथा भाड़े पर की हुई, जा रही थीं। उनमें कोई व्यक्ति नहीं बैठा था।

''मैंने एक दुकानदार से इन खाली गाड़ियों का अर्थ पूछा तो उसने हंसते हुए कहा—''यह, जो सिर मुंडाये अर्थी के पीछे-पीछे जा रहा है, नगर का एक बहुत बड़ा रईस है। दस-बीस लाख की सम्पत्ति है। एक कपड़ा की मील चलती है। वह यहाँ की खत्री बिरादरी का सदस्य है। इसका स्वभाव था कि जब कोई बिरादरी में मर जाता, तो अपनी घांड़ा-गाड़ी उसकी अर्थी के साथ जाने के लिये और घर के वृद्ध तथा अपाहिजों को शव-यात्रा के साथ जाने के लिये भेज, केवल इतने मात्र से अपनी सहानुभूति प्रकट कर दिया करता था। आज उसकी माँ की मृत्यु हुई है तो लोगों ने भी अपनी खाली गाड़ियाँ भेज दी हैं। जिनके पास गाड़ियाँ नहीं थीं, उन्होंने भाड़े पर लेकर भेज दी हैं और जैसे यह धनी स्वयं नहीं जाया करता था, बिरादरी के लोग भी नहीं आये।

'ये कुछ पूर्वीये, मैले-कुचैले कपड़ों में जो साथ जा रहे हैं, इनकी मिल के नौकर हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैं, समाज का उस धनी के अभिमान को चूर करने का ढंग देख चकित रह गया। दिल्ली की यह बिरादरी शक्तिशाली तथा सुलझा हुआ मस्तिष्क रखने वाली प्रतीत हुई थी।"

सूसन और महादेव, दोनों पद्मदेव से समाज की व्यवस्था और राज-दण्ड में भेद सुन विचारमग्न मुख देखते रह गये। इस पर पद्मदेव ने अपने कथन की व्याख्या कर दी। उसने कहा– "मैं एक और उदाहरण देता हूँ। एक ढीले चरित्र स्त्री किसी भले पुरुष से विवाह कर लेती है। उस स्त्री के चरित्र में शिथिलता होनी अनुमान मात्र भी हो सकती है और प्रमाणित भी। दोनों अवस्थाओं में विवाह रुक नहीं सकता। विवाह के पश्चात् स्त्री अपने चरित्र को सुधार भी सकती है और नहीं सुधार सकती। उसके व्यवहार को समाज पसंद करे अथवा न करे, परन्तु न तो वह विवाह ही टूट सकता है, न ही पति को विवश किया जा सकता है कि वह पत्नी का त्याग करे। यह है लचक हिन्दू समाज में। एक हिन्दू यह पसंद नहीं करता कि इस प्रकार की परिस्थिति में कोई तलाक का कानून बने। वह इस लचक को समाज में एक गुण समझता है, अवगुण नहीं। इस लचक से किसी व्यक्ति को दुःख भी हो सकता है, परन्तु अनेकों को सुधरने का अवसर भी प्राप्त होता है।

"परन्तु मुसलमानों में तो एक से अधिक विवाह को इस दृष्टिकोण से नहीं देखा जाता। वहाँ, जहाँ तक मेरा अनुमान है, एक से अधिक विवाह में कारण जनसंख्या बढ़ाना और वासनामय जीवन व्यतीत करना ही है।"

: 3 :

इस दिन की दावत से महादेव एक नवीन दृष्टिकोण की झलक लेकर गया। वह यह जानता था कि उसकी स्त्री ढीले चरित्र की औरत रही है। वह आशा करता था कि विवाह के पश्चात् वह सुधर जायेगी और उसके जीवन को सरस कर सकेगी। इसके विपरीत वह अपने जीवन पर भी दृष्टिगोचर करता था। वह भी जीवन का रसास्वादन कर चुका था। अब उसका विवाह हो गया है। क्या उसका पूर्व जीवन अथवा सूसन का पूर्व जीवन उनमें तलाक का आधार बन जाना चाहिये?

एक विचार से वह अपनी पत्नी छोड़ने अथवा न छोड़ने की स्वतंत्रता अपने पास रखना एक लाभ की बात समझता था। एक दूसरे विचार से वह अपनी पत्नी के उसको छोड़ कहीं अन्यत्र चले जाने को हानि की बात समझता था।

इस कारण वह विचार कर रहा था कि उसकी पहले की धारणा, कि प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार कानून से नियंत्रित होना चाहिए, सर्वत्र ठीक नहीं हो सकती।

घर आते हुए उसने सूसन से पूछा, "कैसा लगा है सरस्वती का घरवाला?"

"एक आदर्शवादी और अव्यावहारिक विचार रखने वाला व्यक्ति प्रतीत होता है। सौभाग्य से पिता बहुत धन छोड़ गया है, अन्यथा ऐसा व्यक्ति तो भूखों मर जायेगा और सब संबन्धियों से बहिष्कार पा जायेगा।"

"मैं समझा हूँ कि वह स्वतंत्रता का पुजारी है। वह कानून का व्यक्ति के कार्यों में कम-से-कम हस्तक्षेप चाहता है। यह बात तो मुझको लाभी की प्रतीत होती है।"

"क्या लाभ होगा इससे? समाज में उच्छृंखलों की संठया बढ़ जायेगी।"

"देखो सूसन! यदि यह कानून बन जाये कि शिथिल चरित्र वालों का विवाह नहीं माना जायेगा तो कैसा रहे?"

इस प्रश्न को सुन सूसन भौंचक्की हो मुख देखती रह गई। महादेव ने कह दिया, "उस अवस्था में हमारा विवाह विवाह नहीं माना जायेगा। हमारी सन्तान हराम की हो जायेगी और उसके वे सब अधिकार, जो एक विवाहित पति-पत्नी की सन्तान के होने चाहिऐं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त हो जायेंगे। यह ठीक होगा क्या?"

"ऐसा कानून न बनने की अवस्था में हम पति-पत्नी हैं। तुमको चरित्र सुधारने का अवसर मिला है। तुमको एक सम्मानित माँ बनने का गर्व प्राप्त हो सकेगा। इस समय हमारे परिचित लोग तुम्हारी दुर्बलताओं को जानते हैं। वे उसको पसंद नहीं करते। समय व्यतीत होने के साथ वे भूल जायेंगे और यह तुम्हारे लाभ की बात होगी।

"कानून बन जाने से और कानून द्वारा दण्डित हो जाने पर तो अवस्था दूसरी ही होगी।"

यह वक्तव्य तो सूसन के अपने जीवन से सम्बन्ध रखता था। अतएव इससे वह एक गम्भीर विचार में मग्न हो गई। उसको पद्मदेव की व्यवस्था में लाभ प्रतीत हुआ।

वे घर पर पहुँचे तो घर के नीचे मियाँ इफ्तिखार हुसैन साहब की घोड़ा-गाड़ी उनको खड़ी मिली। कोचवान उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वे वहाँ पहुँचे तो कोचवान ने सलाम कर कहा, "बैरिस्टर साहब ने बिटिया को बुलाया है।"

"मुझको नहीं?" महादेव ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"मुझको यही कहा है। आप आइये। उन्होंने मना नहीं किया।"

महादेव विचार करने लगा। कुछ विचार कर वह सूसन से पूछने लगा—"मेरी वहाँ तुम आवश्यकता समझती हो क्या?"

"मुझको पता नहीं कि वे किस कारण बुला रहे हैं। इससे कह भी नहीं सकती कि आपकी आवश्यकता है अथवा नहीं।"

"अच्छा तुम जाओ। मैं सायंकाल क्लब में मिलूँगा।"

"ठीक है।" इतना कह सूसन घोड़ा-गाड़ी में बैठ गई और महादेव अन्दर कमरे में चला गया।

सूसन मियाँ साहब की कोठी पर पहुँची तो उसकी माँ वहाँ नहीं थी। पूछने पर पता चला कि वह अपने मित्रों के साथ जहाँगीर के मकबरे को पिकनिक पर गई हुई है। आज मियाँ साहब की हिन्दुस्तानी पत्नी भी अपने मायके 'बगवानपुरा' गई हुई थी। उसके बच्चे भी उसके साथ गये थे। घर में नौकर ही थे। बैरिस्टर साहब अपने सोने के कमरे में थे। दिन के भोजन के बाद वह आराम कर रहे थे।

सूसन ने सोने के कमरे के बाहर खांसा। उसका आशय था कि यदि वे जाग रहे हैं, तो उनको पता चल जाये कि वह आ गई है। बैरिस्टर साहब ने खांसने का शब्द सुना तो पूछा, "कौन है?"

"मैं, सूसन।"

"आ जाओ।"

सूसन भीतर गई तो बैरिस्टर साहब ने कहा, "तुम अब सूसन नहीं हो। तुम सोसन हो।"

"क्या अन्तर पड़ जाता है इससे?"

"यदि अन्दर न पड़ता होता तो यह नाम रखा ही न जाता। देखो! तुम अब मुसलमान हो गई हो। इसलिए नाम लेते ही इस बात की घोषणा होनी चाहिए कि तुम अब ईसाई नहीं, मुसलमान हो।"

"मुझको अपने मन में तो कोई अन्तर प्रतीत हुआ नहीं। इसीलिये बिना विचारे मुख से पहला नाम निकल जाता है।"

"तुम्हारे में अन्तर तो नहीं हुआ, परन्तु तुम्हारी औलाद में अन्तर हो जायेगा। यही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हम लोग चाहते हैं। इसीलिए ही तुम्हारे खाविन्द को मुसलमान होने के लिए कहा गया था। इसीलिए मैंने उसके लिए भाग-दौड़ की है। जिसका परिणाम यह निकला है। महमूद सप्रू को पंजाब का 'असिस्टैण्ट डायरेक्टर ऑफ हैल्थ' नियुक्त किया गया है।"

"सत्य?"

"हाँ! मुझको 'मिनिस्टर ऑफ हैल्थ' को बताना पड़ा है कि यह एक नौ-मुसलमान है और इसकी मदद करनी चाहिए। इसके साथ ही उनको यह भी बताना पड़ा कि यह तुम्हारा खाविन्द है। वे तुमको जानते हैं और कदाचित् तुमने कभी उन पर कोई एहसान किया है, जिससे तुम्हारा नाम सुनते ही उन्होंने अपने सैक्रेटरी को बुलाकर, नियुक्ति-पत्र टाईप करा, हस्ताक्षर कर, एक नक्ल मुझको दे दी और एक डायरेक्टर साहब के पास भेज दी है।"

"कब से यह नियुक्ति हुई है?"

"अगले मास की पहली तारीख से। महमूद को उस दिन काम पर हाजिर हो जाना चाहिए, परन्तु उससे पहले तुमको अपना शुक्रिया अदा करने मिनिस्टर साहब के पास जाना पड़ेगा। उन्होंने इस बात की ओर इशारा किया था।"

"मैं जाऊंगी।"

"और वहाँ जाने से पहले मैंने तुमको अपने सोने के कमरे में, मेरा शुक्रिया अदा करने के लिए बुलाया है।"

"आई एम वैरी मच थैंकफुल टू यू फादर!"

"ओह नो! पिता नहीं; भला मैं तुम्हारा पिता कैसे हूँ? तुम किसी अंग्रेज की औलाद हो, मेरी नहीं। मेरे लिए तो तुम एक खूबसूरत नौजवान औरत हो। यह बात मैंने एक बार पहले भी तुमको बताई थी।"

"तब मैं कुंवारी थी, अब शादीशुदा हूँ।"

"यह बात तो मिनिस्टर साहब का शुक्रिया अदा करने के वक्त भी होगी। मैं समझता हूँ कि तुम्हारा विवाह हो जाने से किसी किस्म का तुम में फर्क नहीं आया।"

सूसन बैरिस्टर साहब की मनोवृत्ति का मुकाबला नीलकंठ, अपने पति के पिता से करती थी। पंडित नीलकंठ ने पिछले दिन कहा था कि वह जो कुछ है, उसको भली-भांति जानता है, परन्तु अब वह उसके लड़के की पत्नी होने से, उसकी लड़की समान हो गई है। इससे वह आशा करता है कि उसकी पुत्री एक भले घर की औरत बनकर रहेगी।

इसके साथ ही उसकी सास ने कहा था—"तुमने मेरे लड़के के सामने अपने श्वसुर की निन्दा की है। यह झूठ बोल तुमने एक घोर पाप किया है, परन्तु पाप का फल देना परमात्मा के हाथ में है। मैंने तुमको क्षमा कर दिया है और भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि वह तुमको सुख और शान्ति दे।"

सूसन दोनों में अन्तर स्पष्ट देख रही थी। नीलकंठ ने जाते हुए कहा था, "यदि तुम स्वयं को मेरे लड़के की निष्ठावान पत्नी बनकर रख सको, तो मैं अपनी लड़की मानकर सदा तुम्हारे साथ ठीक व्यवहार रखूँगा।"

यहाँ यह व्यक्ति कह रहा था कि उसने इसको अपनी वासना-तृप्ति का साधन बनाया था। तब की याद दिलाकर वह पुनः वैसा ही करना चाहता था। वह अभी इस माँग की मन पर प्रतिक्रिया विचार रही थी कि इफ्तिखार हुसैन ने उसको पकड़कर पलंग पर खींच लिया।

वह शाम को बैरिस्टर साहब के साथ ही क्लब को गई और वहाँ के आमोद-प्रमोद में अपने साथ घटी कुछ घंटे पूर्व की घटना को भूल गई। वैसे तो यह यूरोपियन समाज की विभूति होने से मद्य का सेवन करती थी, परन्तु आज उसने मात्रो से अधिक पी। अपने मस्तिष्क में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उठ रहे बवंडर को वह शान्त करना चाहती थी।

वह पर्याप्त मदमस्त हो चुकी थी, जब महादेव आया। महादेव उसके पास आकर बैठ गया। उसके पास उस समय 'मिनिस्टर ऑफ हैल्थ' बैठा था। उसको महादेव का आना रुचिकर नहीं लगा। इससे कुछ चंचल हो, वह महादेव की तरफ देखने लगा। सूसन ने मिनिस्टर साहब का क्रोध शान्त करने के लिए कह दिया, "मैं आपका धन्यवाद करने आपके घर पर आना चाहती हूँ। किस समय आपको अवकाश होगा।" पूर्व इसके कि मिनिस्टर, जो मद्य के नशे में चूर था, कुछ कहे, उसने अपने पति की ओर देखकर कहा, "डीयर! इनका धन्यवाद करो। आप पहली तारीख से 'असिस्टैण्ट डायरेक्टर ऑफ हैल्थ' नियुक्त हो गये हैं।"

महादेव सूसन की इस बात को शराब के नशे में कहने के कारण अप्रमाणिक मान रहा था। उसको एक दम इतनी बड़ी पदवी पर पहुँचने की बात पर विश्वास नहीं आया, परन्तु मिनिस्टर ने अपना अधिकार, उसकी पत्नी के पास बैठने का सिद्ध करने के लिये, कह दिया, "मिस्टर सप्रू! आई कॉन्ग्रैचूलेट यू इन हैविंग सच ए गुड स्टार्ट इन लाइफ।" और महादेव से हाथ मिलाने के लिये उसने अपना हाथ बढ़ा दिया।

महादेव ने अभी भी सन्देहात्मक भाव से मिनिस्टर की ओर देखा। मिनिस्टर मुस्करा रहा था। उसने महादेव से हाथ मिलाते हुए सूसन को कहा, "शो हिम दी लैटर ऑफ एपौयण्टमेण्ट। इसको विश्वास नहीं आ रहा।"

सूसन अपना हैंड-बैग खोलने लगी, परन्तु नशे के कारण वह खुल ही नहीं रहा था। मिनिस्टर के कहने पर उसने अपना हैंड-बैग अपने पति के सामने रख दिया और कहा, "खोलकर स्वयं देख लो।"

महादेव ने उसका बैग खोल कर, उसमें से एक सरकारी लिफाफे में पड़ी हुई चिट्ठी निकाल पढ़ ली। यह सत्य था कि उसकी नियुक्ति हो गई थी और इतनी बड़ी पदवी पर। उसका मुख खिल उठा और वह प्रेम-भरी दृष्टि से सूसन की तरफ देखने लगा। इस पर मिनिस्टर ने कहा, "मिस्टर सप्रू! तुम चाय पीना चाहते हो तो वह देखो, तुम्हारे श्वसुर मियाँ साहब अकेले बैठे हैं। उनसे मिलकर चाय पी सकते हो। मैं सूसन से एक राजनीतिक मसला पर विचार कर रहा था। मैं मिनिस्टर हूँ। मैं राजनीतिक जीव हूँ, परन्तु तुम अब सरकारी नौकर हो। तुमको राजनीतिक बातों में दखल नहीं देना चाहिये।"

महादेव उठकर इफ्तिखार हुसैन के पास जा बैठा। उसने हाथ मिलाकर उनका धन्यवाद कर दिया—"मैं आपका निहायत मश्कूर हूँ। आपने मेरी भंवर में पड़ गई किश्ती को पार लगा दिया है।"

"यह हम इस्लाम के नाते कर रहे हैं इस्लाम एक 'इन्टरनैशनल' बिरादरी है। हम सब इसमें भाई-भाई हैं और एक-दूसरे की मदद करना अपना इखलाकी फर्ज समझते हैं।"

दोनों चाय पीते रहे। इस समय हैल्थ मिनिस्टर और सूसन उठकर राजनीतिक वार्तालाप करने के लिये क्लब से बाहर चले गये। महादेव के दिल में एक हल्की-सी टीस उठी, पर उसने इसको दबा कर अपना ध्यान दूसरी तरफ कर लिया। बैरिस्टर साहब से इधर-उधर की बातें होती रहीं। बहुत देर तक बैठ, दोनों क्लब से बाहर निकलने लगे, तो महादेव को सूसन का ध्यान आया। वह वहाँ नहीं थी। उसका विचार था कि कदाचित् बाहर लॉन में होगी। वह वहाँ पर भी नहीं थी। क्लब के बाहर मिनिस्टर साहब की मोटर भी नहीं थी। विवश हो वह अकेला घर को चल पड़ा। रास्ते में एक खाली तांगा देख, उस पर सवार हो वह बीडन रोड पर जा पहुँचा। अपने घर के नीचे मिनिस्टर की मोटर खड़ी देख, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भौंचक्का-सा रह गया। वह विचार कर ही रहा था कि मकान पर जाये या नीचे ही प्रतीक्षा करे, कि उसी समय मिनिस्टर साहब सीढ़ियों से नीचे उतरते दिखाई दिये। इससे महादेव के मन में भांति-भांति के विचार उत्पन्न होने लगे। वह उन विचारों से परेशानी अनुभव करने लगा। मिनिस्टर तो मोटर में बैठकर चले गये।

महादेव को समझ आया कि मिनिस्टर ने उसको अंधेरे में खड़े देखा नहीं। वह मन में विचार करता था कि ठीक ही हुआ है। जब मोटर चली गई तो वह मकान पर चढ़, अपने कमरे में पहुँचा। सूसन दर्पण के सामने खड़ी कपड़े पहन रही थी। एक क्षण के लिये ही उसके मन की यह अनिश्चित अवस्था रही। दूसरे ही क्षण उसने मन का सन्तुलन ठीक कर, अपना नाईट गौन पकड़, पहनते हुए कहा, "मैं सोने की तैयारी कर रही हूँ। आप अभी सोयेंगे अथवा ठहर कर?"

महादेव ने कहा, "मुझको भूख लगी है? तुमने भोजन कर लिया है क्या?"

"हाँ, मिनिस्टर साहब आये थे। हमने इकट्ठे भोजन किया है। आप भी कर लीजिये। करीम खाने के कमरे में है।"

महादेव के मन का सन्देह मिटा नहीं, परन्तु वह चुप रहा और खाने के कमरे में चला गया।

: 4 :

करीम मेज पर बैठा खाना खा रहा था। वह मालिक को आया देख मुस्कराता हुआ उठ खड़ा हुआ और पूछने लगा, "मालिक! आपने भोजन किया है क्या?"

"नहीं।"

"इस पर करीम ने अपने बर्तन समेट कर एक तरफ कर दिये और महादेव के लिये मेज पर एक छोर साफ कर दिया। पश्चात् उसने रसोंर्ठ में जा रसोइये को खाना परोसने के लिये कह दिया। जब करीम यह कहकर लौटा तो सूसन खाने के कमरे में आ गई थी। उसने करीम को कहा, "तुम बाहर बैठ कर खाना खाओ।" करीम अपनी प्लेट उठाकर बाहर चला गया।"

महादेव ने लापरवाही से कह दिया, "मैं समझा था कि तुम्हारी राजनीतिक बातें समाप्त होंगी तो तुम मेरे पास आ जाओगी?"

"जब मिनिस्टर साहब को मैंने बताया कि हमने अपना मकान बीडन रोड पर ले लिया है, तो उन्होंने इस मकान को देखने की इच्छा प्रकट की। मैं उनको यहाँ ले आई। यहाँ मैंने भोजन के लिए पूछा तो खाने को वह तैयार हो गये। बेचारे बहुत ही सादा तबीयत के आदमी हैं।

"उनके लिए एक-आध खास चीज बनानी पड़ी और इसमें बहुत देर हो गई। वह आपके आने से कोई दो मिनट पूर्व ही गये हैं। वह गये तो मैंने सोने की तैयारी कर दी। इस समय आप आ गये।"

कहानी बहुत ही युक्ति-युक्त थी। इस पर भी महादेव के मन में संदेह बना रहा। भोजन आया। विशेष डिश बनी हुई थी चिकन पुलाओ की। बहुत स्वादिष्ट थी। इस स्वाद में महादेव समय के लिए तो मिनिस्टर के घर आने को सौभाग्य मानने लगा।

भोजन समाप्त हुआ तो दोनों सोने के कमरे में चले गये। वहाँ पहुँच सूसन ने फिर शराब की बोतल निकाल ली। महादेव ने पूछ लिया—"तुमने आज कॉफी नहीं पी क्या?"

"वहाँ तो शैम्पेन पी थी। शैम्पेन का नशा सामयिक होता है। अब विचार है कि एक पैग ह्विस्की का पी लूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूसन ने गिलास में डाली और महादेव के आगे रख दी। महादेव बहुत कम पीता था, परन्तु आज सूसन ने इस अदा से पिलानी आरम्भ की कि वह न केवल इंकार ही नहीं कर सका, प्रत्युत मात्रा से भी अधिक पी गया। आज वह भी अपने मन में उठे विचारों को भूने के लिए चुपचाप पीता गया। आखिर वह अर्ध-चेतना की अवस्था में पलंग पर पड़ लेट गया।

अगले दिन सुबह वह उठा तो सूसन अभी भी, उसके गले में बांहें डाले, उसके साथ लेटी हुई थी। उसने उसकी बांह गले से निकाली, कपड़े पहने और शौचादि के लिए कमरे से बाहर निकल आया।

उसकी मेज पर असिस्टैण्ट डायरेक्टर के पद का नियुक्ति पत्र, लिफाफे में पड़ा था। उसने वह पत्र पुनः पढ़ा। पश्चात् उसको अपनी निजी फाइल में लगा कर विचार करने लगा। चिट्ठी में वेतन नहीं लिखा था। इसके लिए उसको किसी जानकार से पता करना था। वह विचार करने लगा कि कितना मासिक मिल जायेगा उसे?

वेतन का विचार आते ही उसके मन में पिछली सायंकाल के, अपनी पत्नी के व्यवहार पर विचार उठने लगे। उसका पूर्ण व्यवहार संदेहात्मक था। फिर यह विचार करके कि विवाह से पहले भी वह शिथिल चरित्र रखती थी, अपने मन से इस विषय को निकालने लगा। उसने विवाह से पूर्व उससे यह वचन लिया था कि वह अपना पिछले सम्बन्ध छोड़ देगी। सूसन ने उसको विश्वास दिलाया था कि उसका घटनावश ही एक बार ऐसा सम्बन्ध इफ्तिखार हुसैन के साथ हुआ था। अब उस घटना का दोनों को ही शोक है।

अब मिनिस्टर से उसका मेल-जोल और यह नियुक्ति-पत्र, दोनों ही भारी संदेह उत्पन्न कर रहे थे, परन्तु इफ्तिखार हुसैन कह रहा था कि उसकी नौकरी उसके इस्लाम स्वीकार करने के प्रतिकार में है।

इस प्रकार के विचारों में वह अपनी मेज पर बैठा, अपने भविष्य के विषय में विचार करता रहा। उच्च पदवी पर नियुक्ति में वह किस शान-शौकत से रहेगा? कदाचित् उसको पंजाब-भर में घूमने के लिए प्रायः जाना पड़े। उसकी पत्नी उसके साथ जाया करेगी? कदाचित् नहीं। तो क्या उसके मिनिस्टर साहब से राजनीतिक वार्तालाप चला करेंगे? इस विचार से उसके पूर्ण शरीर में कंपकंपी हो उठी।

आज सूसन दिन के ग्यारह बजे तक सोई रही। ग्यारह बजे वह अंगड़ाइयाँ लेती हुई, अपने पति के स्टडी रूम में आई। महादेव सामने रखे कागज पर कुछ रकमें लिख रहा था और उनका जोड़ लगा रहा था। सूसन ने उसके गले में बांहें डालकर पूछा, "डीयर! यह क्या कर रहे हो?"

"अपनी नई पदवी पर, ढंग से रहने के लिए, अपनी आवश्यकताओं की सूची और उनका मूल्यांकन कर रहा हूँ।"

"क्या मैं भी देख सकती हूँ?"

"हाँ! परन्तु यह तो पता चला ही नहीं कि वेतन क्या होगा इस पदवी का?"

"मैंने बैरिस्टर साहब से पूछा था। उनको ठीक से पता नहीं था, इस पर भी वे समझते थे कि बारह सौ से पन्द्रह सौ रुपया अवश्य होगा।"

"मैं समझता हूँ कि इतने में काम चल जायेगा।"

"मुझको मिनिस्टर साहब कह रहे थे कि इस काम में ऊपर से भी आय की गुंजाइश है। वे तो कहते थे कि वेतन से अधिक ऊपर की ही आय होगी।"

महादेव के शरीर में इस पर हल्की-सी कंपकंपी फिर हुई। सूसन ने अपने पति का चिन्तित मुख देखा तो पूछ लिया, "क्या बात है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं यही विचार कर रहा था कि तुमको 'सियासीयात' में कुछ विशेष भाग नहीं लेना चाहिए। सरकारी नौकरों की बीवियों को इनसे परहेज रखना चाहिए।"

सूसन मुस्कराई और अर्थभरी दृष्टि में अपने पति की ओर देखकर बोली, "पॉलिटिक्स मूर्खों को बहकाने के लिए एक बहुत अच्छा जरिया है।"

अनायास ही महादेव के मुख से निकल गया, "मूर्ख लोगों को या मूर्ख खाविन्दों को?"

सूसन हँस पड़ी। उसकी हँसी में कुछ रस नहीं था। इसको रसमय बनाने के लिये उसने पति के गले में बांहें डालकर, उसका मुख चूमकर कहा, "आपको कौन मूर्ख मान सकता है?"

इस प्रकार बात समाप्त हुई। सूसन ने बात बदलकर कह दिया, "आप आज क्लिनिक को नहीं गये?"

"अब क्लिनिक को तो बंद करना ही पड़ेगा। दो दिन पहले या पीछे में क्या अन्तर पड़ता है।"

"मैं समझती हूँ कि वह दुकान छोड़ दी जाये। इस मकान के नीचे का भाग भी किराये पर लेने का प्रबन्ध कर लिया जाये। आपको लोगों से मिलने के लिये भी पृथक् स्थान चाहिये। बहुत-सी बातें दफ्तर में नहीं हो सकेंगी।"

इस सुझाव पर पुनः महादेव को कंपकंपी हुई। सूसन उसके मन के भावों का अनुमान लगा रही थी। उसने कह दिया, "आपको दिल कड़ा कर काम करना होगा। इस प्रकार की नौकरियाँ सब को नहीं मिल सकतीं। साथ ही ऐसे मौके जिन्दगी में बार-बार नहीं आ सकते। एक बात और है। डायरेक्टर शीघ्र ही रिटायर होने वाले हैं और आपके लिये उस पदवी पर पहुँचने के 'चांसिज' कम नहीं।"

नियत दिन महादेव डायरेक्टर ऑफ हैल्थ के कार्यालय में जा पहुँचा। उससे डायरेक्टर ने हाथ मिलाया और अपने सामने बैड़ा कर कहा, "नवयुवक! मैं तुमको इस पदवी पर, इस छोटी अवस्था में ही पहुँचते देख, बहुत प्रसन्न हूँ। इस पदवी के लिये बहुत उम्मीदवार थे। कुछ महकमा के पुराने कर्मचारी भी इस पद को पाने के इच्छुक थे। कई सिविल सर्जन, जो तुमसे कहीं अधिक पढ़े हैं और अनुभव रखते हैं, इस पद के हकदार थे, परन्तु तुम इसको पा गये हो। यह 'पॉलिटिक्स' है। इस कारण मैं तुमको बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि तुम अपने दिमाग को सही रखकर काम कर सकोगे।"

डायरेक्टर एक अंग्रेज था। नाम था कर्नल स्टीफनसन ए०डि० लण्डन। मिनिस्टर साहब की सिफारिश पर ही महादेव की नियुक्ति हुई थी।

काम आरम्भ हो गया। पहले ही दिन डायरेक्टर की आज्ञा हुई कि उसको उत्तरी जिलों के निरीक्षण के लिये जाना चाहिये और अपने हैडक्लर्क से कह कर अपने कार्यक्रम की सूचना स्थान-स्थान के सिविल सर्जनों को भेज देनी चाहिये।"

वह कार्यालय में डॉक्टर सप्रू के नाम से पुकारा जाने लगा। डॉक्टर सप्रू ने हैडक्लर्क को बुलाकर उसको अपना कार्यक्रम बनाने के लिये कह दिया।

उस सायंकाल वह घर पहुँचा तो उसका पिता उससे मिलने के लिए आया हुआ था। नीलकंठ को अपने लड़के की नियुक्ति का समाचार हाईकोर्ट में मिला था। किसी ने उस सप्ताह के गजट में पढ़ा और फिर पंडितजी को बधाई देने पहुँच गया। नीलकंठ को विश्वास नहीं आया। इस कारण वह अपनी आँखों से गजट देखने लायब्रेरी में चला गया। लड़के की नियुक्ति पढ़कर उसके मन में प्रसन्नता और दुःख के मिश्रित भाव उठे थे। वह अपने लड़के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के, इतनी छोटी अवस्था में, कई उम्मीदवारों को लांघ कर इस पदवी को प्राप्त कर लेने पर प्रसन्न था, परन्तु उसकी अन्तरात्मा कह रही थी कि लड़के को इस पदवी को पाने के लिए बहुत बड़ी कीमत देनी पड़ी है। वह तो यही समझा था कि यह कीमत उसकी पत्नी ने दी है। वह चरित्रहीन तो है ही। उसने अपने चरित्र को अपने पति को इस पदवी पर ले जाने के लिये बेचा है।

हाईकोर्ट में उसको बधाई देने वाले मित्र ने बताया था, "इससे पूर्व मिस्टर खन्ना इस पदवी पर थे। वह दस वर्षों में ही लाखों के मालिक बन गये थे। जब से हुकूमत का ढांचा बदला है, वह सरकार की काली सूची में आ गये थे। डायरेक्टर सदा उनकी रक्षा करते रहते थे। इस पर भी हिन्दू होने के कारण मिनिस्टर उनको पसंद नहीं करते थे। आखिर उन्होंने अपने स्वास्थ्य का बहाना बना त्यागपत्र दे दिया। वह तुरन्त स्वीकार हो गया और उनके स्थान पर नियुक्ति के लिये सिफारिश और प्रार्थना-पत्र आने लगे। यह तो आपके लड़के का बहुत अच्छा भाग्य समझना चाहिए कि उसकी नियुक्ति हो गई है।"

नीलकंठ ने पूछ लिया, "तुम क्या मिस्टर खन्ना को जानते हो?"

"वह हमारा समीप का सम्बन्धी है।"

"मैं चाहता हूँ कि लड़के को उनसे मिला दो, जिससे वह उसको ठीक मार्ग बता सके और अफसरों के स्वभाव का परिचय दे सके।"

"ठीक है। आज ही सायंकाल आप लड़के को मेरे पास भेज दें। मैं मिस्टर खन्ना को टेलीफोन कर दूँगा।"

इसी निमित नीलकंठ महादेव से मिलने आया था। जब महादेव घर पहुँचा तो पिता को बैठे अपने पत्नी से बातें करते देख प्रसन्न हुआ। "डैडी!" महादेव ने प्रसन्नता से अभिवादन कर कहा–"डैडी, मुझको बधाई दो।"

"हाँ, सुन लिया है। बधाई देने ही आया हूँ। साथ ही कुछ प्राईवेट बातचीत करना चाहता हूँ। तुम चाय पी लो। फिर चलेंगे।"

महादेव ने समझा कि कदाचित् उसकी पत्नी के विषय में कुछ है। उसके मन में अभी भी नियुक्ति की चिट्ठी मिलने वाली सायंकाल की घटना की स्मृति मिटी नहीं थी। उस घटना को दस दिन हो गये थे और उसके पश्चात् उसकी पत्नी के व्यवहार में कुछ भी संदेहजनक बात दिखाई नहीं दी थी। इस पर भी वह सशंक था। अब पिता के 'प्राइवेट' बात के लिए कहने ने पुनः उस स्मृति को हरा-भरा कर दिया। उसका मुख उतर गया।

सूसन ने बैरा को आवाज दी। करीम ही बैरा का काम करता था। वह आ उपस्थित हुआ। सूसन ने चाय लगाने के लिए कह दिया। वह वकील साहब को सलाम कर चला गया। नीलकंठ ने करीम को देखकर कहा, "करीम मोटा होता जा रहा है?"

"यहाँ कुछ काम है नहीं। साथ ही दो घरों का खा-खाकर मोटा नहीं होगा तो क्या होगा! यह सप्ताह में तीन बार सरस्वती के घर जा खाना खाता है।"

नीलकंठ हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "करीम के मेरी नौकरी छोड़ने पर करीमन को प्रसन्नता नहीं हुई।"

"क्या कहती थी?"

"वह कह रही थी कि जब से वह तुम्हारे यहाँ काम करने लगा है, उसको बिटिया की नौकरी छोड़ देने के लिए कहने लगा है।"

"इन दो बातों का क्या सम्बन्ध हो सकता है?"

"मैंने उससे पूछा था। इसका उत्तर उसने नहीं दिया। वह कहती थी कि मैं उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घरवाले को दोबारा अपने पास बुला लूँ।"

"तो वह करीमन को सरस्वती की नौकरी छोड़ कहाँ नौकरी करने के लिए कह रहा है?"

"वह कहता है कि मियाँ इफ्तिखार हुसैन के यहाँ एक आया की जरूरत है। वह वहाँ चली जाये।"

"यह बात तो समझ में आई है। मगर मेरे यहाँ करीम की नौकरी से इस बात का क्या सम्बन्ध है?"

"तुम करीम से पूछना।" इस वार्तालाप को सूसन सुन रही थी। उसने कह दिया, "एक-दो बार मेरे काम से करीम माँ के पास गया था। वहाँ उससे बैरिस्टर साहब की हिन्दुस्तानी बीवी ने अपने बच्चों की देख-रेख के लिए कहा होगा।"

"वह बिटिया की नौकरी छोड़ना नहीं चाहती।"

चाय आई और तीनों पीने लगे। पश्चात् पिता-पुत्र मकान से उतर गये। नीलकंठ अपनी मोटर लेकर आया था। दोनों उसमें सवार हो मिस्टर खन्ना के सम्बन्धी के घर चले गये। उसने खन्ना को टेलीफोन कर दिया कि पण्डित नीलकंठ सप्रू उससे मिलना चाहते हैं। वहाँ से दोनों डॉक्टर खन्ना की कोठी पर जा पहुँचे। राजकृष्ण खन्ना ग्यारह वर्ष तक 'असिस्टैण्ट डायरेक्टर ऑफ हैल्थ' के पद पर काम कर चुका था। उससे पहले वह सात वर्ष तक पंजाब के भिन्न-भिन्न जिलों में सिविल सर्जन का कार्य करता रहा था। वह एक चतुर सर्जन था और इसलिए उसकी उन्नति हुई थी। खन्ना ने बाप-बेटे से हाथ मिलाया और फिर कहा, "मुझको वकील साहब को टेलीफोन आया था। मैं समझता हूँ कि मुझको कुछ विशेष बताने की आवश्यकता नहीं। सब कुछ नीचे के क्लर्क बता देते हैं वास्तव में वे ही सब कार्य करते हैं। डायरेक्टर को तो मिलना, दावतें खानी और हस्ताक्षर करने के अतिरिक्त बहुत कम काम करना होता है। मैं समझता हूँ कि अपने मातहतों की मदद करते रहोगे, तो कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा।

"एक बात और है। मुझमें दो बातें थीं—एक तो हिन्दू होना और दूसरे, मेरी पत्नी का पुराने विचारों का होना। मुझको पता चला है कि ये दोनों अवगुण आप में नहीं हैं। बस मेरी यह भविष्यवाणी है कि आप सुखी और खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकेंगे।"

: 5 :

एक दिन करीमन सरस्वती के पास पहुँची और बोली, "बिटिया! कोई उपाय बताओ, जिससे मैं अपने खाविन्द के चंगुल से बच सकूं।"

"क्यों, क्या बात है?"

"कुछ बात है, जिसको मैं अपने मुख से कह नहीं सकती। इतना मैं कह सकती हूँ कि करीम अच्छा आदमी नहीं है। उसका यहाँ आना-जाना बन्द होना चाहिए।"

"यह तो बहुत आसानी से हो सकता है। तुम पिताजी की नौकरी में चली जाओ। मैं उनसे कहकर तुम्हारा वेतन बढ़वा दूँगी।"

"परन्तु वहाँ से तो मैं यहाँ आई थी। मेरा मन तो तुम्हारी सेवा में रहने को करता है।"

"यह तो ठीक है अम्माँ!" इसी नाम से सरस्वती करीमन को पुकारा करती थी। "मगर तुमको खाविन्द से पृथक् करने की आवश्यकता है क्या? और फिर कैसे होगा यह?"

करीमन सरस्वती का मुख देखती रह गई। वह आगे कुछ कह नहीं सकी। एक लम्बा सांस लेकर उठ पड़ी और कमरे से बाहर चल पड़ी। सरस्वती ने उसको पुनः बुलाया और कहा, "अम्मां! इधर आओ। जो कुछ बात तुम्हारे मन में है, वह कहतीं क्यों नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बिटिया! मैं चाहती हूँ कि तुमको कहूँ कि अपने घरवाले से कहकर किसी अन्य नगर में चली चलो। यहाँ लाहौर में कौन-सी बात है, जिससे आप लोग बंधे हुए हैं।

''मेरे जैसी निर्धन औरत तो भूमि में, पेड़ की भांति, जड़ें रखती है। वह उस भूमि को छोड़कर चले तो मुरझा जाये और सूख जाये, परन्तु तुम लोग तो पक्षी की भांति उड़कर किसी अन्य पेड़ पर बैठ सकते हो।''

सरस्वती इस नई बात का अर्थ नहीं समझ सकी। वह सोचने लगी कि हो सकता है कि करीमन करीम की बुरी बातों से बचने के लिए लाहौर से बाहर चला जाना चाहती हो। या यह भी हो सकता है कि वह उसके और उसके पति के लिए किसी प्रकार के भय की सम्भावना करती हो। इस पर सरस्वती ने स्पष्ट कह दिया, ''अम्माँ! अपने मन की बात बताओ तो तुम्हारे प्रस्ताव पर विचार कर सकती हूँ।''

करीमन ने दीर्घ निःश्वास छोड़कर कहा, ''बिटिया! कुछ एक बातें होती हैं, जो अपने मन में ही रखनी ठीक होती हैं। यह ठीक नहीं क्या? कभी-कभी तो अपने प्रियजनों व मित्रों से भी कुछ भेद रखना पड़ जाता है। बस वैसा ही समझ लो।

''बचपन में भूल हो जाती है और परिणाम पूर्ण आयु-भर भोगना पड़ता है। उस परिणाम से कभी धनीमानी बच भी जाते हैं, परन्तु हम-जैसे निर्धनों के लिए तो वे परिणाम भाग्य का विधान हो जाते हैं।''

इतना कह वह पुनः उठ खड़ी हुई। इस बार सरस्वती ने उसको नहीं रोका। उसने उसे जाने दिया, परन्तु वह उसकी चेतावनी को मन से निकाल नहीं सकी। वह चिन्तित मन बैठी विचार करती रही।

पद्मदेव प्रोफेसर सुदर्शन की अध्यक्षता में, डी०ए०वी० कॉलेज के विद्यार्थियों की स्टूडेन्ट्स यूनियन में व्याख्यान देने गया हुआ था। आज के व्याख्यान का विषय था—'भारत के आदिवासी।'

पद्मदेव ने अनेकों पुराणों और रामायण, महाभारत तथा निरूक्त और ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रमाण देकर भारत के प्राचीन इतिहास का एक चित्र खींच दिया था।

पद्मदेव ने कहा था, ''प्रमाणों से इतिहास की एक शृंखलाबद्ध कथा तो नहीं बन सकती। इसमें कई कारण हैं। एक मुख्य कारण बौद्धों की प्राचीन ग्रन्थों के प्रति घृणा और उसमें लिखी बातों पर अविश्वास है। एक महान् कारण यह भी है कि मुसलमान विजेताओं ने हमारे पुस्तक-भण्डारों को नष्ट कर दिया था। कुछ भी हो, इन प्रमाणों की टूटी कड़ियों से यदि कथा बनाएँ भी, तो कल्पना का आश्रय लेकर वह यह बनती हैं।''

पद्मदेव ने इस भूमिका के बाद वह शृंखला बांध दी और बताया कि इस शृंखला को पाश्चात्य विद्वान तो मानेंगे नहीं। उनका आधार है ही भौतिकवाद। भौतिकवाद का अर्थ है कि पृथ्वी पर पहले एक कोषाणु वाला (यूनिसैल्युलर) जन्तु बना और पश्चात् उसमें भेद होते-होते वृद्धकाय जन्तु बन गये। इन जन्तुओं में परिवर्तन होते हुए अन्तिम कड़ी मनुष्य बन गया है। मनुष्य बन जाने के बाद प्रकृति का सब बल क्षीण हो गया है और मनुष्य से श्रेष्ठ अभी कुछ बन नहीं सका।

''मनुष्य पशु से जंगली जन्तु बना और अब उससे एक सभ्य नागरिक बन गया है।

''इस आधार को सत्य मानने वाले भला यह कैसे समझ सकते हैं कि हजरत मूसा और अब्राहम से पहले भी इस भूतल पर सभ्य, सुशील, शौर्यवान और बुद्धिवान लोग बसे हुए थे?

''हमारे विज्ञान का आधार वह नहीं, जो वर्तमान काल के कहे जाने वाले वैज्ञानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानते हैं। हम तो यह मानते हैं कि सृष्टि के सब जन्तु, सब प्रकार की वनस्पतियाँ और सब प्रकार के पदार्थ पृथ्वी के आरम्भ से ही हैं जब सृष्टि वर्तमान ढंग के जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों के रहने तथा पनपने योग्य हुई तो सब एकदम ही बने। हमारा विज्ञान तो यह मानता है कि प्राणी तो तब भी थे, जब पृथ्वी पर वर्तमान स्थिति उत्पन्न नहीं हुई थी। उस समय उनके ऐसे शरीर नहीं थे, जैसे आजकल दिखाई देते हैं। हमारे शास्त्र यह मानते हैं कि पृथ्वी के अतिरिक्त भी कई लोग हैं, जहाँ प्राणी रहते हैं। यद्यपि उनके ऐसे शरीर नहीं, जैसे इस पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों के हैं।''

इस प्रकार पद्मदेव ने आदिकाल से वर्तमान काल तक मानव-इतिहास की एक शृंखला बांध दी। पूर्ण व्याख्यान एक रोचक कहानी की तरह प्रतीत हुआ। जब व्याख्यान समाप्त हुआ तो प्रश्नों की बौछार होने लगी। प्रश्न पूछने वालों में प्रायः विज्ञान के प्रोफेसर थे। कुछ बाहर से आये हुए आमन्त्रित लोग भी थे।

एक प्रश्नकर्त्ता ने पूछ लिया—''डार्विन का सिद्धान्त तो सिद्ध हो चुका है। उस पर सन्देह कर हम अपने को हास्यास्पद नहीं बना रहे हैं क्या?''

''मेरा ज्ञान यह कहता है कि डार्विन का विचार (थ्योरी) अभी विचारमात्र ही है। यह अभी सिद्धान्त का पद नहीं पा सका है। इसमें कारण है। जो शृंखला, जन्तुओं के विकास की डार्विन साहब ने बांधी है, उसका आदि और अन्त लेकर हम न तो उन्नति की ओर, न ही अवनति की ओर चल सके हैं। हम अभी तक अमीबा से बहुकोषाणु जन्तु, जिसमें कार्य-विभाजन (डिवीजन ऑफ लेबर) हो जाये, नहीं बना सका।

''सभ्य से असभ्य मानव तो बना है, परन्तु मानव से 'एप' (वनमानुस) नहीं बन पाया। जिस विचार को परीक्षण से सत्य सिद्ध न किया जा सके, उसको सिद्धान्त का नाम नहीं दिया जा सका।''

''वैज्ञानिक परीक्षण कर रहे हैं और शीघ्र ही वे ऐसा करने में सफल हो सकेंगे।''

''तब तक तो इसके आधार पर मानव के मुख पर कालिख मलने का यत्न न किया जाय। तब तक तो उपनिषदों और वेदों के श्रेष्ठ ज्ञान के अनुसान यह मान लो कि मनुष्य ने विकास के स्थान पर ह्रास किया है।

''एक बार जब आप यह मान लेंगे, तो तब भारत का इतिहास एक अद्‌भुत शृंखलाबद्ध दिखाई देने लगेगा। इससे मानव के इतिहास पर भी चमत्कारपूर्ण प्रकाश पड़ेगा।''

आज का व्याख्यान आधुनिक यूरोपीय अधकचड़े ज्ञान के उच्छिष्ट भोगियों को चकाचौंध करने वाला सिद्ध हुआ। उनसे उत्तर तो बन नहीं पड़ा, परन्तु यूरोपीय लेखकों के लेखों के प्रमाणों का प्रदर्शन कर वे अपने जीवन के परिश्रम को सार्थक करने का यत्न करते रहे।

पद्मदेव का धन्यवाद दिया गया और व्याख्यान के पश्चात् कई विद्यार्थियों ने उसको घेर लिया। सब भांति-भांति की बातें पूछने लगे। कइयों ने उसके घर का पता और उससे मिलने का समय पूछ लिया। बाहर से आये हुओं में से एक प्रोफेसर मजीद थे। वे उसके साथ ही हाल से निकले। बाहर निकल प्रोफेसर मजीद ने कह दिया—''देखिये पद्मदेवजी! हम यह मानते हैं कि अब्राहम का उपदेश या मूसा का उपदेश एक उन्नत बात थी। मूसा से हजरत ईसा ने सुधार किया था और ईसा के कथन का सुधार हजरत मुहम्मद ने किया है।''

''मैं भी इस बात को मानता हूँ। जो अब्राहम, मूसा, ईसा और मुहम्मद साहब के कथन लिखित में मिलते हैं, वह उत्तरोत्तर अधिक अच्छे प्रतीत होते हैं, परन्तु मुहम्मद साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को हुए तेरह सौ वर्ष हो गये हैं। उनके बाद तुलसी, कबीर, गुरुनानक और स्वामी दयानन्द भी तो हुए हैं। इनके वाक्य तो मुहम्मद साहब से भी उन्नत हुए हैं।''

''कौन अच्छी बात कही है इन्होंने, जो मुहम्मद साहब ने नहीं कही?''

''क्या-क्या बताऊं हजरत साहब की बातें? एक ही बता दूँ तो पर्याप्त होगी। देखिये, कुरआन शरीफ में लिखा है–'अल्लाह वह है, जिसने खड़ा किया आसमान को, बिना खंभे के। उसके ऊपर आज्ञा देने वाला वह स्वयं, अर्श पर बैठा है। उसी ने पृथ्वी को बिछाया है।'

''अब बताइए साहब! आज का विज्ञान तो ऐसा नहीं मानता। स्वामी दयानन्द ने भी यही कहा है कि यह आसमान कोई छत्र नहीं, जिसको खंभों की आवश्यकता है।

''परन्तु साहब!'' पद्मदेव ने आगे कहा, ''मैं तो कह रहा हूँ कि वेदों में पूर्ण सत्य ज्ञान है और उससे पीछे लिखी जाने वाली किताबों में ज्ञान अर्ध सत्य है।

''अब 'शत-पथ ब्राह्मण' में लिखी बात सुन लो। उसमें लिखा है–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्र, लक्षत्र तथा सूर्य को वसु कहते हैं। इन सब में प्रजा बसी हुई है।''

''मुहम्मद साहब के एक यह कहने का प्रयोजन, किस आसमान बिना खम्भों के खड़ा किया है, एक शायराना (कवियों-सा) है।'

''ठीक है मैं इसको मानता हूँ। मेरा कहना तो केवल यह है कि यह कथन एक ऐसे कवि का है, जिसको इस भूमण्डल का ज्ञान इतना भी नहीं था, जितना 'शतपथ ब्राह्मण' लिखने वाले को था, जो कि मुहम्मद साहब से सहस्रों वर्ष पहले हो चुके थे।''

''आपका यह कथन सर्वथा कुफ्र है। मेरा मतलब लाइल्मी का है।''

''ऐसा करिये, आप अपनी इलमीयत (विद्वत्ता) की बात भी कभी अपने व्याख्यान में बतावें और देखें कि आपके इल्म में भी तरक्की हुई है, अथवा नहीं।''

इस प्रकार प्रसन्नवदन पद्मदेव घर पहुँचा तो सरस्वती को चिन्ताग्रस्त देख खड़ा रह गया। सरस्वती स्वभावानुसार मुस्कराई, परन्तु आज उसकी मुस्कराहट में वह रस नहीं था, जो प्रायः हुआ करता था। भोजन के समय सरवती ने अपने मन की चिन्ता का कारण बता दिया। उसने कहा, ''करीमन आज कहती थी कि उस जैसी निर्धन स्त्री तो एक पेड़ के समान भूमि में जड़ें रखती हैं। वह भूमि को छोड़ नहीं सकती। छोड़ दे तो मुरझाकर सूख जाये; परन्तु उसका कहना है कि 'हम तो एक पक्षी की भांति एक से दूसरे पेड़ पर उड़कर जा सकते हैं। वह कहती थी कि हमको किसी अन्य नगर में चला जाना चाहिए।''

पद्मदेव ने हँसते हुए कहा, ''करीमन तो शायराना (कवियों की तरह) भावों में बातें करने लगी है। क्या हो गया है उसको?''

''प्रत्यक्ष रूप में तो कुछ विशेष बात प्रतीत नहीं होती, परन्तु मन में उसके अवश्य ही कुछ है। फिर वह कहती थी, 'बिटिया! कुछ बातें होती हैं, जो अपने मन में रखनी ही ठीक होती है।'

''वह कहती थी कि उसको करीम से छुटकारा दिला दिया जाय। मैंने इसका कारण पूछा तो बोली, 'कुछ बात है, जिसको मैं अपने मुख से कह नहीं सकती। वह अच्छा आदमी नहीं है। उसका यहाँ आना-जाना बन्द होना चाहिये।''

पद्मदेव इस सब बात को सुनकर गम्भीर विचार में पड़ गया। सरस्वती ने पुनः कहा–''मुझको इस सब में कुछ रहस्य प्रतीत होता है।''

''अच्छा, कल मैं उससे बात करूंगा। रही पक्षी के उड़ने की बात। यह तो मैं भी साफ समझ रहा हूँ। हमारे विवाह को एक वर्ष से ऊपर हो चुका है। नौकरी भी छूट चुकी है। इस पर भी हम यहाँ ऐसे खड़े हैं, जैसे एक पेड़ जड़ों को भूमि में रखने से खड़ा रहता है। मानव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चलने-फिरने वाला प्राणी है।"

"बात तो आपकी बहुत सुन्दर है। मैं भी देश का दर्शन करना चाहती हूँ; परन्तु करीमन का यह मतलब नहीं। वह तो लाहौर छोड़ने की बात कह रही है।"

"उससे तो कल बात करूंगा।"

: 6 :

परन्तु अगले दिन करीमन इनके ब्रेकफास्ट के समय दिखाई नहीं दी। वह उस समय उनको नाश्ता परसा करती थी। सुन्दर को बुलाया गया, तो पता चला कि रात रहीम आया था। दोनों अपनी कोठरी में सोये थे। इस समय कोठरी खाली है।

पद्मदेव और सरस्वती दोनों उसकी कोठरी देखने गये। कोठरी में रहीमन का बिस्तर इत्यादि कुछ भी नहीं था। पद्मदेव को उसके जीवन की चिन्ता लग गई; परन्तु उसकी कोठरी में किसी प्रकार के भी झगड़े के लक्षण दिखाई नहीं देते थे।

नाश्ता लेने के पश्चात् पद्मदेव के मकान पर गया। महादेव अपने मकान के नीचे के कमरे में बैठा था और फाइलें देख रहा था। वह पद्मदेव को इस समय आया देख, विस्मय में उसका मुख देखने लगा। पद्मदेव ने अपने आने का कारण बता दिया—"मैं करीम से मिलने आया हूँ।"

"क्यों, क्या बात है?"

"मैं यह जानने आया हूँ कि वह रात कहाँ रहा है?"

"मैं उसको बुलाता हूँ। पूछ लीजिये, परन्तु बात क्या है?"

"उसको यहीं बुलाओ। आपके सामने ही पूछूंगा।"

महादेव ने घण्टी बजाई और करीम आ गया।

"करीम!" पद्मदेव ने पूछ लिया, "रात कहाँ रहे थे?"

"यहाँ ही रहा था।"

"वहाँ अपनी बीवी के पास नहीं गये थे?"

"क्यों, क्या बात है, मालिक?"

"देखो करीम! सत्य-सत्य बताओ, नहीं तो पुलिस के हवाले कर दूँगा। वहाँ बहुत गड़बड़ हो गई है।"

"मैं वहाँ नहीं गया।"

"तब तो पुलिस में रिपोर्ट करनी पड़ेगी। सुनो, करीमन लापता है।"

"वह वहाँ से चली आई है। रात ढाई बजे के लगभग वह आ गई थी। कहती थी कि उसको वहाँ पर डर लगता है।"

"तो वह यहाँ पर है?"

"नहीं! वह मियाँ इफ्तिखार हुसैन साहब की कोठी को चली गई है।"

"वहाँ क्यों?"

"मैंने उसको उनके यहाँ नौकर करवा दिया है।"

पद्मदेव ने महादेव की ओर देखकर कहा, "करीम झूठ बोल रहा है। यदि तुम मुझे अपना टेलीफून इस्तेमाल करने दो तो मैं पुलिस में रिपोर्ट करना चाहता हूँ।"

"क्या झूठ बोल रहा है?"

"एक तो यह रात वहाँ हमारी कोठी में गया था। दूसरा यह भी झूठ है कि वह अपने-आप वहाँ से चली आई है। तीसरे यह कि वह लापता है। बैरिस्टर साहब की कोठी में नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"देखिये मालिक! वह मेरी बीवी है। मैं उसको जहाँ चाहूँ, रख सकता हूँ। इसमें आपको दखल नहीं देना चाहिए।"

"करीम! तुम ठीक कह रहे हो। मैं तुम्हारी बीवी के कहीं रहने पर आपत्ति नहीं कर सकता। मैं तो केवल पुलिस में यह रिपोर्ट लिखवाना चाहता हूँ कि वह राज अपनी कोठरी में सोयी थी, अब लापता है। मेरे पास इस बात का प्रमाण है कि तुम रात को उसके पास गये थे।"

"मैं गया था तो अपनी बीवी के पास गया था। मैं उसको ले आया हूँ तो इसलिए कि मैं उसका खाविन्द हूँ। वह आपके यहाँ नहीं है तो इसलिये कि वह वहाँ रहना पसन्द नहीं करती।"

"ठीक है, परन्तु यदि तुम एक बात करो तो हमको सन्तोष हो जायेगा। उसको यहाँ बुला कर भैया के सामने खड़ा कर दो। मुझको यह सन्देह हो रहा है कि तुमने उसको मार डाला है।"

"नहीं साहब! यह बात गलत है। वह मरी नहीं है।"

इस पर महादेव ने मुस्करा कर कहा, "तुम अपना बयान बात-बात में बदल रहे हो। करीम! बताओ, वह कहाँ है और किस हालत में है? नहीं तो मैं स्वयं पुलिस में रिपोर्ट कर दूँगा।"

करीम चुपचाप महादेव का मुख देखने लगा। महादेव ने टेलीफोन उठाया और करीम को कहा, "मेरी बात का जवाब दो। नहीं तो अभी दस मिनट में पुलिस वाले तुमसे सब बात पूछ लेंगे।"

"मुझको मौका दीजिये, मैं उसको आपके सामने हाजिर कर दूँगा।"

"जिससे तुम भाग जाओ। बताओ अगर तुमने कत्ल किया है, तो भी हम तुम्हारी मदद कर सकते हैं। उसकी भी माकूल वजह हुई तो पिताजी तुमको छुड़वा लेंगे।"

करीम ने हँसकर कहा, "नहीं मालिक! करीमन जीती है।"

"वह कहाँ है?"

"वह इस समय बैरिस्टर साहब की कोठी में बंदी है। क्यों? यह तो वे ही बतायेंगे, जिन्होंने बंदी किया है।"

जब से करीम बताने लगा था, यह उसका चौथा बयान था। इससे महादेव को पक्का शक हो गया कि अवश्य ही दाल में कुछ काला है। उसने बैरिस्टर साहब को फोन कर दिया। करीम कमरे से जाने लगा तो महादेव ने कहा, "अगर तुमने भागने की कोशिश की तो बहुत बुरा होगा।"

"मैं भाग नहीं रहा। हकीकत यह है कि आपका शक कि वह मर गई है, गलत है। मैं उसका खाविन्द हूँ और मैंने अपने मर्जी से उसको बैरिस्टर साहब के यहाँ रखा हुआ है। वह वहाँ रहना नहीं चाहती। इसलिए उसको कोठरी में बंद कर बाहर से ताला लगा आया हूँ।"

"तुम सब बात एकदम और सत्य-सत्य क्यों नहीं बताते?"

इस समय टेलीफोन के दफ्तर को बैरिस्टर साहब का नम्बर मिलाने के लिए कह दिया गया। करीम घबरा रहा था, इस पर भी वह अब भागने का यत्न नहीं कर रहा था। पद्मदेव उसके पास खड़ा था, जिससे वह भागे, तो पकड़ लिया जाये।

नम्बर मिला और बैरिस्टर साहब स्वयं बोले। महादेव ने अपना परिचय दे पूछ लिया, "हमारे नौकर करीम की बीवी लापता हो गई है। करीम बता रहा है कि वह आपके यहाँ है?"

बैरिस्टर साहब ने हँसकर कुछ कहा। महादेव उसको सुन गम्भीर हो गया। पद्मदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन नहीं रहा था, इस पर भी वह महादेव के मुख पर देख रहा था और अनुमान लगाना चाहता था कि क्या कहा जा रहा है। कुछ देर टेलीफोन पर बात सुन महादेव ने फोन बंद कर दिया। पश्चात् उसने कुछ देर तक विचार कर पद्मदेव को कह दिया—"बैरिस्टर साहब का कहना है कि करीमन उसके यहाँ है। यह ठीक है कि वह अपनी पहली नौकरी छोड़ने को तैयार न थी और उसको यहाँ लाने में उसके खाविन्द को जबरदस्ती करनी पड़ी है, मगर इस जबरदस्ती में कोई ऐसी चोट नहीं आई, जिसके लिए फिक्र किया जाये। साथ ही अब वहाँ रहने के लिए राजी है। यह मुआमला पुलिस में देने लायक नहीं है।"

पद्मदेव को इससे संतोष नहीं हुआ। इस पर भी वह समझा कि कुछ किया नहीं जा सकता। कदाचित् कुछ करने को है भी नहीं। वह करीम के पास से हट कर कुर्सी पर आ कर बैठ गया। करीम ने सलाम की और कमरे से चला गया।

पद्मदेव ने महादेव को करीमन की रात वाली बात बताई नहीं। वह उसने अपने मन में ही रखी। महादेव ने कहा, "कहिये, चाय आदि मंगवाऊं?"

"नहीं भैया, मैं नाशता कर आया हूँ। मुझको तो डर था कि कहीं वह मार न डाली गई हो। यह तो ठीक है कि उसको मारा-पीटा गया है। सरस्वती उससे नेह रखती है, परन्तु क्या किया जा सकता है! अच्छा अब मैं चलता हूं।"

पद्मदेव ने जब सरस्वती को वह बात बताई, तो उसका स्पष्ट कथन था कि करीम का यहाँ से उसको ले जाना, उसके रात के कहने से बहुत सम्बन्ध रखता है। उसके साथ भारी जबरदस्ती की गई है। कदाचित् इनता मारा-पीटा गया है कि वह अब हिल-डुल नहीं सकती।"

सरस्वती की आँखों में आँसू भर आये थे। पद्मदेव उसकी डबडबाई आँखें देख हँसते हुए पूछने लगा, "क्यों, क्या बात है, सरस्वती?"

"कुछ नहीं। उसके पीटे जाने की बात का विचार कर मेरे आँसू निकल आये हैं। मुझको उससे बहुत सहानुभूति है। यह कदाचित् इसलिए कि वह मुझको बचपन से खेलाती रही है। करीम ने एक बार पहले भी उसको पीटा था। उसके पूर्ण शरीर पर घाव लगे थे और वह रात-भर पीड़ा से कराहती रही थी। तब भी मैं उसके कराहने का शब्द सुन रात-भर रोती रही थी। तब मैं स्कूल में पढ़ती थी। मेरे रोने का समाचार सुन पिताजी ने करीम को डांटा था और पुलिस के हवाले कर देने की धमकी दी थी। पिताजी की उस धमकी से डरकर करीम ने फिर कभी करीमन को नहीं पीटा, परन्तु अब वह उसको ऐसी जगह पर ले गया है, जहाँ हममें से कोई भी जा नहीं सकता।"

"परन्तु मैं विचार करता हूँ कि क्यों पीटा होगा? एक वर्ष से ऊपर उसको यहाँ रहते हो गया है। उनमें कभी झगड़ा होते भी तो नहीं देखा अथवा सुना। अतः क्या वजह हो सकती है, उसके पीटे जाने की?"

"मेरा मन कहता है कि उसका भारी अनिष्ट हुआ है।"

उसी सायंकाल जब प्रोफेसर सुदर्शन आया तो पद्मदेव ने उसको भी करीमन के विषय में सारी बात बता दी। प्रोफेसर सुदर्शन ने सरस्वती के ही विचार का समर्थन किया। उसका कहना था, "मैं तो सदा यह विचार किया करता हूँ कि ये दोनों परस्पर इतने विरोधी आचार-विचार के हैं कि ये पति-पत्नी बन रह कैसे रहे हैं?

"करीमन बहुत साफ-सुथरी रहती थी और करीम इतना गन्दा रहता था कि उसको देखकर कोई उनको पति-पत्नी कह नहीं सकता था।

"इसके अतिरिक्त यह अति सभ्य है और करीम एक महाउजड्ड प्राणी। करीम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात-बात पर कसम खाता और देता है। करीमन सदा 'जी मालिक, आप ठीक कहते हैं, मेरा विचार ऐसा था,' इस प्रकार बातें करती है। इससे भी विचित्र बात तो यह है कि बीस वर्ष से वे वकील साहब की नौकरी में थे और प्रत्यक्ष रूप में प्रेम-पूर्वक रहते दिखाई देते थे।''

''तो तुम भी समझते हो कि कुछ अनिष्ट हुआ है?''

''हाँ! विशेष रूप में जब करीमन ने इस तरफ पहले ही संकेत कर दिया था। ऐसा समझना चाहिए कि उनमें झगड़ा कुछ दिन पहले ही से था। मुझको तो भय इस बात का प्रतीत होता है कि झगड़े के विषय से आपका भी सम्बन्ध है। अन्यथा वह आपको लाहौर छोड़ जाने के लिए कभी न कहती।''

''यह भी सम्भव है कि हमारे कहीं दूर चले जाने से वह स्वयं करीम के पंजे से छूट जाने की आशा करती हो?''

इन सब बातों से कुछ अर्थ नहीं निकल रहा था, परन्तु जब नीलकंठ को करीमन के पद्मदेव के घर से, बिना सूचना के चले जाने की बात का पता चला, तो वह निष्क्रिय नहीं रह सका। उसने अपने खानसामे वहीद को, करीमन के विषय में टोह लेने के लिए इफ्तिखार हुसैन के नौकरों से मिलने के लिए कह दिया। नीलकंठ ने उसको बुलाकर कहा, ''देखो वहीद! पता यह करना है कि उसको किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं? यदि उससे मिलकर खबर लाओगे तो इनाम दूँगा।''

वहीद कई दिन तक जाता रहा। पहले तो उसने करीमन के विषय में कोई बात ही नहीं की। पश्चात् धीरे-धीरे, जब उसकी एक समद नाम के बैरे से कुछ घनिष्ठता हो गई तो उसने करीमन के विषय में बात छेड़ दी। करीमन का नाम सुनते ही समद सतर्क हो पूछने लगा, ''तुम उसको कैसे जानते हो?''

''मेरी उससे मुहब्बत है। पहले वह एक हिन्दू वकील के घर रहती थी। वहाँ बहुत आसानी से मुलाकात हो जाती थी। पीछे वह एक प्रोफेसर के घर में नौकरी करने लगी। मिलता तो वहाँ पर भी था, मगर वह अक्सर कोठी के भीतर रहती थी। इससे मुलाकात कम हो गई थी। अब तो कई दिन से यहीं आई हुई है। मुझको यहाँ आते हुए एक हफ्ता से ज्यादा हो गया है और एक बार भी तो उसके दीदार हासिल नहीं हुए।''

''भई! यह बड़े लोगों की बात है। तुम इसमें मत पड़ो, किसी दूसरी से दोस्ती कर लो।''

''मगर दोस्त! वह बहुत भली औरत है। खूबसूरत भी है।''

''अब वह बूढ़ी हो गई है। चालीस से ऊपर होगी।''

''मुहब्बत में उमर का दखल नहीं होता, समद!''

''बहुत उल्फत है उससे?''

वहीद चुप रहा। इसका अर्थ था कि उसने समद को उत्तर हाँ में दिया है। समद उसको चुप देख बोला, ''तुम चाहो तो तुम्हारी बात उस तक पहुँचा सकता हूँ।''

''तुम उससे खुद मिलोगे?''

''नहीं, वह बड़ी बेगम साहिबा की खिदमत में रहती है। वहाँ मेरी पहुँच नहीं है। वे पर्दे में रहती हैं और करीमन भी उनके साथ पर्दे में ही रहती है। मेरी बीवी उसके पास जा सकती है।''

''मैंने तो सुना था कि बैरिस्टर साहब की बड़ी बेगम अंग्रेज औरत है और क्लब में जाती है?''

''हाँ, है तो बड़ी वही, मगर हम सब बड़ी उसको कहते हैं, जो मुसलमान है और यहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की रहने वाली हैं। वे पाँच वक्त नमाज पढ़ती हैं, बहुत [illegible] और [illegible] करती हैं। हम सब लोग, उनको बड़ी मानते हैं।''

''मगर एक नौकरानी को पर्दे में रखने का क्या मतलब है?''

''मेरी बीवी तो दोनों बेगमों की खिदमत में है। इससे वह उनके अजीब-अजीब किस्से सुनती है। दरअसल बात यह है कि करीमन यहाँ आई थी गोरी बेगम के लिए ही, मगर उसने उनकी खिदमत करने से इन्कार कर दिया। इस पर उसके खाविन्द ने उसको बहुत पीटा था। जब वह बहुत घायल हो गई तो बैरिस्टर साहब ने करीम को बहुत डांटा और करीमन को अस्पताल भेजने का हुक्म दे दिया। बड़ी बेगम साहिबा को रहम आ गया और उन्होंने उसको अपने पास रख लिया। खुद उसकी मरहम-पट्टी करवाती हैं। अब वह बहुत कुछ ठीक है, मगर सुना है कि वह खुद ही बाहर आना पसन्द नहीं करती। हकीकत में वह अपने खाविन्द से डरती है।

''करीम कहता था कि प्रोफेसर के घर रह कर वह बदकार हो गई थी। उसका ताल्लुक वहाँ के एक हिन्दू नौकर सुन्दर से हो गया था। इसीलिए वह इसे यहाँ ले आया है। उसने उसको यहाँ रहने के लिए राजी करने के लिए ही पीटा था।''

''तो करीम यहाँ आता है?''

''हाँ, हर रोज दोपहर के वक्त आया करता है। जब तक वह यहाँ रहता है, उसकी बीवी अपने को हरम के एक कमरे में बंद कर लेती है। करीम यहाँ बैठ गिड़गिड़ाया करता है।

: 7 :

इस दिन की बातचीत से वहीद को करीमन का बहुत कुछ समाचार मिला। वह समद को यह कह कि वह अपनी बीवी से यह कहलवा दे कि वहीद उसकी खबर लेने आया था। ''यदि कुछ भी उसका संदेश आया तो समद भैया! तुम्हारी बहुत खातिर करूंगा।''

''क्या खातिर करोगे?''

''जो तुम कहो। अगर शौक हो तो एक रात ठेके पर चले चलेंगे।''

''तो तुम यह भी किया करते हो?''

''हाँ, यह गुनाह मैं कर लिया करता हूँ। बात यह है कि मेरा मालिक खुद पीता है और मैं अक्सर वहाँ से चुरा लाता हूँ। मगर तुम साथ चलोगे तो ठेके पर तो मिलेगी ही।''

''रुपया कहाँ से लाओगे?''

''इसकी बात छोड़ो। तुमको दाम नहीं देना पड़ेगा।''

इस दिन की कामयाबी पर नीलकंठ ने वहीद को एक दस रुपये का नोट दे दिया। साथ ही कहा, ''अगर तुमको उसे दावत देनी पड़ी तो दावत का खर्चा मैं दूँगा।''

वहीद को जब पता चल गया कि करीम दोपहर के वक्त वहाँ जाता है, तो उसने रात के समय जाना आरम्भ कर दिया। वहीद को करीमन की खबर मिली। करीमन ने कहला भेजा था–''मैं तुमसे मिल नहीं सकती, मजबूर हूँ।''

वहीद ने समद से और जानने की कोशिश की, परन्तु समद का कहना था कि करीमन ने और अधिक कुछ भी कहने से इन्कार कर दिया है।

वास्तव में करीमन समझ गई थी कि वहीद वहाँ आया है तो अवश्य वकील साहब के कहने पर ही आया होगा। उसको बहुत वर्ष पूर्व करीम से पीटे जाने की बात स्मरण हो आई थी। उस समय सरस्वती के रोते रहने से वकील साहब ने उसकी रक्षा की थी और करीम को डांटा-डपटा था। उसको विश्वास हो रहा था कि इस बार भी सरस्वती के कहने पर ही वकील साहब ने वहीद को भेजा है। वह जो कुछ सरस्वती को, उसकी कोठी से लापता होने के पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिन, कह आई थी, उससे यही आशा करती थी। साथ ही वह सरस्वती से अपने सम्बन्ध को स्मरण कर यह सब कुछ स्वाभाविक मानती थी।

वास्तविक बात यह थी कि करीमन का सम्बन्ध सरस्वती से अधिक घनिष्ठ था। करीमन एक हिन्दू की लड़की और हिन्दू की पत्नी थी। वह अभी दस-ग्यारह वर्ष की ही थी कि उसका विवाह अपने गांव के एक युवक से हो या। पहाड़ों में निर्धनता का प्रकोप रहता है। वहाँ के रहने वाले प्रायः मैदानों में घरेलू नौकरी करने चले जाते हैं और साल-साल तक घर से अनुपस्थित रहते हैं।

शिमला और कंडाघाट की सड़क से एक ओर हट कर, एक घाटी में, रोहताश नाम के गांव में साधु नाम के एक महाजन की लड़की कृष्णा थी। महाजन बहुत ही सज्जन आदमी था। कुछ रुपया जो वह शिमला से कमा कर लाया था, उस पर ही महाजनी करता था। दुकान पर कुछ सौदा आदि भी रखा था और रुपया भारी सूद पर उधार देता था।

कृष्णा का कोई भाई नहीं था। लड़की बहुत लाड़-प्यार से पाली गई थी। अभी वह बालिका-मात्र ही थी कि गांव के एक भूमिपति के युवक लड़के सुन्दरलाल से उसका विवाह हो गया। सुन्दरपाल का पिता था तो भूमिपति, परन्तु उस पहाड़ी इलाके में भूमि-पति होने से कोई धनवान नहीं हो सकता। उसे विवाह के पश्चात्, विवाह पर व्यय हुआ धनाभाव को पूरा करने के लिये, अमृतसर में नौकरी करने जाना पड़ा।

पहली बार वह गया तो तीन वर्ष बाद ही लौटा। इस समय तक कृष्णा अपने पति के घर पर ही रही। वास्तव में करीम की दृष्टि उस पर उस समय ही पड़ गई थी, परन्तु उसका उससे सम्पर्क तो सुन्दरलाल के दूसरी बार अमृतसर जाने पर ही हुआ। इस बार कृष्णा अपने ससुराल में रही थी। वहाँ करीम को उससे मेल-जोल का अधिक अवसर मिला। करीम उस समय पच्चीस वर्ष का युवक था और कृष्णा के श्वसुरं के खेतों में काम करता था।

सम्पर्क उत्पन्न हुए डेढ़ वर्ष के अधिक हो गया था और सुन्दरलाल अभी तक लौटा न था। कृष्णा को गर्भ ठहर गया। वह बीमार होने का बहाना कर घर के भीतर ही रहने लगी। इस पर भी बात छुपी न रह सकी। कृष्णा सातवें मास में जा रही थी कि उसकी सास को उसकी इस बात का ज्ञान हुआ। उसने उसे मार-पीटकर घर से निकाल दिया। वह अपने पिता के घर गई, पर उसकी अवस्था का समाचार वहाँ पहले ही पहुँच चुका था। पिता ने भी उसके लिये घर का द्वार नहीं खोला।

वहाँ से भी निराश हो, वह करीम के द्वार पर जा पहुँची। करीम पर अभी किसी को संदेह नहीं था और वह गांव में बदनाम होना नहीं चाहता था। इस कारण वह उसको अपने एक मित्र मुनीर के पास ले गया, जो जंगल में एक रखवाले की नौकरी में था। मुनीर एक प्रौढ़ावस्था का आदमी था। उसकी अपनी पत्नी तथा बाल-बच्चे थे, परन्तु जंगल में वह अकेला रहता था। उसकी फूस की झोंपड़ी में कृष्णा को आश्रय मिला।

वहाँ पर कृष्णा को एक लड़की पैदा हुई। उस लड़की को मुनीर अपने घर नहीं ले जा सकता था। मुनीर की पत्नी उस पर ही संदेह करती और उसके लड़के-लड़कियाँ भी उसको बुरा-भला कहते। इस कारण वह करीम के पास गया और उसे बुला लाया। करीम कृष्णा के साथ किसी नगर को भाग जाने के लिए तैयार हो गया, परन्तु इस शर्त पर कि लड़की को वहीं जंगल में छोड़ दिया जाये।

कृष्णा बहुत कठिनाई से तैयार हुई। करीम की एक ही युक्ति थी कि वह लड़की का पालन नहीं कर सकेगा और उसको गोदी में रखे, वह भी किसी की नौकरी नहीं कर सकेगी। कृष्णा लड़की को छोड़ने के लिए तैयार हुई तो योजना बन गई। एक दिन करीम आया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पन्द्रह दिन की लड़की को, जब वह सो रही थी, कपड़े में लपेट जंगल में छोड़ने के लिए दोनों चल पड़े। मुनीर भी इस कुकृत्य में करीम का समर्थन करता था। उसका कहना था कि गुनाह की पैदाइश को खत्म ही कर देना चाहिए। इसके बाद निकाह पढ़ाकर जो औलाद पैदा होगी, वह ही परवरिश के लायक होगी।

कृष्णा को यह युक्ति पसंद नहीं आई, परन्तु दूसरी बातें भी तो थीं, जिसके कारण मन को मार कर वह लड़की को जीते जी जंगल में, जंगली जानवरों की दया पर छोड़ने को तैयार हो गई।

करीम का तो कहना था कि गला घोंटकर वह लड़की को कहीं गाढ़ देगा, मगर कृष्णा इसके लिए तैयार न हुई। अतः यह मध्यम मार्ग स्वीकार किया गया। कृष्णा मन ही मन यह सोच रही थी कि यदि भगवान को मंजूर हुआ तो वह बच्ची को परवरिश करने वाला कोई वहाँ भेज देगा।

सोई लड़की को एक कम्बल के टुकड़ में लपेट, एक पेड़ के नीचे रख दोनों लौट आये। कृष्णा लड़की को वहाँ छोड़ते समय, भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि वह उसकी लड़की की रक्षा करे। लड़की को वहाँ लेटा जब वे दोनों कुछ दूर चले गये तो कृष्णा को लड़की के रोने का स्वर सुनाई दिया। उसका हृदय पसीज उठा। वह भाग कर लौटना चाहती थी, परन्तु इसी समय सड़क पर घोड़ों के टापों का शब्द सुनाई दिया। वह वहीं ठिठक कर खड़ी रह गई। लड़की ऊंचे-ऊंचे रो रही थी। वह और करीम एक पेड़ के पीछे छिप गये। कृष्णा का अभिप्राय तो यह था कि ये लोग निकल जायें तो वह अपनी लड़की को उठाने वहाँ पहुँच जाये। करीम भयभीत था। उसको भय लग रहा था कि कहीं इन आने वाले यात्रियों को पता चल गया कि वे उस लड़की को छोड़कर जा रहे थे, तो बच्चों को मारने के जुरम में वह फँस न जाए। अतः दोनों ही अपने विचार से छुप जाना उचित समझते थे।

बच्चे के रोने का शब्द सुन, घोड़ों पर जाने वाले यात्री रुक गये। तीन प्राणी थे। एक पुरुष, एक स्त्री और एक ढाई-तीन वर्ष का लड़का। लड़का एक नौकर की गोद में था, जो एक टट्टू पर सामान लादे हुए, उस टट्टू को पकड़े हुए चल रहा था। औरत ने घोड़ा खड़ा किया और खड़ी हो, उस कम्बल में लिपटी बच्ची के रोने की आवाज सुनने लगी। एकाएक वह लपक कर घोड़े से उतरी और उस बच्ची को उठा चुप कराने लगी। उसने पुरुष की ओर देखकर कहा, "बच्चा भूखा प्रतीत होता है। यदि आप कुछ देर के लिये ठहर जायें तो इसको दूध बना पिला दूँ।"

"परन्तु इसकी जान बचाकर करोगी क्या?"

"यह लड़की है। महादेव की बहन बनाकर रख लूँगी।"

वह पुरुष हँसकर घोड़े से उतरा और नौकर को टट्टू पर से सामान उतारने के लिये कहने लगा।

औरत ने उस नवजात शिशु को नौकर की गोदी में दे दिया और स्वयं अपना टिफन कैरियर खोल, उसमें से स्टोव निकाल, जला, पानी गरम करने लगी। पानी गरम हुआ तो उसने 'हार्लिक्स' का दूध उसमें घोला और बच्चे को चम्मच से पिलाने लगी। बच्ची रोना बंद कर दूध लेने लगी।

इस सब समय कृष्णा और करीम पेड़ के पीछे छुपकर इनको देखते रहे। कृष्णा के आँसू बह रहे थे। करीम देख रहा था। इस पर भी वे परस्पर कुछ कह नहीं रहे थे। बच्ची को दूध पिलाया गया तो फिर वह सो गई। इस पर उस औरत ने सामान बंधवाया, टट्टू पर रखवाया और बच्ची को साथ ले, वे वहाँ से रवाना हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब वे चले गए तो करीम ने कहा, "अब तो रोना बंद करो और चलो।"

कृष्णा पेड़ से ढासना लगाये भूमि पर बैठी थी। अभी भी उसके आँसू बह रहे थे। करीम ने कहा, "चलो रानी! अब रोना-धोना बंद करो और आगे की सोचो।"

कृष्णा तो भगवान का धन्यवाद कर रही थी। वह समझती थी कि उसकी परमात्मा ने सुन ली है। इसी कारण वह आनन्द और संतोष के आँसू बहा रही थी।

"आखिर, अब क्यों रो रही हो?"

"परमात्मा का धन्यवाद कर रही हूँ। पर यह बताओ, अब मुझे किधर ले चलोगे?"

"मैं तुमको किसी शहर में ले चलूँगा। वहाँ कोई नौकरी आदि कर लूँगा और तुम और मैं मियाँ-बीवी बनकर रहेंगे।"

"किस नगर में ले चलोगे?"

"यहाँ से शिमला चलेंगे। वहाँ पर कोई नौकरी मिल गई तो ठीक है, नहीं तो दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई कहीं चले चलेंगे।"

"मैं एक बात कहूँ?"

"हाँ, बताओ।"

"मुझको मुनीर के पास छोड़, तुम कंडाघाट चले जाओ। ये लोग उसी तरफ गये हैं। चोरी-चोरी पता करो कि ये कौन हैं, क्या नाम है इनका और कहाँ रहते हैं?"

"इससे क्या होगा?"

"मैं अपनी बच्ची को पालने वालों का नाम-धाम जानना चाहती हूँ। क्या जानें कभी जीवन में फिर मेल हो जाये!"

"तुम मूर्ख हो। अब छोड़ो इसका ख्याल। और पैदा हो जायेगी। उससे जी भरकर मुहब्बत कर लेना।"

"मैं जो कहती हूँ करो! तुम अभी चले जाओ। आज जाओगे तो इनको कंडाघाट में पा जाओगे।"

"चलो, तुमको मुनीर के घर ले चलूँ। फिर वहाँ उससे बात करूंगा कि क्या करूं?"

मुनीर ने कहा कि लड़की का पता रखना चाहिये। कभी वह आय का स्रोत भी हो सकती है। अतः करीम कंडाघाट जाने को तैयार हो गया।

चार दिन के पश्चात् करीम लौटा। उसने कृष्णा को उसकी लड़की की रक्षा करने वालों का पता बता दिया। उसने बताया कि वे लाहौर फिरोजपुर रोड पर तैंतीस नम्बर कोठी में रहने वाले पण्डित नीलकंठ सप्रू हैं। लड़की बहुत खुश है।

अगले दिन वे मुनीर का धन्यवाद कर शिमला को चल पड़े। वहाँ एक मुसलमान अब्दुल शरीफ वकील हाईकोर्ट के पास उनको नौकरी मिल गई। अब्दुल शरीफ लाहौर का ही रहने वाला था। गर्मियों की छुट्टियाँ समाप्त होने पर जब वह वापस लाहौर चला तो करीम और कृष्णा को भी साथ ले गया।

वे छः मास तक अब्दुल शरीफ की नौकरी करते रहे। इस काल में वे चोरी-चोरी पंडित नीलकंठ के घर जा लड़की की टोल लेते रहे। अब कृष्णा जिसका नाम करीमन रख दिया गया था, पंडित नीलकंठ के यहाँ नौकरी करने का प्रस्ताव करने लगी। करीम इस पक्ष में नहीं था। उसकी युक्ति यह थी कि वहाँ रहने पर करीमन का, लड़की की माँ होने का भेद खुल जायेगा, इससे दोनों नौकरी से निकाल दिये जायेंगे। लड़की, जिसका पालन-पोषण बहुत अच्छा हो रहा था, इनको मढ दी जायेगी, परन्तु करीमन का लड़की के प्रति अनुराग उमड़ रहा था और वह अपने को रोक नहीं सकी। वह लड़की के समीप रहने का आग्रह करने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करीमन अभी युवती थी, सुन्दर थी और फिर एक औरत थी। उस की ही मानी गई। करीम वकील साहब के यहाँ नौकरी के लिये गया। करीम को नौकरी मिल गई। सौभाग्य से उस समय वकील साहब का चपरासी छुट्टी पर गया था और कोठी के पिछवारे में एक कोठरी में उसको रहने को स्थान भी मिल गया। नीलकंठ को भी रात-दिन का नौकर मिल गया। साथ ही लड़की को खेलाने के लिए बिना वेतन के आया मिल गई। लड़की भी शीघ्र ही करीमन से हिल-मिल गई।

परिणाम यह हुआ कि करीमन और करीम पंडित नीलकंठ के घर पर स्थायी नौकर बन गये। करीमन के घर कोई अन्य संतान नहीं हुई और उधर स्वरूपवती भी बीमार पड़ी तो गर्भाशय के एक ऑरपरेशन के पश्चात् और सन्तान उत्पन्न करने के योग्य न रही।

: 8 :

सरस्वती पांच वर्ष की थी कि करीम और करीमन में झगड़ा हो गया। करीम का कहना था, "बहुत दिन यहाँ नौकरी कर ली है। लड़की अब बड़ी हो गई है और उसको लड़की लेकर यहाँ से भाग जाना चाहिये।"

"क्यों?" करीमन ने विस्यम में पूछ लिया।

परस्पर झगड़ा तो अनेकों बातों पर होने लगा था। करीमन के मुख पर चमक कम होती जाती थी और वह और सन्तान न होने के कारण चिन्तातुर रहने लगी थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि उसके हिन्दू परिवार के संस्कार जागृत होने लगे थे। उसको करीम एक अति गंदा आदमी प्रतीत होने लगा था।

वह अपनी कोठरी को साफ-सुथरा रखने में लगी रहती थी और करीम जूते पहिने कोठरी में घूमता रहता था। वह अपने वस्त्र नित्य ही धो लेना पसंद करती थी; करीम अपने कपड़े पन्द्रह-बीस दिन के बाद ही बदलता था। कभी जब वह उसके कपड़े धोने का हठ करती तो वह नाराज हो जाया करता। वह गर्मियों में भी कई-कई दिन स्नान नहीं करता था।

मैदा और गंदा रहने के अतिरिक्त वह मोटा मांस खाने लगा था। करीमन को जब पता चला तो उसने अपने संस्कारों के अधीन उसको मना किया। इस पर दोनों में झगड़ा हुआ। करीमन अपने धर्म की दुहाई देने लगी तो करीम को चिढ़ हो गई। उसका स्पष्ट उत्तर था कि वह एक मुसलमान की बीवी होने से मुसलमान हो गई है। उसका धर्म-ईमान सब मुसलमानी है। उसके लिए सब कुछ हलाल हो गया है।

यह तो बहुत छोटी-छोटी बातें थीं, पर बड़ा झगड़ा तो सरस्वती को लेकर भाग जाने के विषय पर हो गया। जब करीमन ने इसका कारण पूछा तो करीम ने यह युक्ति दी, "वह एक मुसलमान की लड़की है, परन्तु उसका नाम, पढ़ाई-लिखाई सब हिन्दुआना हो रही है। इसको बन्द करने का एक ही तरीका है कि लड़की को उड़ा कर कहीं दूर ले जाया जाये।"

करीमन का कहना था—"लड़की का पालन-पोषण बहुत अच्छी तरह हो रहा है। वह स्कूल में पढ़ने के लिए जाने लगी है। यह सब वे नहीं कर सकेंगे।"

"हमारी लड़की है और उसको हमारी तरह रहने का ढंग आना चाहिए। कुछ ही वर्षों में वह सज्ञान होगी, तो उसका विवाह होगा। एक मुसलमान की लड़की को एक हिन्दू से ब्याह दिया जाये, यह मैं सहन नहीं कर सकता।"

"तो यह लड़की की भलाई के विचार से नहीं, प्रत्युत उसके हिन्दू के घर ब्याहे जाने के भय से है।"

"हाँ, हमारे लिए यह ईमान की बात सबसे बड़ी है। जो आदमी हजरत मुहम्मद साहब पर ईमान नहीं लाता, वह काफिर है और उससे हम सब नफरत करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम मुझसे भी नफरत करते थे?"

"तुम तो मेरी बीवी हो।"

"बीवी होने से पहले मुझसे नफरत करते थे क्या?"

"हाँ, अगर तुम मेरी बवी बनना पसंद न करतीं, तो जरूर करता।"

करीमन बिल्कुल पढ़ी-लिखी नहीं थी और बहुत युक्ति करना नहीं जानती थी, परन्तु एक ऐसे व्यक्ति से, जो उससे घृणा करता हो, एक औरत की स्वाभाविक प्रतिक्रिया घृणा की होती है। वह अपने मन में विचार करती थी कि यह आदमी, जिसने उसके मन से अपने पति में निष्ठा मिटाई थी, वास्तव में उससे घृणा करता था। जो आदमी कसमें खा-खाकर उससे मुहब्बत प्रकट करता था, हकीकत में उससे, उसके खाविन्द से और उसके अन्य सम्बन्धियों से नफरत करता था। इस विचार के आते ही उसके मुख से निकल गया, "बहुत धोखा दिया है तुमने मुझको।"

"काफिर को काबू में लाने के लिए सब कुछ जायज है।"

"झूठ बोलना भी?"

"हाँ।"

करीमन कुछ देर तो उसका मुख देखती रह गई, फिर बोली, "बहुत बेईमान हो तुम।"

बस फिर क्या था! करीम पिल पड़ा। उसने उसको इतना पीटा कि उसके अंग-अंग से खून बहने लगा। करीमन को ज्यों-ज्यों मार पड़ती, वह कहती, "तुम बेईमान, किसी बुरे की औलाद हो·····तुम झूठे हो, तुम्हारा कुरआन झूठा है, तुम्हारे·····।" इस पर करीम उसको और अधिक पीटता। उसने पीट-पीटकर उसे अचेत कर दिया। जब करीम ने देखा कि वह बेहोश हो गई है तो उसे भय लगने लगा कि कहीं मर न जाये। यदि ऐसा हो गया तो क्या होगा? यह सोचकर वह उसे होश में लाने का यत्न करने लगा।

बहुत देर बाद वह सचेत हुई, परन्तु उसके घावों में तीव्र पीड़ा होने लगी, जिससे वह हाय-हाय करने लगी। उसकी हाय-हाय का शब्द सुन साथ की कोठरी में रहने वाला खानसामा वहीद वहाँ आ गया। करीम को अपनी बीवी के घावों पर पानी की पट्टी लगाते देख पूछने लगा, "क्या हुआ है करीम?"

"ऐसे ही गुस्सा आ गया था। इसको मार बैठा हूँ।"

"तो भैया, इन जख्मों पर तो दवाई लगानी चाहिए।"

"इस वक्त दवाई कहाँ से लाऊं?"

"कहो तो वकील साहब से थोड़ी शराब ले आऊं। अगर ब्रांडी मिल गई तो और भी ठीक है।"

वहीद बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये कोठी की ओर चला गया। जब वह चला गया तो करीम ने अपनी बीवी से कहा, "देखो, अगर तुमने लड़की के बारे में कुछ भी बताया तो तुमको मार डालूँगा और स्वयं फांसी चढ़ जाऊंगा।"

"पर तुम उसको यहाँ से ले जाने की बात क्यों कहते थे?"

"बाबा! अब नहीं कहूँगा। तुम चुप रहोगी, तो मैं भी चुप रहूँगा।"

वकील साहब, उनकी पत्नी और सरस्वती भागे हुए आये। उन्होंने करीमन के अंग-अंग से रक्त बहते हुए देखा तो क्रोध से भर गये। वकील साहब पूछने लगे, "यह क्या किया है करीम?"

"यूं ही झगड़ा हो गया था मालिक! मैं पागल हो गया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूपवती उसके घावों पर ब्रांडी लगाने लगी तो करीमन दर्द से जोर-जोर से चिल्लाने लगी। करीमन को रोते देख सरस्वती भी ऊंचे-ऊंचे रोने लगी। बहुत कठिनाई से सरस्वती को वापस कोठी में भेजा गया। करीमन के घावों पर ब्रांडी लगाकर पट्टियाँ बांध दी गईं और उसके चिल्लाने को बंद करने के लिए एक पैग भर उसको पिला भी दी गई। एक घंटा कराहने के बाद, उसका रोना बंद हुआ और वकील साहब तथा स्वरूपवती कोठी को आये।

अगले दिन स्वरूपवती ने डॉक्टर से मरहम मंगवाकर करीमन के घावों पर लगवा दी और वह ठीक होने लगी। एक दिन उसने पूछ लिया, "क्या हुआ था करीमन?"

"मेरे मुख से मजहब के लिए गाली निकल गई थी।"

"तुमको ऐसा नहीं करना चाहिए। मुसलमान अपने ईमान के बहुत पक्के होते हैं। इससे तो खून हो जाते हैं।"

यह दुर्घटना समाप्त हुई। सरस्वती ज्यों-ज्यों बढ़ने लगी, उसका सौन्दर्य निखरने लगा और करीम का मन बेईमान होने लगा। करीम वही बातें सरस्वती से करने लगा, जो वह कृष्णा को फुसलाने के लिये किया करता था। करीमन को जब इस बात का पता चला तो आगबबूला हो गई। उसने करीम को धमकाया कि उसकी सब करतूत वह वकील साहब से कह देगी।

इसके पश्चात् सरस्वती कॉलेज में भरती हुई और फिर नृत्य तथा संगीत सीखने लगी। करीम ने पुनः सरस्वती को एक मुसलमान युवक अब्दुलहमीद के पंजे में फँसाने का यत्न किया। अब्दुल हमीद भी संगीत सीखने उसी विद्यालय में जाया करता था, परन्तु उस समय तक सरस्वती के मन पर प्रोफेसर पद्मदेव के सम्मोहन में फँसे होने के कारण अब्दुलहमीद का जादू नहीं चल सका। एक दिन करीम ने भी यत्न किया और हमीद की प्रशंसा के पुल बांधने लगा। सरस्वती समझ रही थी कि वह क्या कह रहा है। अतः उसने उसके साथ कोठी से बाहर जाना छोड़ दिया। जब सरस्वती ने करीम की बात करीमन को बताई तो अगले दिन से विद्यालय ले जाने का काम वह स्वयं करने लगी। करीम को अपने दीन की तरक्की का ख्याल पुनः तब आया, जब महादेव ने करीम को अपनी सेवा में लेने का प्रस्ताव रखा। उसको यह बात पता चल गई थी कि वकील साहब का लड़का मुसलमान हो गया है और अब उसका नाम मुहम्मद सप्रू है। उसने वकील साहब से नौकरी बदलने के लिए कहा तो वकील साहब मान गये।

वह महादेव के घर पहुँचा तो बैरिस्टर इफ्तिखार हुसैन से उसका मेल हो गया। बैरिस्टर साहब ने जब देखा कि सूसन और महादेव की नौकरी में एक कट्टर मुसलमान है, तो वह बहुत खुश हुए और कहने लगे, "देखो करीम! तुम्हारा यह मालिक अभी नौमुस्लिम है। इसके साथ बहुत एहतियात से बर्ताव करना चाहिए, ताकि इसको यह समझ आये कि इस्लाम में आने से उसका जीवन बहुत सुखी है।"

इफ्तिखार हुसैन की यह बात सुन करीम ने कहा, "बैरिस्टर साहब! मैं एक बात और अर्ज करना चाहता हूँ। सप्रू साहब की बहन बहुत खूबसूरत है।"

"सच! मैंने देखी नहीं।"

"तो देख लीजिये। मैं चाहता हूँ कि उसको भी दीन-इलाही की उम्मत में शामिल कर लिया जाये।"

"तुमको इससे क्या फायदा होगा? वह तो शादीशुदा है न?"

"हाँ साहब! एक बात है। अगर आप उस बात को अपने दिल में रख सकें तो अर्ज कर सकता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इफ्तिखार हुसैन तो एक शौकीन आदमी था। उसने मुस्कराते हुए कहा, ''हाँ-हाँ, बताओ! मैं उसका जिक्र किसी से नहीं करूंगा।''

''असल बात यह है कि मेरे साहब की बहन सरस्वती इनकी हकीकी बहन नहीं है। वह वकील साहब की लड़की नहीं है। वह एक मुसलमान माता-पिता की लड़की है और वकील साहब ने उसकी परवरिश की है।''

''कैसे जानते हो तुम? तुम्हारे पास कोई सबूत है?''

इस पर करीम ने सारी कथा वर्णन कर दी।

: 9 :

मियाँ इफ्तिखार हुसैन पर सरस्वती के एक मुसलमान की लड़की होने का इतना प्रभाव नहीं हुआ, जितना उसके सौन्दर्य का पड़ा।

इन दिनों महुम्मद सप्रू असिस्टैंट डायरेक्टर ऑफ हैल्थ बन चुका था और लाहौर से बाहर दौरे पर गया हुआ था। एक संगीत-समारोह में सरस्वती का कार्यक्रम था। सूसन को सरस्वती ने एक प्रवेश-पत्र भेजा तो उसने टेलीफोन द्वारा एक और माँग लिया।

''किसके लिए चाहिये?'' सरस्वती ने पूछा।

''मेरे पिता हैं। वे इच्छा प्रकट कर रहे हैं।''

सरस्वती ने एक प्रवेश-पत्र और भेज दिया। इस प्रकार मियाँ साहब को न केवल सरस्वती का सौन्दर्य देखने का अवसर मिला, प्रत्युत उसके नृत्य तथा संगीत को देखने व सुनने का अवसर भी मिल गया। इफ्तिखार हुसैन इससे इतना प्रभावित हुआ कि वह सरस्वती को अपने हरम में डालने के लिए उतावली अनुभव करने लगा।

बैरिस्टर साहब ने करीम को अपने घर बुलाया और उसके साथ एक सुन्दर और श्रेष्ठ कलाकार को इस्लाम की बरकत से सुशोभित करने के लिये योजना बनाने लगा।

पहले यह विचार किया गया कि करीमन को बैरिस्टर साहब के यहाँ नौकर कराया जाये। तत्पश्चात् सरस्वती को वहाँ आने-जाने की रवत डाली जाये। फिर एक दिन उसको लापता कर दिया जाये। यह योजना बनी तो इसका प्रथम चरण पूरा करने के लिए करीम को कह दिया गया।

अगले दिन करीम पद्मदेव की कोठरी पर गया और रात को अपनी पत्नी को कहने लगा, ''करीमन! मियाँ इफ्तिखार हुसैन चाहते हैं कि तुम उनकी नौकरी कर लो।''

''क्या फायदा होगा इससे?''

''अब सरस्वती सज्ञान हो गयी है। उसको तुम्हारी खिदमत की जरूरत नहीं रही।''

''मैं क्या उसकी जरूरत से नौकरी कर रही हूँ?''

''तो किसकी जरूरत से कर रही हो?''

''अपनी जरूरत से। मैं अपनी बिटिया के पास ही रहना चाहती हूँ।''

''बिना यह कहने की जुर्रत किये कि वह तुम्हारी बिटिया है?''

''मैं उसके चित्त की शान्ति को छीनना नहीं चाहती। मैं तो समझती हूँ कि मैं उसको न बताकर भारी जुर्रत का काम कर रही हूँ।''

''मेरी राय मानो। यहाँ से अपना हिसाब कर वहाँ चली चलो। रहा सरस्वती से मेल-जोल, वह तो नौकरी छोड़ने पर भी रह सकेगा। तुम यहाँ पर कभी-कभी आ जाया करो और कभी-कभी उसको वहाँ बुला लिया करो।''

''नहीं! मैं यहाँ की नौकरी नहीं छोड़ सकती।''

''यहाँ क्या मिलता है तुम्हें? बीस रुपये और रोटी-कपड़ा ही तो? बैरिस्टर साहब के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यहाँ पचास रुपये मिलेंगे। रोटी-कपड़ा और खाने को नित्य पुलाव मिला करेंगे।''

''ठीक है, तुम वहाँ नौकरी कर लो। मैं नहीं करूंगी। मैं बता देती हूँ कि सरस्वती उनके घर में कभी नहीं जायेगी और मैं उसके बिना जी नहीं सकती।''

''तुमको तो चलना ही होगा। मैं बैरिस्टर साहब से वायदा कर आया हूँ।''

''तुमने किया है तो जाओ। मैं उसके घर, जो अपनी लड़की से गुनाह कर सकता है, नहीं जाऊंगी।''

''अपनी लड़की से? किसने कहा है तुमको?''

''तुमने ही बताया था। सूसन उनकी बीवी की लड़की है। इससे वह उनकी लड़की हुई और उनका उससे सम्बन्ध रहा है।''

''सूसन उनकी लड़की नहीं है। ऐसी शादी इस्लाम में जायज है।''

''यह इन्सानियत के खिलाफ है। तुम इसको शादी कहते हो? यह भला शादी कैसे हो गई?''

''इस्लाम में इस किस्म की शादी जायज है।''

''यह हैवानियत है।''

''करीमन! तुम्हारी जबान बहुत लम्बी होती जाती है। यह सब काफिरों के घर का अनाज खाने की वजह से है। मैं यह बिल्कुल पसन्द नहीं कर सकता।''

''मैं यहाँ की नौकरी नहीं छोड़ूंगी।''

''मैं तुमको यहाँ रहने न दूँगा।''

''तुम कल से यहाँ मत आना। मुझको तुम्हारे साथ ताल्लुक बनाने का अफसोस लग रहा है।''

''बदजात कहीं की।'' इतना कह उसने एक जोर का चांटा करीमन के मुख पर दे मारा। करीमन उठकर कोठरी से बाहर भागने लगी तो करीम ने उसकी बांह पकड़ ली।

''मैं शोर मचा दूँगी, अगर मुझको नहीं छोड़ा तो।''

करीम ने उसकी बांह छोड़ दी और कहा, ''अगर तुम यहाँ से बाहर गईं या शोर मचाया तो मैं सरस्वती के पैदा होने की पूरी बात बता दूँगा।''

करीमन अवाक् खड़ी रह गई।

करीम उस रात वहाँ नहीं सोया। वह रात के दस बजे ही वहाँ से चला गया। अगले दिन करीमन सरस्वती को अपनी पूर्ण कथा बताने के लिये गई। उसने बताना आरम्भ किया, परन्तु उसके आँसू भर आये। बस यह इतना ही कह पायी कि करीम एक अच्छा आदमी नहीं है। साथ ही सरस्वती को लाहौर छोड़ जाना चाहिए। लाहौर छोड़ने से उसका अभिप्राय यह था कि वह भी उनके साथ जा सकेगी। इसके आगे वह कुछ नहीं कह सकी।

अगली रात करीम अकेला नहीं आया। वह अपने साथ बैरिस्टर साहब के एक अन्य नौकर को भी लाया। दूसरा आदमी कोठरी के बाहर खड़ा रहा और करीम अकेला कोठरी के अन्दर आया।

करीमन ने पूछा, ''तो फिर आ गये हो?''

''मैं तुम्हारा खाविन्द जो हूँ।''

''मैं तुमको खाविन्द नहीं मानती।''

''क्यों?''

''तुम मुझको पीटते हो।''

''तुम इस्लाम को गालियाँ देती हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम मेरी जात-बिरादरी वालों से नफरत करते हो?"

"वे सब इसी लायक हैं।"

"इस्लाम किस लायक है? बाप को बेटी से जुदा करने के लिये कहने वाला·····।"

वह आगे कुछ कह नहीं सकी थी। करीम ने लपककर उसके मुख के आगे हाथ रख दिया। वह हाथ हटाने लगी तो उसने धीरे से आवाज दी—"नासिर!" बाहर खड़ा आदमी भीतर आ गया। करीम ने उसका मुंह बन्द कर रखा था। नासिर ने उसके हाथ-पांव बांध दिये और मुख पर पट्टी बांध दी।

इस समय रात के दस बजे थे। उन्होंने दीया बुझा दिया और चुपचाप बैठे रहे। लगभग रात के बारह बजे वे कोठरी में से निकले। करीमन को उठाकर बाहर ले आये और कोठरी के पिछवाड़े वाले दरवाजे से बाहर ले गये। वहाँ बैरिस्टर साहब की मोटर खड़ी थी।

जब मोटर बैरिस्टर साहब की कोठी पर पहुँची तो करीमन को उठाकर एक कमरे में ले जाया गया। वहाँ उसके मुख की पट्टी तथा हाथ-पांव खोल दिए गये। करीमन इस बल-प्रयोग को देख भौंचक्की हो बैठी रह गई। करीम ने कहा, "अब तो यहाँ रहोगी न? तुमको मैं कहता हूँ कि यहाँ नौकरी करो।"

"मैं मौका मिलते ही यहाँ से भाग जाऊंगी।"

"भाग जाओगी तो मैं तुम्हारी टांगें तोड़ देता हूँ, जिससे तुम भाग नहीं सकोगी।"

"बहुत जालिम हो तुम।"

"अभी तुम देखोगी कि मैं क्या करता हूँ।" इतना कह उसने एक छड़ी लेकर उसको पीटना शुरूकर दिया। करीमन उठकर भागने लगी तो करीम ने दरवाजा बंद कर दिया। उसने उसको इतना पीटा कि वह अचेत हो गई।

अब करीम ने दरवाजा खोला और बाहर खड़े बैरिस्टर साहब से कहा, "लो साहब! मैंने अपना काम कर दिया है। अब आप जानें और आपका काम।"

करीमन के पीटे जाने पर उसकी चीखों की आवाज बाहर आ रही थी और बाहर बैरिस्टर साहब खड़े कोठी के नौकरों को यह कहकर वहाँ से हटाते रहे कि एक औरत में से भूत निकाला जा रहा है। धीरे-धीरे चीखें कम हुईं और फिर करीमन के धम्म से गिरने का शब्द हआ। इसके पश्चात् कमरे का दरवाजा खुला। करीम जब जाने लगा तो बैरिस्टर साहब ने उसको रोक लिया। उनको भय था कि वह कहीं मर गई हो। बैरिस्टर साहब ने देखा कि उसके मुख से खून बह रहा है। उसने उसके हृदय-स्थल पर हाथ रखकर देखा, वह चल रहा था। उसने कुछ विचारकर करीम से कहा, "इसको उठाकर बड़ी बेगम के कमरे में ले चलो।" करीम ने उसको अपने हाथों में उठा लिया और बैरिस्टर साहब के पीछे-पीछे उनकी हिन्दुस्तानी बेगम के कमरे में ले गया। वहाँ भी करीमन की चीखों की आवाज पहुँचती रही थी। हैनिरियाटा इस आवाज को सुनकर अपने द्वार पर ही खड़ी थी। करीमन को उठाकर उसके सामने से ही ले जाया गया। इस पर वह, यह समझ कि बैरिस्टर साहब की वासना का कोई शिकार है, चुप कर रही। वह अपने कमरे में भीतर से चिटखनी लगाकर पलंग पर लेट गई।

करीमन को शान के कमरे में ले जाया गया तो शान ने प्रश्नभरी दृष्टि से अपने पति को देखा। बैरिस्टर साहब ने कह दिया, "इस औरत में शैतान घुस गया था। उसको निकालने का इन्तजाम किया है। जरा इसके सिर पर पानी की पट्टी लगाकर इसे होश में ले आओ।"

शान को पहले तो अपने पति की लापरवाही पर क्रोध आ गया, परन्तु करीमन के मुख से 'आह' का शब्द सुन, उसका ध्यान उसके कष्ट की ओर चला गया। उसने करीम को कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"इसको मेरे पलंग पर लिटा दो।" अपनी निजी बांदी नगीना, जो समद बैरा की बीवी थी, को पानी लाकर, उसका रक्त बंद करने के लिए कह दिया।

आधे घण्टे के उपचार के पश्चात् रक्त बंद हुआ और करीमन को होश आया। शान ने अब अपने पति और करीम को वहाँ से चले जाने के लिए कह दिया।

अगले दिन उसने करीमन की मरहपट्टी करवानी आरम्भ कर दी। करीमन को जब पता चला कि वह बैरिस्टर साहब की पत्नी के कमरे में पड़ी है, तो वह बहुत घबराई। यद्यपि वह अपने को इतनी सुन्दर नहीं मानती थी कि एक पढ़ा-लिखा रईस उसके लिए किसी प्रकार के बुरे विचार रख सकता है, इस पर भी वह निश्चिन्त नहीं थी।

उसको बैरिस्टर की बीवी बहुत भली औरत प्रतीत हुई। वह उसके घावों पर स्वयं मरहम-पट्टी करती थी। बाहर के किसी नौकर को छूने तक नहीं देती थी। केवल नगीना एक औरत थी, जो उसके पास आ सकती थी।

पांच-छः दिन में करीमन कुछ हिल-डुल सकने योग्य हुई। अब बैरिस्टर साहब की पत्नी ने उसका परिचय जानने के लिए उससे पूछ लिया, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"करीमन। मैं एक चपरासी की बीवी हूँ, जो आजकल सप्रू साहब के पास नौकर है।"

"बैरिस्टर साहब का तुम्हारे साथ क्या सम्बन्ध है?"

"मैं उनकी शक्ल से भी वाकिफ नहीं। उनका नाम सुना तो जरूर है। वह सप्रू साहब के श्वसुर हैं।"

शान खिलखिलाकर हँस पड़ी। बोली, "किसने बताया है तुमको यह?"

"सोसन बीबी ने खुद ही बताया है।"

"उस बदकार औरत का नाम मत लो। तुमको किसने पीटा था?"

"मेरे खाविन्द ने।"

"बैरिस्टर साहब ने नहीं?"

"नहीं।"

"क्यों पीटा था?"

"वह मुझको इनकी नौकरी करने के लिये कहता था। मैं अपनी पहली नौकरी छोड़ना नहीं चाहती थी। इस पर नाराज हो पहले मेरे मुख पर पट्टी बांध और फिर मेरे हाथ-पांव बांध, मुझे यहाँ लाया गया और अब मैंने यहाँ से भाग जाने की बात कही, तो करीम मुझको पीटने लगा। मेरे बेहोश हो जाने तक वह पीटता रहा।"

"तुम किनकी नौकरी करती हो?"

"सोसन बीबी के घरवाले सप्रू साहब के पिता के यहाँ नौकरी करती थी। उनकी लड़की सरस्वती से मेरी बहुत मुहब्बत है। उसका विवाह हो जाने के बाद से मैं सरस्वती की खिदमत में हूँ।"

"सुना है तुमने किसी हिन्दू नौकर से ताल्लुक बना लिया है?"

"यह बात गलत है।"

"बैरिस्टर साहब कहते थे कि तुमको वे यहाँ पर ही नौकरी देंगे, जिससे तुम उस हिन्दू नौकर से दूर रह सको।"

"मेरा किसी हिन्दू नौकर अथवा हिन्दू आदमी से किसी प्रकार का ताल्लुक नहीं है। मैं सरस्वती की खिदमत में रहना चाहती हूँ।"

इस सब वार्तालाप से शान को कुछ भी पता नहीं चला। इस मामूली-सी बात को वह इतना सख्त पीटे जाने का कारण नहीं मान सकी। इससे उसने केवल यह कह दिया, "अगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुम वायदा करो कि बिना मुझसे पूछे कहीं और नहीं जाओगी, तो मैं तुमको अपने पास यहाँ, अपनी खिदमत में रख सकूँगी। नहीं तो तुमको फिर अपने खाविन्द के पास जाना पड़ेगा और वह तुमको मार छोड़ेगा।''

''देखिये सरकार! मैं मरने से नहीं डरती। इस पर भी कहती हूँ कि मेरा किसी के साथ नाजायज ताल्लुक नहीं है। वैसे अगर हजूर मुझको मेरे खाविन्द के हवाले न करने की तसल्ली दें, तो मैं आपकी खिदमत में रह सकती हूँ।''

इस प्रकार बात, मियाँ इफ्तिखार हुसैन की रुचि अनुसार ही निश्चित हो गई। करीमन मन में चाहती हुई भी कि वह सरस्वती से मिल सके, अभी यहाँ से जाने के न तो योग्य थी, न ही वहाँ जाने में किसी प्रकार का लाभ समझती थी।

उसको बैरिस्टर की कोठी पर आये पन्द्रह दिन हो चुके थे। एक दिन नगीना ने उससे पूछा, ''किसी वहीद को जानती हो?''

''हाँ भैया वहीद! पंडित नीलकंठ के घर बैरा का काम करता है।''

''भैया!'' नगीना ने विस्मय से पूछा, ''वह तो कहता था कि उसकी तुमसे मुहब्बत है।''

''तो क्या भाई-बहन में मुहब्बत नहीं हो सकती? नगीना, मैं उसे हमेशा भाई ही मानती रही हूँ।''

नगीना विस्मय से उसका मुख देखती रह गई। फिर कुछ विचारकर बोली, ''वह तुम्हारे विषय में जानना चाहता था।''

''मैं उससे नहीं मिल सकती, मजबूर हूँ।''

: 10 :

बैरिस्टर साहब की हिन्दुस्तानी पत्नी शान थी तो अनपढ़, परन्तु उसके मन में परमात्मा का भय था। वह जब करीमन के सम्पर्क में आई तो उसको कुछ ऐसा समझ आया कि उसके साथ सरासर जुल्म हो रहा है। करीमन ने उसको यह नहीं बताया था कि सरस्वती उसकी लड़की है और इसी कारण वह उससे इतना प्रेम करती है। इस पर भी उसने यह तो बताया, ''सरकार! मेरे एक लड़की थी, मगर वह जाती रही। उसके बाद मैं अपने खाविन्द के साथ लाहौर आ गई। यहाँ आकर हम वकील साहब की नौकरी करने लगे। हमको उनकी कोठी में नौकरी मिली तो उस समय यह सरस्वती गोद में थी। मैं इसको खेलाने लगी। मेरी इससे मुहब्बत हो गई।

''हम वकील साहब की नौकरी में बीस वर्ष तक रहे। यह लड़की मेरे हाथों में पली, पढ़ी और विवाही गई। बिटिया भी मुझसे बहुत ही मुहब्बत करती है और मेरा आदर करती है। आजकल मैं उसकी खिदमत में थी।''

''तुम बैरिस्टर साहब की नौकरी में क्यों नहीं आना चाहती थीं?''

''सिर्फ इसलिए कि मैं सरस्वती की नौकरी में ही रहना चाहती थी।''

''अगर तुमको जाने की इजाजत दूँ तो कहाँ जाओगी?''

''सरस्वती के पास। मेरा दिल उसके पास रहने को करता है।''

''यहाँ मेरे पास रहने को नहीं करता?''

''सरकार! माफ करें। उतना नहीं, जितना सरस्वती के पास रहने को है। इस पर भी अगर मैं उसके पास न जा सकी तो उमर-भर आपकी ही खिदमत में रहूँगी। यहाँ पर बैरिस्टर साहब कुछ दिन से मुझको एक बात कहने लगे हैं।''

''क्या?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"यही कि मैं सरस्वती को यहाँ बुलाकर मिल सकती हूँ।"

"ठीक तो कहते हैं?"

"मगर मैं नहीं चाहती।"

"क्यों नहीं चाहती?"

"यह आप बैरिस्टर साहब से ही पूछ लें कि वे मुझको वहाँ जाकर मिलने से मना क्यों करते हैं और उसके यहाँ आने के लिये क्यों राजी हैं?"

"तो तुम नहीं बताना चाहतीं?"

"बैरिस्टर साहब जैसे बड़े आदमी के लिए अन्दाज करना, मेरे लिये मुमकिन नहीं। आप उनकी बातों से ज्यादा सही अन्दाज लगा सकेंगी।"

इसके कई दिन बाद शान ने करीमन से पूछा, "तुम एक हिन्दू की लड़की हो?"

"हाँ सरकार।"

"तुम करीम की मुहब्बत में फँस गई थीं?"

"उस वक्त मैं मुहब्बत के मायने नहीं समझती थी। अपनी नफसानी ख्वाहिशात को ही मुहब्बत मान, अपने खाविन्द का घर छोड़ करीम के साथ भाग खड़ी हुई थी। अब तो सरकार, जिन्दगी मुहाल हो गई है। यहाँ लाकर पीटने से पहले तो करीम से मेल-मुलाकात रखती थी। इसको मैं एक औरत के फरायज में ही मानती थी, परन्तु उसके मुझको पीट-पीट कर मार देने की कोशिश के बाद तो मैं अपने फर्ज से अपने को बरी समझती हूँ। मैं अब उसके बिस्तर पर जाने से पहले अपनी जिन्दगी खत्म कर देना चाहूँगी।"

"कैसे खत्म करोगी?"

"अगर तो मुझको पहले पता चल गया तो गले में रस्सी बांध दीवार की किसी खूँटी से लटक जाऊंगी और अगर उससे मुलाकात एकाएक हो गई तो इस मुलाकात के बाद प्राण छोड़ दूँगी।"

"मरना बहुत मुश्किल है करीमन!"

"हाँ सरकार! जानती हूँ। मगर इससे भी मुश्किल एक और बात है—मरजी के बिना किसी औरत को जिना के लिए मजबूर करना। मैंने सुना है कि राजपूत औरतों के साथ जब-जब ऐसा होने की बात पैदा हुई, तो चिता जलाकर उसमें भस्म हो जाती थीं।"

"पर तुम तो राजपूत नहीं हो?"

"मेरी रगों में हिन्दुओं का खून है। यूं तो यह स्वभाव दुनिया की सब कौमों की औरतों में है। फर्क सिर्फ यह है कि कुछ कौमों में औरतों के मन में यह बात भर दी गई है कि इससे कोई मान-अपमान नहीं होता। हिन्दुओं में जबरदस्ती किसी औरत से 'फेल' करना उस औरत के लिए इतनी बड़ी बेइज्जती समझी जाती है कि वह औरत इसके बाद मर जाना ही बेहतर समझती है।"

"पर मैंने सुना है कि कई राजपूत लड़कियाँ मुसलमानों के साथ विवाह कर बहुत खुश रहती थीं।"

"यह हिन्दू-मुसलमान का सवाल नहीं। यह मरजी और बेमरजी की बात है। बेइज्जती तो मरजी के बिना 'फेल' करने से होती है। जब शादी हो गई और लड़की ने किसी गैर-मजहब वाले को खाविन्द मान लिया तो फिर उसमें बेइज्जती की बात नहीं रहती।"

"यह करीम तुम्हारा खाविन्द है?"

"हजूर! उसने खाविन्द का काम छोड़ जल्लाद का काम शुरू कर दिया है। मैं अब उसको खाविन्द नहीं मानती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो क्या खाविन्द मानने से होता है? खाविन्द तो निकाह पढ़ने के पीछे बनता है।"

"मेरा करीम से निकाह नहीं पढ़ा गया। हम दोनों अपनी-अपनी मरजी से खाविन्द-बीवी बने थे। पर क्या निकाह पढ़ने के बाद भी तलाक नहीं हो सकता? तो समझ लीजिये कि मैंने उसको तलाक दे दिया है।"

"बिना तलाक की रस्म अदा किये?"

"न रस्म से विवाह हुआ था न तलाक की रस्म की जरूरत है।"

शान करीमन को इस प्रकार दलील करते देख चकित रह गयी। उसने इसको करीम से पीटे जाने के बाद मरणासन्न अवस्था में देखा था। इससे वह करीम को बहुत बड़ा मुजरिम समझती थी। वह यह भी समझती थी कि इस औरत को, जो इतना मुहब्बत करने वाला दिल रखती है, करीम के हवाले करना उसको मौत के मुंह में भेजना है। इस कारण वह करीमन को पर्दों में रखती थी।

बैरिस्टर साहब को अपनी बीवी की यह बात पसंद नहीं आ रही थी। वैसे शान उसके मन से उत्तर चुकी थी, और सरस्वती की खूबसूरती का भूत उस पर सवार हो चुका था। वह उसको अपने काबू में लाने के मनसूबे बना रहा था। इस सिलसिले में वह नित्य ही शान के पास आने लगा था।

जब करीमन ने बताया कि बैरिस्टर साहब की सरस्वती से मिलने की इच्छा का कारण शान स्वयं जान सकती है, तो शान ने अपने खाविन्द से पूछ लिया, "आपने करीमन से कहा था, कि सरस्वती, जो एक प्रोफेसर की पत्नी है, यहाँ उससे मिलने आ सकती है?"

"हाँ, कहा था।"

"यदि मिलने की इजाजत है, तो इसको वहाँ जाकर मिलने की इजाजत क्यों नहीं?"

"वह भाग जायेगी।"

"मुझको यकीन है कि वह नहीं भागेगी।"

"नहीं बेगम! तुम नहीं समझतीं। वह बहुत ही चालाक औरत है। वह एक बार इस कोठी से गई तो लापता हो जायेगी।"

"मुझको तो कोई ऐसी बात मालूम नहीं होती। इस पर भी अगर आप उसको सरस्वती से मिलने के लिए जाने की इजाजत नहीं देते तो वह नहीं जायेगी। मगर सरस्वती को यहाँ बुलाना मुनासिब नहीं समझती।"

"क्यों?" हमारी कोठी में उसके आने में क्या बुराई है?"

"यह तो आप जानें। आपने नौकरानी को कैद कर रखा है। उसकी मालकिन से क्या करेंगे, कौन कह सकता है?"

"तो तुम भी मुझ पर शक करने लगी हो?"

"शक की कोई बात नहीं। मैं तो यकीन की बात कहती हूँ। सूसन से आपका कुछ ताल्लुक है अथवा नहीं? हमारी नौकरानी शाकिन से आपका सलूक भी मुझको मालूम है। मैं समझती हूँ कि कुछ ऐसा ही करीमन आपसे उम्मीद करती है। इसीलिए सरस्वती को यहाँ बुलाना नहीं चाहती।"

"उसने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया मालूम होता है।"

"मैं तो यह सोचती हूँ कि आज मुगलों और पठानों की हुकूमत तो रही नहीं। अब तो हर बशर को आजादी है। आपने एक औरत को अपनी कोठी में कैद कर रखा है। यह तो जुर्म है।"

"बहुत कानून पढ़ गई मालूम होती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कानून पढ़ी तो नहीं, मगर कानून पढ़े की बीवी जरूर हूँ। आप ही एक दिन बता रहे थे कि पुलिस ने किसी को बिना मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किये, चौबीस घण्टे से अधिक हवालात में रखा था, तब हाई कोर्ट ने उसको उसी वक्त छोड़ देने का हुक्म जारी कर दिया था और पुलिस को डांट पड़ी थी।"

"मगर करीमन को तो उसके खाविन्द ने यहाँ रखा हुआ है?"

"आपको यह पता होना चाहिये कि करीमन करीम की शादीशुदा बीवी नहीं है, रखैल है।"

"यह सब उस औरत ने तुमको बताया है?"

"हाँ।"

"तो क्या उसने यह नहीं बताया कि सरस्वती उसकी क्या लगती है?"

"मालिकन! वैसे उसने उसको बचपन से गोदी में खेलाया है।"

"सिर्फ यही नहीं। वह उसके पेट से जन्मी उसकी लड़की है।"

"आप सच कहते हैं क्या?"

"यह बात करीम ने बताई है।" इसके पश्चात् बैरिस्टर साहब ने करीम की सारी कहानी सुना दी। शान इस कहानी को सुन गम्भीर हो, विचार करने लगी।

उसे चुप देख, बैरिस्टर साहब ने कहा, "देखो, वह करीम की ही लड़की है और करीम चाहता है कि वह किसी मुसलमान के घर की रौनक बने। मैंने उसको देखा है। वह निहायत ही खूबसूरत है। मुझको वह बहुत पसन्द आई है।"

"मगर उसकी शादी तो हो चुकी है।"

"हिन्दुस्तानी तरीके से, जो हमारे मजहब में जायज नहीं है। मैं जहाँ अपने लिए एक खूबसूरत बीवी पाने की कोशिश में हूँ, वहाँ एक मुसलमान की लड़की को इस्लामी दायरे में फिर ले आने की कोशिश कर रहा हूँ।"

मजहब का नाम सुनकर शान चुप कर गई। अपने संस्कारों के अधीन मजहब उसके लिए एक निहायत ही पाक चीज थी और इसमें किसी गैर-मुसलमान को लाना एक नेक काम मानती थी।

उसे चुप देख बैरिस्टर साहब ने कह दिया, "अब तुम समझी हो। देखो शान! मेरी अभी दो शादियाँ हुई हैं। इसलिए एक और कर लेने में तुमको एतराज नहीं होना चाहिये। चार तक शादियाँ करने का हक मुझको हासिल है।

मैं तुमसे इल्तजा करता हूँ कि करीमन को समझाओ और मेरी मदद कर दो। यह तुम्हारा मजहबी फर्ज है।"

: 11 :

एक मानव के नाते शान को करीमन की बात पसंद आई थी, और इसके लिये वह अपने पति से लड़ पड़ने तक को तैयार हो गई थी, परन्तु जब बीच में मजहब का प्रश्न उत्पन्न हो गया तो वह अपने पति की ही हिमायत करने के लिये तैयार हो गई। उसने करीमन को समझाना शुरू कर दिया।

उसने करीमन को अपने पास बैठाकर कहा, "देखो करीमन! तुम मुसलमान हो चुकी हो। एक मुसलमान की बीवी बन बाई साल तक उसके साथ रह चुकी हो। तुमको मोटा माँस भी खिलाया जा चुका है। इतना सब हो चुकने पर तुमको इस्लाम की हिमायत करनी चाहिये। तुमको इस मजहब को फैलाने के लिये जी-जान से कोशिश करनी चाहिए।

"इसके साथ ही सरस्वती एक मुसलमान की लड़की है। किसी भी मुसलमान को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी औलाद के एक गैर मुसलमान की बीवी बनने में एतराज होता है। यही वजह है कि तुम्हारा खाविन्द अपनी लड़की को एक गैर-मुसलमान की बीवी बने देख पसन्द नहीं करता। तुमको अपने खाविन्द की, अपने मजहब की और अपनी जमीर (आत्मा) की आवाज सुननी चाहिये।

"देखो, सरस्वती को किसी तरह यहाँ बुला लो। तुम उसको कहोगी तो वह भागी आयेगी। यहाँ आने पर बैरिस्टर साहब उसको इस्लाम की खूबियाँ समझाकर मुसलमान बना लेंगे।"

सरस्वती के जन्म की बात इनको पता चल जाने से यहाँ करीमन को विस्मय हुआ, वहाँ दुःख भी। इससे भी अधिक, इस्लाम के नाम पर सरस्वती को अपने विवाहित पति के खिलाफ करने की साजिश की बात सुनकर तो उसके पांव तले से जमीन निकल गई।

उसको मुसलामन के पास रहते हुए आज बाईस वर्ष हो चुके थे। इस बीच वह दिन-रात अपने खाविन्द से इस्लाम की खूबियों की कहानी सुनती रही थी। इस पर भी वह मन में विचार करती थी कि इस्लाम की खूबियों के कारण तो वह मुसलमान हुई नहीं थी।

आज बैरिस्टर साहब की बीवी के कहने पर कि मुसलमान की बीवी होने से उसको इस्लाम की इशायत (प्रचार) में मदद करनी चाहिये, वह पुनः गम्भीर विचार में पड़ गई थी। उसको फिर अपने मुसलमान बनने की बात याद आ गई।

वह जवान हो गई थी। उसका पति बाहर नौकरी करने गया हुआ था। करीम उनके घर पर खेत से साग-भाजी देने आया करता था। एक दिन करीम ने उसको देखा और आँख से इशारा किया। वह पहले तो इसका अर्थ समझी ही नहीं, परन्तु करीम ने उससे अकेले में मिल कर आँख के संकेत का अर्थ बताया। उसने कहा था, "बहू! जवानी गुजरती जाती है। जिन्दगी छोटी है। कब तक उस हिजड़े की इन्तजार में बैठी रहोगी?"

इन वाक्यों का प्रभाव उंसके मन में एक तूफान पैदा करने वाला हुआ था। उसी रात वह अपने कमरे की खिड़की में से कूदकर बाहर चली गई और खेत में पहुँच उसने यौवन का रसास्वादन किया था।

करीमन आज चौबीस वर्ष पहले की इस घटना को स्मरण कर रही थी कि इसमें इस्लाम कहाँ से आ गया? एक युवा लड़की, युवा पुरुष से समागम पैदा करती है तो वह मुसलमान कैसे हो गई? यह तो मानव-प्रवृत्ति थी। यदि करीम के स्थान पर कोई हिन्दू होता, तब भी वही कुछ होता, जो करीम के किये पर हुआ था।

इस घटना के बाद जो कुछ हुआ, वह एक स्वाभाविक बात थी। यदि उसका पति घर पर होता तो वह बात कभी न होती।

गर्भ रह जाने के पश्चात् उसकी सास एवं पति का व्यवहार सर्वथा दयाविहीन था। एक मनुष्य के नाते ही सही, उनको दया करनी चाहिये थी। इस निर्दयता के व्यवहार ने उसको करीम का आश्रय लेने पर विवश कर दिया। आज वह विचार करती थी कि इसमें इस्लाम कहाँ से आ गया?

पण्डित नीलकंठ एक हिन्दू था। उसने एक असहाय नवजात शिशु को रोते देख उठा लिया और उसका पालन-पोषण किया। उसकी शिक्षा-दीक्षा पर हजारों खर्च किये। फिर उसके विवाह पर हजारों का सामान और बीस हजार नकद दिया। यह सब बिना इस बात के जाने था कि सरस्वती किसी लड़की है। वह एक भंगी-चमार की लड़की हो सकती थी। एक मुसलमान या ईसाई की भी हो सकती थी। दया और स्नेह के नाते उन्होंने यह सब किया। इसमें हिन्दू-मुसलमान की बात तो थी ही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीम अनेकों वार, उसके हिन्दू सास-श्वसुर और हिन्दू माता-पिता के क्रूर व्यवहार को बताकर हिन्दुओं की निन्दा कर चुका था और उसको अपने साथ ले आने की, इस्लाम की खूबी बखान करता रहा था। वह आज करीम के पूर्ण व्यवहार को स्मरण कर यही समझ सकी थी कि करीम ने तो उसका भोग किया है, परन्तु नीलकठ को, एक अनजान लड़की पर सहस्रों खर्च करने पर क्या मिला? इसमें करीम की तो कुछ खूबी नहीं थी। आज वह बूढ़ी हो गई है, तो उसको पीटने लगा है। उसको तो मार ही देने लगा था। इस पर बैरिस्टर साहब की बीवी ने करीम का उसको पीटना इस्लाम की खिदमत बता दिया।

इन सब बातों को सुन तथा विचार कर तो उसके समझने में कुछ कठिनाई नहीं हुई कि इस्लाम तथा हिन्दू-धर्म की बात इसमें कुछ भी नहीं। वह जवान थी। उसका भोग करने के लिए करीम ने कोशिश की । जवानी के नशे में वह राजी हो गई। अब बैरिस्टर साहब सरस्वती की जवानी और सौन्दर्य को देखकर, उसको पाने की कोशिश कर रहे हैं। इस्लाम का इससे कुछ भी सम्बन्ध नहीं।

इतना विचारकर वह बौखला उठी। उसने बैरिस्टर साहब की पत्नी को कहा, "सरकार! यह इस्लाम की बात नहीं। जो कुछ मुझसे हुआ है और जो कुछ बैरिस्टर साहब करना चाहते हैं, इसमें मजहब की कोई बात नहीं। इन्सान की यह कमजोरी है, जिसे मजहब की आड़ दी जाती है। एक गैर की बीवी को गुमराह किया जा रहा है। करीम ने मुझे खराब करते समय कोई मजहब की बात नहीं की थी और बैरिस्टर साहब सरस्वती को हासिल करने के लिए कोई धर्म-ईमान की बात नहीं कर रहे। करीम ने अपनी नफसानी ख्वाहिशात (वासना) को पूरा करने के लिए मुझको खराब किया और यही कुछ बैरिस्टर साहब भी करने जा रहे हैं। मैं इसको नहीं होने दूँगी। यह गुनाह है।"

मगर इस्लाम में मजहब की बातों में दलील करने की इजाजत न होने से शान ने अपने कानों में उँगली दे ली और कहा, "करीमन! तुम कुफ्र तोल रही हो। करीम ने अगर तुमको पीटा है तो ठीक ही किया है। सच है तुम्हारे दिमाग पर शैतान ने हुकूमत पा ली है।

"देखो! अपने मन में विचार कर लो। नहीं तो तुमको मैं करीम के हवाले कर दूँगी। वह तुम्हारा खाविन्द है और इस्लाम उसको इस बात की इजाजत देता है कि वह जैसा चाहे तुम्हारे साथ सलूक करे।"

करीमन ने समझ लिया कि उसके अन्तिम दिन समीप आ गये हैं। उसके अपने बचपन के संस्कार जाग पड़े और वह अपने कमरे में बैठी भगवान को याद करने लगी। उसने अहिल्या की कथा सुन रखी थी। अहिल्या एक ऋषि की पत्नी थी। इन्द्र ने उस पर मोहित हो, उसको पतित कर दिया था। ऋषि ने उसको श्राप देकर पत्थर बना दिया था। भगवान राम के पांव छूने पर वह फिर असली शक्ल में आ गई थी। वह राम से प्रार्थना करने लगी थी कि वे उसको भी अपने पांव की ठोकर मारकर नरक से निकाल दें।

आज उसने भगवान राम के नाम का जाप करना आरम्भ कर दिया। उसको अब उसके अतिरिक्त कोई दूसरा सहारा दिखाई नहीं देता था।

आज उसने खाना नहीं खाया। शान ने कहा था, "खा लो करीमन! भूखे रहकर मरना आसान नहीं। भूख लगेगी तो खुद खाओगी। तब जो खाओगी, अभी खा लो।"

"सरकार! अभी भूख नहीं। भूख लगी तो शाम को खा लूँगी।"

शान यह विचारकर कि शाम तक सीधी हो जायेगी, चुप कर रही। मध्याह्नोत्तर करीमन को भूख लगी, परन्तु उसका चित्त नहीं किया कि वह भोजन करे। आज उसको सब कुछ फीका-फीका मालूम दे रहा था। रात के समय, बैरिस्टर साहब के कहने पर एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाल में, पुलाओ, जर्दा, चटनी तथा अचार आदि बहुत स्वादु भोज्य-पदार्थ, परस वहाँ उसके सामने मेज पर रख दिये गए। नगीना ने भोजन रखते हुए कहा, "बैरिस्टर साहब का हुक्म है कि अब खा लो।"

"अभी भूख नहीं। खाने को तबीयत नहीं करती।"

"अच्छा यह पड़ा है। खा लो। देखो खाओगी तो तुमको वहीद की एक बात बताऊंगी।"

"हाँ, बताओ। क्या कह गया है?"

"वह कह रहा था कि तुम उसकी बहन के बराबर हो।"

"यह तो मैंने भी कहा था। इसमें नई बात क्या है?"

"नई बात यह है कि वह अपनी बहन को इस कैद से छुड़ाने की भी कोशिश कर रहा है।"

करीमन मुस्कराई, परन्तु उसने कुछ कहा नहीं। उसने नगीना से कहा, "तुम जाओ। मैं खा लूँगी।"

करीमन को यही समझ आया कि वहीद कुछ नहीं कर सकता। हाँ, अगर वकील साहब कोशिश करें तो कुछ हो सकता है। इस पर भी उसको यहाँ आये कितने दिन हो चुके थे और किसी ने भी उसकी सुध नहीं ली थी। फिर वह विचार करती थी कि कोई उसके लिए कोशिश ही क्यों करे? उसके पति ने ही तो उसे यहाँ लाकर रखा हुआ है।

वह विचार करने लगी कि जब सब सो रहे हों, वह चुपचाप, कोठी से निकल जाये। अगर वह वकील साहब की कोठी पर चली जाये तो वहाँ उसकी रक्षा हो सकेगी। उसने यह योजना बनाई और उसी रात घूम-फिरकर कोठी से निकलने का रास्ता देखने लगी। शान बैरिस्टर साहब के साथ उनके कमरे में सो रही थी। नगीना उसकी रखवाली के लिए बाहर कमरे में सो रही थी। उसके और नगीना के कमरे को भीतर से ताला लगा था। वह अगर जा सकती थी तो बैरिस्टर साहब के कमरे से होकर ही जा सकती थी। उसने अपनी किस्मत की परीक्षा करने का फैसला कर लिया।

वह अपने कमरे से शान के कमरे में गई। उसका बिस्तर खाली था। उसके आगे बैरिस्टर साहब का कमरा था। भीतर नीले रंग की बत्ती जल रही थी। किवाड़ भीचा हुआ था। करीमन ने किवाड़ पर हाथ रखा तो वह दब गया। किवाड़ भीतर से बंद न था। थोड़ा सा दरवाजा खोल, उसने झांक कर देखना चाहा कि बैरिस्टर साहब सो रहे हैं या जाग रहे हैं। भीतर का दृश्य देख वह ठिठक कर खड़ी रह गई। पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे के गले में बाँहें डाले पलंग पर लेटे हुए थे। वह पीछे हट गई। इस अवस्था में उसका मन भीतर जाने को नहीं किया। वह खड़ी अपने कर्त्तव्य का विचार करती रही।

बहुत देर खड़े रहने के बाद उसने फिर देखा। दोनों वैसे ही पड़े थे। दोनों गहरी नींद सो रहे थे। उस कैद से छूटने का वही मार्ग था, परन्तु वह पति-पत्नी को इस अवस्था में देखना पाप समझती थी। एक बात उसको सूझी। उसने निश्चय किया कि वह मुख दूसरी ओर कर, बिना उनको देखे कमरे से निकल जायेगी। इस विचार के आते ही उसने किवाड़ को खोलने के लिये दबा दिया। तत्पश्चात् धीरे-धीरे पूर्ण कमरा पार कर वह सामने के दरवाज के पास जा पहुंची दरवाज भीतर से चिटखनी चढ़ाकर बंद किया हुआ था। उसको भय लग गया कि चिटखनी खोलते समय आवाज हुई तो वे जाग पड़ेंगे और उसको भागते हुए पकड़ लेंगे।

परन्तु अब इतनी दूर आ जाने पर वह लौटने का विचार मन में न ला सकी। उसने चिटखनी खोलने का यत्न किया। चिटखनी खुल गई। बैरिस्टर साहब नहीं उठे। इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका साहस बढ़ गया। उसक मन में यह समा गया कि भगवान् उसकी सहायता कर रहे हैं। इससे उत्साहित हो उसने किवाड़ खोला और बाहर निकल गई। कोठी के बाहर जाने के लिए अभी दो कमरे और थे। इस कमरे की बत्ती बुझी हुई थी। वह अंधेरे में ही टटोल कर चलने लगी। उसको कोठी के रास्तों का ज्ञान नहीं था। जब से वह यहाँ आई थी। घावों के ठीक होने पर भी वह एक बंदी के रूप में वहाँ, एक ही कमरे में पड़ी रही थी।

इस पर भी वह दीवार को टटोलती-टटोलती जा रही थी। उसका हाथ एक द्वार पर पड़ा तो वह खुल गया। भीतर 'बेड लैम्प' जल रहा था तथा एक औरत पलंग पर लेटी एक किताब पढ़ रही थी।

दरवाजा खुलते ही उस औरत ने पूछ लिया, "कौन है?"

करीमन दरवाजे पर खड़ी थी। उस औरत ने स्विच दबाया तो कमरे में प्रकाश हो गया। दोनों ने एक-दूसरे को देख लिया। करीमन उस औरत का रंग-रूप देख समझ गई कि यह बैरिस्टर साहब की अंग्रेजी बीवी है। हैनिरियाटा ने भी करीमन को देखा और पहचान लिया। हैनिरियाटा ने कहा, "आ जाओ! क्या चाहती हो?"

करीमन को यह समझ आया कि उसका पूर्ण प्रयास विफल गया है। यह औरत बैरिस्टर साहब के बंदी को भागने क्यों देगी? इस पर भी उसने सब बात साफ-साफ कह देनी ही उचित समझी। उसने कह दिया, "हजूर! मैं करीमन हूँ।"

"जानती हूँ तुम करीम की बीवी हो।"

"नहीं सरकार! उसकी रखेल। मेरी उससे शादी नहीं हुई। अब तो वह मुझको जबरदस्ती घर में रखे हुए है। मैं उसको छोड़ना चाहती थी, वह मुझको जबरदस्ती हाथ-पांव बांध कर, मुंह में कपड़ा ठूंस, यहाँ लाकर छोड़ गया है। यहाँ बैरिस्टर साहब ने मुझको कैद कर रखा है। मैं अब भाग रही थी, पर बाहर जाने का रास्ता नहीं मिल रहा। भूल से इस कमरे में आ गई हूँ।"

हैनिरियाटा हँस पड़ी। उसके अंग्रेजी संस्कार जाग रहे थे। एक बार पहले भी उसके संस्कारों ने उसको तंग किया था। जब वह बैरिस्टर साहब के साथ हिन्दुस्तान पहुँची थी तो बैरिस्टर साहब ने उसको पर्दे में रखना चाहा था।

बुर्का पहने जब उसने अपने-आपको दर्पण के सामने खड़े हो देखा था तो उस रेशमी बुर्के में अपने को विलुप्त पा, वह क्रोध से उतावली हो उठी थी। उस समय भी उसके अंग्रेज संस्कार जाग पड़े थे और उसने बुर्का उतार कर फेंक दिया था। उसने बैरिस्टर साहब को स्पष्ट कह दिया था, "मुझको यह गुलामी सहन नहीं हो सकती।"

"यह गुलामी है क्या?" बैरिस्टर साहब ने कहा था, "नहीं डार्लिंग, नहीं। यह तो लिमिट (सीमा) है, एक औरत पर। सब अपनी सीमा में रहें तो सुखी रहते हैं।"

"नहीं, मैं यह नहीं पहनूँगी। अगर इसके बिना यहाँ काम नहीं चल सकता, तो मैं कल ही इंग्लैण्ड वापिस चली जाती हूँ।"

विवश हो बैरिस्टर साहब को मानना पड़ा था और परिणाम यह हुआ था कि हैनिरियाटा पोशाक और रहन-सहन में अंग्रेज ही बनी रही थी। आज पुनः उसके अंग्रेजी संस्कार जाग पड़े थे। वह जानती थी कि करीम की बीवी को उसकी सौतन ने कैद कर रखा है। इससे वह अपना कोई सम्बन्ध नहीं समझती थी, इसी कारण वह चुप रही थी। आज एक स्त्री उसके सामने, इस कोठी में हो रहे जुल्म के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये खड़ी थी। स्वाभाविक रूप में अंग्रेजी प्रकृति अर्थात् स्वतंत्रता के लिये विद्रोह, के साथ उसकी सहानुभूति उभर आई। उसके मुख से निकल गया, "शाबाश! मैं बहुत ही खुश हूँ। चलो, मैं तुमको बाहर का रास्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखा देती हूँ।''

करीमन समझ नहीं सकी कि वह उसके साथ सत्य ही सहानुभूति रखती है, अथवा झूठ बोल उसको फँसाने जा रही है। इस पर भी अन्य कोई उपाय न जान चुप रही।

हैनिरियाटा एक नावल पढ़ रही थी और उसका रस लेती हुई ही इतनी रात तक जाग रही थी। वह सोने के कपड़े पहने हुए थी। बिस्तर से निकल वह अपने बाहर जाने के कपड़े पहनने लगी। यह देख करीमन पुनः विश्वास से भर गई।

कपड़े पहन हैनिरियाटा करीमन का हाथ पकड़कर कोठी के बाहर की ओर चल पड़ी। एक बात वह भूल गई थी कि इस बीच में किसी की नींद भी खुल सकती है।

कपड़े पहनने में हैनिरियाटा ने ड्रेसिंग टेबल पर रखे फूलदान को गिरा दिया था, जिसके कारण बैरिस्टर साहब की नींद खुल चुकी थी।

जब हैनिरियाटा करीमन को लेकर कमरे से बाहर निकली तो भूल से उसने दरवाजा खट से बंद किया। इस आवाज को सुनकर बैरिस्टर साहब बिस्तर से बाहर हो गये। शान की भी नींद खुल गई। बैरिस्टर साहब ने देखा कि उनके कमरे का दरवाजा खुला है। उनको याद था कि उन्होंने स्वयं चिटखनी लगाई थी। इससे उनको संदेह हो गया कि कोई भीतर से बाहर गया है। तुरन्त ही उन्हें ध्यान आया कि जाने वाली करीमन ही हो सकती है। उन्होंने शान से कहा, ''करीमन भाग गई है।''

बस फिर क्या था! बैरिस्टर साहब ने नाईट गौन पहना और कमरे से बाहर को भागे और साथ ही शोर मचाने लगे, ''चोर! चोर!! पकड़ो! पकड़ो!!''

दुर्भाग्य से करीम आज वहाँ आया हुआ था और इस समय कोठरी में सो रहा था। वह और समद तथा कोठी के अन्य नौकर-चाकर चोर-चोर की आवाज सुनकर उठ खड़े हुए।

कोठी के बाहर की ओर दो औरतें जाती दिखाई दीं। सब उस ओर भागे। कोठी का फाटक बंद था। चौकीदार भीतर से ताला लगा कर सो रहा था। दोनों औरतें फाटक पर जाकर रुक गईं। बाहर जाने का कोई मार्ग नहीं था। अभी वे विचार ही कर रही थीं कि किधर से जायें कि बैरिस्टर साहब ने बरामदे का स्विच ऑन कर दिया, जिससे कोठी के बाहर रोशनी हो गई।

समद और करीम जब फाटक पर उन औरतों के पास पहुँचे तो वे पहचान गये। बैरिस्टर साहब की छोटी बेगम तथा करीमन को देख, दोनों रुक गये। करीम के हाथ में लाठी थी। समद तो हैनिरियाटा को देखकर डर गया, परन्तु करीम ने लाठी चला दी। उसने समझा था कि बैरिस्टर साहब की बीवी यदि उसको कोठी के बाहर कर देगी तो वह भाग कर पुलिस में भी जा सकती है। उसने भरपूर लाठी का प्रहार करीमन पर किया। लाठी करीमन के सिर पर लगी। उसकी खोपड़ी फटी तो वह वहीं गिर पड़ी। गिरते ही उसके प्राण देह छोड़ गए।

: 12 :

करीम ने तो यही समझा था कि वह पहले की भांति अचेत हो गई है। इसलिये वह अपनी कारगुजारी पर गर्व करता हुआ खड़ा रहा।

इस समय तक बैरिस्टर साहब भी वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने करीमन को गिरते देख समझ लिया कि उसकी चिकित्सा में एक महीना लग जायेगा। इससे उनको अपनी इच्छा-पूर्ति में देरी लगने का शोक हुआ।

हैनिरियाटा ने झुककर करीमन को देखा तो समझ गई कि करीमन मर चुकी है। उसने कहा, ''यह मर गई है।''

''मर गई?'' अब बैरिस्टर साहब को चिन्ता लगी। उन्होंने घूर कर करीम की ओर देखा, मगर वह वहाँ से भाग गया था। बैरिस्टर साहब ने नौकरों को आवाज दी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पकड़ो-पकड़ो, कातिल भाग न जाये।"

नौकर करीम के पीछे भागे। समद भी उसके पीछे लपका। करीम चारदीवारी के समीप के एक पेड़ पर चढ़कर, चारदीवारी पर से कूदकर निकल जाना चाहता था, परन्तु पेड़ पर चढ़ता-चढ़ता ही वह पकड़ लिया गया।

जब उसको बैरिस्टर साहब के पास लाया गया, तो उन्होंने कह दिया—"इसको छोड़ना नहीं, यह कातिल है।"

बैरिस्टर साहब ने पुलिस चौकी पर, जो वहाँ से आधे फर्लांग पर थी, टेलीफोन कर कह दिया कि कोठी नम्बर दस, कपूरथला हाऊस के सामने एक कत्ल हो गया है। आ जाओ।"

बैरिस्टर साहब ने अब हैनिरियाटा को देखा तो पूछ लिया, "उसको किधर ले जा रही थीं?"

"कोठी से बाहर करने।"

"देखो, मेरा नाम लिया तो ठीक नहीं होगा।"

हैनिरियाटा चुप कर रही। वह अपने मन में विचार कर रही थी कि उसको इस औरत की मदद इस ढंग से नहीं करनी चाहिए थी। उसको अपने कमरे में रख साहस से बैरिस्टर साहब को कहकर छुड़ाना चाहिये था। इस ढंग से वह उसे छुड़ाने में सफल भी हो जाती और यह दुर्घटना भी न होती।

वह अभी विचार ही कर रही थी कि वह पुलिस वालों को क्या कहे और क्या न कहे कि पुलिस-वैन कोठी के बाहर आ खड़ी हुई।

कोठी का दरवाजा चौकीदार ने खोला और फाटक के समीप पड़ी लाश को दिखा दिया।

पुलिस इन्स्पेक्टर ने उस स्थान पर एक कान्स्टेबल को नियुक्त कर दिया और स्वयं दो आदमियों को लेकर बैरिस्टर साहब के पास बरामदे में जा पहुँचे। बैरिस्टर साहब ने करीम की ओर संकेत कर दिया। करीम के हाथ-पांव बांधे जा चुके थे। पुलिस ने उसको हिरासत में ले लिया। इन्स्पेक्टर बैरिस्टर साहब से पूछने लगा, "यह क्या मामला है?"

बैरिस्टर साहब ने बताया, "यह मरने वाली कातिल की बीवी है। यह मेरी बेगम हैनिरियाटा के साथ कोठी से बाहर जा रही थी कि कातिल ने लाठी की चोट से उसका काम तमाम कर दिया।"

"आपको कब पता चला इसका?"

"मैं सो रहा था। साथ के कमरे में, जो इस बेगम का कमरा है, कुछ आवाज सुनाई दी। मैं जाग पड़ा और नाईट गौन पहन कमरे से बाहर निकला तो दो औरतों को जल्दी-जल्दी कोठी से बाहर निकलते हुए मैंने देखा। मैंने समझा कि कोठी में चोर घुस आये हैं और कुछ चुराकर भाग रहे हैं। मैंने चोर-चोर का शोर मचा दिया। कोठी के नौकर जाग पड़े। मैंने रोशनी कर दी। पर उससे पहले ही कातिल ने लाठी से चोट कर दी और उससे तुरन्त यह मर गई।"

"क्यों बेगम साहिबा! आप इस औरत को कहाँ ले जा रही थीं?"

"मैं इसको किसी मतलब से कोठी के बाहर ले जा रही थी, पर फाटक में ताला लगा था। मैं चौकीदार को बुलाने वाली थी कि करीम और समद भागे-भागे आए। आते ही करीम ने लाठी से वार किया और यह मर गई।"

"इसको कोठी से बाहर किसलिए ले जा रही थीं?"

"यह मैं यहाँ नहीं बताना चाहती। उसका इस कत्ल के साथ कोई ताल्लुक नहीं है। इस पर भी मैजिस्ट्रेट कहेंगे तो उनको बताऊंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या नाम है तुम्हारा?" इन्स्पेक्टर ने कातिल की ओर देखकर पूछ लिया।

"करीम।"

"कहाँ नौकरी करते हो?"

"मिस्टर एम० सप्रू साहब के पास, जो असिस्टैण्ट डायरेक्टर ऑफ हैल्थ हैं।"

"यहाँ क्या कर रहे थे?"

"अपनी बीवी से मिलने आया था, जो बैरिस्टर साहब की बड़ी बेगम के पास नौकर थी।"

"तो कोई और बेगम भी है?"

"जी।"

"तुमने इसको क्या समझ मारा है?"

"मैंने तो इन दोनों को चोर समझा था और लाठी चला दी।"

"कितनी देर हुई है इस वारदात को?"

"पन्द्रह मिनट से कम ही हुए हैं।"

इन्स्पैक्टर ने रिपोर्ट बनाई, जगह का मुआईना किया, शव को वैन में रखवाया और करीम को हथकड़ी लगाकर थाने को रवाना हो गया।

इन्स्पैक्टर ने करीम का नाम सुन विस्मय प्रकट किया था। इसमें कारण था। लगभग पच्चीस दिन पूर्व थाने में एक रिपोर्ट लिखवाई गई थी। असिस्टैण्ट डायरेक्टर ऑफ हैल्थ के एक नौकर करीम की बीवी को, उसकी मरजी के बिना बैरिस्टर इफ्तिखार हुसैन की कोठी में कैद कर रखा गया है। कैद करने से पहले उसको पद्मदेव की कोठी से अगवा (चुराया गया) लिखाया गया था। साथ ही उसको बहुत पीटा गया भी बताया था।

इस रिपोर्ट पर थाना इन्चार्ज ने कोई कार्रवाई नहीं की थी। थाना इन्चार्ज इफ्तिखार हुसैन का ममेरा भाई था। उसने रिपोर्ट पर यह लिख दिया था, "कोई सबूत न होने से तहकीकात की जरूरत नहीं।"

अब इन्स्पेक्टर, जो हिन्दू था, थाने में आकर रिपोर्ट निकालकर पुनः पढ़ने लगा। रिपोर्ट करने वाला पद्मदेव था। पद्मदेव ने लिखाया था कि करीम की बीवी करीमन उसकी पत्नी की नौकरी करती थी। और भगाई जाने से एक दिन पूर्व करीमन ने अपनी मालकिन से कहा था कि वह लाहौर से बाहर चली जाये। करीम अच्छा आदमी नहीं है।

रिपोर्ट पढ़कर उसने इस कत्ल को इतनी सीधी घटना नहीं समझी, जितना बैरिस्टर साहब के बयानों से पता चलता था। उसने कैदी को हवालात में दाखल कर दिया और अगले दिन उसको मैजिस्ट्रेट के सामने उपस्थित कर जांच के लिए पन्द्रह दिन का समय ले लिया।

इन्स्पैक्टर ने अपनी जांच पद्मदेव की कोठी से आरम्भ की। मैजिस्ट्रेट से रिमांड ले वह सीधा पद्मदेव की कोठी पर जा पहुँचा। पद्मदेव को करीमन की हत्या का अभी पता नहीं था। यह बात इतनी चोरी रखी गई थी कि सूसन और महादेव को भी करीम के पकड़े जाने की खबर नहीं भेजी गई थी। सूसन का विचार था कि वह रात कहीं शराब पी बदमस्त पड़ा होगा।

पद्मदेव के पास पुलिस आयी तो उसने इन्स्पैक्टर और कान्स्टेबलों को बरामदे में बैठा, स्वयं सामने बैठ पूछने लगा, "फरमाइये, कैसे आना हुआ है?"

"आपने एक करीमन के विषय में थाने में रिपोर्ट लिखवाई थी?"

"जी! मगर आपने तो कोई जांच नहीं की। जब रिपोर्ट लिखवाई थी, तब वह बीसियों घावों से घायल बैरिस्टर साहब की कोठी पर पड़ी थी।"

"और प्रोफेसर साहब! अब वह मर गई है। उसका रात कत्ल हो गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह!" पद्मदेव अवाक् रह गया।

"हाँ, शक है कि करीम ने उसकी हत्या की है। वह हिरासत में है। मैं यह जानने आया हूँ कि उसका आपसे क्या ताल्लुक था?"

"मेरा विवाह पंडित नीलकंठ सप्रू की लड़की से हुआ है। यह करीम और इसकी पत्नी करीमन पंडित जी की नौकरी इक्कीस-बाईस वर्षों से कर रहे थे। इस औरत ने मेरी पत्नी को गोदी में खेलाया है, उसकी परवरिश की है और उसकी निजी नौकरानी के रूप में काम करती रही है। मेरे विवाह पर यह नौकरानी, मेरी पत्नी, जिससे यह अपनी लड़की की तरह प्यार करती थी, के साथ मेरे यहाँ चली आई। वह यहाँ नौकरी करती थी। मैंने इसके लिए और करीम के लिए कोठी के पिछवाड़े में एक अलग कोठरी बनवा दी थी और जब कभी करीम आता था, यहाँ रहता था।

"एक महीना के लगभग हुआ है कि करीमन मेरी पत्नी के पास आई और कहने लगी कि हम धनवान आदमी हैं। हमको लाहौर छोड़ देना चाहिए और कहीं और जाकर रहना चाहिए। मेरी पत्नी ने पूछा कि वह क्यों उसको ऐसा करने के लिए कहती है। वह इसके उत्तर में केवल यह बोली थी कि करीम अच्छा आदमी नहीं है।

"इसके दूसरे दिन ही करीमन कोठी से लापता पायी गई। मैंने अपने साले, डायरेक्टर ऑफ हैल्थ, के सामने, करीम से पूछताछ की कि उसकी पत्नी कहाँ है तो पहले तो उसने बताने से ही इन्कार कर दिया। पीछे बताया कि वह मियाँ इफ्तिखार हुसैन की कोठी पर नौकरी के लिए चली गई है।

"मैंने सरस्वती के पिता पं० नीलकंठ से इस बात का उल्लेख किया तो उनको शक हो गया कि कोई दुर्घटना हो गई है। उनको यह विश्वास-सा था कि करीमन कभी अपनी इच्छा से नौकरी छोड़ने वाली नहीं। वे जानते थे कि वह सरस्वती से बहुत स्नेह करती है।

"अतः उन्होंने हकीकत जानने के लिए अपने एक नौकर वहीद को इस काम पर लगाया। यह वहीद ही पता लाया था कि उसको बहुत बुरी तरह से पीटा गया था और उसको कोठी में कैद किया हुआ था।"

इन्स्पेक्टर ने सरस्वती के भी बयान लिए और वहाँ से वह पंडित नीलकंठ की कोठी पर वहीद और पंडित नीलकंठ के बयान लेने के लिए चला गया।

अब इफ्तिखार हुसैन बैरिस्टर की कोठी के नौकरों को थाने में बुला-बुलाकर पीटा जाने लगा। सबसे पहले समद की बीवी नगीना बक गई। उसको वहीद के बयानों के पश्चात् बन्दी बना लिया गया था। नगीना के बयान के बाद समद के बयान हुए। समद की पत्नी के बयानों से न केवल यह पता चला कि करीमन बन्दी थी, प्रत्युत यह बात भी स्पष्ट हो गई कि वह करीम की विवाहिता भी न थी। वह उसको छोड़ना चाहती थी।

इतनी तहकीकात होने पर थाना इंचार्ज की ओर से उससे भी अधिक इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस की ओर से दबाव पड़ने लगा कि मामला रफादफा कर दिया जाय। इन्स्पेक्टर यह नहीं कर सका। इस कारण वह इस थाने से बदल कर बादामी बाग की चौकी पर भेज दिया गया। इस घटना की जांच-पड़ताल के लिए एक नये इन्स्पेक्टर की नियुक्ति कर दी गई।

इस पर भी मुकदमा बिल्कुल समाप्त तो नहीं हो सका। हाँ, वह कहानी ही ठीक मानी गई, जो इफ्तिखार हुसैन के बयान में बताई गई थी। मुकदमा सेशन कोर्ट में उपस्थित हुआ और फैसला हो गया कि करीम ने चोर समझकर वार किया था। यह ठीक था कि दरवाजा बंद होने के कारण चोरों के भाग जाने की उम्मीद न थी। साथ ही चोर का एक औरत होने का ज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीम को हो गया था। इस कारण लाठी चलाने की आवश्यकता नहीं थी। इस लापरवाही से ही करीमन की हत्या हुई है। इसके लिए करीम को दो वर्ष सख्त कैद का दण्ड ही उचित है।

इस पर इफ्तिखार हुसैन ने करीम को छुड़ाने के लिए हाई कोर्ट में अपील कर दी।

इस समय तक पद्मदेव और वकील नीलकंठ इस बात की प्रतीक्षा करते रहे थे कि उनके भी अदालत में बयान होंगे। जब उनको पता चला कि बिना उनके बुलाये मुकदमे का फैसला भी हो गया है तो नीलकंठ ने एक प्रार्थना-पत्र हाईकोर्ट में दे दिया। इसमें उसने इस मुकदमे में पुलिस द्वारा, जान-बूझकर कुछ बातों को छुपाकर रखने की शिकायत की। इस प्रार्थना-पत्र में नीलकंठ ने यह भी लिखा कि मुकदमे के विषय में, किसी अन्य अदालत में, स्वतंत्र रूप से जांच कराई जाये।

हाई कोर्ट में नीलकंठ ने यह प्रार्थना करते हुए अपने बयान दे दिये और अन्त में कह दिया कि जिस इन्स्पेक्टर ने प्रारम्भिक जांच की थी, उसको जान-बूझकर बदल दिया गया है। उसके स्थान पर एक नये इन्स्पेक्टर की नियुक्ति की गई है।

हाईकोर्ट ने इस मुकदमे को पुनः सेशन कोर्ट में जांच के लिये भेज दिया।

अब नीलकंठ ने पुलिस के अतिरिक्त इस मुकदमे में रुचि लेनी शुरूकर दी। सेशन जज के सामने नीलकंठ, पद्मदेव, इफ्तिखार हुसैन की बड़ी बेगम शान और हैनिरियाटा के भी बयान हुए। मुकदमे का रूप ही बदल गया। इफ्तिखार हुसैन हिरासत में हो गया।

सेशन कोर्ट ने करीम को फांसी का दण्ड, बैरिस्टर को दो वर्ष की कैद और शान को एक वर्ष की कैद का दण्ड दे दिया। अब पुनः हाईकोर्ट में अपील हुई। हाईकोर्ट में करीम की फांसी का दण्ड आजन्म कैद में बदल दिया गया और बैरिस्टर साहब तथा शान, दोनों छोड़ दिये गये।

इस मुकदमे में पंजाब के गवर्नर से लेकर पुलिस के छोटे-छोटे कर्मचारी भी पूरी रुचि लेते रहे। कई प्रकार की सिफारिशें और धमकियाँ मिलती रहीं, परन्तु जब यह सिद्ध हो गया कि करीम ने करीमन को पहले भी बहुत बार मारा-पीटा था और एक बार तो वह इतनी घायल हुई थी कि पहले अचेत रही और फिर पन्द्रह दिन तक खाट पर पड़ी रही, तो करीम को हत्यारा मान लिया गया।

इस मुकदमे में सबसे विचित्र बात यह हुई कि करीम अंडमान जाता हुआ, पुलिस की हिरासत से भाग निकला और लापता हो गया।

❑

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: 1 :

करीमन की हत्या का समाचार सुन पद्मदेव और सरस्वती, करीमन की इस बात पर कि उनको लाहौर छोड़ देना चाहिये, गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगे थे। दोबारा करीम के मुकदमे पर करीम के बयानों से और वहीद तथा समद की पत्नी के बयानों से सरस्वती को अपनी जन्म-कथा का पता चल गया था। इससे वह बहुत ही प्रभावित हुई थी। एक ओर करीम का और करीमन का, उसके प्रति व्यवहार का कारण पता चल गया, दूसरी ओर वह अपने मन में करीमन के साथ सहानुभूति का कारण भी जान गई। वह इस कथा को जानने के पश्चात् तो कई दिन तक ही रोती रही थी।

नीलकंठ ने उसको समझाने का प्रयत्न किया। उसने बताया कि यह ठीक था कि वह स्वरूपवती के पेट से पैदा नहीं हुई, परन्तु फिर भी वे उससे ऐसा ही स्नेह रखते रहे हैं, मानो वह उनकी अपनी ही लड़की हो।

परन्तु जब यह घोषणा की गई कि करीम अंडमन जाता हुआ पुलिस के हाथ से निकल भागा है, तो करीमन का सरस्वती को सचेत करना भयंकर रूप में दिखाई दिया।

पद्मदेव ने निश्चय कर लिया कि वह पंजाब में नहीं रहेगा। वह इन दिनों भारत के सांस्कृतिक इतिहास पर एक ग्रन्थ लिख रहा था। इसके लिये उसे किसी बड़े नगर में, जहाँ पुस्तकों की उपलब्धि हो सके तथा अन्य साधन मिल सकें, रहना आवश्यक था। अतः उसने निवास के लिये तो अल्मोड़ा में एक मकान ले लिया और सर्दी में रहने तथा स्वाध्याय आदि के लिये लखनऊ केन्द्र बना लिया।

करीम के पुलिस की हिरासत से भाग जाने का समाचार पाने के एक मास के भीतर ही पद्मदेव ने अपने लाहौर से चले जाने का भी प्रबन्ध कर लिया। उसके जाने का ज्ञान केवल दो आदमियों को था। एक प्रोफेसर सुदर्शन को तथा दूसरा पंडित नीलकंठ को। इन दोनों को भी पद्मदेव ने यह बता दिया था कि उसका पता किसी अन्य को न बताया जाये। महादेव और सूसन से विशेष रूप में छुपाकर रखने के लिये कहा गया।

पद्मदेव ने अपना लाहौर से प्रस्थान सर्वथा गुप्त रखा। इस लुकाव-छिपाव को देख, इस विषय में सुदर्शन की पत्नी साधना ने एक दिन कहा भी, "पद्म भैया! इस प्रकार के जीवन में क्या रस रह जायेगा?"

"कैसे जीवन में?"

"यही, अपने प्राणों के लिये छुप-छुपकर रहने में।"

"नहीं साधना! तुम समझ नहीं सकतीं। हम छुपने के लिये नहीं जा रहे। हम अपने जीवन-कार्य को शान्ति से पूर्ण करने के विचार से, किसी ऐसे स्थान पर जाकर रहना चाहते हैं, जहाँ करीम के सहायकों की पहुँच न हो सके। अपनी रक्षा के लिये सतर्क होकर रहना लुकाव-छुपाव नहीं कहा जा सकता।

"जिस स्थान पर हत्यारों की सहायता राज्य कर्मचारी करने लगें, वहाँ रहना बुद्धिमत्ता नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रोफेसर सुदर्शन पद्मदेय की तैयार हो रही पुस्तक के विषय में जानता था। वह इस महान् ग्रन्थ के निर्विघ्न समाप्त किये जाने को, एक श्रेष्ठ कार्य मानता था। इसके लिये वह, लखनऊ से भी अधिक श्रेष्ठ स्थान लंदन समझता था। वहाँ का पुस्तकालय इस कार्य में अधिक सहायक था। साथ ही वहाँ अधिक सुरक्षा और शान्ति प्राप्त होने की आशा भी थी।

पद्मदेव सुदर्शन के सुझाव को ठीक मानता था, परन्तु वह अभी भारत नहीं छोड़ सकता था। सरस्वती के बच्चा होने वाला था और उसके मस्तिष्क में भारत की इतनी महिमा थी कि वह अपने बच्चे को भारत में जन्म लेने से वंचित नहीं रखना चाहता था।

एक दिन पद्मदेव की कोठी को ताला लगा पाया गया और इसके कुछ दिन पश्चात् कोठी की सफाई होने लगी। सफेदी हुई और कोठी के बाहर एक नवीन बोर्ड, जिस पर मुहम्मद सप्रू तथा सूसन का नाम लिखा था, लग गया।

इनको यह कोठी पंडित नीलकंठ से किराये पर मिली थी। इनको यही पता चला था कि पद्मदेव यूरोप में किसी स्थान पर अपनी पुस्तक लिखने के लिये चला गया है।

जहाँ पद्मदेव के जीवन पर करीमन की हत्या का प्रभाव पड़ा, वहाँ मियाँ इफ्तिखार हुसैन के जीवन पर भी इसकी चोट लगी थी। यद्यपि हाई कोर्ट ने बैरिस्टर साहब को कत्ल में सहायक होने के संदेह से मुक्त कर दिया था, तथापि उसका वकालत करने का लायसेंस पांच वर्ष के लिए रद्द कर दिया गया था। इससे परिणाम यह हुआ कि मियाँ इफ्तिखार हुसैन राजनीति में बढ़-चढ़कर भाग लेने लगा। देखते-ही-देखते वह मुसलमानों का नेता बन गया।

मियाँ साहब के घर में भी परिवर्तन हो गया था। करीमन के मुकदमे में सब से अधिक हानिकर साक्षी उसकी पत्नी हैनिरियाटा की हुई थी। पहली बार मुकदमे में बैरिस्टर साहब ने जब हैनिरियाटा को कहा कि उसको अपने बयानों में करीमन के कैद के विषय में कुछ नहीं बताना चाहिये तो उसने स्पष्ट कह दिया था कि—"मैं आपकी पत्नी जरूर हूँ, मगर मैं अन्याय का पक्ष नहीं ले सकती। यह हम अंग्रेजों की परम्परा के विपरीत है।"

"इस तरह का बयान देने से तो तुम्हारे पति को फांसी का दण्ड हो जायेगा और तुम विधवा हो जाओगी।"

"तो क्या होगा! मैं तो विधवा पहले से ही हूँ। मेरे सोने के कमरे में दर्शन दिये भी तो आपको कई वर्ष हो चुके हैं।"

"तो जीवन-निर्वाह कैसे होगा?"

"उसके साधर मेरे पास हैं। आपको चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं।"

इसके पश्चात् यत्न कर हैनिरियाटा के बयान नहीं कराये गए, परन्तु जब हाईकोर्ट से मुकदमा पुनः सैशन कोर्ट में आया और नीलकंठ सक्रिय रुचि लेने लगा तो हैनिरियाटा का बयान हो गया और उसने बाईबल की सौगन्ध खाकर सत्य-सत्य बात कह दी। इसका परिणाम यह हुआ कि इफ्तिखार हुसैन के घर से उसको जवाब मिल गया। उसके बयानों पर ही बैरिस्टर साहब को बंदी बनाया गया था और उसके बंदी हो जाने से पूर्व ही हैनिरियाटा सैसिल होटल में जाकर रहने लगी थी।

करीम के मुकदमे में समद की बीवी के बयान भी हुए और जब उसके सामने कुरआन शरीफ लाकर रखा गया तो उसके मुख से सबक हानी सत्य-सत्य निकल गई। घर से तो उसको बहुत समझा-बुझाकर भेजा गया था, परन्तु वहाँ कुरआन शरीफ की पुस्तक को देखकर वह झूठ नहीं बोल सकी। परिणाम यह हुआ कि समद और उसकी पत्नी दोनों को नौकरी छोड़नी पड़ी।

सबसे विचित्र बात यह हुई कि शान को भी मानना पड़ा कि करीमन को उसके कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में अचेतनता की अवस्था में और बुरी तरह घायल होने के पश्चात् ही लाया गया था। वहाँ पन्द्रह दिन तक उसकी मरहम-पट्टी होती रही थी।

जब बैरिस्टर साहब हाई कोर्ट के फैसले पर छूटकर घर आये तो वह शान से बोले, "तुमने भी मेरे खिलाफ गवाही दी थी।"

"मैं पाक किताब को सामने पड़ी देख झूठ नहीं बोल सकी। मुझको अपनी आकबत (भविष्य) की चिन्ता लग गई थी।"

इसके पश्चात् मियाँ साहब ने एक और कोठी किराये पर ले ली और वहाँ जाकर रहने लगे। उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब शान का मुख भी नहीं देखेंगे। शान अब दिन-रात खुदा की अबादत में लीन रहने लगी।

करीम के भाग जाने में मियाँ इफ्तिखार हुसैन का भारी हाथ था। इस कारण करीम आया तो मियाँ साहब के सामने हाजिर हो गया। और कहने लगा, "हजूर! मैं हाजिर हूँ।"

"यहाँ किस लिए आये हो?"

"पेट भरने का इन्तजाम करने के लिए। आपने जेल से छूटने का इन्तजाम तो कर दिया है, मगर सवाल है पेट कैसे भरा जाये?"

"देखो करीम! मैंने तुमको अपनी पत्नी को मार डालने के लिए नहीं कहा था। न ही मैंने तुमको कहा था कि उसको मारो-पीटो। इसलिये मैं तुम्हारे गुजारे के लिए जिम्मेदार नहीं हूँ।"

"मुझसे गलती तो सिर्फ इतनी हुई कि मैंने हद से ज्यादा कार्यवाही कर दी थी। उसके लिए मैं जिन्दगी भर छुपता फिरूंगा। पर हजूर! वह सब किया तो आपके लिए ही था।"

इफ्तिखार हुसैन ने कुछ विचार कर कहा, "देखो, एक काम करो। मेरी दोनों बीवियों से मुझको छुट्टी दिला दो तो एक सौ रुपया महीना तुम्हारा बांध दूँगा।"

"और अगर इस बार पकड़ा गया तो?"

"मुकदमा होने से पहले ही तुमको अफ्रीका का टिकट ले दूँगा। तुम वहाँ शान्ति से जिन्दगी गुजार सकोगे।"

करीम संतुष्ट हो चला गया। इसके एक सप्ताह पश्चात् समाचार-पत्र में यह समाचार निकाल, "मियाँ इफ्तिखार हुसैन बैरिस्टर की अंग्रेज पत्नी हैनिरियाटा की जान लेने की कोशिश। वह होटल में अपने गुसलखाने में गुसल के लिये गई तो एक आदमी, जिसे हैनिरियाटा करीम बताती है, उस पर लपका और उसका गला घोंटकर मार डालने की कोशिश करने लगा। इस समय करमे का दरवाजा खुला था। होटल की वेट्रेस उसके कमरे में 'बैड टी' के बर्तन उठाने आ गई। उसने गुसलखाने में यह काण्ड होते देखा तो शोर मचा दिया, जिससे हमला करने वाला भाग गया।

"करीम वही आदमी है, जिसको हाई कोर्ट ने एक कत्ल के मुकदमे में आजन्म कैद का दण्ड दिया था और अंडमान जाता हुआ पुलिस की हिरासत से छूटकर भाग गया था।

"हैनिरियाटा ने करीम के विरुद्ध गवाही दी थी। इस गवाही देने के कारण उसके पति मियाँ इफ्तिखार हुसैन ने उसको घर से ही निकाल दिया था।

"पुलिस करीम की खोज में है।"

इसके कुछ दिन पश्चात् एक और सनसनी पूर्ण घटना का समाचार छपा—"मियाँ इफ्तिखार हुसैन की दूसरी पत्नी 'मुसम्मा शान' अपने सोने के कमरे में मरी हुई पायी गई। किसी चीज से उसका गला काटा गया है।" इसके साथ यह भी छपा था कि शान ने भी करीम के मुकदमे में गवाही दी थी।

करीम अभी तक लापता था। एक दिन पण्डित नीलकंठ ने थाने में रिपोर्ट लिखवाई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे सोने के कमरे की खिड़की को तोड़कर करीम घुसता हुआ देखा गया है। मैंने उस पर गोली चलाई। गोली उसकी बांह में लगी, परन्तु वह भाग गया है।"

अब साधना की समझ में आया कि पद्मदेव और सरस्वती का वहाँ से चला जाना और उनको अपना पता न बताना ही ठीक था।

गोली लग जाने से करीम को अपनी बांह, पट्टी से गले में लटकानी पड़ी और एक दिन वह लाहौर के रेलवे-स्टेशन पर बम्बई की गाड़ी में चढ़ता हुआ पकड़ा गया। उसकी जेब में से पांच सौ रुपया और एक जाली पासपोर्ट अफ्रीका जाने का मिला। इस बार उसको शान का कत्ल करने पर फांसी का दण्ड हो गया।

: 2 :

सरस्वती के लड़का हुआ। प्रसव मेडिकल कॉलेज के हस्पताल में कराया गया था। सरस्वती और उसका बच्चा दोनों ही स्वस्थ थे। इस पर भी सरस्वती को प्रसव के समय जो कष्ट हुआ, वह उसको असह्य प्रतीत हुआ। उसने घर आकर पहली बात जो अपने पति से कही, वह यह थी, कि उसको और बच्चे पैदा नहीं करना।

"क्यों, क्या हुआ है?"

"छः मास तक न संगीत न नृत्य। कुछ नहीं हुआ? अभी भी न जाने कितने समय तक और निश्चल बैठना होगा। इस पर भी सबसे बड़ी बात यह है कि पीड़ाओं से प्राण ही निकलते प्रतीत हो रहे थे।"

"मुझको तो डॉक्टर ने बताया था कि तुमको 'डिलिवरी' बिना किसी प्रकार के कष्ट के हुई है।"

"जी! डॉक्टर को इतनी पीड़ा होती तो उसे पता चलता। उसने तो अभी विवाह भी नहीं किया है। वह क्या जाने प्रसव-वेदना को। न बाबा, मुझसे यह कष्ट सहन नहीं हो सकता।"

"अच्छी बात है। न सही।"

इस पर सरस्वती ने प्रसन्न हो अपने पति की ओर अति प्रेममयी दृष्टि से देखा। पद्मदेव ने एक नर्स का प्रबन्ध कर दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सरस्वती एक महीने में ही अपना तानपूरा लेकर बैठ गई। एक महीना और पीछे उसने अपने पायल भी निकाल लिए और पुनः उसका कार्यक्रम नियमित रूप से चलने लगा।

पद्मदेव निश्चिन्त हो, अपने लेखन-कार्य में लग गया। उसकी यह इच्छा थी कि ग्रन्थ का प्रथम भाग वह भारत में रहते हुए ही समाप्त कर ले। वह लखनऊ में प्रथम भाग समाप्त कर ही लन्दन जाना चाहता था। वहाँ इसका शोधन कर, वहीं किसी प्रकाशक द्वारा प्रकाशित कराने का वह विचार रखता था।

जब सरस्वती अपने संगीतवाद के कार्य में लीन हुई तो पद्मदेव अपनी पुस्तक को लिखने तथा टाईप करने में लग गया। छः सप्ताह घंटे नित्य का दोनों ने कार्य अपने सिर पर लिया था। इसके अतिरिक्त पद्मदेव अध्यन कार्य में भी चार-पांच घंटे व्यस्त रहता था। दोनों में दिन भर में केवल भ्रमण का समय ही ऐसा होता था, जब एक दूसरे की संगत पाते थे। रात को भी वे प्रायः पृथक्-पृथक् कमरों में सोते थे।

सरस्वती ने अब भारतीय संगीत विद्यालय में नृत्य सिखाना आरम्भ कर दिया। वहाँ से उसको डेढ़ सौ रुपया वेतन मिलता, परन्तु वह उस वेतन को वहाँ के ही निर्धन विद्यार्थियों में बांट देती। उसके इस कार्य से विद्यालय के सब विद्यार्थी और अध्यापक उसका मान करने लगे।

इससे सरस्वती को सार्वजनिक संगीत-नृत्यों के आयोजनों में भी बुलाया जाने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक-एक समारोह में उसको पांच-सौ रुपया तक मिलने लगा था। यह धन भी वह संगीत विद्यालय में, कई सुधारों के लिए व्यय करने लगी।

यह बात उसके मस्तिष्क में विराजमान थी कि संगीत-नृत्य से उपलब्ध धन इन्हीं कलाओं के प्रसार में ही व्यय होना चाहिये। कभी राजनीतिक, धार्मिक अथवा सामाजिक प्रसार के लिए कोई संस्था उसको कुछ देने के लिए कहती, तो वह इन्कार कर देती।

अब उसकी कोठी पर संगीतज्ञों तथा नृत्य कला प्रवीणों का आना-जाना आरम्भ हो गया था। पद्मदेव अपने ही पुस्तकालय में बैठा पुस्तक लिखने में लीन रहता था। ड्राइंग-रूम में, सरस्वती से मिलने आने वाले लोगों से उसको मिलना पड़ता था।

प्रातः चार बजे पद्मदेव जाग पड़ता और कॉफी तैयार कर सरस्वती को जगाता। कॉफी पीकर दोनों शौचादि से निवृत्त हो, भ्रमण के लिए चले जाते। एक घंटा के भ्रमण के पश्चात् वे आते और स्नानादि से छुट्टी पा अपने काम में लीन हो जाते।

आठ बजे प्रातः का अल्पाहार होता। यह दोनों इकट्ठे लेते। फिर अपने-अपने कार्यों में संलग्न हो जाते। इसके पश्चात् तो केवल रात को ही वे मिलते थे। यह भी तब, जिस दिन सरस्वती को किसी नृत्य के कार्यक्रम पर नहीं जाना होता था। ऐसी रातें बहुत कम होती थीं। प्रायः पद्मदेव, जब सरस्वती आती तो सोया हुआ होता था। सरस्वती आकर सीधा अपने सोने के कमरे में जाकर सो जाती थी।

पद्मदेव को सूचना मिली थी कि राजा साहब प्रतापगढ़ के पास, उनके पुरखों से एकत्रित संस्कृत के कुछ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ हैं, जो इतिहास के सम्बन्ध में हैं। इसलिए पद्मदेव राजा साहब से मिलने के लिये प्रतापगढ़ चला गया। राजा साहब के पास गई सौ हस्तलिखित पुस्तकें थीं, परन्तु वह किसी को कोई पुस्तक ले जाने की स्वीकृति नहीं देते थे। अतः पद्मदेव को प्रतापगढ़ में ही ठहर कर, उन ग्रन्थों की जांच-पड़ताल करनी पड़ी। वे ग्रंथ तांत्रिक मत पर लिखे गये थे और तंत्र-ग्रन्थों में लिखित इतिहास का परिचय देते थे। दिन-रात बैठकर कई ग्रन्थों की प्रतिलिपि उतरवा कर पद्मदेव लगभग एक मास के पश्चात् घर लौटा तो उसको अपने घर के वातावरण में आमूल-चूल परिवर्तन दिखाई दिया।

सबसे मुख्य बात, ड्राइंग-रूम का एक सुसज्जित नृत्य शाला बनना था। पद्मदेव सायंकाल घर पहुँचा था और ड्राइंग-रूम की रूपरेखा को परिर्वितत देख वह खड़ा रह गया। वहाँ दरी, चादरें, कालीन बिछाये जा रहे थे। उसके घर के सेवकों के साथ कुछ बाहरी आदमी भी काम कर रहे थे।

"सुन्दर!" पद्मदेव ने घर के पुराने सेवक से पूछा, "यहाँ आज क्या है?"

"सरकार! आज यहाँ जलसा होने वाला है।"

इस समय सरस्वती अपने कमरे से निकल आई। उसने मुस्कराते हुए कहा, "आप आ गये। यह बहुत ही अच्छा हुआ। मैं मिन्नतें मना रही थी कि आप आज तो आ जायें।"

"क्या है यहाँ, जिसके लिए मेरे आने की मिन्नतें मनाई जा रही थीं?"

"कर्नाटक की विख्यात नर्तकियों की मण्डली लखनऊ में आई हुई है। आज तीन दिन से उनका नृत्य एवं संगीत यहाँ हो रहा है। आज उसका अंतिम दिन है। आज तो आप देखेंगे ही।"

"मगर इसके लिए नगर में कोई हॉल नहीं मिल सका क्या?"

"मिलता था, पर मैंने यह समारोह यहाँ पर ही कराना ठीक समझा है।"

"क्या होगा यहाँ कराने से?"

"लखनऊ की संगीतप्रिय जनता से परिचय हो जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव चुप रहा। इस पर भी उसको यह बात पसंद नहीं आई। लखनऊ में मानी जाने वाली संगीतप्रिय जनता का अर्थ वह समझता था। यहाँ अवध के नवाबों और राजाओं के लड़के ही प्रायः विशेष रसिक माने जाते थे। उनके इस घर में आने से वह अपने घर को अपवित्र हो गया मानता था। इस पर भी वह सरस्वती की प्रसन्नता में अपने विचार प्रकट कर, बाधा नहीं बनना चाहता था।

उसने सामान अपने सोने के कमरे में रखवाया और स्नानादि से निवृत्त हो भोजन पर जा बैठा। इस समय कोठी में मोटरों की पों-पों, भों-भों सुनाई देने लगी और ड्राइंगहॉल में हँसी-मजाक के फव्वारे छूटने लगे।

पद्मदेव भोजन कर अपने पुस्तकालय में पहुँच गया, परन्तु वहाँ भी उन हँसने वालों की आवाज आ रही थी। इस कारण वहाँ शान्ति का अभाव पा, वह भी ड्राइंगरूम में जा बैठा।

यहाँ ड्राइंगरूम में एक युवा पुरुष रेशमी कुर्ता-धोती पहने, माथे पर चन्दन का तिलक लगाये, सिर पर घने और घुंघराले बाल रखे, एक ओर बैठा था। सरस्वती पूर्ण शृंगार किये उसके पास बैठी थी। उस पुरुष के पीछे पांच लड़कियाँ, जो वेश-भूषा से दक्षिण की रहने वाली प्रतीत होती थीं, सब नृत्योचित वस्त्राभूषण पहने बैठी थीं। सामने तबला सारंगी, वीणा, मृदंग इत्यादि वाद्यों सहित संगत देने वाले लोग बैठे थे। ड्राइंगहॉल के दोनों ओर लखनऊ के बीस-पच्चीस रसिक बैठे थे।

जब पद्मदेव वहाँ पहुँचा तो वाद्य स्वर किये जा रहे थे। सुन्दर इतर-दान लिये उपस्थित जनों को इतर भेंट कर रहा था। एक अन्य नौकर एक प्लेट में पान, सुपारी एवं इलायची लिये घूम रहा था। सारा वातावरण ही अति हर्ष और प्रसन्नता का बना हुआ था।

एक युवक दर्शक उस तिलकधारी से कह रहा था, ''गुरुजी! हम सबकी इच्छा है कि आज अंतिम दिन में अंतिम कार्यक्रम सरस्वती देवी का हो।''

वह पुरुष बोल उठा, ''आप लोगों की इच्छा देवीजी सुन रही हैं। इस इच्छा की पूर्ति देवीजी ही कर सकती हैं।''

''हम आपसे इस विषय पर सिफारिश चाहते हैं।''

''साक्षात् सरस्वती देवी से मैं कैसे सिफारिश कर सकता हूँ। हाँ, आप लोगों की इच्छा में अपनी इच्छा को मिला सकता हूँ।''

''तब तो काम बन जायेगा।'' एक अन्य, जो अचकन, चूड़ीदार पाजामा और टोपी पहने बैठा था, कह उठा।

सब सरस्वती का मुख देखने लगे। सरस्वती ने कहे जाने वाले गुरुजी को अपनी ओर उत्सुकता से देखते हुए पा, कह दिया, ''पहले आज का घोषित कार्यक्रम होने दीजिये। तब तक मैं विचार कर लूँगी।''

अब कार्यक्रम आरम्भ हुआ। कर्नाटक संगीत के अति उत्कृष्ट राग सुनाये गये। पश्चात् उन पांच लड़कियों ने पृथक्-पृथक् और मिलकर कई नाच दिखाये। रात के ग्यारह बज गये थे। अब सरस्वती से नृत्य के लिये आग्रह किया जाने लगा। उपस्थितजनों तथा गुरुजी के आग्रह पर सरस्वती उठी। वह अपने कमरे में गई। लांगदार धोती तथा चोली पहने, सिर से नंगी, अपने जूड़े में गुलाब का फूल लगाये हुए तथा गले में एक पुष्प माला पहने, अपना नृत्य दिखाने वहाँ आ पहुँची। उसने दो नृत्य दिखाये। इसमें एक घंटा से अधिक लग गया। इस समय रात का पौना एक बज गया था।

इसके पश्चात् नर्तकियों का, गुरुजी का तथा सरस्वती का धन्यवाद किया गया। सरस्वती ने रुपयों की एक थैली नर्तकियों को भेंट में दी। उपस्थित दर्शकों ने भी लगभग दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्र रुपया एकत्रित कर दिया गया। इस प्रकार रात के पौने दो बजे समारोह समाप्त हुआ।

पद्मदेव इससे बहुत पहले जाकर सो गया था। आज उसने तीन वर्ष के बाद सरस्वती का नाच देखा था। उसको उसके शरीर की लचक, उसकी मुद्राओं में सौन्दर्य और उसके स्वर, ताल-लय में मधुरता आज अधिक प्रतीत हो रही थी। साथ ही नृत्य के भावों में तथा मुद्राओं में उस भक्तिभाव के स्थान, जो पहले हुआ करता था, अब अति मादकता, वासना और साथ ही उच्छृंखलता का रंग दिखाई दिया था। वह पहले ही नृत्य में उसके अंग-प्रत्यंग की गतिविधि में अश्लीलता का अंश अनुभव कर, अपने सोने के कमरे में चला गया था।

समारोह के समाप्त होने तक तो पद्मदेव प्रगाढ़ निद्रा में लीन हो चुका था।

: 3 :

पद्मदेव प्रातः अपने समय पर उठा। नियमानुसार कॉफी तैयार कर वह सरस्वती को उठाने उसके कमरे में गया तो उसका दरवाजा भीतर से बंद मिला। यह आज विलक्षण बात थी। पहले यह द्वार खुला रहता था। कुछ क्षण विचार कर उसने द्वार खटखटाया तो भीतर से सरस्वती की आवाज आई, "मैं थकी हूँ, अभी सोऊंगी।"

पद्मदेव अपने कमरे में चला आया। कॉफी पी वह शौचादि में लग गया। ठीक समय पर वह भ्रमणार्थ चला गया। भ्रमण से लौटा तो सरस्वती के कमरे का द्वार खुला था। वह भीतर गया। उसने देखा कि सरस्वती अभी भी लेटी हुई। पद्मदेव को भीतर आये देख उसने पूछा, "आप सैर कर आये?"

"हाँ! अब तो सात बज रहे हैं।"

"रात नृत्य करते-करते बहुत थक गई थी। प्रातः उठने को चित्त नहीं किया।"

"अब कैसी हो?"

"अब तो जाग रही हूँ।" उसने चादर उठाई और बिस्तर से निकल सामने खड़ी हो गई। उसके सिरहाने पुष्पमाला पड़ी थी। यह वही माला थी, जिसको पहने उसने रात को नृत्य किया था। सरस्वती शौचालय को जाने लगी तो पद्मदेव ने पूछा, "कॉफी बनाऊं?"

"नहीं! आवश्यकता नहीं।"

पद्मदेव अपने पुस्तकालय में पहुँच अपने कार्य में लीन हो गया। आज उसने सरस्वती को उठते देखा था तो अति सुन्दर पाया था। उसके मन में कई बार आया कि वह उसका आलिंगन कर ले, परन्तु प्रातःकाल इस प्रेम-प्रलाप से अधिक आवश्यक कार्य उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह पुस्तकालय में पहुँच उस कार्य में लीन हो गया। आठ बजे अल्पाहार आने पर उसको सुध आई। सरस्वती अल्पाहार पुस्तकालय में ही लेकर आ गई थी।

"ओह!" पद्मदेव ने उसे देखकर कहा, "मैं वहाँ ही आ जाता।"

"अब मैं आ गई हूँ। इससे विघ्न कम ही पड़ेगा।"

पद्मदेव मुस्कराया और उठकर वहाँ आ गया, जहाँ अल्पाहार रखा था। दोनों ने अल्पाहार किया। करते समय पद्मदेव ने पूछा, "यह गुरुजी कौन थे?"

"यहाँ के संगीत-नृत्य अकादमी के प्रधान पण्डित हरिशरणानन्दजी, स्वयं नृत्य-कला के ज्ञाता और कुशल नृत्यक हैं। आज लखनऊ में ये कर्नाटक संगीत के विशेषज्ञ माने जाते हैं।"

"अभी छोटी ही आयु के प्रतीत होते हैं?"

"हाँ, तीस वर्ष के लगभग के हैं। इस पर भी अति प्रतिभाशाली हैं।"

"अच्छा-खासा सुन्दर युवक है।" पद्मदेव ने कहा।

सरस्वती ने चौंककर अपने पति के मुख पर देखा, परन्तु पद्मदेव खाने में लीन, अपनी प्लेट में देख रहा था। सरस्वती ने पति के उक्त कथन के समर्थन में केवल 'हाँ' ही कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्पाहार समाप्त हुआ तो सरस्वती ने कहा, "आज गुरुजी के घर पर नृत्य है। मैं अपनी गाड़ी से जाऊंगी और देरी से लौटूंगी।"

पद्मदेव इसके पश्चात् पुनः अपने कार्य में लग गया। वह प्रतापगढ़ से जो सामग्री लाया था, उसको विषयानुसार कर, फाइलों में रखने लगा था। बारह बजे क लगभग वह अपने इस कार्य से उठा और डाक देखने लगा। डाक में एक तार था। लिखा था—"मैं पन्द्रह जनवरी को पंजाब मेल से आ रही हूँ—साधना।"

गाड़ी बारह बजकर बीस मिनट पर आती थी। पद्मदेव ने घण्टी बजाई। सुन्दर आ गया। पद्मदेव ने मोटर निकालने को कहा तो सुन्दर ने कहा, "मालकिन मोटर ले गई हैं।"

"उन्होंने यह तार देखा है क्या?"

"मैंने तार मेज पर रख दी थी। देख ली होगी।"

पद्मदेव ने समझ लिया कि उसने तार अवश्य देख ली होगी और वह साधना को स्टेशन पर लेने ही गई होगी। इसी समय उसे ध्यान आया कि तार का लिफाफा तो बन्द था। यदि सरस्वती ने देखी होती तो खोलकर पढ़ी होती। पद्मदेव ने घड़ी में समय देखा, बारह बज कर दस मिनट थे। कोठी से दस मिनट के अन्तर पर टैक्सी-स्टैण्ड था। वह लगभग भागता हुआ उस ओर चल पड़ा। दस मिनट और लग गये। वह साढ़े बारह बजे स्टेशन पर पहुँचा। गाड़ी आ चुकी थी। वह प्लेटफार्म पर पहुँचा तो गाड़ी कलकत्ता के लिए चल पड़ी थी।

वह अपने मन में चिन्ता अनुभव कर रहा था। साधना पहली बार लखनऊ आई थी। उसको इनको कोठी का पता तो विदित था और अवश्य वह टैक्सी कर वहाँ चली गई होगी, ऐसा विचार कर वह स्टेशन से बाहर जाने लगा तो उसे ध्यान हो आया कि वेटिंग-रूम में देखने गया। साधना वहाँ नहीं थी। अतः वह स्टेशन से बाहर निकल टैक्सी कर पुनः कोठी को लौट आया।

साधना कोठी पर पहुँची हुई थी। पद्मदेव ने विस्मय में पूछ लिया, "किस मार्ग से आई हो?"

"जिससे आप नहीं गये। टैक्सी वाला भाड़ा अधिक बनाने के लिए अथवा मार्ग न जानते हुए, मुझको लेकर कहाँ-का-कहाँ भटकता रहा है। फिर भी पहुँच ही गई हूँ।"

इस पर पद्मदेव ने सफाई दे दी—"तार पहुँचने से पूर्व ही सरस्वती घर से कहीं चली गई थी। मैंने तार का लिफाफा बारह बजे देखा था। तार पढ़ते ही स्टेशन को भागा। अपनी मोटर होती तो फिर भी समय पर पहुँच जाता, पर वह तो पहले ही श्रीमतीजी ले जा चुकी थीं।"

बात समाप्त हुई। साधना शौचादि के लिए चली गई। पद्मदेव ने रसोइये को भोजन तैयार करने के लिए कह दिया।

भोजन के समय ही सरस्वती आई और साधना को भी भोजन के लिए तैयार देख, विस्मय में खड़ी रह गई। "अरी! सूचना भेज देती तो स्टेशन पर लेने चली आती।"

"चिट्ठी के लिए कलम में स्याही नहीं रही थी।"

सरस्वती का विस्मय देख, पद्मदेव और साधना हँस पड़े। सरस्वती ने कह दिया, "लाहौर-भर में स्याही समाप्त हो गई प्रतीत होती है। क्या हुआ है, जो इसका अकाल पड़ गया है?"

साधना ने हँसते हुए कह दिया—"एक वर्ष से वर्षा नहीं हुई है न? परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि लखनऊ में तो बाढ़ आ गई है। सरस्वती बहन तो लम्बी-लम्बी चिट्ठियाँ लिखती रही है।"

सरस्वती ने एक वर्ष से साधना को पत्र नहीं लिखा था। बच्चा होने की सूचना के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पश्चात् सरस्वती को लिखने का अवकाश ही नहीं मिला था। पद्मदेव नियमपूर्वक मास में एकआध पत्र सुदर्शन को लिख देता था।

भोजन हुआ और जब सरस्वती अपने कमरे में गई तो वहाँ अपने लिखने-पढ़ने की मेज पर तार पड़ा देख, वह आश्चर्य में सुन्दर को बुलाकर पूछने लगी, "यह तार कब आई थी?"

"मालकिन! आज प्रातः साढ़े आठ बजे। मैंने डाक में रख दी थी। आप अल्पाहार लेने के समय डाक देखा करती हैं। मेरा विचार था कि आपने देख ली होगी। प्रोफेसर साहब ने बारह बजे के बाद देखी तो भागे हुए गए। पर बहनजी उनके पीछे ही यहाँ पहुँच गई।"

साधना को जब एक वर्ष तक सरस्वती का कोई पत्र नहीं मिला, तो उसने अपने पति के सम्मुख चिन्ता प्रकट की। इस पर प्रोफेसर सुदर्शन ने कह दिया था—"बहुत चिन्ता करती हो तो जाकर मिल आओ।"

"परन्तु आप तो नहीं चल सकते?"

"नहीं! परीक्षाएँ समीप आ रही हैं। मुझे तो एक दिन का भी अवकाश नहीं मिल सकता। तुम अकेली चली जाओ।"

"और कब तक लौटूं?"

"जब सहेली से मिलकर चिन्ता मिट जायेगी।" सुदर्शन हँस पड़ा।

सुदर्शन के एक लड़के के पश्चात् कोई अन्य बच्चा नहीं हुआ था। वह लड़का अब चार वर्ष से बड़ा हो चुका था और 'किंडर गार्टन' स्कूल में जाने लगा था। इससे साधना सारा दिन अपने को खाली पाती थी। अतः वह तार देकर, उसी रात को चल पड़ी।

सरस्वती, साधना से बहुत प्रेम से मिली। दोनों सहेलियाँ अब तो इकट्ठी जागतीं, सोतीं, भ्रमण के लिए जातीं तथा सायंकाल संगीत-विद्यालय में जातीं। जब-जब पद्मदेव को समय मिलता, वह भी उनके साथ हो लेता।

पद्मदेव की पुस्तक का प्रथम भाग तैयार हो गया था। टाईप की हुई पांडुलिपि पांच-सौ फुलस्केप पृष्ठों की बनी थीं। ऐसा उसका अनुमान था कि आठ सौ पृष्ठ की पुस्तक होगी। अब पद्मदेव विलायत जाने का विचार करने लगा। उसका विचार था कि लंदन म्यूजियम के पुस्तकालय में बैठ, इस पुस्तक का अंतिम संशोधन कर किसी प्रकाशन से बात करेगा। इस कारण उसने एक रात भोजन के समय कह दिया, "सरस्वती! मैं एक-दो दिन में पासपोर्ट के लिए प्रार्थना देने का विचार कर रहा हूँ।"

"मैं आपके साथ नहीं जा सकूंगी। कितना समय लगेगा आपको वहाँ?"

यह सर्वथा नवीन बात थी। यूं तो पद्मदेव प्रतापगढ़ से लौटकर ही सरस्वती में विलक्षणता अनुभव कर रहा था। घर पर भांति-भांति के लोग, कला के रसिक तथा कलाकार आने लगे थे। सरस्वती भी अब संगीत-नृत्य समारोहों में अधिक रुचि लेने लगी थी। अब संगीत के अभ्यास में भक्तिभाव के भजनों के स्थान गजलें, टप्पे, ठुमरी और दादरे गाये जाने लगे थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि बात करते-करते सरस्वती भूल जाती थी कि वह क्या कह रही है।

एक दिन वह और साधना दोनों संगीत विद्यालय में गईं। साधना सरस्वती को विद्यालय में छोड़ दो घंटा के लिए हजरतगंज इत्यादि स्थानों को देखने चली जाया करती थी। कभी उसकी मोटर में और कभी पैदल ही। इस दिन वह पैदल ही घूमने निकल गई। जाने से पहले वह पूछ जाया करती थी कि कब तक वह अवकाश पा जायेगी? इस दिन सरस्वती ने बताया कि दो घंटे तो लग ही जायेंगे।

साधना गई और दो घण्टे से पूर्व ही लौट आई। आने पर पता चला कि सरस्वती मोटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में किसी के साथ गई है। साधना एक घण्टा भर वहाँ उसकी प्रतीक्षा करती रही, पर वह नहीं आई। तब साधना टैक्सी कर कोठी पर लौट आई।

पद्मदेव, जबसे साधनार आई थी, सरस्वती को लेने उसके विद्यालय में नहीं जाता था। वह प्रायः अकेला ही भ्रमण के लिए निकल जाया करता था। आज वह वापस आया तो साधना अकेली बैठी चाय ले रही थी। पद्मदेव ने पूछ लिया, "सरस्वती कहाँ है?"

"मालूम नहीं कहाँ गई है? चपरासी ने बताया था कि वह किसी के साथ मोटर में गई है।"

सरस्वती उस रात बारह बजे लौटी। तब तक साधना सोई नहीं और पद्मदेव को भी उसका साथ देना पड़ा। इस समय साधना ने पद्मदेव से कह दिया, "दादा! तुमने सरस्वती को बहुत छूट दे रखी है।"

पद्मदेव ने इस कथन का अर्थ समझने के लिए साधना के मुख पर देखा। साधना एक पुस्तक खोल, उसमें देख रही थी। पद्मदेव ने मुस्कराते हुए कहा, "यह बात इस पुस्तक में लिखी है क्या?"

साधना हँस पड़ी और हँस कर बोली, "दादा! नहीं, जो कुछ इन आँखों ने देखा है, वह न बताने के लिए, इनको छुपाने का यत्न कर रही हूँ।"

"क्या देखा है, बहन?"

"यह बात विख्यात ही है कि ननद हो, जेठानी अथवा देवरानी, वह भाभी की निन्दा किया ही करती हैं। इस कारण अपने को उस श्रेणी में सम्मिलित न करने के लिए मैं कुछ कहना नहीं चाहती। इतना कह रही हूँ कि पति-पत्नी में कुछ अधिक सामंजस्य होना चाहिए।"

"हम इकट्ठे तो रहते हैं। खाते-पीते, सैर-सपाटे भी इकट्ठे ही करने जाया करते हैं।"

"यह सब तो ठीक है, परन्तु रात समय पर घर आना और इकट्ठे एक कमरे में सोना गृहस्थ जीवन का एक अत्यावश्यक अंग है।"

यह कहते हुए साधना का मुख लज्जा से लाल हो गया। "मैं यह समझती हूँ," उसने कह दिया, "नारी जाति अति दुर्बल होती है। उसकी रक्षा का भार उसके पति पर होता है। दादा! तुम यह निभा नहीं रहे हो।"

पद्मदेव स्वयं भी सरस्वती में विलक्षणता अनुभव कर रहा था। फिर भी वह इस विलक्षणता से ऐसा परिणाम नहीं निकाल रहा था, जिसका साधना ने संकेत किया था। इससे उसने साधना से पूछ लिया, "साधना बहन! तुमने कुछ देखा है, जिससे कह रही हो या मेरी त्रुटियों का उल्लेख मात्र ही कर रही हो।"

"दादा! असावधानी का ही तो मैंने उल्लेख किया है। यह मैंने देखी है।"

"अच्छा, यह तो बताओ मैं क्या करूं?"

"प्रथम तो उसको अकेली क्यों सोने देते हो?"

"इसलिए कि उसको और बच्चों की आवश्यकता नहीं। साथ ही वह कहती है कि उसको सुधीर के जन्म के समय बहुत कष्ट हुआ था।"

साधना हँस पड़ी। हँसकर बोली—"वह कहती है परन्तु तुम क्या चाहते हो? क्या तुम्हारा मन भी बच्चों से भर गया है?"

"अभी सुधीर छोटा है। एक वर्ष दो मास का ही तो है। पर मोहन तो चार वर्ष से भी बड़ा हो गया है।"

"हाँ, परन्तु यह हमारी ओर से अरुचि के कारण नहीं, दादा! वह जब से स्कूल जाने लगा है, मैं अपने जीवन में भारी अवकाश पाती हूँ। इस अवकाश को भरने के लिए ही तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लखनऊ आई हूँ। सुधीर बहुत प्यारा लगने लगा है।''

''ओह! परन्तु साधना! सरस्वती एक कलाकार है। तुम बच्चों के पालन के अतिरिक्त अन्य कुछ कार्य कर भी नहीं रहीं?''

''तो क्या मैं यह जानती नहीं? इस पर भी मेरा अनुभव है कि बच्चों के पालन के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा काम नहीं, जो किसी स्त्री के जीवन को भर सके। दुनिया-भर के झंझट भी एक स्त्री के लिए पर्याप्त नहीं, यदि उसके जीवन में से बच्चों का पालन-पोषण निकाल दिया जाये।

''मैं समझती हूँ कि पुरुषों के भी कुछ स्वाभाविक कार्य हैं। यदि उन कार्यों को जीवन में से निकाल कर, घर की सब्जी-भाजी, दाल-रोटी, चौका-बर्तन आदि कितना भी कार्य क्यों न उनको दे दिया जाए, उनको सन्तोष नहीं हो सकता।''

पद्मदेव इन अनुभव की बातों को सुन कर खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने हँसते हुए कहा, ''यह प्रकृति भारत की स्त्री-पुरुषों की है। विश्व के अन्य देशों में तो स्त्री-पुरुष का स्वभाव बदल गया प्रतीत होता है। वहाँ की स्त्रियाँ रेलों में, दफ्तरों में, हवाई जहाजों, बसों में तथा जीवन के हर क्षेत्र में काम करती देखी जा सकती हैं। खानों और कारखानों में मनाही होने पर भी वे काम करने को तैयार रहती हैं। अब तो वे सेना में भी काम करने लगी हैं। जानकार पुरुषों का कहना है कि वहाँ न तो पुरुषों को, न ही स्त्रियों को जीवन में किसी प्रकार का अभाव अनुभव होता है।''

''दादा! यहाँ बैठे-बैठे, बिना प्रयास के ज्ञान प्राप्त किये, सिद्धान्त बना लेना तो ठीक नहीं। मैं चाहती हूँ कि तुम अब इंग्लैण्ड तो जा ही रहे हो। इस दृष्टिकोण से देखोगे तो वहाँ के स्त्री-पुरुषों में तुम भारी असन्तोष पाओगे। वहाँ का कृत्रिम जीवन उनकी बातों को भी कृत्रिम बनाये रखता है। उनके कथन, उनके मन तथा अनुभूतियों का चित्रण नहीं करते। वे भी कृत्रिम ही होते हैं।''

''इस पर भी वे वैसा ही करते जाते हैं। इससे उनकी समाज का ढांचा भी उनके व्यवहार के अनुकूल ही हो गया है और मैं समझता हूँ कि उनका स्वभाव भी बदल गया है। अन्यथा वे इस सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह कर चुकी होतीं।''

''यह बात नहीं दादा! अब उनकी बात तो आपके वहाँ से लौटने के बाद ही करेंगे। मैं तो भारत में रहने वाली नारी सरस्वती की बात कर रही हूँ।''

पद्मदेव ने गम्भीर भाव बनाकर कहा, ''कदाचित् तुम ठीक ही कहती हो। मुझको विश्वास है कि साधना बहन, ननदों की परम्परा के अनुसार चुगली नहीं खा रही। मैं अपने को सुधारने का यत्न करूंगा।''

: 4 :

सरस्वती की एक घण्टा भर प्रतीक्षा के पश्चात् साधना अकेली लौटी थी और अब रात के बारह बज गये थे उसकी प्रतीक्षा करते-करते। वह सरस्वती के विषय में चिन्ता अनुभव कर रही थी। पिछले पन्द्रह दिनों में सरस्वती से बहुत-सी भूलें हुई थीं, परन्तु इससे पहले साधना को छोड़कर सरस्वती लापता नहीं हुई थी।

पद्मदेव को विशेष चिन्ता नहीं थी। उसको सरस्वती का रात को देरी से आते देखने का स्वभाव हो गया था। दोनों पुस्तकालय में बैठे, कोई पुस्तकें पढ़ रहे थे। बीच-बीच में एक-आध बात हो जाती और पुनः वे पढ़ने लगते थे।

बारह बजे के पश्चात् कोठी में मोटर आकर खड़ी होने का शब्द हुआ, तो पद्मदेव ने कह दिया, ''लो आ गई।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साधना ने दरवाजे की ओर देखा तो सरस्वती को प्रसन्न मुद्रा में भीतर आते देख, पूछ लिया, "कहाँ रह गई थीं सरस्वती?"

वास्तव में सरस्वती यह बात भूल ही गई थी कि साधना उसकी प्रतीक्षा में होगी। अब साधना को रात के बारह बजे तक बैठे देख, उसको स्मरण हो आया और उसका मुख उतर गया। उसने कह दिया, "एक अत्यावश्यक काम में लग गई थी। क्षमा करना साधना! खैर, तुम पहुँच तो गईं।"

"पहुँच तो मैं पहले दिन भी गई थी। मुझे अपने पहुँचने की चिन्ता नहीं थी। मुझको तो तुम्हारे पहुँचने की चिन्ता लग रही थी।"

"क्यों? मैं तो मोटर में थी। मेरी मोटर तो आँखें मूंदे इस ओर भागी चली आती है।"

"यही तो कह रही हूँ कि सरस्वती कहीं आँखें मूंदे दूसरे मार्ग पर न भटक जाये? यही बैठी विचार कर रही थी।"

"ओह! परन्तु तुम तो पुस्तक पढ़ रही थीं।"

"यह तो दादा को भूल में डालने के लिये सामने रखी थी। वास्तव में मेरा मन तो तुम्हारी मोटर के पीछे-पीछे भाग रहा था।"

"तो देख लिया है न, कि अभी तक तो यह घर का मार्ग पा लेती है।"

"सत्य?"

इस पर पद्मदेव ने पूछ लिया, "भोजन?"

"कर आई हूँ।"

पद्मदेव सोने के लिए उठा तो दोनों भी उठ, सोने के लिए अपने कमरे में चली गयीं। कमरे में जाते ही साधना ने सरस्वती से कहा, "मैं परसों लौट जाऊंगी।"

"कहाँ?"

"लाहौर। अब बीस दिन हो चुके हैं। मैं समझती हूँ कि अब मुझे वापिस जाना चाहिए।"

"तो नाराज हो गई हो साधना? अच्छा आगे से ऐसा नहीं करूंगी।"

"मुझको अकेली छोड़ जाने का रोष नहीं है। मुझको छोड़ यदि तुम अपने पति के पास गयी होतीं तो कुछ न था। मैं तो यह समझी थी कि तुम्हारे मन में मुझसे अधिक केवल पद्मजी के लिए ही स्थान है। आज यह देख कि किसी दावत इत्यादि का प्रलोभन मेरी संगत से भी अधिक प्रबल सिद्ध हुआ है, मैं अपने मन में छोटा अनुभव करने लगी हूँ। मैं समझती हूँ कि अब मुझे चला जाना चाहिए।"

"मैं क्षमा माँग चुकी हूँ साधना! फिर ऐसी भूल नहीं करूंगी।"

"परन्तु इससे भी अधिक मुझको एक और बात चुभी है। तुम्हारे चित्त में तो दादा से भी अधिक कुछ और आ रहा है। यह कल्याणकारी प्रतीत नहीं होता।"

"नहीं! यह बात नहीं है साधना बहन!"

"देखो सरस्वती! मैं तुमसे अपने को किसी प्रकार भी अधिक योग्य नहीं समझती। इस पर भी तुम निश्चय ही मार्ग से भटक गयी हो। तुमने कहा है कि तुम मार्ग पर आ जाती हो, मुझको इस बात पर संदेह हो रहा है।"

"मैं तुम्हारी बातों को समझ नहीं सकी। उनके सामने भी तुमने इस बात का संदेह प्रकट किया था और अब तो तुम स्पष्ट ही कह रही हो। क्या देखा है तुमने मुझ में?"

"कुछ नहीं। अच्छा, अब सो जायें। लड़ने तथा विवाद करने से कुछ भी नहीं होता। व्यवहार से ही संशय निवृत्त होते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती का मुख पीतवर्ण हो गया था। ऐसे अवसर पर कोई अन्य स्त्री होती, तो दो-चार खरी-खोटी सुना देती और लड़ पड़ती, परन्तु सरस्वती स्वभाव से ही मृदु और नम्र थी। उसने कपड़े वदले और सो रही।

अगले दिन अपने पति के नाम एक तार बनाकर, साधना ने पद्मदेव को कहा, "इस तार को भिजवा दीजिये।"

पद्मदेव ने पढ़ा और कहा, "अर्थात् तुम जा रही हो? साधना बहन! तुमने तो एक मास यहाँ रहने का वचन दिया था।"

"मैंने अपने जाने का कारण सरस्वती को बता दिया है।"

"अर्थात् उससे लड़ पड़ी हो?"

"पूछ लेना। मैं तो लड़ी नहीं।"

प्रातः के अल्पाहार के समय पद्मदेव ने पूछ लिया, "सरस्वती, क्या साधना से लड़ पड़ी हो?"

"नहीं तोः यह कल विद्यालय से अकेली लौटी थी, इस कारण नाराज है। मैंने क्षमा भी माँग ली है, परन्तु यह मानी नहीं प्रतीत होती।"

"मैं नाराज इस कारण नहीं हूँ! मैंने बताया था कि मेरी नाराजगी किसी अन्य कारण से है।"

"देखो साधना! मैं कल यूरोप जाने के लिए पासपोर्ट के लिए प्रार्थना-पत्र देने वाला हूँ। आशा करता हूँ कि शीघ्र ही मिल भी जायेगा। तब तक तो यहाँ रहो?"

"ओह! परन्तु पासपोर्ट बनने में ढाई-तीन मास से कम नहीं लगेंगे। तब तक तो मैं यहाँ नहीं रह सकती।"

"मुझको आशा है कि एक सप्ताह में मिल जायेगा। तब जाने से पूर्व हम लाहौर जायेंगे। सुदर्शन से मिले बिना और उसको अपनी पुस्तक दिखाये बिना, मैं कैसे जा सकता हूँ! मैं समझता हूँ कि तुम भी हमारे साथ ही चलना।"

इस समय सरस्वती ने कह दिया, "मैं तो आपके साथ नहीं जा सकूंगी।"

"क्यों?"

"यदि आप अगले वर्ष तक चलें तो बात दूसरी है। इस वर्ष अप्रैल मास में संगीत सम्मेलन होने वाला है। मैं उसमें अवश्य सम्मिलित होना चाहती हूँ।"

"अब फरवरी है। मार्च तथा अप्रैल। तब तक तो मैं ठहर सकता हूँ।"

"जी नहीं। मैं इस वर्ष नहीं जा सकूंगी। सितम्बर मास में भारतीय नाट्य कला सम्मेलन होने वाला है। मैं यह आशा कर रही हूँ कि सम्मेलन की अध्यक्षा मैं बनाई जाऊंगी।"

"और सितम्बर के पश्चात् क्या कार्यक्रम है?"

"कदाचित् दिसम्बर में मेरा लखनऊ में कार्यक्रम है।"

"इसका अर्थ यह हुआ कि मैं अकेला ही जा सकूंगा।"

अब साधना ने कह दिया, "दादा! यहाँ से ही पुस्तक छपवाने का प्रबन्ध नहीं हो सकता क्या?"

"छपवाने का प्रबन्ध तो हो सकता है; परन्तु लंदन म्यूजियम का पुस्तकालय तो यहाँ नहीं लाया जा सकता। नहीं साधना! मुझे तो जाना ही होगा। पर मैं सरस्वती की राह में बाधक नहीं बनूँगा। वह यहाँ रह सकती है।"

साधना चुप रही। तार भेज दी गई और अगले दिन वह लाहौर वापस चली गई। लाहौर में प्रोफेसर सुदर्शन उसको लेने स्टेशन पर आया हुआ था। उसने साधना के गाड़ी से उतरते ही प्रथम प्रश्न किया, "तुमने तो लिखा था कि मार्च के आरम्भ में आ सकोगी। कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एकाएक तार मिला तो चिन्ता लग गई कि स्वास्थ्य तो ठीक है?''

"मेरा तो ठीक है, परन्तु सरस्वती कुछ अस्वस्थ प्रतीत होती है।''

कुलियों से सामान उठवाकर वे स्टेशन के बाहर आये और तांगे में सवार हो अपने घर जा पहुँचे। घर पहुँच भोजन के समय सुदर्शन ने पूछ लिया, "सरस्वती को क्या कष्ट है?''

"मनोविकार उत्पन्न हो रहा है। मैं बीस दिन वहाँ रही हूँ और देखा कि उसमें बहुत अन्तर आ गया है। सरस्वती यहाँ शान्त, प्रसन्न एवं संतुष्ट प्रतीत होती थी। वहाँ वह प्रसन्न तो दिखाई देती थी, परन्तु चंचल और अपने से असन्तुष्ट थी। यहाँ वह एक गृहिणी के कार्य से सन्तुष्ट थी, वहाँ वह आकाश के तारे उतारने में ही लग गई है।''

सुदर्शन हँस पड़ा। साधना ने आगे कह दिया, "हाँ, उसको अपने मन के भावों का संकेत दे आई हूँ। इससे यदि वह लड़ पड़े तो कुछ कह नहीं सकती।''

सुदर्शन मन में विचार कर रहा था—मनोविकार, चंचल और असन्तुष्ट—यह सब क्यों? एकाएक सुदर्शन ने पूछ लिया, "तो लखनऊ के आकाश में तारे अधिक मन लुभाने वाले हैं? तुमने कोई देखा है?''

"वहाँ तो कई हैं? किसी एक पर उंगली रख तो बता नहीं सकती। मुझको ऐसा प्रतीत होता है कि अभी कोई भी तारा सरस्वती के आँचल में नहीं गिरा। इस पर भी वह उन पर कमंद चला रही प्रतीत होती है।''

सुदर्शन ने बात समझी और कई दिन के विचारोपरान्त उसने पद्मदेव को लिख दिया—"पद्मदेवजी, मुझको यह सुन अति खेद हुआ है कि साधना की सरस्वती से पट नहीं सकी। दोनों में मतभेद उत्पन्न हो गया है। इस मतभेद का विषय आपके प्रति आपकी पत्नी के भाव हैं। साधना को कुछ ऐसा समझ में आया है कि सरस्वती के मन में आपसे भी अधिक अपनी कला के लिये स्थान है। वह आपको अपनी कला पर न्योछावर कर रही है।

"मैं समझता हूँ कि सरस्वती के विषय में साधना का यह अनुमान सत्य नहीं है। एक मनुष्य के मन में दो क्या अनेकों मनुष्यों के लिये और अनेकों विषयों के लिए स्थान हो सकता है। देखने की बात यह है कि मनुष्य एवं विषय परस्पर विरोधी न हों। मैं समझता हूँ कि आप सरस्वती की कला एवं उसकी कला-प्रवीणता के विरोधी नहीं हैं। अतः कलाकारों में श्रेष्ठता पाने पर भी आपका स्थान उसके मन में न्यून नहीं हो सकता।

"साधना को मैंने यह बताया है, परन्तु वह अभी अपनी भावना और परिणामों में सामंजस्य नहीं कर सकी।

"सरस्वती भाभी से मेरी ओर से क्षमा माँग लेना। मैं आशा करता हूँ कि यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं के पश्चात् स्वयं लखनऊ आऊंगा और उससे क्षमा माँग लूँगा। साधना और मोहन भी मेरे साथ आयेंगे।''

इसके उत्तर में पद्मदेव ने लिखा, "साधना बहन का विचार किसी भ्रम के कारण बना है। सरस्वती और मुझमें वही सामंजस्य उपस्थित है, जो विवाह के समय से चला आ रहा था। उसमें मैं किसी प्रकार की भी कमी अनुभव नहीं कर रहा। वह सदा की भांति प्रसन्नवदन, मधुर-भाषी और स्नेहमयी हृदय वाली है।

"साधना बहन से कह देना कि उसको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वह मुझसे प्रेम करती है, मैं उससे प्रेम करता हूँ। मैंने यूरोप जाने के लिये पासपोर्ट की प्रार्थना भेज दी है। उसके मिलते ही हम, अर्थात् मैं, सरस्वती और सुधीर लाहौर आवेंगे। यूरोप जाने से पूर्व मैं आपसे मिलना चाहूँगा। मैं अपनी पुस्तक के विषय में आपसे विचार-विनिमय करना चाहूँगा। इतना अभी बता देना चाहता हूँ कि मेरी पुस्तक का प्रथम भाग तो आदिकाल से लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महाभारत के काल, तक, भारत में संस्कृति के संघर्षों का वृत्तान्त है। दूसरे भाग में महाभारत और तब से लेकर सिकन्दर के काल तक आन्दोलनों का विवरण होगा। तीसरा भाग बौद्ध-जीवन-मीमांसा और उसकी प्रतिक्रिया, वैष्णव मत तथा शंकर मत एवं मुसलमानों के काल के विषय में होगा। चौथे भाग में इस्लाम का भारत में आगमन, प्रचार और इसकी प्रतिक्रिया–सिक्ख पंथ, भक्ति पंथ और साथ ही मुसलमानों का ह्रास आदि विषय हैं। पांचवें भाग में अंग्रेजों का भारत में आगमन, उनका विस्तार और तत्पश्चात् ब्रह्म समाज, थियोसोफिकल सुसायटी, प्रार्थना समाज तथा आर्य समाज के आन्दोलनों का विवरण होगा और इन सब आन्दोलनों के परिणाम में राजनीतिक स्वतंत्रता तक का उल्लेख होगा।

इस पुस्तक का प्रथम भाग तैयार हो गया है। यह सात-आठ सौ पृष्ठ की पुस्तक होगी। इसी प्रकार ही अन्य भाग भी होंगे। अन्य भागों की रूपरेखा मैंने लिख ली है। बस उनका विस्तार शेष है।

यह सब मैं आपको दिखाकर, इस पर आपके सुझाव लेना चाहता हूँ।

अन्त में फिर लिख रहा हूँ कि सरस्वती के विषय में कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।''

: 5 :

जब सुदर्शन का पत्र आया था, तब सरस्वती घर पर नहीं थी। पद्मदेव ने पत्र पढ़ा और उसका उत्तर लिख दिया था। पत्र और पत्रोत्तर को, वह अपने दराज में रख, सायंकाल के भ्रमण के लिये निकल गया। सायंकाल को वह लौटा तो कोठी में संगीत सभा लगी हुई थी। लखनऊ संगीत अकादमी के कुछ प्रतिष्ठित सदस्य और कुछ गायिकाएँ आई हुई थीं।

पद्मदेव ड्राइंगरूम में गया और सबने उसको आदर से बैठाया। संगीत अकादमी के प्रिन्सिपल सरस्वती के एक ओर तथा भारतीय संगीत नृत्य विद्यालय के अध्यक्ष दूसरी ओर बैठे थे। ये तीनों बैठे हुए अन्तर्राष्ट्रीय संगीत नृत्य समारोह में भाग लेने वाले कलाकारों का निर्वाचन कर रहे थे।

उस समय एक स्त्री, जो इलाहाबाद से आई हुई थी, एक ठुमरी गाकर सुना रही थी। ठुमरी थी–

'धीरे आना सजन आधी रात,
ननद मोरी चुगली भरेगी।
विरह सतावे हिय घबरावे,
वैरन मो पे तरस न खावे।
हूँ तरफत फिरत उदास,
ननद मोरी चुगली भरेगी।'

पद्मदेव देख रहा था कि इस गाने में सरस्वती बहुत रुचि ले रही है। ठुमरी गाने में बहुत कुशलता प्रकट की गई थी। साथ ही उस गायिका का स्वर तथा हावभाव बहुत ही मनमोहक था।

इसके बाद एक अन्य गायिका ने कजरी गा दी। उसने गाया–

'मत छेड़ो मोरी बालि उमरिया।
पनिया भरन मैं चली पन घट पर,
मग में है ठाड़े, ढीठ लंगरवा।
करत बरजोरी सुनत नहीं मोरी,
कैसे चलूँ मैं निडर हो डगरवा।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सास निहारे भर-भर नजरिया,
मत छेड़ो मोरी बालि उमरिया।'

इस प्रकार एक के बाद दूसरा गाना और एक गाने वाली के बाद दूसरी गाने वाली आ रही थी। पद्मदेव सुन रहा था और विस्मयकर रहा था। वह मन में विचार कर रहा था कि अन्तर्राष्ट्रीय समारोह में ऐसे गीत गाकर ये भारत का नाम करेंगे अथवा उसके आचार-व्यवहार के साथ हँसी करायेंगे।

वह कुछ देर तक बैठे सुनता रहा। पश्चात् उठकर अपने स्टडी रूम में चला गया। इस समय उसका ध्यान सुदर्शन के पत्र और अपने उत्तर पर चला गया। वे दोनों पत्र सरस्वती को दिखाने के लिये उसने रखे हुए थे। वह पत्र को फिर पढ़ने लगा।

उसने सुदर्शन के पत्र को पढ़ा। आज के गाने सुनने के पश्चात् उसको सुदर्शन का यह लिखना अखरने लगा कि सरस्वती अपनी कला पर उसको न्योछावर कर रही है।

उसको साधना के अनुमान पर विश्वास होता जाता था।

उसने अपने पत्र में यह लिखा था—'सरस्वती और मुझमें वही सामंजस्य उपस्थित है, जो विवाह के समय से चला आ रहा था।' अब उस अपने विवाह के पूर्व की रात, जो गीत सरस्वती ने गाया था, स्मरण हो आया—

'गावो-गावो मंगल गीत बधाई,
मोद भरी घड़ी मन भाई।
ईश कृपा यह अवसर आया,
ताते धन्य-धन्य प्रभु माया।'

परन्तु आज सरस्वती बहुत रसमय होकर यह सुन रही थी—

'करत बरजोरी सुनत नहीं मोरी।'

उसके मन में विचार आया कि वास्तव में सरस्वती और उसके मन में अंतर आ गया है। दोनों के मनोभावों में अंतर पड़ गया है। इस विचार के आते ही वह सुदर्शन को लिखे अपने उत्तर को फाड़ डालने लगा, परन्तु फिर यह विचार कर कि 'पति-पत्नी में मतभेद किसी बाहरी व्यक्ति के सामने प्रकट करने की वस्तु नहीं।' रुक गया।

उसने पत्र नहीं फाड़ा। उसने पुनः दोनों पत्रों को दराज में रख दिया और विचार करने लगा कि ये तो अब कल ही दिखाये जा सकेंगे।

अब पद्मदेव सोने की तैयारी करने लगा। इस समय सरस्वती के गाने का स्वर उसे सुनाई दिया। वह ध्यान देकर सुनने लगा। सरस्वती ने शास्त्रीय संगीत, जिसमें वह बहुत प्रवीण थी, नहीं सुनाया। उसके स्थान पर उसने एक गजल आरम्भ कर दी—

'या खुदा ऐसी बना फितरत हमारे 'यार की,
नियाज से उसके हमें मिल जाये बरकत प्यार की।
बन गई तो है तमन्ना बस्त की ए नाखुदा,
उसके तबस्सुम से मनुवर हो कली गुलजार की।
नजर भर कर के हमारे दिल के इस सकून में,
न मचा हलचल, रहे कायम मुसरत निजार की।
उल्फत में हमने है किया सिजदा उसी की याद में
गुल खिलें, गुलचे फलें, बन जाये सितमगार की।
साकी हमें भर-भर के दे मय हमारे जाम में,
ऐसी पिला कि भूल जाएँ मस्ती इस दीदार की।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव विचार कर रहा था—यह क्या हो गया है सरस्वती को? बहुत सुन्दर, अति मूल्यमान गंगा-जमुनी प्याले में बदबूदार मद्य डाल दी है। क्यों? वह अमृत कहाँ गया, जो उसमें भरा था?

अब उसको पहले दिन की बात याद आ गई। जब वह विवाह का प्रस्ताव लेकर आई थी, उसने कहा था—"मैं तो अभी, इसी समय ही विवाह करने को तैयार हूँ।"

इस बात के स्मरण आते ही उसको अपनी सूझ-बूझ पर भी संदेह होने लगा। वह विचार कर रहा था कि इस प्याले में पहले भी इसी प्रकार की, दुर्गन्धयुक्त, घृणित मद्यभरी थी। उसके अपने में दृष्टि-दोष था, जो वह समझ नहीं सका था।

वास्तव में लाहौर में रहते हुए उसका जीवन इतना सुखमय था कि उसको सरस्वती में किसी प्रकार का दोष ही नहीं दिखाई दिया था। अल्मोड़ा में भी वह ठीक ही प्रतीत होती थी। उस समय उसके गाने में गीत होते थे—

'माँ सरस्वती शारदे विद्यदाना दयानी
दु:ख हरणी जगत जननी ज्वालामुखी माता
स्वर वचन मधुर मैं पावूं गुण गावूं शकुन मानवूं
चरणों में सीस निवावूं, भावों की भेंट चढ़ावूं
सकल ज्ञान की दाता।
माँ सरस्वती शारदे.....।
दिव्य वाणी के मधुर स्वरों से पुलकित कर दे पूर्ण जगत को,
भावों के फूलों से भरकर यह अंजुली भेंट चढ़ावूं मैं मात को।
करो स्वीकार जगन्माता
माँ सरस्वती, शारदे.....।'

वह अभी अपने स्टडी-रूम में बैठा इन्हीं बातों पर विचार कर रहा था कि ड्राइंगरूम की मजलिस समाप्त हुई और लोग उठकर चल दिये। सरस्वती उनको विदा कर अपने सोने के कमरे में जाने लगी, तो उसने स्टडीरूम में रोशनी जलती देखी। उसने समझा कि उसका पति रोशनी बंद करना भूल गया है। इस कारण वह रोशनी बंद करने के लिए उस कमरे में आई। उसने कमरे में पद्मदेव को अपनी कुर्सी पर ध्यानमग्न बैठे देखा तो पूछ लिया, "आप सोये नहीं?"

पद्मदेव का ध्यान भंग हुआ। उसने सामने सरस्वती को प्रसन्नवदन, अपने पूर्ण ओज में खड़े देखा तो उसके सब संशय निवारण हो गये। वह उन सब काले विचारों को, जो उसके विषय में, उसके मन में दो घंटे से उठ रहे थे, निकालकर पूछने लगा, "सरस्वती! आज नींद नहीं आ रही।"

"क्यों, स्वास्थ्य तो ठीक है?"

"वैसे तो मैं अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ, सबल और सतर्क पाता हूँ, परन्तु नींद नहीं आ रही।"

"नींद नहीं आई थी, तो मजलिस में बैठे रहते। मुझको झूठ तो न बोलना पड़ता। सब आपको उठकर आते देख पूछने लगे थे। मैंने कह दिया कि आपकी रुचि संगीत-नृत्य में नहीं है।"

पद्मदेव हँस पड़ा। एकाएक उसका ध्यान उन गानों की तरफ चला गया, जो उस मजलिस में गाये जा रहे थे। इससे उसका मुख गम्भीर हो गया। उसने सरस्वती से कहा, "बैठो, तुमने यह झूठ क्यों बोला?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती उसके समीप कुर्सी पर बैठते हुए कहने लगी, "न बोलती तो क्या कहती? आपका व्यवहार असभ्यतापूर्ण जो था। आपके घर में भारत की पांच चुनी हुई गायिका बैठी थीं और आप उनके गाने में ही उठकर चले आये।"

"परन्तु वे गा रही थीं क्या?"

सरस्वती हँस पड़ी। हँसकर बोली, "और आप क्या समझे थे?"

"मानव-जीवन की एक अति अनावश्यक, अप्रकटीय और निन्दनीय बात को हल्ला कर सुना रही थीं।"

सरस्वती ठहाका मारकर हँस पड़ी। हँसते हुए उसने कहा, "क्या हो गया है आपको? जीवन की एक अति रसमय कथा को आप अप्रकटीय और निन्दनीय मानते हैं?"

"ठीक यही बात, जब तुमने इस कमरे में प्रवेश किया था, मैं सोच रहा था। क्या हो गया है मेरी सरस्वती को? एक समय तो वह गाती थी—'रामचन्द्र कृपालु भज मन' और अब गाती है, **'साकी हमें भर-भर के दे मय हमारे जाम में, ऐसी पिला कि भूल जायें मस्ती इस दीदार की।"**

"चलिये सो जाइए! मैं समझती हूँ कि सीमा से अधिक दिमागी काम करने से आप में खुशकी भरती जाती है। चलिये, मैं कॉफी पिला देती हूँ। साथ ही कल से एक टिकिया भर मक्खन आपको अवश्य लेना होगा।"

अब हँसने की बारी पद्मदेव की थी। वह उठा और कहने लगा, "हाँ, कॉफी तो चाहिये, जिससे रात भर जाग सकूं।"

"क्या करेंगे जाग कर?"

"कदाचित् नियाज से उसके हमें मिल जाये बरकत प्यार की।"

सरस्वती इस बात से अति परेशान थी। वह पद्मदेव को बांह से पकड़कर, उसके सोने के कमरे में ले जाने लगी, तो पद्मदेव ने कहा, "आज मैं तुम्हारे कमरे में सोऊंगा।"

"वहाँ क्या है?"

"तो तुम नहीं जानतीं? वहाँ तुम जो हो।"

"नहीं; मैं आज आपके कमरे में सोऊंगी।"

पद्मदेव इस प्रस्ताव से प्रसन्न होकर अपने कमरे में चला गया। सरस्वती ने इलैक्ट्रिक जग में दूध का पाऊडर डाला, पानी डाला और कॉफी तैयार कर प्याली में डालकर चीनी मिला दी। कॉफी पीने को दे, उसने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया।

पद्मदेव समझ रहा था कि साधना का कथन सत्य था। वह कह रही थी कि उसने सरस्वती को बहुत छूट दे रखी है। आज उसने किंचित् मात्र ही इच्छा प्रकट की तो वह उसके साथ सोने को तैयार हो गई है। उसको अब सरस्वती और अपने में अन्तर पैदा होने में, अपना ही दोष प्रतीत होने लगा।

अगले दिन वह देरी से उठा। सरस्वती अभी भी सो रही थी। वह उठ शौचादि से निवृत्त हो, कॉफी तैयार करने लगा। कमरे का दरवाजा नौकर ने खटखटाया। पद्मदेव ने पूछा, "कौन है?"

"सुन्दर हूँ, बाबूजी!"

"क्या बात है?"

"कोई मिलने आये हैं?"

पद्मदेव ने घड़ी देखी, तो साढ़े सात बज रहे थे। उसने आवाज दे दी, "बैठाओ! अभी आता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय उससे मिलने वाला कोई नहीं आता था। यह उसके भ्रमण से लौटने का समय था। भ्रमण के पश्चात् वह अपने पठन-कार्य में लग जाता था। उससे मिलने वाले जानते थे कि इस समय वह किसी से नहीं मिलता। इसीसे ही पद्मदेव ने अनुमान लगा लिया कि कोई अपरिचित व्यक्ति है।

पद्मदेव ने 'नाईट गौन' पहना और दरवाजा खोल बाहर बरामदे में जा पहुँचा। प्रतीक्षा करने वाला संगीत-नृत्य विद्यालय का अध्यक्ष था। पद्मदेव उसको जानता था। वह यह भी जानता था कि रात बारह बजे तक वह यहाँ पर रहा था। अब प्रातःकाल ही आने पर, उसने विस्मय में पूछ लिया, ''पंडितजी! कैसे आना हुआ?''

पंडित हरिशरणानन्द पाण्डे, यह अध्यक्ष महोदय का नाम था, पद्मदेव के आने की आशा नहीं करता था। उसका विचार था कि सरस्वती आयेगी। इससे एक क्षण तो वह उत्तर न दे सका, फिर विचारकर बोला, ''सरस्वती देवीजी से काम है।''

''तो बैठिये! यदि बहुत जल्दी का काम हो तो उसको जगा दूँ?''

''नहीं, मैं प्रतीक्षा करता हूँ।''

पद्मदेव उसको वहीं बैठा छोड़, कॉफी बनाने के लिए अपने सोने के कमरे में जाने लगा, तो सुन्दर ड्राइंगरूम में, सोने के कमरे के द्वार पर, परेशान-सा खड़ा दिखाई दिया। पद्मदेव ने पूछ लिया, ''क्या बात है?''

''बहुत विस्यम की बात है बाबूजी! आज आप घूमने नहीं गये। इस कारण कोठी का फाटक अभी तक बंद है। पर यह पंडितजी कैसे भीतर आ गये हैं, समझ नहीं आ रहा।''

पद्मदेव ने हँसते हुए कहा, ''दीवार फांद कर आये प्रतीत होते हैं।''

सुन्दर को इससे सन्तोष हो गया, परन्तु पद्मदेव को अपने उत्तर से स्वयं को सन्तोष नहीं था। वह सोने के कमरे में गया। सरस्वती अभी सो रही थी। कॉफी का पानी उबलने लगा था। उसने पानी में कॉफी डाली और कोठी के पिछवाड़े से बाहर निकल, फाटक देखने चला गया। फाटक तो अभी तक बंद था। उसे देखकर वह विस्मय करता हुआ कुछ क्षण विचार करता रहा। उसके मन में पुनः वे काले विचार आने लगे, जो सरस्वती की गजल सुनकर रात को उत्पन्न हुए थे। एकाएक वह मन में कुछ निश्चय कर, सोने के कमरे में लौट आया और कॉफी प्यालों में डाल पलंग के पास रखी तिपाई पर रख, सरस्वती को जगाने लगा। जब सरस्वती ने आँखें खोलीं तो पद्मदेव बोला, ''रानी! कॉफी तैयार है।''

सरस्वती उठ बैठी और प्याला ले पीने लगी। एक सुरकी लगा उसने मुस्कराकर कहा, ''आज फिर मैं रानी हो गई हूँ? आज से पहले भी एक बार मैंने आपको कहा था कि यह नाम मुझको पसन्द नहीं।''

''ओह, भूल गया हूँ। सरस्वती! आज रात के बाद मुझको कुछ वैसा ही समझ आया, जो पहली रात के बाद अनुभव हुआ था। तब ही मैंने तुमको रानी कहा था।''

''मैं भी अपना यह नाम सुन, वैसा ही अनुभव करती हूँ, जैसा तब किया था। इसी से कह रही हूँ कि मुझे सरस्वती नाम ही पसंद है।''

इस समय एकाएक पद्मदेव ने कह दिया, ''पंडित हरिशरणानन्द बाहर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।''

इतना कह उसने सरस्वती के मुख पर देखा। वह रक्तविहीन हो गया था और कॉफी का प्याला, जो वह उठा, मुख में लगाने लगी थी, कांपने लगा था। इस भय से कि कहीं कॉफी गिर न जाये, उसने कांपते हाथ से प्याला तिपाई पर रख दिया और पद्मदेव के मुख पर देखने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव के मन में सब बात स्पष्ट हो गई। उसके मन में जो संदेह, फाटक बंद देखकर उत्पन्न हुआ था, उसकी पुष्टि हो गई थी। इससे उसको एक दिन पहले की बात भी स्मरण हो आई। एक सायंकाल जब कोठी में नृत्य-संगीत का उत्सव हुआ था तब अगले दिन भी बहुत देर तक सरस्वती के सोने का कमरे को भीतर से बंद करके सोई थी। आज उसको उस हुई विलक्षणता का स्मरण हो आया और उसका अर्थ भी समझ में आने लगा। उसने सरस्वती को चुप रहते देख कहा, "सरस्वती! पंडितज़ी को प्रतीक्षा करते बहुत देर हो गई है। मैं समझता हूँ कि उनसे मिल लो। उनका काम सुन लो और चौकीदार को कहकर, फाटक खुलवा, उनको छोड़ भी आओ।"

इतना कह पद्मदेव ने मुस्करा दिया। सरस्वती पलंग से उठी। उसने अपने कमरे में जाकर कपड़े पहने और बाहर निकल आई। पद्मदेव अपने स्टडीरूम में चला गया और वहाँ जाकर एक पुस्तक निकालकर पढ़ने का यत्न करने लगा।

: 6 :

पद्मदेव का मन पढ़ने में लग नहीं रहा था। इस पर भी वह अपने आप को धोखा देने के लिए पढ़ने का बहाना कर रहा था। वह समझ रहा था कि बेचैनी प्रकट करने से नौकरों में बात फैल जायेगी, इस कारण वह बाहरी शान्ति प्रकट कर रहा था। वह समझता था कि नौकरों के संदेह को शान्त कर देगा। उसको विदित नहीं था कि सुन्दर ने, पद्मदेव को कहने से पहले, चौकीदार से पूछा था या नहीं कि द्वार के बंद रहते पंडितजी कैसे भीतर आ गए?

सुन्दर ने चौकीदार से पूछा था। चौकीदार को भी विस्मय हुआ था। अतः वह स्वयं पंडितजी से पूछने चला आया। अब पंडितजी को पता चल गया कि वह एक भारी भूल कर बैठे हैं। वास्तव में वह समझते थे कि पद्मदेव भ्रमण को चला गया होगा और फाटक खुला होगा। फाटक की एक चाबी पद्मदेव के पास भी रहती थी।

चौकीदार के पूछने पर कि वह किधर से भीतर आये हैं, वह अपनी भूल समझ गया। इस पर भी उसने बात बनाने के लिए कह दिया, "हवा के मार्ग से?"

चौकीदार कुछ और पूछने वाला था कि सुन्दर बाहर आया और चौकीदार से बोला, "बाबू जी कहते हैं कि पंडितजी दीवार फांदकर आये हैं।"

चौकीदार को इस पर संतोष नहीं हुआ। इस पर भी दोनों बाहर चले गए। चौकीदार ने प्रश्न-भरी दृष्टि से सुन्दर की ओर देखा तो सुन्दर ने कह दिया, "पंडितजी मालकिन के कमरे में सोये थे। मालकिन रात बाबू जी के कमरे में सोई हैं। बाबूजी जानते हैं कि पंडितजी रात यहीं रहे हैं इसलिए ही उन्होंने हँसी में कह दिया है कि दीवार फांदकर आए हैं।"

इससे बात कुछ सीमा तक बन गई। दोनों बुद्धि से सन्तुष्ट, पर मन से असन्तुष्ट वहाँ बैठ तम्बाकू चबाने लगे। चौकीदार अवध का रहने वाला था और तम्बाकू चबाने का स्वभाव रखता था। सुन्दर पंजाब जिला कांगड़े का रहने वाला था, पर उसे लखनऊ में आकर तम्बाकू चबाने की आदत पड़ गई थी।

वे अभी तम्बाकू चबाते हुए अपने मन में अपने संशयों को हजम करने का यत्न कर रहे थे कि सरस्वती कोठी से निकली। उसने बाहर जाने के कपड़े पहने हुए थे। वह मोटर-गैराज में गई। मोटर स्टार्ट कर ले आई और पंडितजी को मोटर में बैठाकर बाहर निकल गई।

सरस्वती ने मार्ग में पंडितजी से कह दिया, "आप ने एक महान् भूल कर दी है।"

"हाँ! पर मुझको क्या पता था कि आज प्रोफेसर साहब भ्रमण को गये ही नहीं और कोठी का फाटक खुला नहीं। यूं तो रात तुम लौटकर नहीं आईं, तो मैं समझ गया था कि तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रोफेसर साहब के शयनागार में जा पहुँची हो। मैं प्रातः चार बजे ही जाग पड़ा था, परन्तु तुम आई ही नहीं तो ऊब कर मैं बाहर बरामदे में जा बैठा। सुन्दर आया तो मैंने कह दिया कि तुमसे मिलने आया हूँ, परन्तु बाहर आये पद्मदेव। तब से ही मैं विचार कर रहा था कि क्या बहाना लगाऊंगा?''

''बहाना लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वे सब कुछ जान गये हैं। मैं विचार कर रही हूँ कि अब घर लौटकर न जाऊं। बस अपना नया जीवन आरम्भ कर दूँ।''

Gen... Gurukula Kangri (University) Haridwar 167911

''कैसा जीवन?''

''एक रक्कासा का।''

''यह कैसे हो सकेगा?''

''मैं अपने खर्च के लिये पैदा कर लूँगी। क्या विचार है आपका? आपके विद्यालय से डेढ़-सौ वेतन तो पाती ही हूँ। उसका बांटना बन्द कर दूँगी। इससे अपना नया जीवन आरम्भ करूंगी। इसके अतिरिक्त मैं अपनी कला को मूल्य पर बेचूंगी। चार-पांच सौ रुपया महीना पैदा करना कोई कठिन बात नहीं।''

पंडित हरिशरणानन्द गम्भीर विचार में चुप बैठा था। उसे चुप देख सरस्वती ने कह दिया, ''क्यों, आपको किस बात की चिन्ता लग गई है?''

''चिन्ता नहीं प्रिये! फिर भी मैं विचार करता हूँ कि एक-दो मित्रों से बातचीत कर राय ले ली जाये तो ठीक नहीं क्या?''

''इसमें विचार करने की क्या बात है? मेरा आपसे सम्बन्ध वही रहेगा, जो पिछले कई मास से है। हाँ, आपको अब मैं आर्थिक सहायता नहीं दे सकूंगी, परन्तु आप भी तो कुछ पैदा कर ही लेंगे।''

''मेरी बात छोड़ो। तुम क्या पद्मदेव से क्षमा माँग, उनको मना नहीं सकतीं?''

''मना तो सकती हूँ, परन्तु फिर आपसे तथा अन्य सब योजनाओं से छुट्टी करनी पड़ेगी। मेरी दुर्बलता देख अब वे मुझ पर शासन करेंगे। मुझको उनकी बात माननी पड़ेगी। साथ ही आज की इस घटना के बाद वह आपको और अन्य कला-प्रेमियों को कोठी में पग भी नहीं धरने देंगे। मुझको भी कहीं जाने से मना कर देंगे। मेरे लिए यह घाटे का सौदा रहेगा।''

पंडितजी गणेशगंज के एक मकान में रहते थे। वे विवाहित थे, परन्तु अपनी पत्नी को गांव में ही छोड़ आये थे। यहाँ गाने-बजाने का काम कर दो-तीन सौ रुपया मासिक पैदा कर लिया करते थे। इनका मुख्य कार्य था राजा-रईसों की पत्नियों और लड़कियों को नृत्य संगीत सिखाना। उनके मन में भय लग रहा था कि कहीं सरस्वती के साथ ही वह भी बदनाम हो गये, तो उनकी जीविका जाती रहेगी। पहले तो वह इस बदनामी से नहीं डरते थे, क्योंकि वह जानते थे कि जब भी उन्हें रुपये की आवश्यकता होगी, सरस्वती दे देगी। अब सरस्वती पहले की भांति उनकी सहायता नहीं कर सकेगी, इस कारण उन्हें सरस्वती का घर छोड़ना रुचिकर नहीं था।

गणेशगंज में पंडितजी के मकान के पास मोटर खड़ी हुई तो पंडितजी उतरे नहीं। उन्होंने सरस्वती से पूछ लिया, ''अब क्या विचार है?''

''आपके पास कुछ रुपये हैं? मैं अपना पर्स लाना भूल गई हूँ।''

''मेरा कहना है कि अभी तुम कोठी में ही लौट जाओ। देखो, यदि वहाँ का जीवन सहने योग्य हो तो चलने दो। यदि उस जीवन में विषमता दिखाई दे तो फिर जीवन चालू करने के लिए साजो-सामान लेकर आना चाहिए।''

''नहीं पंडितजी! आप आराम कीजिए। मैं स्वयं अपने विषय में विचार कर लूँगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस अवस्था में मेरा कहना है कि अभी मेरे घर में आओ। स्नानादि करो। अल्पाहार का प्रबन्ध कर देता हूँ। तब तक चित्त भी स्थिर हो जायगा, शान्त-चित्त से विचार कर लेना।"

"जी नहीं! अभी एक घंटे में ही वह मेरी खोज में निकल पड़ेंगे और सबसे पहले आपके मान पर ही आएँगे। मैं इस प्रकार पकड़ी नहीं जाना चाहती। आप उतरिये। मैं अपने विषय में विचार कर लूँगी।"

"तो ठहरो! मैं कुछ तो दे ही सकता हूँ।" इतना कह पंडितजी, मकान का ताला खोल ऊपर चढ़ गये। वे पचास रुपये के नोट ले आये और बोले, "अभी तो इतने ही दे सकता हूँ। हाँ, ठहरने के लिए मकान का प्रबन्ध कैसे होगा?"

"अभी मैं रेलवे स्टेशन पर वेटिंग-रूम में जा रही हूँ। वहाँ पर ही स्नानादि से अवकाश पाकर मैं विचार करूंगी कि मुझे क्या करना है।"

"तो चलो मैं तुम्हारे साथ ही चलता हूँ और देखता हूँ कि मैं क्या सहायता कर सकता हूँ।"

सरस्वती पंडितजी को लेकर रेल के स्टेशन पर जा पहुँची। वहाँ दोनों फर्स्ट क्लास के वेटिंग-रूम में चले गये। सरस्वती ने शौचादि से निवृत्त हो, मुंह-हाथ धोया और दोनों रिफ्रेशमेन्ट रूम में जा बैठे। वहाँ चाय, मक्खन, अण्डे, टोस्ट आदि का ऑर्डर दे दिया। अब दोनों विचार करने लगे।

सरस्वती ने कहा, "मकान का प्रबन्ध तो करना ही है। मेरे विचार में एक सौ रुपया महीना पर कोई कोठी मिल जायेगी। यह आप ही कर दीजिए। मैं परसों आपको दस बजे यहीं वेटिंग रूम में मिलूँगी।

"मैं मोटर को यहीं रेलवे स्टेशन पर छोड़े जाती हूँ। उसकी चाबी मैं आपको दे देती हूँ। यह चाबी आप उनके पास ऐसे ढंग से पहुँचायें, जिससे वे समझें कि यह चाबी मैंने ही भेजी है और आपका इसमें कोई हाथ नहीं है।"

पंडितजी ने चाबी ले ली और कहा, "यह प्रबन्ध मैं कर दूँगा। साथ ही परसों तक कोई रहने का स्थान देख छोड़ूंगा।"

इसके पश्चात् सरस्वती ने कानपुर का टिकट लिया और गाड़ी में जा बैठी। गाड़ी चल दी तो पंडितजी चाबी भेजने की योजना बनाते हुए स्टेशन से बाहर चले आये।

सरस्वती ने अपने जीवन को आरम्भ करने के लिए योजना बना ली थी। वह समझती थी कि जहाँ तक धन का सम्बन्ध है, को यह कहने का अवसर नहीं होना चाहिए कि वह उसका कुछ चुरा कर लाई है। उसके पर्स में अभी दो सौ रुपये से ऊपर रखे थे, परन्तु वह उन्हें भी नहीं लाई थी। मोटर भी वापिस करने का प्रबन्ध उसने कर दिया था। केवल पहनने के कपड़े और दो-चार भूषण ही उसके पास थे, जो वह लेकर कोठी से निकली थी। भूषणों में से कंठी और कर्णफूल तो पद्मदेव जी के दिये हुए थे, परन्तु चूड़ियाँ और अंगूठी उसके पिता के घर की थीं।

रेल में बैठे-बैठे उसने योजना बना ली थी। वह अंगूठी कानपुर में जाकर बेच देना चाहती थी। उसमें एक बड़ा हीरा लगा था, इसलिए वह उससे दो-तीन हजार रुपये की प्राप्ति का विचार रखती थी। इससे वह कुछ काल के लिए कार्य चला सकेगी। पश्चात् वह लखनऊ में काम कर आय करने का यत्न करेगी।

साथ ही वह यह विचार कर रही थी कि लखनऊ में रहते हुए पद्मदेव यत्न करेगा कि उसको अपने घर ले आये। ऐसी अवस्था में वह क्या करेगी? इस विषय में वह निश्चय नहीं कर सकी। एक बात उसके मन में स्पष्ट थी कि वह शीघ्र ही ख्याति प्राप्त कर अन्तर्राष्ट्रीय कलाकार बनने वाली है। ऐसा बनने के लिए उसको बच्चे इत्यादि उत्पन्न करने के झगड़े से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बचा रहना चाहिए और स्वतंत्र जीवन का अवलम्बन करना चाहिए। इसके लिए उसे पद्मदेव से सम्बन्ध-विच्छेद करना ही पड़ेगा।

वह कानपुर में पहुँची। एक टैक्सी कर वह एक जौहरी की दुकान पर चली गई और अंगूठी बेचने के लिए उसने सामने रख दी। जौहरी ने अंगूठी देखी तथा कह दिया, "आपको बिक्री का सर्टिफिकेट देना होगा।"

"दे दूँगी।"

"उस पर साक्षी के हस्ताक्षर भी होंगे।"

"किसी को भी बुलाकर करवा लीजियेगा।"

"अपना पता लिखना होगा।"

"लिखा दूँगी।"

"इसका बिक्री का दाम चार हजार रुपये है। मैं आपको ढाई हजार दे सकूंगा। शेष मेरी इसमें कमीशन होगी।"

सरस्वती ने अंगूठी पहनते हुए कहा, "दाम बहुत कम है। कमीशन बहुत अधिक है।"

जौहरी ध्यान से सरस्वती के मुख पर देख रहा था। सरस्वती ने शीघ्र ही यह सौदा न करने का बहाना करते हुए, उठ चले आने का अभिनय किया।

जौहरी ने कह दिया, "आपने यह कितने की खरीदी थी?"

"देखिए साहब!" सरस्वती ने घूमकर खड़े-खड़े ही जौहरी को कह दिया, "मैंने नहीं खरीदी थी। मेरे पिताजी ने लाहौर में खरीदी थी। यह चार हजार आठ सौ रुपये में ली थी। मैं समझती हूँ कि पांच सौ रुपया कमीशन पर्याप्त है।"

"अच्छा तीन हजार तक दे सकूंगा।"

"जी नहीं, यह चार हजार से कम में नहीं जायेगी।"

इस प्रकार लेन-दे न होने लगी और अन्त में तीन हजार पांच सौ में सौदा हो गया। जौहरी ने सर्टिफिकेट लिखने के लिए पूछा, "आप लिखेंगी या मैं लिख दूँ और आप हस्ताक्षर कर देंगी?"

सरस्वती ने कहा, "मैं लिख देती हूँ। आप कागज-कलम मंगवाइए।"'

सरस्वती ने सर्टिफिकेट अंग्रेजी में लिख दिया, "मैं सरस्वती, पत्नी प्रोफेसर पद्मदेव, 320 चर्च रोड लखनऊ, एक अंगूठी, जिसमें हीरा लगा हुआ है, श्रीमान् झुनझुनवाला जौहरी, कानपुर के पास तीन हजार पांच सौ में बेच रही हूँ।

"यह अंगूठी मुझको मेरे विवाह के समय मेरे पिता श्री नीलकंठ सप्रू एडवोकेट पंजाब हाईकोर्ट ने दी थी। यह इस समय मेरी सम्पत्ति है और मैं इसको बेचने का पूर्ण अधिकार रखती हूँ।"

नीचे उसने हस्ताक्षर कर दिए और तारीख लिख दी। जौहरी ने सौ-सौ के नोट निकालकर रकम गिन दी। सरस्वती वहाँ से रॉयल होटल में ठहरने के लिए चली गई।

: 7 :

पद्मदेव का ध्यान टूटा, जब सुन्दर पूछने आया, "प्रातः का अल्पाहार यहाँ ही लाऊं अथवा डाइनिंग हॉल में चलेंगे?"

"यहाँ ही ले आओ।" पद्मदेव ने अभी भी यही यत्न किया था कि वह प्रकट करे कि कोई सदा से भिन्न बात नहीं हुई।

आया आई और बोली, "सुधी को डॉक्टर के पास ले जाना है। उसको आज दस्त आ रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव ने अपनी मेज की दराज में से पांच रुपये का नोट निकाला और आया को देते हुए कहा, "तांगे में ले जाओ और दिखाकर दवा ले आओ।"

वह गई तो बैरा अल्पाहार ले आया और पूछने लगा, "मालकिन के आने का समाचार हो तो अभी रसोईघर में ठहरूं?"

"कह नहीं सकता। क्या कुछ कह गई हैं?"

"नहीं; आना होता तो कहकर जाती हैं; परन्तु आज कुछ नहीं कह गई।"

"तो नहीं आएँगी।"

"इस समय दस बज रहे हैं।"

"ठीक है, नहीं आएँगी। तुम आगे का प्रबन्ध करो।"

पद्मदेव अत्यंत परेशान था। यूं तो पहले भी सरस्वती कई बार अनुपस्थित होती रहती थी, परन्तु आज की परिस्थिति में वह विचार कर रहा था कि कहीं जाकर छुप रहने से लेकर आत्महत्या कर लेने तक भी हो सकता है। इस कारण वह बहुत चिन्तित था। फिर वह अपने मन में यह निश्चय किये हुए था कि वह अपने मुख पर चिन्ता अथवा भय के चिन्ह अंकित नहीं होने देगा।

वह अभी अल्पाहार ले ही रहा था कि सुन्दर आया और बोला, "आपसे संगीत विद्यालय का एक विद्यार्थी मिलने आया है।"

"मुझसे अथवा मालकिन से?"

"कहता है आपसे काम है।"

"तो उसे यहाँ ही ले आओ।"

सुन्दर उस युवक को ले आया। वह नमस्कार कर खड़ा हो गया। पद्मदेव ने समझ लिया कि सरस्वती ने उसको भेजा है। वह सुन्दर से कहने लगा, "तुम बाहर ठहरो।"

सुन्दर गया तो विद्यार्थी ने मोटर की चाबी मेज पर रखते हुए कहा, "बहनजी ने यह भेजी है और कहा है कि मोटर चार बाग रेलवे स्टेशन के बाहर खड़ी है, मंगवा लें।"

युवक आशा करता था कि इतने मात्र से पद्मदेव संतुष्ट नहीं होगा और वह आगे कुछ और जानने का यत्न करेगा।

पद्मदेव ने कुछ विचार कर पूछ लिया, "कहाँ मिली थीं वह तुमको?"

स्टेशन पर अपने एक सम्बन्धी को, जो प्रतापगढ़ जा रहे थे, छोड़कर मैं बाहर निकला तो बहनजी वहाँ खड़ी थीं। मुझको देख कहने लगीं कि मेरा एक काम कर दो।

"मैंने स्वीकार किया तो यह चाबी दे उन्होंने कहा, 'हमारे घर पर बाबूजी को दे देना और कहना मोटर यहाँ खड़ी है।'

"मैंने पूछा कि आप कहाँ जा रही हैं? तो कहने लगीं, 'आज एक सभा है। मुझको वहाँ देरी हो जायेगी। मोटर की आपको आवश्यकता है। आप स्टेशन आकर ले जायेंगे।"

"उनके साथ कौन-कौन थे?"

"वह अकेली थीं।"

"पंडित हरिशरणानन्द उस सभा में नहीं जा रहे क्या?"

"जी! यह मुझको पता नहीं।"

पद्मदेव ने इस विषय में और अधिक बातचीत करनी उचित न समझ उसको पूछ लिया, "आप चाय पीएँगे?"

"जी नहीं! मैंने अभी स्नान करना है।"

एक बात तो स्पष्ट हो गई थी कि सरस्वती शीघ्र लौटने का विचार नहीं रखती। उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके कांपते हुए हाथों और रक्तविहीन मुख का स्मरण हो आया, जो उसने, पाण्डे की प्रतीक्षा करने के समाचार देने पर, देखा था।

वह विचार कर रहा था कि अब क्या करे? उसने स्टेशन से गाड़ी लाने का निश्चय तो कर लिया। साथ ही उसने यह विचार कर लिया कि वह उसको ढूंढेगा नहीं, न ही उसको लौट आने से मना करेगा।

अल्पाहार समाप्त किया और कपड़े पहन टैक्सी स्टैंड की ओर चल पड़ा। रेलवे स्टेशन पर पहुँच, उसने टैक्सी छोड़ दी और स्वयं स्टेशन के भीतर घूमने लगा। वह तीनों वेटिंग रूमों में देखने गया। सरस्वती वहाँ नहीं थी। इधर-उधर देखकर, वह अपनी मोटर से कोठी को लौट आया।

अभी तक सरस्वती नहीं आई थी। वह सुधी को देखने के लिए गया। वह खेल रहा था। तत्पश्चात् वह अपने पढ़ने के कमरे में चला गया। दिन का भोजन करने का समय हुआ तो वह भोजन करने चला आया। तीसरे प्रहर वह सुधीर को लेकर भ्रमण करने निकल गया। सायंकाल लौटा, तो सरस्वती अभी भी नहीं आई थी। बाहर से वह अपने मुख पर शान्ति बनाये हुए था, परन्तु भीतर ही भीतर उसका मन बैठता जा रहा था। उसके मन में भांति-भांति की आशंकाएँ उठ रही थीं।

सायंकाल का भोजन कर वह पढ़ने के कमरे में चला गया। वहाँ जाने का अभिप्राय केवल इतना था कि नौकर यह न समझ लें कि कोई अनहोनी बात हो गई है। अब उसके मन में विश्वास होता जा रहा था कि सरस्वती घर छोड़ गई है। रात के दस बजे सुन्दर आया और पूछने लगा, "बाबूजी! चौकीदार पूछ रहा है कि फाटक बन्द कर दूँ अथवा न?"

"बन्द कर दो। मालकिन आज नहीं आ रहीं।"

सुन्दर मुख देखता रह गया। पद्मदेव उसके मुख की मुद्रा देखकर समझ गया कि उस द्वारा खड़ा किया पर्दा गिर रहा है और वास्तविकता नौकरों पर प्रकट हो रही है। सुन्दर खड़ा था। पद्मदेव ने उसके मुख पर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा तो सुन्दर ने हाथ जोड़कर कह दिया, "बाबूजी, क्षमा करें, सब नौकर यह अनुमान लगा रहे हैं कि मालकिन भाग गई हैं।"

"कैसे?"

"जैसे औरतें गैर मर्दों के साथ भागती हैं।"

पद्मदेव ने विचार किया कि इनको डांटने के स्थान पर समझाना चाहिए। अतः उसने कह दिया, "हाँ! आज विलक्षणता तो है। कदाचित् नौकर ठीक समझते हैं, परन्तु उनका इस बात से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। वे मेरे नौकर हैं। जब तक उनको वेतन मिलता है, उनको अपनी जबान दांतों तले रखनी चाहिए।"

"ठीक है बाबूजी! तीसरे प्रहर मैं पार्क से जा रहा था कि पाण्डेजी मिल गये। उन्होंने मुझसे पूछा कि मालकिन लौटी हैं अथवा नहीं? मैंने कह दिया घर पर हैं।

"इस पर वह मुस्कराकर कहने लगे, 'प्रोफेसर साहब को मेरी नमस्कार कहना।' वह बड़ा धूर्त है। अवश्य मालकिन उसके ही साथ हैं।"

"सुन्दर! इस विषय में न तो तुम लोगों को चिन्ता करने की आवश्यकता है और न ही झूठ बोलने की। जो कुछ तुम जानते हो, सत्य-सत्य कहना चाहिए। सुनो, तुम्हारे झूठ बोलने से मुझको लाभ नहीं है। तुम व्यर्थ में ही पाप के भागी बनोगे। तुम लोगों को झूठ नहीं बोलना चाहिए। जाओ, दरवाजा बन्द करके सो जाओ।"

जब सुन्दर चला गया तो पद्मदेव सरस्वती के कमरे में गया। वह यह जानना चाहता था कि वह अपना पर्स भी ले गई है अथवा नहीं। पर्स सोने के कमरे में, पलंग पर पड़ा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसने उसको खोलकर देखा। उसमें दो सौ रुपया रखा था। उसने सब-के-सब सन्दूक वहाँ ठीक पड़े हुए देखे। चाबियाँ भी पलंग पर पड़ी थीं।

उसको यह विदित था कि पण्डित हरिशरणानन्द के साथ जाने से पहले, वह अपने कमरे में कपड़े बदलने आई थी। अब उसको समझ में आ रहा था कि उसके जाने का विचार एकाएक हुआ है। कदाचित् कपड़े पहनने के बाद ही निश्चय हुआ है। इस कारण वह पर्स और चाबियाँ जानबूझकर ही छोड़ गई है।

अगले दिन वह उठकर भ्रमण करने के लिये चला गया। वहाँ से लौटकर उसने सरस्वती के कमरे में ताला लगा दिया। आज वह सुधीर को लेकर कुछ देर लॉन में खेलता रहा, पश्चात् उसको आया को देकर, अपने कमरे में आ सुदर्शन को चिट्ठी लिखने बैठ गया।

उसने लिखा–"प्रिये सुदर्शनजी!

"आपका पत्र यथा समय मिल गया था। उत्तर उसी समय ही लिख दिया था। वह उत्तर भी इसी पत्र के साथ भेज रहा हूँ।

"मेरी इच्छा थी कि सरस्वती को आपका पत्र और अपना उत्तर दिखाकर आपको भेजूंगा, परन्तु उस समय वह यहाँ थी ही नहीं और उसके बाद निम्न घटना घटी और यह पत्र लिखना पड़ा है।"

यहाँ पद्मदेव ने रात का संगीत समारोह और फिर सरस्वती से वार्तालाप लिख दिया। तत्पश्चात् उसने लिखा कि कैसे उसने रात सरस्वती के कमरे में सोने की बात कही तो वह उसके ही कमरे में सोने के लिए तैयार हो गई। इसके आगे अगले दिन की घटना का वर्णन कर, सरस्वती के न लौटने की बात लिख दी।

अन्त में उसने लिखा–"रात को वह नहीं आई। अब आधा घण्टा भर सुधीर को बाहर खुली हवा में सैर कराकर, मैं अपने कमरे में बैठा तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ।

"मैं समझता हूँ कि साधना हम दोनों से अधिक समझदार और मनोविज्ञान-विज्ञ है। साधना को यह पत्र सुना देना।

"मुझको आशा नहीं कि वह लौटे। कम से कम निकट भविष्य में कोई आशा नहीं। मैं उसको ढूंढने के लिए जाना नहीं चाहता। इस पर भी मेरा निश्चय है कि कभी वह लौट सकी, तो उसके लिए घर का द्वार बन्द न होगा।

"सुधीर खुश है। उसको माँ के बिना रहने का अभ्यास है। मैं एक सप्ताह तक लखनऊ में रहने का विचार रखता हूँ। इसके पश्चात् मैं सुधीर को लेकर, लाहौर आपके पास आऊंगा। आशा है साधना सुधीर को अपने पास रखने के लिए राजी हो जायेगी। फिर निश्चिन्त हो मैं इंग्लैण्ड जा सकूंगा।"

इस पत्र का उत्तर तार द्वारा आया–"हम दोनों आ रहे हैं। तब तक पता करो वह कहाँ है?"

अगले दिन सुदर्शन और साधना आ पहुँचे। इस बार उनके साथ उनका लड़का मोहन भी था। पद्मदेव उनको लेने के लिए स्टेशन पर गया। सुदर्शन ने गाड़ी से उतरते ही पूछा, "क्यों, कोई पता चला?"

"हाँ, उसने राजा साहब कछवा की कोठी दो सौ रुपये महीना किराये पर ले ली है। वहाँ वह संगीत-नृत्य का स्कूल खोलने का विचार कर रही है।"

"तो चलो, पहले तुम्हारे घर चलें, फिर हम सरस्वती के घर चलेंगे।"

"सुदर्शन! उसकी मिन्नत करने जाना तो कार्य की सिद्धि नहीं कर सकेगा।"

"घर चलकर विचार करेंगे।"

सब घर आए तो स्नानादि से अवकाश पा, भोजन करने लगे। भोजनोपरान्त योजना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनने लगी। साधना ने पद्मदेव का समर्थन किया। उसने कहा, "मैं इतनी हलबुली में यहाँ आने में कोई लाभ नहीं समझती थी, परन्तु इनका कहना है कि सुलह कराने का यत्न करना चाहिए।"

पद्मदेव का कहना था, "हमारा परस्पर कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं हुआ। एक शब्द भी न कहा गया है, न ही सुना गया है। यह तो मतभेद कहा जा सकता है। मुझको यह विश्वास हो गया है कि वह सती-साधवी नहीं रही। उसने अपना प्रेम-प्रसाद अथवा जो कुछ भी कहो, मेरे अतिरिक्त लोगों में बांटा है। इस पर भी मैंने उसको घर से निकाला नहीं; न ही मैंने अपने घर के दरवाजे उसके लिए बंद किये हैं।

"मेरे ज्ञान के बिना उसने राजा साहब की कोठी भी भाड़े पर ले ली है।"

'देखो पद्म!" सुदर्शन ने कहा, "उसकी मिन्नत-खुशामद करने का मेरा अभिप्राय नहीं है। मैं उसके मन की बात जानने और अपने मन की बात सुनाने के लिये उससे मिलना चाहता हूँ। कम-से-कम इससे एक पतित स्त्री के मन का ज्ञान तो होगा।"

पद्मदेव चुप कर रहा। इस पर सुदर्शन ने पुनः कहा, "हम समझते हैं कि हम तुम्हारी तरफ से किसी प्रकार का आश्वासन अथवा शर्त लेकर नहीं जा रहे हैं। ठीक है न?"

: 8 :

सुदर्शन और साधना को कोठी में प्रवेश करते देख सरस्वती अवाक् खड़ी रह गई। उस समय वह कुछ फर्नीचर, जो अभी-अभी आया था, ठीक ढंग से लगवा रही थी।

सरस्वती नहीं समझ सकी कि वे क्यों आये हैं और क्या कहने वाले हैं। यदि पद्मदेव उसको ले जाने आ जाता, तो वह उससे निपट लेती, परन्तु वह इनके सम्मुख निश्चय नहीं कर सकी थी कि क्या कहेगी अथवा क्या बहाना लगायेगी।

वह बरामदे में खड़ी थी। साधना और सुदर्शन उसके सामने आ खड़े हुए।

"सरस्वती बहन! नमस्ते।" साधना ने कह दिया।

"आप यहाँ किसलिये आये हैं? मैंने आपको यहाँ आने का कोई निमंत्रण नहीं भेजा।"

"ओह! तो भाभी! पुलिस बुलाकर 'ट्रैस-पास' में पकड़वा दो।"

"ट्रैस-पास में तो नहीं।" सरस्वती ने अपने को बहुत संयम में रखते हुए कहा, "मैं यह कह रही हूँ कि जिस मतलब के लिये आप आये हैं, मैं उसके लिये तैयार नहीं। उस विषय पर विचार करने के लिये मेरा मन तथा मस्तिष्क अभी साफ नहीं।"

"तो बैठने को भी नहीं कहोगी? साधारण शिष्टाचार को तो मानती हो? उसको जानने के लिये भी अभी मस्तिष्क साफ नहीं क्या?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। आइये बैठिये। अब तो चाय का समय हो रहा है। अभी आ जाती है।"

"हुर्रे! पुरानी सरस्वती भाभी इस कलेवर में लौट रही है।"

सरस्वती केवल मुस्करा दी और उनको लेकर ड्राइंगरूम में चली गई। वहाँ कुछ सामान लग गया था, कुछ अभी लगने का था। तीनों वहाँ बैठ गये।

अब सरस्वती ने पूछ लिया, "कदाचित् आप यह देखने के लिए आये हैं कि सरस्वती बिना किसी पुरुष की सहायता के रो तो नहीं रही।"

सुदर्शन और साधना हँस पड़े। साधना का कहना था, "जहाँ तक मुझको स्मरण है, मैंने सरस्वती बहन को कभी रोते नहीं देखा। न ही अब उसको रोते देखने की आशा थी। मैं समझती थी कि सरस्वती बैठी होगी। उसके मित्र उसकी सहायता के लिए आये होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सरस्वती की हँसी के फव्वारे छूट रहे होंगे। वह उनको मूर्ख और अलपज्ञ कहकर, उनको बता रही होगी कि उसको उनकी सहायता की आवश्यकता नहीं।''

''यहाँ तो कोई सहायता करने आया नहीं। मैं अकेली ही सब कुछ करा रही हूँ। अभी तक एक नौकर मिला है। उसकी बीवी भी साथ है। वे बेचारे दिन भर काम कर, थककर चले गये हैं। इससे भाड़े के कुली से सामान लगवा रही हूँ।''

''परन्तु वे सब लोग, जिन्होंने इतनी बड़ी कोठी किराये पर ले दी है, आये क्यों नहीं? कम-से-कम वे अपने नौकर तो तुम्हारी मदद के लिए भेज सकते थे।''

''मैंने किसी को इस काम के लिए कहा नहीं।''

''परन्तु मित्र तो बिना कहे आ जाया करते हैं। अब देखो न, मैंने समझा कि पद्मदेव को कुछ सहायता की आवश्यकता है, तो लाहौर से बिना बुलाये चला आया हूँ।''

''क्या सहायता की आवश्यकता समझी है आपने?''

''हमारा विचार था कि सुधीर उदास हो रहा होगा। उसको कहीं माँ का अभाव अनुभव न होने लगे। इससे हम दोनों यहाँ चले आये हैं। आकर देखा है कि वह किसी भी स्त्री के, उसके समीप जाने पर बिलबिलाकर उसकी ओर देखने लगता है। हम समझे हैं कि वह तुमको ढूंढ रहा है।''

''मैं जब 'सैटल' हो जाऊंगी, तो उसको ले आऊंगी।''

''तब वह पिता का अभाव अनुभव करने लगेगा।''

''एक वर्ष के छोटे बच्चे के लिए माँ ही सब कुछ नहीं होती क्या?''

''पर मैं पूछती हूँ,'' साधना ने सीधा प्रश्न कर दिया, ''इस सब आयोजन का अभिप्राय क्या है?''

''यह बताने के लिए मैं अभी तैयार नहीं। घर से चले आने का कार्य तो एक प्रतिक्रिया है, किसी विशेष परिस्थिति की, परन्तु मैं उस परिस्थिति तथा उसकी प्रतिक्रिया में कारण अभी समझ नहीं सकी। अभी आराम से बैठकर अपने मनोभावों की विवेचना का समय ही नहीं मिला।''

''ठीक है तुम परिस्थिति का कारण नहीं जानतीं, परन्तु परिस्थिति को तो समझती हो। फिर उस परिस्थिति की प्रतिक्रिया के परिणाम को तो देखती हो?''

''हाँ! यह तो है, परन्तु इनका कारण जाने बिना परिणामों का मूल्यांकन सम्भव नहीं।''

''कदाचित् हम इसमें तुम्हारी सहायता कर सकें?'' सुदर्शन ने कहा।

''आप इस विषय में मेरी सहायता करने आये हैं?''

''हाँ, केवल मित्र के नाते।''

''यही तो मैंने भी कहा है कि मेरा मस्तिष्क अभी इस विषय पर स्पष्ट नहीं।''

''उसमें स्पष्टता लाने के लिए ही तो प्रयत्न कर रहे हैं।''

''मैं समझती हूँ कि उसके लिए अभी उपयुक्त समय नहीं।''

''कार्य तो हो गया,'' साधना ने कहा—''उसके परिणाम भी निकलने लगे और सरस्वती जी के पास उस कार्य में कारण जानने के लिये अवकाश नहीं।''

''यदि कहीं परिणाम भयंकर हुए तो?'' सुदर्शन ने कह दिया।

''क्यों?'' अभी तक तो उन परिणामों में भयंकरता दृष्टिगोचर हुई नहीं। देखो, साधना बहन! यह अपने-अपने दृष्टिकोण पर भी निर्भर है कि कोई वस्तु भयंकर लगती है अथवा मधुर। मैं अपने को वहाँ से अधिक सुखी और प्रसन्न पाती हूँ। यहाँ मुझको अपने जीवन कार्य में लग जाने के लिए अधिक स्वतंत्रता और अवसर रहेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारा जीवन कार्य क्या है?"

इस समय एक मोटर गाड़ी कोठी के अन्दर आ पहुँची। गाड़ी रुकी तो एक व्यक्ति उसमें से बाहर निकला। सरस्वती गाड़ी की आवाज सुन, उठकर बाहर आ, उस व्यक्ति का स्वागत करने लगी। वह उसको लेकर भीतर ड्राइंगरूम में आ गई। उनको बैठाकर, उसने सुदर्शन आदि से परिचय करा दिया—"भाई साहब! ये हैं राजा साहब भद्री! मेरे यहाँ पर खुलने वाले संगीत विद्यालय के एक पैट्रन हैं।

"और राजा साहब! ये हैं डी०ए०वी० कॉलेज लाहौर में प्रोफेसर, पंडित सुदर्शनजी तथा उनकी धर्मपत्नी। श्री पद्मदेव के आप मित्र हैं।"

राजा साहब ने हाथ जोड़कर नमस्कार कही और कहने लगे, "आप आ गये, बहुत ठीक किया है। बताइये, पद्मदेवजी कैसे हैं?"

इस समय सरस्वती यह कह कि वह चार का प्रबन्ध करती है, उठकर रसोईघर में चली गई। सुदर्शन और राजा साहब, बातचीत करने लगे। सुदर्शन ने कह दिया—"हम लाहौर में इस घटना को सुन यह देखने आये थे कि यदि दोनों को किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो, तो हमें एक मित्र के नाते सहायता देनी चाहिये।

"हम पद्मदेवजी के पास ठहरे हैं। वहाँ हमने बहुत अभाव देखा है। अब हम सरस्वती के पास आये हैं और यहाँ के विषय में अध्ययन कर रहे थे कि आप आ गये।"

"देखिये प्रोफेसर साहब! अभाव तो इस संसार में निरंतर रहने वाला गुण है। इस अपूर्ण संसार में कोई भी वस्तु पूर्ण नहीं है। यदि कुछ पूर्ण है तो केवल परमात्मा है। इस कारण किसी कार्य का मूल्य लगाते समय अभावों का विचार करना तो ठीक ढंग नहीं। मूल्य तो उससे होने वाले परिणामों से ही आंका जा सकता है। जिस दिन हमें पता चला कि सरस्वती देवी ने अपना जीवन-कार्य पृथक् रहकर चलाने का निश्चय किया है, उसी दिन हम, मेरा अभिप्राय है, कुछ एक मित्रों ने एक गोष्ठी की और विचार किया कि हमको एक कलाकार के जीवन-यापन में सहायक बनना चाहिए।"

"परन्तु यह कार्य तो वहाँ भी चल रहा था।"

"ऐसे ही जैसे वह मोटर गाड़ी चलती है, जिसमें एक चक्का बैलगाड़ी का लगा हुआ हो।"

सुदर्शन हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "उस चक्के को बैलगाड़ी का चक्का मानना भ्रम नहीं है क्या?"

"हम सब लोग अनुभव करते थे। यह अब से नहीं चिरकाल से अनुभव किया जा रहा था कि जब-जब भी सरस्वती देवी गाती तथा नृत्य करती थीं, पद्मदेवजी उठकर अपने स्टडी-रूम में चले जाते थे। इससे हम उनको असभ्य और इन विद्याओं से अनभिज्ञ मानते थे। उनके इन विचारों के ही कारण हम सरस्वती देवी की गाड़ी लंगड़ाती हुई चलती पाते थे। मैं तो इनके जीवन का यही चित्र बना बैठा था कि यह एक मोटर गाड़ी है, जिसके एक ओर बैलगाड़ी के चक्के लगे हुए हैं।

"इस पर भी हम इस विषय में, कभी मुख से कुछ कहने का साहस नहीं करते थे। अब वह उनके घर से चली आई, तो हम मानवता के नाते, इन कलाओं की वृद्धि में, जो मानवता का आधार हैं, इनकी सहायता करने में एकचित्त हो गये हैं।

"हम सबने एक ट्रस्ट बना दिया है। यह विद्यालय उस ट्रस्ट के ही अधीन चलेगा। इस विद्यालय की वह मुख्याधिष्ठात्री होंगी। अभी तो यहाँ सामान ठीक किया जा रहा है, परन्तु शीघ्र ही इस विद्यालय का उद्‌घाटन होगा और कार्य चलने लगेगा।

"हम कला के विषय में सरस्वतीजी से बहुत कुछ आशा रखते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती चाय-प्याले चाय-ट्रे में ले आई। उसने स्वयं लाने का भी स्पष्टीकरण दे दिया—"कालीनाथ प्रातःकाल से कोठी की सफाई आदि में लगा था, इसलिये थककर सो गया है।"

चाय पीते हुए राजा साहब ने सरस्वती से पूछ लिया, "कब तक इस विद्यालय का उद्घाटन होगा। मैं उस दिन पूर्ण लखनऊ के शिष्ट समाज को यहाँ आमंत्रित करना चाहता हूँ।"

"मैं समझती हूँ कि एक सप्ताह के पश्चात् कोई भी दिन निश्चय कर लिया जा सकता है।"

"आज है दस मार्च। मेरे विचार में बीस मार्च, रविवार का दिन ठीक रहेगा। क्यों ठीक है न?"

"ठीक है। तब तक तो सब प्रबन्ध हो जायेगा।"

"पंडित हरिशरणानन्द पांडे इससे प्रसन्न प्रतीत नहीं होते।"

"हाँ।" सरस्वती ने कह दिया, "वे चाहते थे कि मैं उनके संगीत-नृत्य विद्यालय में ही काम करती। उनका विचार है कि लखनऊ जैसे नगर में दो ऐसे विद्यालयों के लिये स्थान नहीं है। इससे दोनों को ही आर्थिक हानि होगी।"

"कुछ अंश तक तो उनका विचार ठीक है। पर मैं समझता हूँ कि इन कलाओं में दिन-प्रतिदिन उन्नति हो रही है। इनके लिये सभी सभ्य परिवारों में रुचि उत्पन्न हो रही है। अतः दोनों विद्यालयों की उन्नति होती रहेगी। इस पर भी मैं तो कह रहा हूँ कि अब इस बात पर विचार करने का अवसर नहीं रहा। हम पृथक् से इस पहलू पर विचार कर चुके हैं।"

इतना कह राजा साहब उठे, सबको हाथ जोड़ प्रणाम कर विदाई ले, चल दिये। अब सरस्वती ने सुदर्शन से पूछा, "आपका विचार कब तक लखनऊ में रहने का है?"

"अभी कह नहीं सकता। दो-तीन दिन तो लग ही जायेंगे। हम एक उद्देश्य-विशेष से यहाँ आये हैं। उस दिशा में कुछ तो कर ही जाना चाहते हैं।"

"हाँ! तो अब सरस्वती भाभी इतनी दूर चली गई हैं कि वापस लौट नहीं सकतीं?" साधना ने पूछ लिया।

"वापस लौटने का क्या अर्थ है?"

"वापस पद्मदेवजी के घर पर।"

"वहाँ क्या है?"

"सरस्वती देवी के पति हैं। वह पति, जिन्होंने उसे रंचमात्र भी कष्ट कभी नहीं दिया था। विशाल तथा विचार रखने वाले, शुद्ध तथा पवित्र मस्तिष्क से सदा हित का कार्य करने वाले। क्या मैं गलत कह रही हूँ?"

"मुझको उनके खिलाफ कोई शिकायत नहीं। मैं चार वर्ष तक उनके साथ रही हूँ। मुझे एक क्षण भी ऐसा स्मरण नहीं, जब मुझे उनके व्यवहार पर आपत्ति हुई हो, परन्तु अब तो मैं इस नवीन जीवन में ही अपना कल्याण समझती हूँ।"

"तो क्या तुम यह समझती हो कि तुमने अपने जीवन के पिछले चार वर्ष व्यर्थ ही गंवाये हैं?"

"नहीं, यह बात नहीं है। यदि बालपन का खेल-कूद का समय व्यर्थ गया नहीं माना जाता तो जीवन का यह काल भी व्यर्थ गया नहीं माना जाना चाहिये। यह जीवन का एक भाग था, जिसमें जो हुआ, उसे होना ही चाहिये था। अब यह नया दौर है। इसको ठीक ढंग से निभाना चाहती हूँ और उत्तरोत्तर अपने ध्येय की ओर अग्रसर होना ही मेरा उद्देश्य है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो सरस्वती! मैं जब पिछली बार लखनऊ से जाने लगी थी तो मैंने कहा था कि तुम्हारे चित्त में दादा से भी अधिक कुछ भर रहा है। साथ ही मैंने कहा था कि तुम निश्चय ही मार्ग से भटक गई हो। उस समय तुमने मुझको यह कहकर टाल दिया था कि तुम मेरी बातों को समझ नहीं सकी हो।

मैं आज यही कहने आई हूँ कि यह मार्ग कल्याणकारी नहीं है।"

"साधना बहन! मैं अभी भी तुम्हारे आरोप को समझी नहीं। मैं मार्ग से भटकी नहीं। मैं ठीक मार्ग पर ही चल रही हूँ। बात यह है कि मेरा मार्ग और पद्मदेवजी का मार्ग एक नहीं रहा। कुछ देर तक तो हमने यत्न किया है कि साथ-साथ चलें, परन्तु दोनों मार्गों में अन्तर बढ़ता ही गया। इसलिए विवश हो छोड़ना पड़ा। इस पर भी मैं अपने मार्ग से भटकी नहीं। उस पर ही चल रही हूँ। अन्तर यह हुआ है कि दोनों के मार्ग दूर-दूर ही हो रहे हैं।"

सुदर्शन समझ गया कि सरस्वती भ्रम में फँसी हुई, युक्ति नहीं कर पा रही। कदाचित् करना ही नहीं चाहती। वह तो परिस्थितियों पर भी विचार करना नहीं चाहती, न ही घटनाओं का विश्लेषण करना चाहती है। अतः आगे बात करना भी समय व्यर्थ खोना हैं इस पर भी एकाएक छोड़कर चले आने को ठीक न समझ, उसने अपने मन के भावों को स्पष्ट रख देना चाहा। उसने कह दिया, "भाभी! मानव की वर्तमान स्थिति में पुरुष और स्त्री ने यह निश्चय किया है कि वे पति-पत्नी बनकर रहें। मानव ने यह सब भी अनुभव से ही सीखा है कि पति-पत्नी परस्पर निष्ठावान बनकर रहें। तुमने जीवन के प्रारम्भ में तो यह बात समझी थी, परन्तु अब तुम मानव की इस आवश्यकता से ऊपर कुछ अन्य बात समझने लगी हो। यह संगीत तथा नृत्य पति-पत्नी सम्बन्ध से भी अधिक आवश्यक मानने लगी हो।

"हम समझते हैं कि यह भूल है और इसका ज्ञान कराने के लिए ही हम तुमसे मिलने के लिए आये थे। तुम युक्ति, अनुभव और संसार में हो रही घटनाओं की अवहेलना कर इस नवीन पथ पर चल निकली हो। इसलिए हम अपना दृष्टिकोण तुमको समझाने में सफल नहीं हो रहे।

"ऐसी अवस्था में पद्मदेवजी का एक संदेश तुमको देकर, हम विदा माँगेंगे। पद्मदेव ने कहा है कि उसके घर का द्वार तुम्हारे लिए सदा और प्रत्येक अवस्था में खुला रहेगा। जब भी तुमको उस घर से सुख मिलने की सम्भावना हो, तुम निःसंकोच भाव से वहाँ आ सकती हो।"

इतना कह सुदर्शन उठ खड़ा हुआ और नमस्कार करने लगा। साधना इस प्रकार बात समाप्त होती देख परेशान थी। इस पर भी पति को उठते देख, वह भी उठ खड़ी हुई। उसने चलते हुए कह दिया—"मैं समझती हूँ कि परस्पर मेल-जोल रखने से तो जीवन-उद्देश्य की प्राप्ति में बाधा नहीं होगी। क्या हम आशा कर सकते हैं कि सरस्वती बहन कभी-कभी हमें मिलने का भी कष्ट कर सकेंगी?"

सरस्वती ने साधना की बात का उत्तर देने के स्थान पर कह दिया, "पद्मदेवजी से इस आश्वासन के लिए मेरा धन्यवाद कह देना। मैं अपने जीवन में तनिक स्थिर हो जाऊं तो फिर अपने पुराने-नये सम्बन्धों के विषय में विचार करूंगी कि ये किन-किन के साथ रहने हैं और किस-किस सीमा तक रहने हैं।"

: 9 :

सायंकाल भोजन के समय साधना ने पूछ लिया, "बताइये, यहाँ आने से क्या लाभ हुआ है?"

"लाभ-हानि का लेखा तो भविष्य में किसी समय बनायेंगे।" सुदर्शन ने कहा, "देखो साधना! मैं यहाँ इस कारण आया था कि देखूँ, मैं किस तरह अपने मित्र की, इस कठिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिस्थिति में सहायता कर सकता हूँ। इस बात का ही ज्ञान प्राप्त करने के लिए हम सरस्वती से मिलने गये थे। उसको मिलने के बाद हम एक धारणा बनाकर आये हैं और अब उस धारणा के आधार पर ही भविष्य के कार्यक्रम का निश्चय करना है। इसमें हम पद्मदेवजी की इच्छा को भी जानना चाहेंगे।''

पद्मदेव सुदर्शन के इस विश्लेषणात्मक कथन को, सुन हँसने लगा। पूर्व इसके कि वह कुछ कहे, साधना ने कह दिया, ''जो कुछ आपने यहाँ देखा और सुना, वह तो मैं आपको लाहौर में बैठे-बैठे ही बता रही थी।

''मेरा कहना था कि एक अनपढ़, अशिक्षित औरत जब कोई भूल करती है, तो वह, उसको छिपाने का यत्न नहीं कर सकती। वह भले ही भूल को सुधारने का यत्न न करे, परन्तु उसको ठीक उसी रूप में मान लेती है, जिसमें वह भूल की होती है, परन्तु एक पढ़ी-लिखी और वर्तमान सभ्यता में पली लड़की अपने कार्यों में, वे अच्छे हों या बुरे, कारण ढूंढने लगती है। वह उनको 'फिलोसोफाईज' (मीमांसात्मक विवेचना) करने लगती है। यही सरस्वती ने किया है।

''सरस्वती उस लफंगे पांडे से वासना-तृप्ति करती पकड़ी गई तो अपने कार्य पर पश्चात्ताप करने के स्थान, यहाँ से भाग गई और अपने उस कार्य में गुण ढूंढने के लिए, अपने चारों ओर चाँदी, सोने की तारों का जाल बुनने लगी है।

''वर्तमान काल की पढ़ी-लिखी नारी की इच्छा पति बदलने की होने पर वह विवाह-विच्छेद कानून बनाने के लिए जोर देने लगी है। अपने पतियों से प्रेम के नाते कुछ पाने में अशक्त होने के कारण, उसको बलपूर्वक पाने के लिए कानून की माँग करने लगी है। पतियों के बाधा पहुँचाने पर वह अपने माता-पिता की सम्पत्ति में हाथ डालने का यत्न करने लगती है।

''अपने दुर्गुणों को छिपाने के लिए, यही है चाँदी-सोने की तारों का जाल बुनना।''

पद्मदेव साधना की इस विवेचना पर और भी हँसा। उसने हँसते हुए कहा, ''साधना बहन! मैं तुम्हारे विचार से अधिक सहमत हूँ। वास्तव में प्रोफेसर साहब तो अभी कुछ समझे ही नहीं। यह पुरुषों का दोष है। उनकी बुद्धि इतनी मोटी होती है कि सुगमता से वे कुछ समझ भी नहीं सकते।

''मेरी ही बात सुन लो। जब तुमने मुझको सचेत किया था, तो मैं तुम्हारी बात को ठीक रूप में समझ नहीं सका था। जब प्रोफेसर साहब का पत्र आया कि साधना का विचार है कि सरस्वती मुझको अपनी कला पर न्योछावर कर रही है, तो यह सब मुझको तथा प्रोफेसर साहब को भी भ्रम प्रतीत हुआ था, परन्तु पश्चात् वह सब ठीक ही निकला।

''अब भी साधना की बात को हम मान नहीं रहे। मैं समझता हूँ कि हमको यह मान लेना चाहिए।

''मैंने आपको पत्र लिखा था और यह बात पूछी थी कि शीघ्र ही मुझको पार-पत्र मिलने वाला है। मैं शीघ्र ही इंग्लैण्ड के लिए रवाना होने वाला हूँ। मैं चाहता हूँ कि सुधीर का प्रबन्ध आपके पास कर सकूं। तभी निश्चिन्त हो, अपने पढ़ने-लिखने के कार्य में लग सकूंगा।''

''परन्तु दादा! तुम तो सरस्वती के लिए घर का द्वार खुला रखना चाहते हो। द्वार खुले रखकर पढ़ने-लिखने का कार्य हो चुका।''

''द्वार तो घर का खुला रहना है न और मेरा घर, जहाँ मैं रहूँगा, वहाँ रहेगा। इस पर भी मन के द्वार खुले रहने का वचन नहीं दिया। वे भी खुल सकते हैं, परन्तु एक विशेष परिस्थिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में। उस परिस्थिति में मेरे मन के विकास का आश्वासन एक शर्त रहेगी।''

''तब वह आ चुकी।''

''परन्तु साधना बहन! तुमको उसके आने से लाभ प्रतीत हो रहा है?''

''नहीं; मैं तो कह रही हूँ कि उसका ध्यान छोड़ दो। कहो तो दूसरे विवाह का प्रबन्ध कर दूँ। उसको अपने साथ विलायत ले जाना।''

''मैं विवाह के बिना भी उसका ध्यान छोड़ सकता हूँ। साधना! तुम चिन्ता छोड़ो। मेरा कहना मानो और सुधीर को साथ ले जाओ। उसकी आया तो साथ जायेगी। इसका खर्चा नियमित रूप से भेज दिया करूंगा।''

''आया आवश्यक है क्या?''

''प्रथम तो आया को काम की आवश्यकता है। वह निर्वाह का अन्य कोई साधन नहीं रखती। दूसरे, बच्चा उससे हिल-मिल गया है। जब तक वह तीन वर्ष का नहीं हो जाता, उसको इसकी आवश्यकता रहेगी।''

''एक बात करो। पद्म भैया! कुछ काल के लिये तुम भी लाहौर चलो। यहाँ से दूर रहने पर सुख मिलेगा।''

''पार-पत्र की प्रतीक्षा है।''

''अभी कोठी मत छोड़ो। सुन्दर को यहाँ की डाक लाहौर भेजने के लिए कह दो। पार-पत्र मिलेगा तो निश्चय कर लेंगे।''

बात पद्मदेव को पसंद आई। उसने कुछ विचार किया और लाहौर चलने के लिए तैयार हो गया।

अगले दिन कोठी को ताला लगा, सुन्दर को उसकी रखवाली तथा डाक को लाहौर भेजने को कह पद्मदेव, सुधीर और उसकी आया को लेकर सुदर्शन तथा साधना के साथ लाहौर के लिए चल पड़ा।

पार-पत्र मिलना इतना सुगम नहीं था। खुफिया-पुलिस की जांच आरम्भ हुई तो महीनों ही लग गए। जांच के स्थान थे लखनऊ, अल्मोड़ा, लाहौर और जगरावाँ। जब इन स्थानों की रिपोर्ट आ गई, तो भी उच्च अधिकारियों ने अपना मत स्थिर करने में कितना ही समय लगा दिया। फरवरी से दिसम्बर का मास आ गया। तब कहीं पद्मदेव को सूचना मिली कि उसका पार-पत्र तैयार है, वह किसी दिन लखनऊ डिप्टी कमिश्नर के कार्यालय से आकर ले जाये।

इस दस महीनों में पद्मदेव अपनी पुस्तक सुदर्शन को सुनाता रहा था और उसकी सम्मति लिखता रहा था। उसने अपनी पुस्तक में आर्यों के निवास स्थान पर अनेकों प्रमाणों और उदाहरणों से यह सिद्ध किया था कि वे मैसापोटोमिया, इराक, इरान, अफगानिस्तान और मध्य एशिया में रहते थे, परन्तु साथ ही वह मानता था कि सृष्टि आर्यों से आरम्भ नहीं हुई। इस जाति का निर्माण और विकास तो इन देशों में ही हुआ, परन्तु इससे पूर्व ही इस सृष्टि पर मनुष्य को बसे करोड़ों वर्ष हो चुके थे।

पृथ्वी पर मानव-सृष्टि तो बहुत पुरानी है। यह सृष्टि दो बार विनाश को प्राप्त हो चुकी है। एक बार इस पर ब्रह्मा के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं बचा था और दूसरी बार कई जातियाँ बच गई थीं।

पहली प्रलय के पश्चात् ब्रह्मा ने अपने में से सृष्टि की थी और दूसरी बार देवता, मनुज, राक्षस, दनुज, दानव इत्यादि कई जातियाँ शेष बच गई थीं।

प्रथम प्रलय के पूर्व सृष्टि कैसी थी, मनुष्य उस समय कैसा था और वह क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाता-पीता था अथवा जीवन कैसे चलाता था, यह कुछ भी ज्ञात नहीं। इस पर भी उस समय की सृष्टि को देव-सृष्टि कहकर स्मरण रखा जा सकता है। मनुष्य और जीव उस समय विशालकाय थे।

वास्तविक इतिहास तो दूसरी प्रलय, जिसको महाप्लावन भी कहते हैं, से आरम्भ होता है। इसी प्लावन का उल्लेख पुराणों, बाईबल और जिन्द अवस्था में आता है।

बाईबल की पुरानी पुस्तकों में यह लिखा मिलता है कि केवल एक नूह और एक-एक जोड़ा सब पृथ्वी के जानवरों का बच सका था, परन्तु इस प्लावन के पश्चात् के इतिहास से तो ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि मनुष्यों के अतिरिक्त राक्षस, दानव, देवता आदि भी बच गये थे।

पद्मदेव ने इस कथा को पुराणों से तथा अन्य ग्रन्थों के प्रमाणों से ही अपनी पुस्तक में लिखा था। सुदर्शन के कहने पर उसने एक अध्याय इस विचार के खंडन में लिख भी दिया, जो कि वैज्ञानिकों ने उपस्थित किया था कि आरम्भ में सृष्टि एक प्रकार के एक कोषाणु वाले जीव (यूनि सेल्यूलर ऐनिमल) से बनी है।

उसने सृष्टि की उत्पत्ति पर पौराणिक मत लिखा। आरम्भ में तो वह विकासवाद ही प्रतीत होता था, परन्तु दोनों में अन्तर था, परमात्मा की प्रेरणा का। विकासवाद सृष्टि के होने का प्रतिपादन करता है।

: 10 :

जब पद्मदेव लाहौर पहुँचा तो वह पंडित नीलकंठ सप्रू से भी मिलने गया। पंडित नीलकंठ सरस्वती की कथा सुन पहले तो स्तब्ध बैठा रह गया। पीछे सरस्वती के जन्म की कथा स्मरण कर, हँसते हुए उसने कह दिया, "यथा माता तथा पुत्री।"

पद्मदेव को सरस्वती के करीम और करीमन की लड़की होने का पता था। करीम के मुकदमे में यह बात स्पष्ट हो चुकी थी। इस पर भी नीलकंठ के इस कथन पर कि यथा माता तथा पुत्री—वह विस्मय में उनका मुख देखता रह गया। उसने पूछ लिया, "यह अनुमान आपका गलत है। मैं समझता हूँ कि करीमन के विषय में आपका अंदाज गलत है।"

नीलकंठ ने कहा, "सरस्वती जिस अवस्था में हमें मिली थी, उससे उसकी माँ के चरित्र पर हमें पहले से ही संदेह था। अब सरस्वती ने अपने व्यवहार से सिद्ध कर दिया है कि वह अपने माँ-बाप के स्वभाव की उत्तराधिकारी है।"

पद्मदेव चुप कर रहा और मन में सरस्वती के सद्गुणों और दुर्गुणों के इस अद्भुत मिश्रण का कारण समझने का यत्न करने लगा।

अब पण्डित नीलकंठ ने महादेव की बात कही। उसने बताया, "मेरे बेटे महादेव ने एक और विवाह कर लिया है।"

"सत्य? किससे?"

"एक मुसलमान चौधरी हाकिम दीन, जो मजंग गांव का रहने वाला है, की लड़की रफीका से। कहा जाता है कि इस विवाह में मियाँ इफ्तिखार हुसैन ने बहुत आगे बढ़कर भाग लिया है।"

"उसकी क्या रुचि है इसमें?"

"सूसन अब प्रायः मियाँ साहब के घर पर ही रहती है और चौधरी हाकिम दीन अब महमूद साहब के साथ कोठी में रहता है। उसकी लड़की के बच्चा होने वाला है।"

"ओह! महादेव इससे प्रसन्न है क्या?"

"उसकी बात तो पता नहीं, परन्तु मैं प्रसन्न हूँ। अब वह पूर्ण रूप से मुसलमान बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगा। सोसन के होते तो मैं आशा किये हुए था कि कभी सोसन से सूसन और महमूद से महादेव बन सकते हैं, परन्तु यह रफीका तो नियमानुकूल पर्दे में रहती है और दो वक्त नमाज पढ़ती है। रोजे रखती है।''

पद्मदेव को इससे प्रसन्नता नहीं हुई। उसने वकील साहब से पूछ लिया, ''परन्तु पण्डितजी! आपको इससे प्रसन्नता क्यों है?''

''एक स्वाभाविक बात होनी थी, वह हो गई। यह ठीक ही तो हुआ है।''

''परन्तु आपको दुःख नहीं होता क्या कि आपका लड़का मुसलमान हो गया है, साथ ही आपकी लड़की आवारा हो गई है? उसकी माँ तो आवारा न थी। उसने जीवन-भर एक क्रूर पति के साथ निर्वाह किया और अच्छे चरित्र वाली बनकर रही थी।''

''वह क्या थी और क्या नहीं थी, यह सब कैसे कहा जा सकता है? परन्तु उसकी लड़की को मैंने उच्च शिक्षा दी। उसको एक धनवान पति मिला और वह भी उसकी इच्छानुसार। इस पर भी उसको बदकारी का जीवन पसन्द आया।''

''परन्तु मैं पूछता हूँ कि एक प्रतिष्ठित वकील का पुत्र, धन-धान्य से पूर्ण घर में पला तथा उच्च शिक्षा प्राप्त, भला कैसे एक गोरी लड़की के सम्मोहन में फँस, न केवल एक चरित्रहीन, लड़की से विवाह कर बैठा, प्रत्युत उसके लिए अपना कार्य और जाति भी छोड़ बैठा?''

नीलकंठ समझ गया कि पद्मदेव आगे क्या कहने वाला है। उसको यह बात पहले भी कही जा चुकी थी कि महादेव और सरस्वती दोनों ही उसके घर के वातावरण के ही फल हैं। अतः उसी बात को और भी अधिक बल से कही जाती न सुनने की इच्छा से, उसने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, ''अभी भी इंग्लैण्ड जाने का विचार है?''

''जी! वह तो है। मैंने अपनी पुस्तक समाप्त कर ली है। वहाँ जाकर, उसको अन्तिम रूप देने का विचार रखता हूँ।''

''मैं कभी विचार करता हूँ कि ऐसी पुस्तक लिखने से लाभ क्या होगा? मनुष्य-समाज को इससे क्या लाभ है? पुरानी कब्रों को उखाड़ने से बदबू ही आती है और उससे बीमारी फैलने की ही सम्भावना है।''

''लाभ-हानि की बात तो पढ़ने और उससे शिक्षा लेने वालों पर ही निर्भर है। मैं केवल मानव की एक शृंखलाबद्ध कथा लिख रहा हूँ। वह कथा रोचक है और ज्ञान बढ़ाने वाली है।''

नीलकंठ मुस्कराया और पूछने लगा, ''भला इस बात के जानने से क्या लाभ है कि जब आर्य यहाँ पर आये थे तो द्रविड़ अथवा भील, गोंड, इत्यादि यहाँ पर बसे हुए नहीं थी, प्रत्युत कोई अन्य लोग थे, जिनका खुर-खोज मिट गया है? यही कहते हो न तुम?''

''जी, मेरा अध्ययन यही कह रहा है। ये द्रविड़ लोग तमिल भाषा-भाषी थे। जावा, सुमात्रा आदि द्वीपों से यहाँ व्यापार अथवा काम-धंधा ढूंढने के लिए आये थे। उत्तरी भारत के कुछ लोग, जो इनके सम्पर्क में आये, वे इनकी भाषा और संस्कृति सीख गये। उनका सम्मिश्रण ही ये द्रविड़ हैं। राक्षस भी यहाँ पर हिन्द महासागर में स्थित कुछ द्वीपों से आये थे। उनका खुर-खोज नहीं रहा। उनकी सन्तान तो किसी-न-किसी रूप में है, परन्तु सन्तान रहने से कोई जाति जीवित नहीं मानी जाती। जातीय संगठन तो भाषा, साहित्य, परम्पराओं और आचार-विचार के टिके रहने से ही बना रहता है।

''राक्षसों से पूर्व यहाँ वानर, रीछ इत्यादि जातियाँ रहती थीं। वे यहाँ के आदिवासी थे या अन्य जाति उनसे भी पूर्व यहाँ रहती थी, समझ नहीं आ रहा। वानर, पीछ जातियों की भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कोई भाषा, साहित्य आदि होने का प्रमाण नहीं। उनका भी जातीय चिह्न नहीं मिलता।

"ऐसा प्रतीत होता है कि दैत्य, दानव, राक्षस एवं उनसे पूर्व की जातियाँ इस कारण लोप हो गई हैं, क्योंकि उनका अपना साहित्य नहीं था। कदाचित् वे लिखित भाषा ही नहीं रखती थीं। जाति, भाषा और साहित्य से ही जीवित रहती है। ये सब जातियाँ इन बातों से रहित थीं। अतः ये जातियाँ उन जातियों से मिल गईं, जिनकी भाषा, साहित्य आदि था। उस काल में देवता तथा आर्य अपनी एक भाषा और साहित्य रखते थे। वे कितनी ही बार राक्षस एवं असुर इत्यादि जातियों से पराजित भी हुए थे, परन्तु मरे नहीं। इनके जीवित रहने में उनका सत्-साहित्य ही रक्षक रहा है।"

"रहा होगा।" नीलकंठ ने इस सब वार्ता को सुनकर अपना निर्णय दे दिया—"मुझको इससे क्या? मेरा तो यह कहना है कि इस समय पंजाब और काश्मीर में हिन्दू हैं और मुसलमान हैं। दोनों में वैमनस्य है। अतः दोनों पर अंग्रेज शासन करते हैं।

"देखो पद्मदेव! मैं कभी विचार करता हूँ कि हिन्दू अपने इतिहास-पुराण आदि का साहित्य रखते हुए भी दुर्बल पड़ गये हैं। जैसे वानर तथा अन्य निर्बल जातियों ने दूसरी जातियों में मिल जाने में ही अपना हित जाना, उसी प्रकार हम हिन्दुओं का हित इसी में है कि हम मुसलमानों में अथवा अंग्रेजों में विलीन हो जाएँ।

"इस समय संसार में दोनों प्रबल जातियाँ हैं। दोनों में संघर्ष चल रहा है। हमको, जो दुर्बल हैं, किसी एक से मिल जाना चाहिये। इसमें ही हमारी भलाई है। मैं अंग्रेज यूरोपियन बनने का यत्न कर रहा हूँ। महादेव ने मुसलमान जाति में विलीन होने का यत्न किया है। सरस्वती अभी भटक रही है और मुझे विश्वास है कि वह भी इन दोनों में से एक में थाह पा लेगी।"

पद्मदेव इस सब समय मुस्करा रहा था। पंडित नीलकंठ ने जब अपना कथन समाप्त किया तो उसने कहा—"आपका कथन कुछ अंश तक तो सत्य है। आपने अंग्रेजी साहित्य और अंग्रेजी आचार-व्यवहार एवं विचार ग्रहण कर, अपने को अंग्रेजों में सम्मिलित करने का यत्न किया है, परन्तु आप अंग्रेज बन नहीं सके।

आपने यह यत्न इस कारण किया था क्योंकि आप इससे पूर्व ही हिन्दू संस्कृति को छोड़ बैठे थे। आपके पिता, जो पूजा-पाठ और अन्य शास्त्र-विद्या में रत थे, आपको इन बातों से वंचित रख गये। उन्होंने आपको धर्म शिक्षा के स्थान पर अंग्रेजी पढ़ाना अधिक उचित समझा। जीविका इसमें थी, धर्मशास्त्र पढ़ने में नहीं थी।

"आप अभी तक यूरोपियन समाज में जा नहीं सके। वह इस कारण कि यूरोपियन समाज, आपके उनका रहन-सहन ग्रहण करने पर भी, आपसे रोटी-बेटी का सम्बन्ध बनाना पसंद नहीं कर रही। अधिक-से-अधिक आप असुर और दानवों के सम्मिश्रण से बनी राक्षस जाति की भांति यूरोपियन और हिन्दुस्तानी के मिश्रण से बनी ऐंग्लोइण्डियन समाज का ही निर्माण कर सकेंगे।

"हाँ, यह मुसलमानों की बात अवश्य ही विचारणीय है। मुसलमानों में दूसरे भूले-भटके लोगों को अपने हजम करने की शक्ति बहुत तीव्र है। उन्होंने महादेव को मुहम्मद बना, उसको अपनी एक लड़की भी दे दी और वह लड़की महादेव को आत्मसात् करने का यत्न कर रही है।

"इस पर भी यह कहा जायेगा कि आपने अपने पिता के समान अपने पुत्र को अपने साहित्य से रिक्त रखा, तब ही अंग्रेज औरत अथवा मुस्लिम औरत उस पर छापा डालने में सफल हुई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने तो महादेव को धर्मशास्त्री से रिक्त नहीं रखा। रिक्त रखा है तो उसकी स्कूल-कॉलेज की शिक्षा ने, जो वह वहाँ पाता रहा है।"

"यही तो मैं भी कह रहा हूँ। आपने उसको ऐसे शिक्षणालयों में शिक्षा दी, जहाँ भारतीय अर्थात् हिन्दू साहित्य की अवहेलना ही नहीं, प्रत्युत निन्दा भी की जाती रही है। उसका मन एक श्रेष्ठ संस्कृति से रहित हुआ, तो उसमें कूड़ा-करकट भर गया।"

"मुझको," नीलकंठ ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "विचित्र तो यह बात मालूम पड़ती है कि तुम भी तो उसी विद्यालय में शिक्षा पाये हो, जिसमें महादेव पड़ा है, परन्तु तुम प्राचीन को ऐसे पकड़े बैठे हो, जैसे तुमको उससे भारी लाभ हो रहा है।"

"एक बात आप भूल रहे हैं। मुझको शिक्षा, विद्यालय के अतिरिक्त, अपने माता-पिता से भी मिली है। वह शिक्षा उस शिक्षा से भिन्न है, जो आपने अपने माता-पिता से पायी है।

"मेरे पिता स्वामी दयानन्द के भक्त थे। स्वामी दयानन्द वेदों और शास्त्रों को सब सत्य विद्याओं का स्रोत मानते थे। ये विचार मेरे मुख-मस्तिष्क में बीज रूप में पड़े थे। मेरी वर्तमान खोज और जीवन कार्य में वह बीज ही एक विकसित वृक्ष बन गया है।"

"यह सब व्यर्थ है। भगवान ने तुमको धन दिया है, इस कारण सरकारी नौकरी छोड़कर भी मजे में जीवित हो। कहीं तुमको भी अपनी जीविकोपार्जन करनी पड़ती तो यह सब संस्कृति, धर्म आदि हवा में उड़ जाते।"

इस पर पद्मदेव मुस्कराकर पूछने लगा—"तो क्या महादेव भूखा मर रहा था? यदि उसका व्यवसाय न भी चलता, तो क्या उसके पास जीवन भर का काम चलाने के लिए कुछ नहीं था?

"देखिये पंडितजी! भोजन के लिए तो इतना कम चाहिये कि कोई भी व्यक्ति थोड़े-से परिश्रम और बुद्धि से ही पैदा कर सकता है। शेष तो सब कुछ ऐसा है, जो सुगमता से छोड़ा जा सकता है। इन व्यर्थ की बातों के लिए गंदी नाली में मैले के कीड़ों की भांति विचरना, तो बिगड़े स्वाद का परिणाम ही है।"

"तो तुम हिन्दू समाज को एक शुद्ध, पवित्र और सुन्दर वस्तु मानते हो और अंग्रेज तथा मुसलमान समाज को गंदी नाली? बहुत मूर्ख हो तुम पद्मदेव! तुम देखोगे कि यह शुद्ध पवित्र वस्तु तो उस गंदी नाली से भी गई-गुजरी है।"

पद्मदेव इस गरमा-गरमी से डरता था। अतः उसने बात समाप्त करने के लिए कह दिया—"मैं देखूँगा। वास्तव में मैं अभी अल्पायु ही तो हूँ। आपसे कम अनुभव रखता हूँ। सम्भव है मैं भूल कर रहा हूँ। आपकी बातों पर विचार करने से ठीक मार्ग मिल सकता है।

"इस पर भी भले ही महादेव का व्यवहार आपको श्रेष्ठ प्रतीत हुआ होगा, परन्तु मुझको सरस्वती के व्यवहार से सुख नहीं मिला। पर मैं इस पर पश्चात्ताप करने की आवश्यकता नहीं मानता। मैं अपना जीवन उसके बिना भी चलाने में संलग्न हूँ।"

"तो तुम नया विवाह करोगे?"

पद्मदेव ने पुनः विवाह से बचने के लिए कह दिया, "हाँ! यह बात भी जो जीवन चलाने में एक प्रक्रिया है। यह भी हो सकती है।"

"तो मैं तुमको एक अति सुन्दर लड़की दिखा सकता हूँ।"

पद्मदेव हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "पंडितजी! एक अति सुन्दर लड़की तो पहले देखी थी। अब तो एक साधारण रूप-रंग की ढूंढ रहा हूँ।"

❑

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

: 1 :

सुधीर कुछ अस्वस्थ रहने लगा था। इससे पद्मदेव चिन्ता करने लगा। उसने उसको डॉक्टर को दिखाने का विचार किया। प्रोफेसर सुदर्शन ने बताया कि डॉक्टर सदाशिव बच्चों की बीमारियों का विशेषज्ञ है। वह सुधीर को लेकर डॉक्टर सदाशिव के पास जा पहुँचा।

सदाशिव महाराष्ट्र का रहने वाला था। वह लाहौर मेडिकल कॉलेज से शिक्षा प्राप्त कर, जर्मन से स्नातकोत्तर शिक्षा ग्रहण कर लौटा था। शाही मुहल्ले में एक बड़ी-सी हवेली में वह रहता और चिकित्सा का कार्य करता था। सुदर्शन ने आजकल शाही मुहल्ले में ही अपना मकान बना लिया था। पद्मदेव स्वयं तो, निसबत रोड पर, एक होटल में ठहरा था, परन्तु उसने यही उचित समझा कि सुदर्शन के घर के समीप ही किसी एक डॉक्टर को दिखाना चाहिये, जिससे औषधि आदि लाने में सुविधा रहे।

अतः वह सुधीर को लेकर डॉक्टर सदाशिव के यहाँ जा पहुँचा। वहाँ जाकर उसको पता चला कि सदाशिव एक ऐलोपैथिक डॉक्टर होते हुए भी, होम्योपैथिक चिकित्सा करता है। उसके क्लिनिक के बाहर रोगियों की भीड़ लगी हुई थी। वह राय करने की फीस लेता था। जब-जब भी उसको पुस्तकों की छानबीन करनी पड़ती थी, वह दस रुपये फीस के ले लेता था। पीछे औषधि दो आने प्रतिदिन देने पर उसके दवाखाने में मिलती रहती थी।

सर्वसाधारण को यह ढंग बहुत अच्छा लगा था। रोगियों को लाभ भी खूब होता था, इस कारण वहाँ भीड़ भी अच्छी रहती थी। पद्मदेव जब वहाँ पहुँचा तो उसने नाम और दस रुपये का नोट क्लर्क के पास जमा करा दिया। क्लर्क ने समय देखकर बता दिया कि दो घण्टे तक बारी आयेगी।

पद्मदेव ने पूछ लिया—"यदि इससे पूर्व नहीं हो सकता तो मैं दो घण्टे तक आ जाऊं?"

"जी! आप निश्चिन्त रहें। आपके ऊपर छः नाम हैं। बीस मिनट से कम कभी भी रोगी को नहीं लगते। इस लिये दो घण्टे से कुछ पीछे ही आपका नाम आयेगा।"

पद्मदेव सुधीर को लेकर सुदर्शन के घर चला गया। वहाँ वह प्रातः का अल्पाहार लेने बैठ गया। ठीक दो घण्टे के पश्चात् वह पुनः डॉक्टर के पास पहुँचा। उसे पता चला कि पन्द्रह मिनट और लग सकते हैं। अब वह वहीं बैठ प्रतीक्षा करने लगा। वह मन में विचार कर रहा था कि 'अच्छा खासा काम है।'

इसी समय एक औरत अपने बच्चे को लिए हुए वहाँ आई और बोली, "बाबू! इस बच्चे के लिए कुछ दया कर दो।"

"क्या है इसको?"

"छः मास से दस्त आ रहे हैं। यह सूखकर कांटा हो गया है।"

"तो डॉक्टर को दिखा दो।"

"पर वे तो फीस माँगते हैं?"

"तो फीस दे दो।"

"पास नहीं है। वैसे तो कई दस रुपये खर्च चुकी हूँ, परन्तु बाबू! थोड़ा-थोड़ा तो देती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रही हूँ। एकदम दस रुपये देने को नहीं है।

"पहली बार ही यहाँ आई हो?"

"हाँ बाबू! यहाँ भीड़ लगी तो रोज देखती थी, परन्तु दस रुपये की बात सुन किसी दूसरे डॉक्टर की शरण में चली जाती थी। पन्द्रह दिन में कठिनाई से पांच एकत्रित किये हैं। अभी पांच की कमी है। कुछ तो दे दो।"

"करती क्या हो?"

"मजदूरी।"

"घरवाला कुछ करता है क्या?"

"नहीं है। आज की छुट्टी के कारण दो रुपये की हानि तो हुई है। विचार करती थी कि डॉक्टर पांच पर ही मान जायेगा, परन्तु यह तो मानता ही नहीं।"

पद्मदेव ने कुछ देर गम्भीर हो विचार किया। तत्पश्चात् कहा, "अच्छा आओ, मैं तुम्हारी फीस दिये देता हूँ।"

पद्मदेव उसको लेकर क्लर्क के पास गया। क्लर्क ने कहा, "यह बुढ़िया रोज आ जाती है। कभी कहती है दो ले लो, कभी कहती है तीन ले लो। आज यह पांच लेकर आई है। डॉक्टर साहब दस रुपये से कम लेते नहीं।"

पद्मदेव ने मुस्कराते हुए कहा, "अब यह दस रुपये लेकर आई है।" इतना कह उसने दस रुपये का नोट निकालकर क्लर्क के सामने रख दिया। क्लर्क ने नाम पूछा तो उस औरत ने बता दिया—"सुल्तान, आयु ढाई वर्ष।"

क्लर्क ने नाम दर्ज किया तो पद्मदेव ने देखा कि उसके नाम के पीछे ही उसका नाम है। पद्मदेव ने पूछा, "इसका नाम मुझसे पहले नहीं हो सकता क्या?"

"हो सकता है, यदि आप चाहें तो। अभी और कोई नाम नहीं। इस तरह डॉक्टर साहब इसको पहले देख लेंगे।"

पद्मदेव ने उस औरत से कहा, "सुल्तान की माँ, यहाँ बैठो। अभी ही डॉक्टर साहब बुला लेंगे। मैंने तुम्हारा नम्बर पहले करा दिया है, जिससे तुम मजदूरी पर जा सको।"

"तो बाबू! यह पांच तुम ले लो।"

"यह तुम बच्चे के दूधादि के लिये रख लो।"

वह औरत कृतज्ञता के आँसू, आँखों में भर, जब पद्मदेव की ओर देखने लगी तो पद्मदेव उठकर बाहर की ओर चला आया। वह मन में विचार करने लगा था कि यह डॉक्टर क्या एक दिन में एक रोगी भी निःशुल्क नहीं देख सकता? उसके मन में यह लालसा उत्पन्न हो गई कि वह डॉक्टर की आर्थिक स्थिति का अनुमान लगाने का यत्न करे।

पद्मदेव को आधा घंटा और प्रतीक्षा करनी पड़ी। सुल्तान का केस अति विषम था। डॉक्टर को पूर्ण जानकारी करने और फिर ठीक औषधि ढूंढने में काफी समय लग गया।

जब पद्मदेव डॉक्टर के पास कमरे में जा रहा था तो वह बुढ़िया उस कमरे से बाहर निकल रही थी। पद्मदेव ने उससे पूछ लिया, "देख लिया है डॉक्टर ने?"

"हाँ बाबू! खुदा तुम्हारा भला करे।" यह कहते हुए उसने पद्मदेव के पांव को हाथ लगाना चाहा, परन्तु पद्मदेव ने उसे ऐसा करने से मना कर कहा, "अरे, यह क्या कर रही हो, माँ! अच्छा देखो, फिर कभी डॉक्टर फीस माँगे तो इसी मुहल्ले में, तीन सौ बीस नम्बर के मकान में चली आना।"

पद्मदेव सुधीर को लेकर अन्दर गया तो डॉक्टर ने अपने क्लर्क से पूछ लिया, "और कोई है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"जी नहीं, बस यही है।"

"तो और आज मत लेना।" इतना कह डॉक्टर ने पद्मदेव से पूछ लिया, "क्या कष्ट है?"

"कष्ट तो यह ही बता सकता है, पर यह कुछ बतलाता नहीं। केवल रात को रोया करता है।"

"दिन के समय?"

"हाँ दिन को भी। बात यह है कि मैं रात को ही, वह भी कभी-कभी, घर पर आता हूँ और तब की बात तो अपनी जानकारी से बता सकता हूँ। सो पहले बता दी है। दिन की बात सुनी-सुनाई है और वह पीछे कही है।"

डॉक्टर हँस पड़ा। उसने कहा, "बाबू साहब! आप तो ऐसे बातें कर रहे हैं, जैसे अदालत में बयान देने आये हों। यह बात देखी है और यह सुनी है।"

पद्मदेव मुस्कराया और कहने लगा, "मैं डॉक्टर साहब को हकीकत बताना अदालत में बयान देने से अधिक कठिन बात मानता हूँ। इसी से ऐसा कह रहा हूँ।"

"ओह! अच्छा बताइये, इसको टट्टी आती है?"

"जी, दिन में एक बार।"

"यह दूध पीता है?"

"पी लेता है। कभी रोटी भी ले लेता है।"

"वह हजम हो जाती है क्या?"

"टट्टी से तो यही समझ में आता है कि हजम हो जाती है।"

"रात को सोता है?"

"जी, खूब गहरी नींद सोता है।"

"तो रोता किस समय है?"

"जब जागता है अथवा जगाया जाता है।"

"यह हँसता भी है क्या?"

"जी हाँ, मिठाई को देखकर।"

"तो इसको लाये किसलिये हैं?" डॉक्टर ने नाराज होते हुए पूछ लिया।

अब हँसने की बारी पद्मदेव की थी। हँसकर उसने कहा, "मेरे विचार में यह सवाल आपको पहले पूछना चाहिए था?"

"यह सवाल नहीं है जी।" डॉक्टर ने और भी चिढ़कर कहा।

"तो यह क्या है? श्रीमान् जी, यही तो एक सवाल है, जो किसी रोगी बच्चे को लाने वाले से पहले पूछना चाहिए। साहब! यह दुर्बल होता जाता है और इसका भार कम हो रहा है।"

डॉक्टर कुछ समय तक चुप रहा। फिर एक मोटी-सी पुस्तक उठा, उसमें से वजन कम होने वाले लक्षणों को ढूंढने लगा। सूची में ढूंढने के पश्चात् उसने सामने लिखे पृष्ठ की संख्या पढ़ी और वह पृष्ठ निकालकर पढ़ने लगा। पढ़ते-पढ़ते वह बीच-बीच में प्रश्न करता जाता था।

अंत में पेन्सिल से एक औषधि का नाम कागज पर लिख, एक अन्य पुस्तक निकाल, उसमें से औषधि के लक्षण पढ़ने लगा। उन लक्षणों के, बच्चे की अन्य बातों से न मिलने पर, उसने पहली पुस्तक पुनः निकाल ली और पुनः उसमें लक्षण देखने लगा। इस प्रकार लगभग आधा घण्टा लगाकर, एक औषधि का निश्चय कर उसने नुसखा लिख दिया और पद्मदेव से कहा, "इसको ले लें और दिन में एक बार एक सप्ताह तक दें।"

अब पद्मदेव ने अपने मन की पूछ ली, "यदि एक बात पूछूं तो क्या आप उत्तर देने की कृपा करेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पूछिये! पूछिये!!"

"वह बात चिकित्सा-सम्बन्धी नहीं है।"

इस पर डॉक्टर विस्मय में पद्मदेव का मुख देखने लगा। पद्मदेव ने आया को नुसखा देकर बाहर से दवाई लेने के लिये कह दिया। डॉक्टर उठ खड़ा हुआ। पद्मदेव भी अपने प्रश्न का उत्तर जानने के लिये उठकर सामने खड़ा हो गया।

डॉक्टर ने कह दिया, "आप पूछ सकते हैं, परन्तु यह स्मरण रखिये कि न तो मैं राजनीतिक प्रश्नों का उत्तर दूँगा, न ही किसी साम्प्रदायिक बात का।"

पद्मदेव ने मुस्कराते हुए कहा, "इन विषयों पर प्रश्न नहीं है। मैं समझता हूँ कि वह मानवता के विषय पर है।"

"हाँ, पूछिये।"

"जब कोई रोगी निर्धन हो, तो उसको किसी डॉक्टर से निःशुल्क देखा जाना चाहिये अथवा नहीं?"

डॉक्टर विस्मय में पद्मदेव का मुख देखने लगा। उसने कुछ विचार के पश्चात् कहा, "हाँ, निर्धन की चिकित्सा होनी चाहिये। उसके लिये तो सरकार को प्रबन्ध करना चाहिये।"

"क्यों, सरकार को क्यों?"

"इस कारण कि सरकार जनता से कर लेती है।"

"कर लेने का अर्थ यह हो गया कि वह उस कर को निर्धनों और अनाथों में बांट दे?"

डॉक्टर पुनः पद्मदेव का मुख देखने लगा। वास्तव में वह इस प्रश्न का उद्देश्य अभी तक नहीं समझ पाया था। उसको विस्मय हो अपनी तरफ देखते हुए पा, पद्मदेव ने कहा, "आप सरकार को क्या 'पूअर हाऊस' (गरीबखाना) समझते हैं।

"कर तो वे देते हैं, जिनके पास धन है। निर्धनों का कर में कोई भाग नहीं। साथ ही कर देने वाले उसको गरीबों में बांट देने के लिये नहीं देते।"

"परन्तु मैं समझता हूँ सरकार एक ऐसी संस्था है, जो हस्पताल और स्कूल आदि सार्वजनिक संस्थाएँ चलाने के योग्य है।"

"हाँ, यदि योग्य शब्द का अर्थ अयोग्य माना जाये और अयोग्य का अर्थ योग्य।"

डॉक्टर पद्मदेव के इस कथन पर हँस पड़ा। वह बैठ गया और बोला, "आप भी बैठिये। आपने तो बहुत मजेदार बात कही है। जरा मैं इसको समझना चाहता हूँ। आपका कहना है कि सरकार हस्पताल और स्कूल चलाने के अयोग्य है?"

"तो आप यह नहीं जानते? देखिये मैं समझता हूँ। आप एम०डी० बर्लिन हैं। आपने वहाँ कौन-सा चिकित्सा-शास्त्र पढ़ा है?"

"ऐलोपैथिक सिस्टम ऑफ मैडिसिन।"

"यह होम्योपैथी भी वहाँ पढ़ी है क्या?"

"नहीं, यह नहीं पढ़ाई जाती वहाँ।"

"इस पर भी आप इसके अनुसार चिकित्सा करते हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि क्यों?"

"बात सरल है। मेरे विचार और अनुभव में यह चिकित्सा-पद्धति श्रेष्ठ है।"

"ठीक। मैं इससे सहमत हूँ, परन्तु सरकार ने इसके हस्पताल नहीं खोले। यह बात सरकार को अयोग्य नहीं बताती क्या?"

"सरकार के कुछ सलाहकार यह समझते हैं कि यह होम्योपैथी अवैज्ञानिक पद्धति है।"

"उनकी सलाह, आपके विचार से, अयोग्यता के लक्षणों वाली नहीं क्या? और इसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मानने वाली सरकार भी अयोग्य नहीं क्या? अयोग्यों को, निर्धनों की अयोग्य चिकित्सा के लिये हम कर देते हैं क्या?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार स्कूलों की बात भी है। मान लीजिये सनातन धर्म सभा वेद शास्त्र की शिक्षा को शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना उचित समझती है और सरकार नहीं समझती। तो क्या सनातन-धर्म सभा सरकार को इसलिये कर दे कि वह उससे ऐसे स्कूल खोले, जहाँ पर सनातन धर्म की विरोधी शिक्षा दी जाये? इसी प्रकार आर्य समाज, मुसलमानों और ईसाइयों की भी बात है। वे सब समझेंगे और ठीक भी समझेंगे कि सरकार शिक्षा देने में अयोग्य है।

तो मैं कह रहा था कि सरकार न तो स्कूल खोलने की योग्यता रखती है न ही चिकित्सालय। इस कारण निर्धनों को आप अयोग्यों द्वारा घटिया चिकित्सा के लिये सरकारी हस्पतालों में भेजना पसंद करेंगे क्या?''

डॉक्टर भौंचक्का हो, पद्मदेव का मुख देखता रह गया। उसने विचार कर कहा, ''मैं नहीं जानता कि आप क़ौन हैं? इस पर भी आपने मेरे मन की बात कही है। कम-से-कम चिकित्सा के सम्बन्ध में तो मैं इसको अनुभव कर रहा हूँ।

परन्तु क्या हो? एक ओर तो हम कर दे रहे हैं और सरकार इन करों में वृद्धि कर रही है; दूसरी ओर हस्पतालों में और स्कूलों में, जो चिकित्सा अथवा शिक्षा दी जा रही है वह दोषपूर्ण ही नहीं, हानिकारक भी है।

हस्पतालों में तो रोग की सामयिक चिकित्सा करने पर रुपया व्यय किया जा रहा है और स्कूलों में नौकरी के लिए क्लर्क बनने के योग्य लड़कों को तैयार करने पर करोड़ों रुपये व्यय किये जा रहे हैं, परन्तु किया क्या जाये? एक ओर तो सरकार कर लेगी और बलपूर्वक लेगी। और उस कर को हमारे ही कल्याण के लिए व्यय करेगी; दूसरी ओर आप मुझको कह रहे हैं कि मैं निर्धनों को भी अपना समय दूँ। आपके कहने का अभिप्राय हुआ कि मैं दो चक्कियों में पिस जाऊं?''

''देखिये डॉक्टर साहब! मेरा यह दृढ़ मत है कि शिक्षा और साथ ही चिकित्सा जैसे विवादास्पद विषयों को सरकार अपने हाथ में न ले। इसको धनी-मानी नागरिकों को, अपने-अपने विचारानुसार चलाने की ही स्वीकृति दे। इनको पूर्ण स्वतंत्रता दे दी जाये और जिस धर्मार्थ औषधालय में अधिक रोगी चिकित्सा पाएँ और जिस स्कूल में पढ़ाई के लिए अधिक-से-अधिक विद्यार्थी हों, उन चिकित्सालयों तथा स्कूलों को सरकार रोगियों एवं विद्यार्थियों की संख्या के अनुसार अनुदान देकर, सहायता दे।

यदि सरकार इस प्रकार सहायता देने से इन्कार कर दे तो जनता पर कर का भार कम कर दिया जाये, जिससे वह बचे हुए धन का, अपनी रुचि के अनुसार प्रयोग कर सके।''

: 2 :

डॉक्टर ने कह दिया—''आपकी योजना में दो बड़े छिद्र हैं। एक तो यह कि लोग स्कूलादि क्यों खोलेंगे? और दूसरा यह कि इस प्रकार के प्राइवेट स्कूलों तथा हस्पतालों में उचित ढंग की शिक्षा अथवा चिकित्सा हो सकेगी क्या?''

''स्कूल और कॉलेज तो खुलेंगे। हमारे पंजाब में तो एक आर्य समाज संस्था ने ही सैकड़ों स्कूल और कॉलेज खोल रखे हैं। धनी-मानी लोगों तथा संस्थाओं को थोड़ी प्रेरणा देने की आवश्यकता सब कार्य करा सकेगी। फिर अधिक विद्यार्थियों की शिक्षा का प्रबन्ध सरकार से अनुदान प्राप्त करने में एक प्रबल प्रेरणा होगी।

''दूसरा प्रश्न है उचित शिक्षा और चिकित्सा का। मेरा तो यह कहना है और आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मेरी बात का समर्थन भी किया है कि सरकार उचित शिक्षा और चिकित्सा करने में योग्य है ही नहीं।''

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर सदाशिव अब उठ खड़ा हुआ, मानों उसकी बातों का समाधान हो गया हो। उठते हुए उसने कहा, ''यह तो राजनीतिक विषय हो गया है। बिना सरकारी कामों में हस्तक्षेप करते हुए हम क्या करें?''

''करिये यह कि आप प्रत्येक एक ऐसे रोगी के पीछे, जो शुल्क दे, एक निर्धन रोगी निःशुल्क देखिये। मैं तो सब पैसा लेने वालों को यही कहना चाहता हूँ। आपसे विशेष रूप में, क्योंकि आप ऐसा करने की सामर्थ्य रखते हैं।''

इस समय दोनों उठकर बाहर क्लर्क के पास आ गये थे। क्लर्क ने रोगियों का रजिस्टर डॉक्टर के आगे किया तो डॉक्टर साहब ने हिसाब देखा। प्रातःकाल से उस समय तक बारह रोगी आये थे। क्लर्क ने एक-सौ बीस रुपये गिन कर डॉक्टर के सामने रख दिये। पश्चात् डॉक्टर ने औषधि विभाग के रजिस्टर को देखा। कम्पाउण्डर ने कुल जोड़कर रखा था। सत्रह रुपये दस आने थे। वह रमक भी डॉक्टर साहब ने ली और नौकरों को दुकान बन्द करने के लिए कह दिया।

बारह बज चुके थे। आया सुधीर को लेकर जा चुकी थी। पद्मदेव ने जाने से पूर्व डॉक्टर से कहा, ''मैं समझता हूँ कि आप सरकारी कर देकर भी कुछ रागी दिन में निःशुल्क देख सकते हैं। आज एक रोगी तो बेचारा रो रहा था कि उसके पास फीस के लिए पैसे नहीं हैं।''

''तो उसकी फीस आप दे देते। मुझको उदारता की शिक्षा देने वाले को कुछ तो स्वयं भी देना चाहिये।''

''वह तो कर दिया है। अपने क्लर्क से पता कर सकते हैं कि सुल्तान नाम के रोगी की फीस कौन दे गया है; परन्तु मैं नित्य तो यहाँ आ नहीं सकता।''

डॉक्टर साहब ने देखा कि यह आदमी अन्य अनेकों से विलक्षण है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि युक्ति करने में बड़ा योग्य है। डॉक्टर तो अपने को बड़ा तार्किक समझता था, परन्तु आज वह सामने खड़े व्यक्ति की एक बात का भी खण्डन नहीं कर सका था। उसने पूछ लिया, ''आपका नाम क्या है?''

''मैं पद्मदेव के नाम से पुकारा जाता हूँ। आपके लिए आपके रोगी सुधीर का पिता हूँ।''

''आपके विचार बहुत अच्छे प्रतीत होते हैं। पर मैं यह नहीं समझा कि जब सरकार स्कूलों और कॉलेजों को खोलने तथा हस्पतालों को चलाने के लिएकर लेती है तो फिर मैं क्यों रोगियों को निःशुल्क देखूँ?''

पद्मदेव हँस पड़ा। क्लर्क और कम्पाउण्डर चले गये थे और डॉक्टर भी दरवाजा बंद करने के लिए खड़ा था। डॉक्टर के घर का मार्ग दुकान के भीतर से ही था। पद्मदेव समझ रहा था कि अब उसे चला जाना चाहिए। इस पर भी डॉक्टर ने ऐसी बात की थी कि दिन-भर रोते रहे और मरा कोई भी नहीं।

पद्मदेव ने इस पर हँसी उड़ाने के लिए कह दिया, ''मैं समझता हूँ कि आप अविवाहित हैं।''

''हा! हा!!'' डॉक्टर ठहाका मारकर हँस पड़ा। उसने समझा कि अब पद्मदेव मूर्खता कर बैठा है। उसने दरवाजा बंद करने से रुकते हुए कहा, ''भला विवाह का इससे क्या सम्बन्ध है?''

पद्मदेव जाता-जाता रुक गया। वह समझाने के लिए कुछ कहने ही वाला था कि एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्त्री, साधारण रूप-रेखा वाली, मुख पर सीतला के दागों से कुछ-कुछ कुरूप, गहरे गंदुमी रंग की दुबली-पतली, डॉक्टर के समीप आकर बोली, "यदि बातें बहुत रुचिकर हैं तो खाना भी खाते जाइये और बातें भी करते जाइयेगा।"

"ओह!" डॉक्टर को भोजन का स्मरण हो आया। उसने उस स्त्री की ओर देखकर कहा, "बातों में तो रुचि है, पर इनको भी तो भूख लगी होगी।"

"तो इनको भी यहीं खिला देंगे।"

"सत्य?"

वह औरत मुस्कराई और डॉक्टर ने पद्मदेव की ओर घूमकर कहा, "यदि रूखी-सूखी खाने में आपत्ति न हो तो भोजन यहाँ ही कर लीजिए। साथ ही हम आपकी इस नवीन उक्ति का अर्थ भी समझ लेंगे।"

"रूखी-सूखी में तो आपत्ति नहीं, परन्तु भय है कि मेरे लिए किसी को भूखा न रह जाना पड़े। मैं फिर कभी उपस्थित हो जाऊंगा।"

"नहीं! तब तो आइये। कोई भूखा नहीं रहेगा। क्यों रजनी?" उसने उस स्त्री की ओर देखकर पूछ लिया। उस स्त्री ने कहा, "खाने में आप कोई बहुत बड़े पेटू तो दिखाई नहीं देते। आइये! तीन-चार के लायक तो सदा आवश्यकता से अधिक तैयार रहता ही है।"

पद्मदेव ने हँसी में कहा था कि डॉक्टर विवाहित प्रतीत नहीं होता। इस पर भी उसकी अन्तरात्मा में एक भावना थी, जिसकी वह परीक्षा कर लेना चाहता था। आज इस नवीन अपरिचित से परिचय प्राप्त करने का इतना अच्छा अवसर मिलने पर वह इन्कार नहीं कर सका। उसने निमंत्रण स्वीकार कर लिया और तीनों घर के भीतर जा पहुँचे। घर क्लिनिक से अधिक साफ-सुथरा और सजा हुआ था। तीनों ने हाथ धोये और खाने की मेज पर जा बैठे।

डॉक्टर ने उस स्त्री का परिचय करा दिया। उसने कहा, "यह हैं मेरी धर्म-पत्नी। इनका नाम रजनी देवी है।"

पद्मदेव को आश्चर्य हुआ। डॉक्टर एक अच्छा सुन्दर युवक था और रजनी अर्द्ध कुरूप, रंग की सांवली, मुख पर सीतला के दाग, छोटी-छोटी आँखों वाली थी। मुख और आँखें सीतला से बिगड़ गई प्रतीत होती थीं।

इस परिचय पर पद्मदेव ने हाथ जोड़ नमस्कार कर दिया। नमस्कार करते हुए उसने रजनी के मुख पर पुनः देखा। उसका विचार था कि कदाचित् पहली बार उसने जल्दी-जल्दी में देखा हो। सम्भव है जल्दी में वह उसके सौन्दर्य का ठीक अनुमान न लगा सका हो, परन्तु इस बार तो उसकी कुरूपता का एक और लक्षण भी दिखाई दे गया। उसकी आँखों में कुछ भेंगापन भी विद्यमान था।

पद्मदेव ने अपने मन के भावों को छुपाने के लिए अपना परिचय देना आरम्भ कर दिया—"मैं हूँ पद्मदेव, एम०ए०, पी०एच०डी०। किसी समय लाहौर के कॉलेज में इतिहास का प्रोफेसर था। अब घर पर ही लेखादि एवं पुस्तकें लिखने का कार्य करता हूँ। आजकल लखनऊ में रहता हूँ, परन्तु अब कुछ दिनों से लाहौर आया हुआ हूँ। इस समय होटल मिनर्वा में, निस्बत रोड पर रहता हूँ।"

इस पर उस स्त्री ने कह दिया, "मुझको स्मरण आ रहा है कि मैंने आपके विषय में सुना है। आपको कॉलेज से निकाल दिया गया था न?"

"जी हाँ! मैं वही नालायक प्रोफेसर हूँ।"

"मैं उस समय एक स्कूल में अध्यापिका का कार्य करती थी। हमने भी आपके विषय में समाचार-पत्रों में पढ़ा था। हमने तो यह पढ़ा था कि मुसलमान शिक्षा मंत्री ने शिक्षा विभाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में मुसलमानों की संख्या में वृद्धि करने के लिए आपको निकाला था।"

"जी! समाचार-पत्रों में तो अनुमान लगाये गये थे। इन पर भी मुझ पर निकालने के समय आज्ञा-पत्र में कोई आरोप नहीं लगाया गया था।"

"देखिये! मैं पांच मिनट से आपकी इनसे वार्तालाप सुन रही थी। मुझको डॉक्टर जी के इस गुण का ज्ञान है कि यह बातों में सब कुछ भूल जाते हैं। भूख तो इनको लगती ही नहीं। इस कारण भोजन के समय इनको सचेत करना पड़ता है।

"आपने इनमें कुछ अवगुण देखा और कह दिया कि ये अविवाहित हैं, इस पर मैंने आपके अनुमान को असत्य सिद्ध करने के लिए पर्दे से बाहर आ, प्रकट होना आवश्यक समझा था।"

डॉक्टर सदाशिव हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "मैंने तो कहा है कि आपके इस कथन का पूर्व की बात से कोई सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता। मैं निर्धन रोगियों को निःशुल्क नहीं देखता। इससे आपका अनुमान लगाना कि मेरा विवाह नहीं हुआ, भला क्या सम्बन्ध रखता है?"

इस समय रसोईया भोजन लगाने लगा था।

पद्मदेव ने अपने कथन को अयुक्तिसंगत बताये जाने पर, अपनी सफाई देनी उचित समझी। उसने डॉक्टर की पत्नी को सम्बोधन कर कह दिया—"रजनी देवी! मुझको अपनी बात के गलत सिद्ध होने से प्रसन्नता हुई है। इस पर भी मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या यह एक विस्मय करने का विषय नहीं कि घर में गृहिणी हो और फिर भी पुरुष दिन भर में एक निर्धन की सहायता में अपना समय न दे?

"आज पहली बार मुझको डॉक्टर जी के पास आने का अवसर मिला है। एक अति निर्धन औरत, एक मरणासन्न बालक को गोदी में लिये, बच्चे को दिखा सकने के लिए फीस, दान-दक्षिणा से एकत्रित कर रही देखी, तो मेरे मन में डॉक्टर साहब के लिए ग्लानि का भाव उत्पन्न हुआ। मैं समझता हूँ कि पुरुष तो क्रूर होते ही हैं। उनको बाहरी जगत की ठोकरें कठोर बना देती हैं, परन्तु घर में स्त्री हो तो वह अपनी कोमलता, सुहृदयता एवं धार्मिकता और सहिष्णुता की छाप अपने पति पर लगाती है। इसलिये यह कथन कर बैठा था, परन्तु मैं समझ रहा हूँ कि मेरी भूल में कारण यह है कि डॉक्टर बहुत ही सुदृढ़ तथा कठोर आवरण ओढ़े हुए हैं और उस आवरण को अभी आप भेद नहीं सकीं।"

रजनी ने मुस्कराते हुए कहा, "यहाँ आप फिर भूल कर रहे हैं। डॉक्टर साहब तो अति कोमल हृदय रखते हैं और यह दान-दक्षिणा भी देते रहते हैं। ये केवल अपने विश्वासों में अति सुदृढ़ हैं। मेरी युक्तियाँ और आग्रह इनके विश्वासों को डिगाने में सफल नहीं हुए। मैं इस विषय में दुर्बल सिद्ध हुई हूँ। इनकी धारणा है कि अपने व्यवसाय के कार्य में इनको निःशुल्क सेवा नहीं देनी चाहिये। इससे इनकी अपनी कीमत कम होती है। यह कहा करते हैं कि निर्धनों के लिए सरकार ने हस्पताल खोल रखे हैं। अपनी आय का दशांश भिन्न-भिन्न हस्पतालों में दान के रूप में देते रहते हैं। इनका कहना है कि यूरोप में ऐसा ही होता है।

"मैं इनके इस विश्वास का दुर्ग भेद नहीं सकी। यह युक्ति का विषय है, भावना का नहीं। आप तो जानते हैं कि स्त्री युक्ति करने में अति दुर्बल होती है।"

"यह तो डॉक्टर साहब ने मुझको भी बताया है। मैंने इनको समझाने का यत्न भी किया है। हस्पताल, जिनको सरकार चलाती है, चिकित्सा कार्य करने में अयोग्य होते हैं। अतः उन हस्पतालों की त्रुटियाँ दूर करने के लिये व्यक्तिगत सेवा कार्य की भी आवश्यकता है। जहाँ तक मैं समझा हूँ, इनके विश्वासों के दुर्ग को तो मैंने भेद दिया है। ये मेरी युक्ति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उत्तर नहीं दे सके।" Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनों भोजन कर रहे थे। भोजन रूखा-सूखा नहीं था। यह बहुत स्वादिष्ट और पौष्टिक था। पद्मदेव होटल में खाता था। वहाँ का खाना खाते-खाते वह ऊब चुका था। इस कारण उसे आज का खाना बहुत स्वादिष्ट लगा।

सदाशिव ने मान लिया—"मैं यूरोप में शिक्षा और चिकित्सा कार्य सरकार द्वारा होता देखकर, अति प्रभावित हुआ था। मैं समझता था कि यह ढंग सर्वोत्तम है। इसी कारण मैं किंग एडवर्ड मेडिकल कॉलेज और यहाँ रावी वाले हस्पताल में पांच-पांच सौ रुपया मासिक दे दिया करता हूँ, परन्तु आज मैं समझ रहा हूँ कि कदाचित् यह धन मैं अनधिकारियों के हाथ में देता रहा हूँ।

"रजनी देवी तो कहा ही करती हैं कि मैं सायंकाल का समय निर्धनों को निःशुल्क राय देने के लिए निश्चय कर लूँ, परन्तु मैं डरता हूँ कि एक बार मैंने ऐसा किया तो मेरी आय कम होनी आरम्भ हो जायेगी। सभी लोग दिन के स्थान पर सायंकाल को ही आने लग पड़ेंगे। सायंकाल को तो भीड़ लग जाया करेगी और दिन में मैं मक्खियाँ मारा करूंगा। ऐसी ही धारणा यूरोप के डॉक्टरों की भी है। 'प्राइवेट प्रैक्टिस' में वे किसी से भी रियायत नहीं करते। इस पर भी वे अपनी निःशुल्क सेवाएँ हस्पतालों में देते रहते हैं।

"मैं यहाँ ऐसा नहीं कर सका। कारण यह कि यहाँ की सरकार होम्योपैथिक चिकित्सा को सरकारी हस्पतालों में चालू नहीं कर रही।"

"मैं तो," पद्मदेव ने अपने पूर्व कथन को दुहरा दिया—"सरकार, जो भिन्न-भिन्न आचार-विचार रखने वाले और ज्ञान-विज्ञान को जानने वाले लोगों की एक सांझी संस्था है, को इस प्रकार की बातों में हस्तक्षेप करने के सर्वथा अयोग्य समझता है। मैं चाहता हूँ कि वह अपने करों में कमी करे और इस प्रकार के दान-दक्षिणा के कार्य जनता पर छोड़ दे।

"देखिये! यह आपकी 'होम्योपैथी' का ही तो प्रश्न नहीं हैं। यहाँ आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धतियाँ भी तो हैं। वे भी हल्ला-गुल्ला कर रहे हैं। यह काम सरकार का नहीं कि वह किसी को गलत और किसी को ठीक समझे। सब को अपने-अपने ढंग से कार्य करने का अवसर हो—'प्राइवेट प्रैक्टिस' में भी और धर्मार्थ चिकित्सालयों में भी। सरकार की ओर से सब पढ़े-लिखे तथा प्रतिष्ठित चिकित्सकों को मान्यता मिले।"

"सरकार क्या करे और क्या न करे, मैं इस झगड़े में पड़ना नहीं चाहता। मैं तो यह कहता हूँ कि यदि मैंने अपनी सेवाएँ निःशुल्क देनी आरम्भ कर दीं तो लोगों में मेरा मान कम हो जायेगा। इसका क्या उत्तर है आपके पास?"

"तो आप भाग्य और भगवान पर विश्वास नहीं रखते हैं?"

"वह क्या होता है?"

"तो यह बात है। वास्तव में चोर तो यहाँ पर हैं आपने विज्ञान सीखा है, परन्तु ज्ञान से अभी तक वंचित हैं। अब इतने गूढ़ विषय को भोजन की मेज पर बैठे बताना तो कठिन है। इस पर भी डॉक्टर साहब! आप इस विषय को अपनी पत्नी से ही समझ सकते हैं। आप इनकी बात कदाचित् ध्यान देकर सुनते नहीं। तभी आपको अभी तक संसार की एक बहुत ही अच्छी, अवर्णनीय और विचित्र वस्तु के विषय में ज्ञान नहीं हुआ।"

डॉक्टर ने मुस्कराते हुए अपनी पत्नी की ओर देखा और पूछा, "तो क्या तुम इस अद्भुत अवर्णनीय वस्तु को जानती हो?"

"इसके विषय में जानती हूँ, इसके अस्तित्व पर विश्वास भी रखती हूँ। उसके ध्यान और उपासना से लाभ उठा चुकी हूँ। अपने जैसों का उसको आधार मानती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! तुमने पहले कभी बताया नहीं?"

"आज भी तो स्वेच्छा से बता नहीं रही। आपने पूछा है तो बताना पड़ा है। यह एक ऐसी वस्तु है, जो बुद्धि का विषय नहीं, अनुभव का विषय है। कभी कहती तो आप मानते नहीं। अब भी तो आप मानेंगे नहीं।"

"परन्तु मैं तो तुम्हारी सब बातों को मानता हूँ।"

"लेकिन यह सब बातों में नहीं है। यह कोई बात तो है ही नहीं। यह तो एक विचार है, एक विश्वास है, एक आधार है। देखिए—

'परीत्य भूतानि परीतय लोकान् परीत्य सर्वा प्रदिषो दिशश्च।
उपस्थाय प्रथमजा मृत्स्यात्य नात्या नमामि संविवेश ॥"

"ऐसा यजुर्वेद में लिखा है। वह परमात्मा सब भूतों, सब लोकों, सब दिशाओं, उपदिशाओं में व्याप्त है। उसकी व्यापकता से एक अणु भी खाली नहीं। यह अपने सामर्थ्य का भी आत्मा है। यह ही आरम्भ में सृष्टि का निर्माण करता है। इसको आत्मा ही देख सकता है। जब आत्मा इसको देख लेता है, तो मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।"

"तो तुमने उसको देखा नहीं?"

"यत्न कर रही हूँ। आशा है कभी देख भी लूँगी।"

"कब तक आशा करती हो?"

"यदि सब कुछ अनुकूल रहा तो दो-चार जन्म में देख सकना असम्भव नहीं।"

इस पर डॉक्टर खूब हँसा। बोला, "अच्छी बात है, जब देख लेना तो ही मुझे बताना।"

: 3 :

रजनी चंगर मोहल्ला में एक टोकरियाँ बनाने वाले घनश्याम की लड़की थी। माँ का देहान्त तो तब ही हो गया था, जब वह तीन वर्ष की थी। इस आयु में उसको चेचक निकली। उस समय तो उसके बचने की आशा तक न थी; परन्तु वह बच गई। चेचक अपने पीछे दो बातें छोड़ गई। एक तो आँखों में भेंगापन, दूसरे, पूर्ण शरीर पर, विशेष रूप से मुख पर, अपने चिन्ह।

घनश्याम की दुकान थी। उसमें ही बाप-बेटी, दोनों रहते थे। इसी दुकान के ऊपर एक पंडितजी रहते थे। वे डी०ए०वी० स्कूल में एक अध्यापक थे। पंडित सरस्वतीनाथ की स्त्री ने इस लड़की को देखा तो उसको अपने घर के काम-काज के लिए नौकर रख लिया। पंडितजी ने लड़की को प्रतिभाशाली पाया तो उसको आर्य समाज की, लड़कियों की एक पाठशाला में भरती करा दिया। वह स्कूल जाने लगी। इसके साथ वह पंडितजी के घर पर काम भी करती। रोटी, कपड़ा, पुस्तकें और साथ ही तीन रुपया वेतन मिल जाता था। घनश्याम को सबसे बड़ी सुविधा थी लड़की के भले घर में रहने की। अब उसको मोहल्ले के आवारा बच्चों के साथ आवारा हो जाने का भय न था।

रजनी को स्कूल की पढ़ाई में बहुत आनन्द आता था। पंडित सरस्वतीनाथ का अपना लड़का बुद्धू था। जहाँ वह दो-दो साल में एक श्रेणी पास कर पाता था, वहाँ रजनी सदा अपनी श्रेणी में प्रथम रहती थी।

जब वह मैट्रिक प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई तो पंडितजी ने उसको कन्या महाविद्यालय में भरती करा दिया। उसने वहाँ बी०ए० पास किया और फिर लड़कियों की पाठशाला में अध्यापिका नियुक्त हो गई।

एक समय पंडित सरस्वतीनाथ बीमार पड़े। तब डॉक्टर सदाशिव की चिकित्सा आरम्भ हुई। इसी चिकित्सा के सम्बन्ध में डॉक्टर सदाशिव कई बार पंडितजी के घर आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वहाँ उसने रजनी को उनकी सेवा करते देखा। रजनी कुछ कुरूप थी, तो भी बात करने में अति मधुर और सदा प्रसन्नवदन रहती थी।

पंडित सरस्वतीनाथ रोगमुक्त हो गये, तो भी दुर्बल बहुत थे। उनके लिये औषधि आदि लेने के लिए रजनी ही डॉक्टर के यहाँ आती-जाती थी। सदाशिव को समझ आया कि लड़की बहुत ही समझदार है। एक दिन उसने पूछ लिया, ''रजनी देवी! आप पंडितजी की क्या लगती हैं?''

''नौकरानी।''

''क्या मतलब?'' सदाशिव ने विस्मय से पूछा।

''जी, मैं पंडितजी के घर रोटी, कपड़ा और तीन रुपया मासिक पर काम करती हूँ।''

इससे डॉक्टर आश्चर्यचकित रह गया और रजनी का मुख देखने लगा। फिर कुछ बात स्मरण कर कहने लगा, ''परन्तु पंडितजी तो कहते थे कि आप गर्ल्स स्कूल में अध्यापिका हैं?''

''जी! वहाँ से रोटी-कपड़े के बिना मुझको एक सौ दस रुपये वेतन के रूप में मिलते हैं। मैं दोनों स्थानों पर काम करती हूँ। जब पढ़ती थी तो केवल पंडितजी के पास ही काम करती थी। अब दो स्थानों पर काम करती हूँ और दोनों स्थानों से वेतन पाती हूँ।''

''तो तुम अब भी उनसे तीन रुपये मासिक वेतन लेती हो?''

''मैं लेती नहीं, वे देते हैं। मैंने कई बार कहा है कि अब मुझको उनसे वेतन लेने की आवश्यकता नहीं, उनकी कृपा से एक सौ दस रुपये मासिक पाती हूँ। पर पंडितजी कहते हैं कि वह मुझको तीन रुपये वेतन के रूप में नहीं देते। यह तो घर के सब प्राणियों को मिलता है। मुझे भी मिल रहा है।''

''तो तुम अपने को उनकी नौकरानी क्यों कहती हो? वास्तव में तो तुम उनकी लड़की ठहरीं?''

''वे मुझको क्या मानते हैं, यह तो वह जानें। मैं तो अभी भी अपने को उनकी नौकरानी ही मानती हूँ।''

''परन्तु वह तुम्हारा मान बहुत करते हैं।

''यह उनकी उदारता है।''

''तुम्हारे माता-पिता कौन हैं?''

''आपने पंडितजी के घर के नीचे एक बूढ़ा-सा व्यक्ति टोकरियाँ बनाते देखा होगा। वह मेरे पिता हैं। मैं उनको कई बार कह चुकी हूँ कि उनको अब काम नहीं करना चाहिए, परन्तु वे कहते हैं, 'मनुष्य कर्म के बिना रह नहीं सकता। कर्म तो करना ही है और मैं यही काम करने के योग्य हूँ। रजनी! तुम मुझको काम करने दो। जिस दिन काम छूटा, यह शरीर भी छूट जायेगा।''

''तुम कितनी पढ़ी हो?''

''बी०ए० पास कर अध्यापिका बनी हूँ। पंडितजी अपने काल में संस्कृत और धर्म के अध्यापक थे। उन्होंने मुझको शास्त्र आदि पढ़ाये हैं। मैं संस्कृत भी पढ़ सकती हूँ।''

एक दिन डॉक्टर पंडितजी के घर आया तो उनसे पूछने लगा, ''क्या रजनी का विवाह नहीं होना?''

''क्यों? डॉक्टर साहब! क्या बात है?''

''वह चौबीस-पच्चीस वर्ष की प्रतिभाशाली लड़की प्रतीत होती है। मैं समझता हूँ कि किसी भले घर में गई तो उस घर को शोभायमान कर देगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित सरस्वतीनाथ ने समझा कि डॉक्टर हँसी कर रहा है। इस पर भी उसने गम्भीर हो कहा, "इसकी बिरादरी में इसके योग्य कोई वर ही दिखाई नहीं देता। साथ ही ऊंची बिरादरी में कोई इसको पसंद नहीं करता। आज के लड़के इस साधारण रूपरेखा की लड़की को पत्नी नहीं बनायेंगे और फिर इसके पिता के पास कुछ देने को भी तो नहीं।"

सदाशिव ने गम्भीर हो कहा, "आप रजनी से पूछियेगा कि वह विवाह करना चाहे तो मैं उसको एक लड़का दिखाऊंगा। वह लड़का पढ़ा-लिखा है और कमाता-खाता है।"

पंडित सरस्वतीनाथ बोले, "डॉक्टर साहब! आप मुझको लड़का दिखाइये। मैं रजनी को मना लूँगा।"

डॉक्टर साहब ने कुछ विचारकर कहा, "आप देखकर क्या करेंगे? आप तो वृद्ध हो चुके हैं। आपका निर्णय उसको पसंद नहीं भी हो सकता।"

पंडित चुप रहा, परन्तु उस दिन रजनी स्कूल से आई तो पंडितजी ने बात चला दी, "रजनी बेटी! इस बार तो मैं मर ही चला था। अब ठीक हो गया हूँ, परन्तु मुझको भय लग रहा है कि एक काम अधूरा ही न छोड़ जाऊं।"

सुनो बेटा! अब तुम पढ़-लिख चुकी हो। मैं समझता हूँ कि अब तो तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध होना चाहिए। मैंने तुम्हारे पिता से पूछा है। वह तो कहता है कि उसने रजनी को हमारी लड़की ही बना रखा है।"

रजनी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "मैं समझती हूँ कि जीवन मजे में चल रहा है। मुझ जैसी कुरूप से कोई विवाह कब करेगा? यदि करेगा तो कब तक? नहीं पिताजी! छोड़िये इस बात को। कहीं लेने-के-देने न पड़ जायें।"

पंडित सरस्वतीनाथ ने कहा, "बेटी! भगवान और भाग्य बहुत ही प्रबल होते हैं। कोई नहीं कह सकता कि क्या होने वाला है। 'पंडित फिरत बन भिखारी, मूर्ख राज करता है' वाली कहावत जानती ही हो?

अच्छा बेटी! कल तो रविवार है। डॉक्टर साहब से मेरी दवाई लानी होगी। और हाँ, जाने से पहले मेरी हकीकत, जो मैंने लिख रखी है, साथ लेती जाना।"

हकीकत पंडितजी की नहीं थी। वास्तव में वह रजनी के विवाह के लिये तैयारी की बात थी। पंडितजी ने कागज पर लिख, लिफाफे में बंद कर रजनी को दे दी। रजनी को लिफाफा देते हुए पंडितजी ने कहा, "डॉक्टरजी से देकर कहना कि मैं पहले से बहुत ठीक हूँ। जो बात मैंने लिखी है, उसको पढ़कर औषधि दे देवें।"

रजनी डॉक्टर सदाशिव के दवाईखाने में पहुँची और लिफाफा दे, वैसे ही कहने लगी, जैसे पंडित सरस्वतीनाथ ने बताया था।

डॉक्टर ने लिफाफा खोलकर कहा। उसमें लिखा था, "डॉक्टर जी, आपने पिछले दिन मुझसे रजनी के विषय में पूछा था। मैंने उसकी इच्छा जानने का यत्न किया है। उसने स्पष्ट बात तो कुछ नहीं कही, पर उसकी बातों से मुझको ऐसा प्रतीत होता है कि वह विवाह कर लेगी। इस पर भी वह डरती है कि कोई उसे कुरूप जान छोड़ न जाये।

"शेष आप स्वयं पूछ लीजिये। लड़का दिखा दीजिये और फिर बात आगे चलाने का यत्न करूंगा।"

यह पत्र मैं उससे चोरी लिखकर भेज रहा हूँ। उसको पता नहीं कि इसमें क्या लिखा है। वह तो यही जानती है कि मैंने अपने विषय में कुछ लिखा है।"

डॉक्टर ने समझ लिया कि बात सावधानी से करनी चाहिये। इस कारण उसने कह दिया—"पण्डितजी अब बहुत ठीक हैं। यह जो कुछ उन्होंने लिखा है, केवल बुढ़ापे के लक्षण हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके पश्चात् डॉक्टर ने अपनी बात आरम्भ कर दी—"तो आपने संस्कृत पढ़ी है?"

"जी।"

"बाई दी वे, आपका विवाह हो गया है या नहीं?"

रजनी मुस्कराई और पूछने लगी, "आपको क्या लगता है?"

डॉक्टर ने उसको सिर से पांव तक देखकर कहा, "लगता तो यही है कि विवाह अभी नहीं हुआ।"

"बहुत सूझ-बूझ की बात कही है आपने।" रजनी बहुत धीमी आवाज में हँस पड़ी।

"बात यह है।" डॉक्टर ने उसके सिर के ऊपर से सामने की दीवार पर लटक रही एक तस्वीर पर देखते हुए कहा, "जिस समाज की तुम लड़की हो, उसमें विवाहिता के क्या लक्षण हैं, यह तो मैं जानता नहीं। जिस समाज में तुम पली हो, उससे तो तुममें कुमारी के लक्षण हैं। देखो रजनी! एक आदमी तुमसे विवाह करने की इच्छा प्रकट करता है। तुम बालिग हो, इसलिए तुमसे पूछ रहा हूँ।"

"कौन है वह?"

"एक है, जिसको एक बार किसी लड़की ने कहा था, "तुम जैसे कुरूप से कोई लड़की भला कैसे विवाह कर सकती है?"

"तो बहुत कुरूप है वह? कदाचित् इसी कारण वह मुझ जैसी कुरूप लड़की को पसंद कर रहा है?"

"परन्तु तुम कुरूप तो नहीं हो। हाँ, साधारण रूपरेखा की कही जानी चाहिए। इस पर भी वह तो तुम्हारे रूप को छोड़, अन्य गुणों का बखान कर रहा था।"

"क्या गुण देखे हैं उसने मुझमें?"

"यह तो तुम उससे ही पूछ लेना। कहो तो मैं दोनों में भेंट का प्रबन्ध कर दूँ?"

"मुझको इसमें रुचि नहीं है। मैं अपने गुणों का बखान सुनना नहीं चाहती। मुझमें दूसरों के गुण जानने की योग्यता नहीं, इस कारण मेरी किसी से भेंट करने की भी इच्छा नहीं है।"

"तो फिर यह कार्य कैसे हो सकेगा?"

"पंडितजी से मिला जाये। कदाचित्, वह इस कार्य में रुचि ले लें।"

"अच्छी बात है। मैं उस आदमी को उनके घर का रास्ता बता दूँगा। यदि तुम भी उससे मिल लेतीं तो ठीक रहता।"

"मैं भी उससे वहाँ ही मिल सकूंगी।"

सदाशिव इस संयत वार्तालाप से प्रसन्न था। उसी सायंकाल वह अपने एक मित्र की पत्नी को लेकर पंडित सरस्वतीनाथ के घर जा पहुँचा।

सदाशिव ने पंडित सरस्वतीनाथ से कहा, "रजनी से विवाह की इच्छा करने वाले की यह भाभी है। आप रजनी को देखने आई हैं।"

"ओह! परन्तु एक बात का आप ध्यान रखें कि उसका किसी प्रकार से अनादर न हो जाये। वह निर्धन और छोटी जात की लड़की है। और फिर उसकी रूपरेखा भी साधारण है। मैं नहीं चाहता कि आपकी अस्वीकृति किसी प्रकार उसको पता चले।"

"ठीक है।" डॉक्टर सदाशिव ने कहा, "मैं चलता हूँ और ये यहाँ बैठेंगी। मैं एक घंटे के पश्चात् आऊंगा और इनको ले जाऊंगा।"

"रजनी बाजार गई है। मैं समझता हूँ कि आने ही वाली होगी।"

डॉक्टर सदाशिव वहाँ से चला गया। वह स्त्री, जिसको वह साथ लाया था, उसके एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पंजाबी मित्र डॉक्टर शिवलाल की पत्नी रामप्यारी ही थी।

जब डॉक्टर चला गया तो पंडित सरस्वतीनाथ ने अपने लड़के की बहू को बुला लिया। वह मकान की तीसरी मंजिल पर रहती थी। उसको बुलाकर पंडितजी ने कहा, "देखो राज! इनको ले जाकर साथ के कमरे में बिठाओ। यह रजनी से मिलने आई हैं।"

राज तुरन्त ही समझ गई और उस औरत से पूछने लगी, "तो आप रजनी को देखने के लिए आई हैं?"

"हाँ, परन्तु मैं चाहती हूँ कि उसको इस बात का पता न चले।" रामप्यारी ने कह दिया।

दोनों बगल के कमरे में चली गईं। राज ने उसको बिठाकर पूछ लिया, "आपका शुभ नाम क्या है?"

"रामप्यारी! जिसने मुझको यहाँ भेजा है, वह मेरे घरवाले का मित्र है।"

"यह डॉक्टर साहब रजनी में इतनी रुचि क्यों ले रहे हैं?"

"उनकी रुचि के विषय में तो वह ही बतायेंगे, परन्तु जिसने मुझको भेजा है, वह कहता है कि रजनी उसको बहुत ही भली और योग्य प्रतीत होती है।"

"उसने रजनी को कहाँ भेजा है?"

"डॉक्टर साहब के दवाखाने में ही। वह कई बार इसको डॉक्टर से बातें करते देख और सुन चुका है।"

"वह करता क्या है?"

उसी समय रजनी आ गई। वार्तालाप बन्द करना पड़ा।

रामप्यारी पर रजनी की रूपरेखा का कुछ अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। जब राज ने बताया कि वह औरत उससे मिलने के लिए आई है, तो रजनी मुस्कराई और उसके पास बैठ गई। इस समय राजनी उठ पड़ी तथा यह कह कि वह इनके लिए चाय का प्रबन्ध करती है, रसोईघर की ओर चली आई।

रजनी ने रामप्यारी का परिचय प्राप्त करने के लिए कहा—"इससे पहले मैंने कभी आपको देखा नहीं है। आपका परिचय.....?"

"यह हमारी पहली ही भेंट है। मेरी लड़की सुमित्रा स्कूल में आपसे पढ़ती है। वह बिल्ली आँखों वाली है। समझ गईं आप?"

"ओह! लड़कियाँ उसको सुमित्रा बिल्ली कहकर पुकारती हैं। पर बहनजी! आपकी तो वैसी आँखें नहीं हैं?"

"नहीं, वह मेरी सौतन की लड़की है। उसकी माँ का देहान्त हो चुका है। सुना है वह बहुत सुन्दर थी।"

"सुन्दर तो आप भी हैं। केवल आँखें औरतों की-सी हैं।"

"आँखों में औरतों या मरदों के-से क्या लक्षण होते हैं? ये तो सबमें एकसमान होती हैं।"

"मुझको कुछ अन्दर दिखाई देता है, परन्तु मैं तो बिल्ली और मनुष्य में अन्दर की बात कर रही थी। छोड़िये इस बात को। मैंने आपकी सौतन को तो देखा नहीं, परन्तु आपको सुगमता से एक सुन्दर स्त्री कहा जा सकता है।"

"मैं रजनी बहन का धन्यवाद करती हूँ, परन्तु जब बात आरम्भ ही हो गई है तो इतना बता देना ठीक ही है। मेरा मतलब है मेरी सौतन आनन्दी दूध के समान गोरी, दुबली-पतली, तीखे नक्श और बहुत लम्ब भंवरों जैसे काले बाल रखती थीं। इस पर भी मेरे पति महोदय, उनके अन्य सम्बन्धी और परिचित मेरी सौतन की कभी प्रशंसा नहीं करते थे। वे सदा उसे 'गोरी चुड़ैल' के नाम से ही सम्बोधन किया करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर मैं एक परिणाम पर पहुँची हूँ कि पुरुष गोरी खाल का इतना इच्छुक नहीं, जितना गोरी खाल के भीतर मन और आत्मा के गोरे होने का होता है। मैं अपने पति की बहुत प्रिय हूँ। मेरा सब बहुत आदर करते हैं।"

"सुमित्रा आपकी बहुत प्रशंसा करती थी। इस कारण आपसे मिलने के लिए चली आई। मेरा स्वभाव है कि अच्छे प्राणियों से परिचय प्राप्त कर, उनको अपना मित्र, सखा, अथवा सम्बन्धी बनाने का यत्न करूं।"

"तब तो आपकी सखी-सहेलियों की संख्या बहुत ही अधिक होगी?"

"नहीं, रजनी बहन! मेरा यह अनुभव है कि संसार में अच्छे प्राणी बहुत ही कम हैं।"

रजनी हँस पड़ी। हँसकर बोली, "आपने जब मुझको एक अच्छी लड़की समझा था और वह भी सुमित्रा के कहने पर, तो मैं यह अनुमान लगा बैठी थी कि आपका अच्छे-बुरे का पैमाना बहुत छोटा है। इसमें तो सब स्त्रियाँ आ जायेंगी।"

"आप अपने विषय में बहुत ही हीन सम्मति रखती हैं। वास्तव में आप तो एक अच्छे स्वभाव, शिक्षा तथा आचार-विचार की लड़की मानी जाती हैं। सुमित्रा तो कहती थी कि आपने कभी किसी लड़की को पीटा नहीं; सब आपका दिया हुआ काम करके ले जाती हैं। पाठशाला की मुख्याध्यापिका भी आपके लिए उच्च विचार रखती हैं।

"सुमित्रा से प्रशंसा सुने तो एक वर्ष हो चुका है। अब तो एक और व्यक्ति भी आपकी प्रशंसा के पुल बांधने लगा है। उसका कहना है कि पंडित सरस्वतीनाथ की लड़की रजनी अद्‌भुत है।

"उसकी प्रशंसा से मैं समझी थी कि आप गोरी, लम्बी, कमलमुखी, मृगनयनी, विशाल भाल, उन्नत छाती और सुन्दर कटि रखने वाली एक युवती होंगी। वह व्यक्ति आपको भगवती सरस्वती का अवतार ही मानता है।"

रजनी खिलखिलाकर हँस पड़ी। हँसकर उसने कहा, "परन्तु मुझको देखने पर आपको पता चल गया होगा कि आप किसी भ्रम में फँसी हुई थीं। कदाचित् मेरी जैसी कुरूप स्त्री आपने कहीं देखी न होगी।"

"ऐसा तो नहीं। हाँ, वह सौन्दर्य जो मैं सरस्वती भगवती के चित्र में देखती और अनुमान करती थी, नहीं मिला, परन्तु इसके अतिरिक्त कुछ और देखा है, जो पसंद कर रही हूँ, पर वर्णन नहीं कर सकती।"

: 4 :

धीरे-धीरे रामप्यारी अपने मन के विचार, जो रजनी को देखने पर उत्पन्न हुए थे, वर्णन करने लगी। उसने कहा, "एक भिखारी की गुदड़ी में लाल छिपा हुआ देख, एक राजा के मन में उस लाल को पाने के लिए लालच आ गया। भिखारी ने उसे कहीं पड़ा पाया था और व्यर्थ की वस्तु समझ, उसे गुदड़ी के एक छोर में बांध दिया था।

"राजा उस भिखारी को दान में एक रुपया देने लगा, तो उसकी दृष्टि उस लाल पर पड़ गई। मैली-कुचैली, फटी-पुरानी उस गुदड़ी में बंधा लाल चमक रहा था। राजा को विचार आया कि भिखारी इस लाल की कीमत नहीं जानता, इस कारण वह उसे इस तरह बांधे हुए है। इस विचार से राजा उस लाल को बिना मोल दिये, पाने की योजना बनाने लगा।

"दो-तीन बार वह उस भिखारी के पास आया और दान देकर उसको प्रसन्न करता रहा। एक दिन राजा ने भिखारी से कहा, "हजरत, आप तो बड़े औलिया हैं। आप जिसको आशीर्वाद देते हैं, उसको बेहद लाभ होता है। आप मेरे गरीबखाने में चलकर रहें, मैं आपकी बहुत खातिर करूंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भिखारी अपने को भली-भांति जानता था कि वह एक किस्मत का मारा और बहुत ही साधारण आदमी है। वह समझा कि दानी कोई मूर्ख या गंवार आदमी है। इस कारण वह एक मूर्ख या गंवार की संगत से बचने के लिए बोला, 'भाई, हमें तो इस खुले में, भूमि पर ही सोने में मजा आता है। हमें पलंगों पर सोने तथा स्वादिष्ट भोजन खाने में आनन्द नहीं आयेगा। इसलिए हमको तो अपनी किस्मत पर ही रहने दो।"

"राजा ने बहुत मिन्नत-समाजात की। ज्यूं-ज्यूं राजा उसकी मिन्नत करता, वह भिखारी उसको और भी अधिक मूर्ख समझता जाता था। अब तो वह उसे कोई स्वार्थी और धूर्त भी समझने लगा था। इस कारण उसने कह दिया, 'मुझको यहीं रहने दो। भगवान् यहाँ से मुझको समीप दिखाई देते हैं, परन्तु तुम्हारे घर से तो बहुत दूर पड़ जायेंगे।'

"जब राजा उसको अपने महल में ले जाने में असफल हुआ तो उसने विचार किया कि इसको अपने सिपाही भेजकर कैद कर लिया जाये और इसकी गुदड़ी पर अधिकार कर लिया जाये।

"परन्तु सिपाही भेजे जाने से पूर्व ही वह भिखारी वहाँ से लापता हो गया। राजा को भय लग गया कि इस अज्ञानी भिखारी की गुदड़ी कहीं भी गुम हो सकती है। साथ ही उसमें बंधा लाल भी गुम हो सकता है; नहीं तो चोरी हो सकता है। इस कारण उस भिखारी और गुदड़ी को अपने अधीन करने के लिए उसने चारों ओर अपने सिपाही भेज दिये। कई मास तक खोज जारी रही, परन्तु न तो उस भिखारी का पता चला और न ही उसकी गुदड़ी मिली।

"एक बार राजा शिकार खेलने के लिए गया। वह एक ऐसे स्थान पर जहाँ एक सिंह पानी पीने आया करता था, छिपकर बैठ गया। वह अभी बैठा ही था कि उसको कुछ अन्तर पर भिखारी की गुदड़ी पड़ी दिखाई दी। राजा दौड़ा और उस गुदड़ी को उठाकर देखने लगा कि उसमें लाल है अथवा नहीं। उसमें लाल बंधा था, पर भिखारी का कहीं पता न था।

"राजा ने समझा कि वह यहीं-कहीं शौचादि के लिए गया होगा। यह समझ वह फिर उसी स्थान पर आकर छुप गया। इतने में भिखारी आया और अपने कपड़े उतारकर नदी में स्नान करने के लिए घुस गया।

"राजा ने सोचा कि सिंह के शिकार से तो इस भिखारी का ही शिकार लाभप्रद होगा। अतः वह उस पर, जब वह नदी से निकलकर कपड़े पहने, तीर चलाने का निश्चय कर बैठा, परन्तु इसी समय एक और घटना घटी। भिखारी अभी स्नान ही कर रहा था कि एक जंगली डाकू आया और भिखारी के कपड़े तथा गुदड़ी उठाकर भागने लगा। भिखारी अपने कपड़ों के लिये हल्ला करने लगा और नदी से निकल, बाहर आकर जंगली डाकू से लड़ने लगा। राजा ने इस समय यही उचित समझा कि भिखारी को गुदड़ी बचानी चाहिये। कहीं वह जंगी डाकू इसको ले गया तो लाल को रख लेगा। इसलिए वह अपनी तलवार लेकर दोनों के बीच में कूद पड़ा। जंगली डाकू भाग गया और भिखारी उस समय राजा का धन्यवाद करने लगा।

"राजा ने उस भिखारी को नये वस्त्र दिलवाये। उसकी गुदड़ी के स्थान पर उसको एक सुन्दर कम्बल दिलवाया और उसके पुराने कपड़ों और गुदड़ी पर अधिकार कर लिया। भिखारी जब अपने पुराने कपड़े और गुदड़ी देने लगा तो देखने लगा कि कहीं उनमें कुछ नकदी तो नहीं। इस प्रकार जब उसने गुदड़ी को टटोला तो उसे विदित हुआ कि इसमें कुछ कड़ी सी वस्तु बंधी है। एक लाल रंग का सुपारी के आकार का पत्थर देख, वह उसको फेंकन लगा तो रुक गया और सोचने लगा कि यह उसके पास कहाँ से आया है?

"राजा ने पूछ लिया, "यह क्या है सांई?"

'यह तो नहीं जानता, पर अब विचार कर रहा हूँ कि यह कहीं से आया है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'इसको मुझे दे दो।'
'तुम क्या करोगे इस पत्थर को लेकर?'
'तुम्हारी यादगार अपने पास रखूँगा।'
'मुझ फक्कड़ की यादगार? अच्छा ले जाओ।'

"राजा ने उस लाल को ले लिया और अपने मन में विचार करने लगा कि मैं तो इसके लिए इस भिखारी की हत्या ही करने वाला था।

"सो रजनी देवी! आप उस गुदड़ी में छिपे लाल की भांति हो।"

"मैं समझती हूँ कि राजा जिस लाल को पाने का प्रयत्न करता रहा था, वह कंकड़ ही था।"

"नहीं, रजनी! पीछे जौहरी ने उसका दाम पचास हजार रुपये लगाया था। राजा उस लाल को इतने मूल्य पर भी देने को तैयार नहीं हुआ था।"

"परन्तु राजा तो जवाहरात पहचानता था। यहाँ तो पहचानने वाला कोई नहीं है।"

"मैंने परखा है। सुमित्रा ने एक दिन आपकी एक कथा बताई थी। उसने बताया था कि एक लड़की ने श्रेणी में कुछ शरारत की थी। आपने उसको दंड दिया था। दंड था मुर्गा बनने का। जब लड़की मुर्गा बनने के लिए झुकी तो, सुमित्रा कहती है कि आपकी आँखों में आँसू भर आये थे। आपने उस लड़की को खड़ा किया। आँखों से आँसू बहाती हुई, आप उसे 'स्टाफ-रूम' में ले गईं। आधा घण्टा पश्चात् आप मुस्करा रही थीं, पर लड़की रो रही थी। पीछे सुमित्रा ने उस लड़की से पूछा था कि उसका आपके साथ क्या वार्त्तालाप हुआ था। उस लड़की ने बताया था—'कुछ भी नहीं। बहनजी मुझको सामने बिठा रोती रहीं। जब मैं रोने लगी तो वे चुप कर गईं।'

"सुमित्रा को उसने कहा था, 'मुझको समझ आ गई थी कि मेरी भूल थी। जब मैंने यह जान लिया कि मैंने बहनजी को दुःख दिया है तो मुझे बहुत शौक हुआ और मेरे भी आँसू बहने लगे।'

"सो रजनी देवी! मैंने आपको परखा है और आज आपसे मिलने को, चली आई हूँ। आपका शरीर तो उस भिखारी की गुदड़ी की भांति है, परन्तु आत्मा उसमें बंधे लाल की भांति है। समझीं अथवा नहीं?"

"हो सकता है, परन्तु लाल को कैसे ज्ञान हो कि वह लाल है?"

रामप्यारी की बात अभी समाप्त नहीं हुई थी कि डॉक्टर सदाशिव वहाँ आ गया। रामप्यारी ने रजनी से कहा, "लो, डॉक्टर साहब आ गये हैं। अब मैं चलती हूँ।"

"तो डॉक्टरजी ने आपको भेजा है?"

"जी नहीं, मैंने डॉक्टर को आपके विषय में बताया था।"

"परन्तु यह तो कुछ और कहते थे?"

"वह भी होगा। उस विषय में पंडितजी से बात करेंगे। वह नहीं जानते कि उनकी गुदड़ी में कितना कीमती लाल छिपा हुआ है।"

रजनी को इस सबका अर्थ समझ नहीं आया। वह केवल उनका मुख देखती रह गई। इसी समय पंडितजी भी मुस्कराते हुए वहाँ आ पहुँचे। रजनी ने पूछ लिया, "पिताजी! क्या मतलब है इस सबका?"

"देखो बेटी!" पंडितजी ने उसको बैठने का संकेत करते हुए कहा, "मैं सब समझता हूँ। आप भी बैठिए न डॉक्टर साहब!"

जब सदाशिव बैठ गया तो रजनी भी बैठ गई। पंडितजी रजनी को समझाने लगे—"यह डॉक्टर सदाशिव एम०डी० बर्लिन हैं। यह लाहौर के मैडिकल कॉलेज के ग्रेजुएट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हैं। यहाँ इनका चिकित्सा कार्य भी खूब चलता है। यह स्वयं तुमसे विवाह करना चाहते हैं। बिना इस बात के जाने के तुम यह विवाह स्वीकार करोगी अथवा नहीं, यह अपना नाम नहीं बताना चाहते थे।

"आज तुमने कहा था कि तुम्हारे विषय में मैं बात करूंगा। सो मैंने इनसे बात कर ली है। तुमने यह भी कहा था कि तुमसे विवाह करने की इच्छा करने वाले से तुम यहाँ भेंट करोगी। अतः डॉक्टर साहब तुम्हारे सामने उपस्थित हैं। मैं समझता हूँ कि हम बाहर ठहरते हैं, तुम इनसे बात निश्चय कर लो।"

रजनी उठ खड़ी हुई। उठते हुए उसने कहा, "मैं तो आपसे बात करना चाहूँगी, इनसे नहीं।'

"तब ठीक है। आओ, हम तुम्हारी माताजी के कमरे में बात करेंगे।"

दोनों तीसरे कमरे में चले गये। पंडित सरस्वतीनाथ की स्त्री का देहान्त हो चुका था। इस पर भी उसका करना, उसकी स्मृति में खाली ही रखा हुआ था। उस कमरे का सब सामान वैसा ही लगा रहता था, जैसा कि पंडिताइन के जीवन-काल में था।

रजनी को एक कुर्सी पर बिठा, स्वयं भी वहाँ पर बैठ, पंडितजी ने पूछा, "हाँ, तो बताओ क्या कहना चाहती हो?"

"यह डॉक्टर मूर्ख प्रतीत होता है। मुझ जैसी कुरूप लड़की से विवाह कर, यह क्या पाने की आशा करता होगा? मैं समझती हूँ कि इतने पैसे वाला व्यक्ति तो सुगमता से सुन्दर-से-सुन्दर लड़की और किसी भी लखपती की कन्या से विवाह कर सकता है। एक टोकरी वाले, नीच जाति के माता-पिता की लड़की का यह क्या करना चाहता है?

"पिताजी! यह व्यक्ति मेरे स्टेट्स (समाज) का प्राणी प्रतीत नहीं होता।"

"देखो रजनी! यह कई दिन से इस विषय में मुझसे कह-सुन रहा है। मैं एक बात जानता हूँ कि विवाह और जन्म भगवान् के किये से होते हैं। मेरी तुच्छ बुद्धि में तो यही आता है कि पूर्व जन्म के कर्म-फल ही तुम दोनों को धकेल कर एक साथ कर रहे हैं। इसमें कृत्रिम विचार बाधा-रूप नहीं बनने चाहिएँ।

"यह डॉक्टर स्वस्थ, सुन्दर, पैसे वाला है। यूं भी यह सभ्य और सच्चरित्र प्रतीत होता है। यह स्वेच्छा से विवाह का आग्रह कर रहा है। मैं तुमको यही सम्मति दे सकता हूँ कि तुमको इन्कार नहीं करना चाहिए। रही भविष्य की बात। तुम बुद्धिशील हो, पढ़ी-लिखी हो। साथ ही तुम अपनी अवस्था से भली-भांति परिचित हो और अपनी न्यूनताओं को खूब समझती हो। इस कारण यदि सोच-विचार कर व्यवहार बनाओगी तो कोई कारण नहीं कि यह सम्बन्ध जीवन-काल तक न चल सके।"

रजनी ने कुछ देर तक विचार किया और फिर उठते हुए बोली, "तो आप सब उचित प्रबन्ध कर दीजिये।

देखिये पिताजी! मेरे पास एक हजार के लगभग रुपया एकत्रित है। उसे आप व्यय कर सकते हैं।"

पंडित सरस्वतीनाथ उठकर बाहर चला गया। रजनी प्रसन्नता और भविष्य की आशंकाओं में पिसती वहाँ ही बैठी रही।

पंडित सरस्वतीनाथ ने बीस रुपये खर्च कर रजनी का विवाह डॉक्टर सदाशिव से कर दिया।

डॉक्टर और रजनी दोनों ही विपरीत विचारों के प्राणी थे। इस पर भी उनमें प्राणियों का स्वभाव था। वे दोनों परस्पर अनुकूल रुचि रखते थे।

रजनी घर के प्रबन्ध में कुशल थी। भोजन स्वादिष्ट बनाना जानती थी। घर को और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपने-आपको साफ-सुथरा बनाने और सब प्रकार से सुखकारक बनाने में संलग्न रहती थी।

डॉक्टर नास्तिक था। इस पर भी इंग्लैण्ड और जर्मनी में रहकर अपने व्यवहार में अति नम्र और सभ्य बना हुआ था। वह समझता था कि जीवन में सफलता तो मीठा बोलने और दूसरे के दृष्टिकोण को समझकर, उसमें से अपने लाभ की बात स्वीकार कर लेने में ही है।

रजनी परमात्मा में विश्वास रखती थी। कुछ धर्मशास्त्र के अध्ययन से और अधिकांश पंडित सरस्वतीनाथ के तर्कसंगत व्यवहार से वह एक ऐसे ढांचे में ढली थी कि एक तरल पदार्थ की भांति, जिस स्थान पर जाती, उसी तरह की ही बन रहने की क्षमता रखती थी।

वह प्रातःकाल तो डॉक्टर को चिकित्सालय में जाने के लिए तैयार करने में लग जाती थी और जब डॉक्टर काम पर चला जाता, तो स्नान आदि से निवृत्त हो पूजा-पाठ करती थी। पश्चात् घर की सफाई, भोजन, वस्त्रादि की देख-भाल कर स्वाध्याय में लग जाती थी।

डॉक्टर सदाशिव दिन के भोजन के पश्चात् एक घंटा विश्राम करता था। इसके पश्चात् तीन घंटे अपने स्वाध्याय में लग जाता था। उसके स्वाध्याय का विषय प्रायः चिकित्साशास्त्र और फिलौसोफी (जीवन-मी) ही होता था। वह नास्तिक फिलौसोफरों को पढ़ने में बहुत रुचि रखता था।

इस समय रजनी भी अपने स्वाध्याय में लगी रहती थी। उसके पढ़ने के विषय होते थे विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, शास्त्र और पुराणा। इस के अतिरिक्त वह नवीन साहित्य उपन्यास आदि में भी बहुत रुचि रखती थी।

पंडितजी के घर वह आर्यसमाजी भजन भी सीखी थी, परन्तु भजन गाने का साहस उसने कभी, पति की उपस्थिति में नहीं किया था।

तीसरे पहर, चार बजे के पश्चात् डॉक्टर उन रोगियों को, जो उसके औषधालय में आने के अयोग्य होते थे और जिनका देखना आवश्यक होता था, उनके घर देखने के लिए जाता था। घर जाकर देखने की फीस भी दस रुपये ही लेता था। तीन-चार फीसें इस प्रकार भी उसे मिल जाती थीं।

इस समय में रजनी अपना हारमोनियम निकाल भजन गाने लगती थी। रजनी का स्वर बहुत मीठा था। वह केवल साधारण भजन, जो उसने अपने विद्यार्थी-जीवन में स्कूल में सीखे थे अथवा आर्य समाज उत्सवों में सुने थे, गाया करती थी।

: 6 :

एक दिन डॉक्टर साहब को पता चल गया कि रजनी के पास हारमोनियम है, जो वह उसकी अनुपस्थिति में बजाया करती है। रजनी ने हारमोनियम छिपाकर रखा हुआ था। डॉक्टर साहब गोदाम में कुछ लेने गये तो वहाँ एक लकड़ी का सन्दूक रखा देख, विस्मय करने लगे कि इसमें क्या पड़ा है?

खोला तो एक सस्ते मूल्य का हारमोनियम देखकर चकित रह गये। उस समय रजनी रसोईघर में खाना पका रही थी। डॉक्टर ने उस बाजे को सहज से निकाला और गोदाम के बाहर ला, उसको बेतुके ढंग से बजाने लगा।

डॉक्टर को गाने का शौक नहीं था। उसको रिषभ और निषाद में अन्तर समझ नहीं आता था। अतः जब बजने लगा तो विचित्र और बेमेल-से स्वर निकलने लगे।

रजनी ने रसोईघर में बैठे जब पों-पों का शब्द सुना तो समझ गई कि उसका पति बाजे से खेलने लगा है। वह आई और अपने पति को, बच्चों की भांति दाहिने हाथ से धोंकनी चलाते और बाएँ हाथ से बेसुरे स्वर बजाते हुए देख मुस्कराने लगी।

डॉक्टर ने रजनी को आते देख कहा, "यह तो बहुत मीठा बजता है!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजनी हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "हाँ, परन्तु रोगियों की नाड़ी से यह मीठा नहीं बजता।"

"क्या मतलब?"

"यही कि इस पर समय लगता है और प्राप्ति कुछ नहीं होती। नाड़ी बजती सुन तो आप सहस्रों पैदा कर लेते हैं।"

"ठीक है। वह तो मैं करता हूँ, परन्तु तुमने तो किसी की नाड़ी नहीं देखनी। तुम बजाओ और मैं सुनूँगा।"

"आपको स्वाद नहीं आयेगा।"

"तनिक सुनूँ तो। मैंने आज तक किसी को गाते नहीं सुना। एक बार बर्लिन में एक 'म्यूजिकल कॉनसर्ट' में गया था और जब तक वह कॉनसर्ट होती रही थी, मैं सोता रहा था। जब वह समाप्त हुई तो लोगों के उठने की आवाज से मैं जाग पड़ा और उठकर हॉल से बाहर चल पड़ा।

"मेरे साथ की सीट पर बैठे हुए एक आदमी ने मेरी ओर मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'यंगमैन! गाना कैसा रहा है?"

"मैंने कह दिया—"बहुत मधुर था—इतना मधुर कि मुझको नींद ही आ गई थी।'

"इस पर तो वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। पुनः गम्भीर हो वह कहने लगा, 'कदाचित् तुम ठीक कहते हो। सब देशों में माताएँ बच्चों को गा-गाकर सुलाया करती हैं। बच्चों के लिए गाने में यही गुण सबसे बड़ा होता है।'

"इतना कह वह पुनः हँसने लगा तो मैं भी हँस पड़ा। अपने को बच्चा कहा जाना, मैं अपनी प्रशंसा समझता था, परन्तु उसके मुख पर व्यंग की मुद्रा देख मैंने निश्चय कर लिया कि पुनः ऐसे हॉल में नहीं जाऊंगा।

"इसके पश्चात् मैं किसी गाने वाले के समीप नहीं फटका। इसमें एक और भी कारण है। मैंने एक अति सुन्दर और अति मधुर गाने वाली एक जर्मन लड़की को पसंद किया था। वह मेरे एक सहपाठी की छोटी बहन थी। वह बहुत मीठा बोलती, गाती और नाचती थी। जब कभी भी मैं अपने सहपाठी के घर जाता, वह मेरे कंधों पर चढ़ी रहती।

"एक दिन तो वह मुझसे प्रेम प्रकट करने लगी तो मैंने उससे कह दिया, 'मैं तुमको बहुत पसंद करता हूँ।' इसका अर्थ यह प्रेम समझी। उसने भी मुझसे प्रेम प्रकट किया। मैंने समझा कि वह मुझसे विवाह कर लेगी।

"मेरी परीक्षा-फल के कुछ दिन पूर्व उसका भाई मुझसे मिला और उसने साधारण रूप में कह दिया, 'आज मेरी बहन कार्नाना का विवाह 'बोन-हर्टबर्ग' से हो गया है।'

"मैं तो यह सुनकर स्तब्ध रह गया। मैं यह आशा लगाये हुए था कि मेरा उससे विवाह होगा। मैं अपने परीक्षा-फल के अवसर पर उसको 'प्रपोज' करने वाला था।

"सबसे विलक्षण बात यह थी कि उसके विवाहोत्सव के सम्बन्ध में दिये गये 'डिन्नर' का निमंत्रण मुझको भी मिला। मैं गया। वहाँ चार-पांच सौ व्यक्तियों को निमंत्रण था। इस पर भी वह मुझसे एकान्त में मिली और कहने लगी, 'आपको यह जानकर प्रसन्नता होनी चाहिये कि मैंने अपने पति को बहुत पसन्द किया है।'

'मेरे मुख से अनायास और बिना इच्छा के निकल गया, 'मुझसे भी अधिक?'

'हाँ! वह बहुत ही जौली (प्रसन्न-वदन) पुरुष है।'

'मैं यह आशा कर रहा था कि मैं तुमसे विवाह कर सकूंगा।'

'ओह! आपने ऐसी आशा करने का साहस कैसे किया?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं तुम्हारा वह प्रेममय व्यवहार नहीं भूल सका, जो तुम मेरे साथ करने की कृपा करती रही हो।'

'वह एक खेल था। एक बात तुमको समझ लेनी चाहिये कि कोई भी औरत तुम जैसे भद्दे, कुरूप पुरुष से जीवन-भर के लिए बंधना पसंद नहीं करेगी।'

''उसी रात मैं दर्पण के सामने खड़ा हो, यह देखने लगा कि क्या मैं सत्य ही कुरूप हूँ। संगीत-नृत्य के विषय में मेरी रुचि न थी। कदाचित् इसी कारण उसने मुझको कुरूप समझा होगा। जब कभी वह गाया करती थी, तो मुझको नींद आने लगती थी।''

''यह तो आपने कभी बताया नहीं। मैं आज रात इस बात की परीक्षा करूंगी कि मेरे गाने से भी आपको नींद आती हे अथवा नहीं।''

''तो गाने से नींद आनी अच्छी बात है?''

''हाँ, एक प्रकार से यह गुण ही है। संगीत का अर्थ ही है कि मनुष्य को बाहर के संसार से निकालकर अन्तर्जगत् में ले जाये। आपका मन, जो रोगियों को देखने में लीन रहता है, थक जाता है। संगीत आपको रोगियों के कष्टों से मुक्त कराकर विश्राम की अवस्था में ले जाता है और इसी कारण आप सो जाते हैं।''

''अच्छा, तनिक बजाओ तो।''

रजनी ने एक गीत गाकर सुना दिया। दोपहर का समय था। डॉक्टर इस समय विश्राम कर चुका था। तब उसके स्वाध्याय का समय था। इस कारण उसको नींद नहीं आई, बल्कि उसने कुछ तरोताजगी ही अनुभव की। दस मिनट तक भजन सुनकर वह बोला, ''भजन का आशय तो पसंद नहीं आया, परन्तु ट्यून (स्वर) मजेदार है।''

भजन था—'**प्रभु मेरे अवगुण चित्त न धरो।**' रजनी ने बाजा बंद कर दिया और कहा, ''भजन के बोल तो अपनी-अपनी अवस्था के साथ सम्बन्ध रखते हैं, आपमें कोई अवगुण है ही नहीं, इस कारण आपको अवगुणों से मुक्ति पाने की अभिलाषा नहीं है।''

''अवगुण हैं अथवा नहीं, उसको छोड़ो। मैं जो बात पसंद नहीं करता, वह है इन अवगुणों से मुक्ति पाने के लिये भगवान् से प्रार्थना करना। भगवान् कहाँ हैं? वह न अवगुणों का कैसे हरण करेगा? और फिर वह भला क्यों करेगा? उसको इतना कष्ट करने की क्या आवश्यकता है?''

''खैर ट्यून आपको पसंद है तो मैं, जब आप कहेंगे, गा दिया करूंगी।''

परिणाम यह हुआ कि दिन के भोजन के उपरान्त एक-आध भजन सदाशिव सुनता और रजनी की मधुर आवाज का रसास्वादन करता।

सदाशिव को अपने संगीत में रुचि लेते देख रजनी को, संगीत में उन्नति करने की इच्छा उत्पन्न हो गई। टकसाली दरवाजे के बाहर गान्धर्व महाविद्यालय में वह संगीत सीखने के लिये जाने लगे। वह दिन के तीन बजे जाती और सवा चार बजे तक लौट आती।

डॉक्टर को ऐसा प्रतीत हुआ कि दिन-प्रतिदिन उसके गाने में माधुर्य बढ़ रहा है। उसके दो महीने की शिक्षा के पश्चात् डॉक्टर को उसके संगीत में स्पष्ट अन्तर दिखाई देने लगा। एक दिन उसने पूछ लिया, ''रजनी! क्या बात है? अब तो तुम्हारे गाने में रस अधिक आने लगा है।''

''सत्य! क्या अब पहले से अधिक गहरी नींद आती है?''

सदाशिव हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, ''नींद तो वैसी ही आती है, परन्तु पहले से कुछ भला लग रहा है।''

''गीत तो वैसे ही होते हैं। अभी मैं गा रही थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघुवर तुमको मेरी लाज,
सदा-सदा मैं शरण तिहारी।'

"इस पर भी यह ट्यून बहुत मीठी लग रही है।"

"बात यह है कि मैं अब गन्धर्व महाविद्यालय में संगीत सीखने के लिये जाती हूँ।"

"ओह! किस समय?"

"तीन के बाद, जब आप रोगियों को देखने गये होते हैं।"

इन्हीं दिनों पद्मदेव की डॉक्टर सदाशिव से गरीबों को निःशुल्क देखने की बात हो गई। जब डॉक्टर ने कहा कि यदि वह रोगियों को निःशुल्क देखने लगेगा तो उसका काम ढीला पड़ जायेगा। इस पर पद्मदेव ने कह दिया था कि उसको भय इस कारण है कि वह भाग्य और भगवान् को नहीं मानता।

इस सम्बन्ध में बातचीत होते हुए रजनी ने कह दिया कि दो-चार जन्म में वह भगवान् के दर्शन कर सकेगी। यह बात डॉक्टर की हँसी का विषय बन गई।

पद्मदेव भी जान गया कि डॉक्टर की पत्नी, जो देखने में कुरूप लगती है, बातचीत में बहुत ही चतुर है। सबसे बड़ी बात यह थी कि डॉक्टर साहब के हँसने के साथ वह भी हँसने लगी थी। उसको हँसते देख डॉक्टर साहब ने कह दिया—"तो तुम भी इस भद्र पुरुष के सम्मुख मेरी हँसी उड़ा रही हो?"

"जी नहीं! यदि हँसी है तो अपने विचारों और विश्वासों के साथ है। इस पर भी मैं तो यह कह रही हूँ कि मेरे शरीर में आत्मा है, जो मृत्यु पर मरता नहीं, प्रत्युत पुनः जन्म लेता है।

"यह प्रक्रिया व्यर्थ नहीं। इसका अर्थ केवल यह है कि यात्रा लम्बी है, एक दिन में पूर्ण नहीं हो सकती। अतः रात के विश्राम के पश्चात् प्रातः पुनः हमें यात्रा पर चल पड़ना है। कपड़े पुराने हो जाने पर अथवा फट जाने पर नये पहन लिये जाते हैं, परन्तु यात्रा चलती रहती है।

"कभी रात सोने के पश्चात् यात्री यात्रा की दिशा भूल भी जाता है। कभी उल्टे मार्ग पर चल पड़ता है। इस अवस्था में यात्री भटकता रह जाता है।"

"परन्तु हम भूल क्यों जाते हैं कि हम किधर से आये हैं और हमको किस ओर जाना है?" सदाशिव ने मुस्कराते हुए पूछ लिया। मुस्कराने का अर्थ था कि वह इस विचार को नहीं मानता।

पद्मदेव रजनी की युक्ति और उसके बात कहने के ढंग से चकित रह गया। इस पर भी, आत्मा के अस्तित्व को न मानने वालों की सबसे प्रबल आपत्ति सुनकर, रजनी का उत्तर सुनने के लिये वह उत्सुक हो गया।

भोजन लगभग समाप्त हो चुका था। इस पर भी डॉक्टर ध्यानपूर्वक अपनी स्त्री को, इस नव-परिचित के सम्मुख, अपनी प्रतिभा की प्रखरना प्रदर्शित करने का अवसर देने के लिये बैठा रहा।

रजनी ने मुख का ग्रास समाप्त कर कह दिया, "यह बात तो सर्वथा सरल है। मृत्यु और जन्म के भीतरी काल में और फिर बाल्यकाल में मन, जो एक प्रकार का इस यात्रा में 'कम्पास' (दिशादर्शक यंत्र) है, प्रायः गंदला हो जाता है। इस धूरि को, मन रूपी दर्पण पर से झाड़ना पड़ता है, जिससे यात्रा की दिशा स्पष्ट हो जाये।"

"तो तुम्हारे मस्तिष्क पर से धूरि झड़ चुकी है?"

"मस्तिष्क नहीं जी! मस्तिष्क तो शरीर का अंग है। यह बुद्धि का स्थान है, परन्तु मन तो एक पृथक् यंत्र है, जो आत्मा के साथ सम्बन्धित रहता है। वह शरीर का अंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं। हाँ, मन को मैंने साफ करने का यत्न किया है। कुछ सीमा तक तो वह भूत-भविष्य भी बताने लगा है।''

''ओह! यह तो बहुत मजेदार बात बताई है, रजनी! इस पर दो शंकाएँ उत्पन्न हो गई हैं। एक तो यह कि मन को कैसे निर्मल किया है तुमने? दूसरे तुम जो कुछ भूत के विषय में जानती हो, मुझको भी बता दो?''

इस समय तीनों भोजन समाप्त कर मेज पर से उठ पड़े थे। सब 'शैक' में हाथ धोने के लिए चले गये। हाथ धो ड्राइंगरूम की ओर जाते हुए रजनी ने कह दिया, ''यह सब इस प्रकार जल्दी में तो बताया नहीं जा सकता और साथ ही सम्भव है प्रोफेसर साहब को हमारी वार्त्ता 'बोरिंग' (थका देने वाली) प्रतीत हो रही हो।''

''नहीं-नहीं,'' पद्मदेव बोल उठा—''मुझको तो इसमें बहुत रस आ रहा है।''

''फिर भी यह सब एक क्रियात्मक विवरण है। इसको मैं इस समय बताना नहीं चाहती। इतना तो समझ सकती हूँ कि मन रूपी दर्पण पर संस्कार अंकित होते रहते हैं। इन संस्कारों को देखने के लिए दर्पण पर संस्कार अंकित होते रहते हैं। इन संस्कारों को देखने के लिए दर्पण धूलिरहित होना चाहिए। इस दर्पण पर धूलि, काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार की पड़ती रहती है। इनको मन से निकाल देना, मन को धूलिरहित करना है। जितना मन काम, क्रोधादि विकारों से रिक्त होता जाता है, उतना ही इस पर पड़े संस्कार स्पष्ट होते जाते हैं। मैंने इन विकारों को अपने मन से निकालने का यत्न किया है। अब कुछ-कुछ धुंधली-सी, भूत एवं भविष्य की दिशा दिखाई देने लगी है।''

: 6 :

पद्मदेव ने हँसी-हँसी में डॉक्टर सदाशिव से कह दिया था कि उसका विवाह हुआ प्रतीत नहीं होता। इसका परिणाम यह हुआ कि उसका परिचय इस अद्‍भुत स्त्री से हो गया। विदा होते हुए पद्मदेव ने कहा—''देखिये रजनी देवीजी! आज का दिन मेरे जीवन में एक सुनहरी दिवस बना रहेगा। आज मैं आपसे परिचय प्राप्त करने का सौभाग्य पा गया हूँ।

''मेरा तो अपना घर नहीं है। मेरी पत्नी भी मेरे लिए, इस समय नहीं है, ऐसा समझा जाना चाहिये। वह मेरे साथ नहीं रहती। मेरे एक परम मित्र यहीं इस मुहल्ले में हैं। उनका नाम है प्रोफ़ेसर सुदर्शन। उनकी पत्नी श्रीमती साधना देवी मेरी बहन बनी हुई हैं। मेरा लड़का सुधीर उन्हीं के पास रहता है। मैं भी वहाँ आता-जाता हूँ।

''साधना देवीजी आप दम्पति को निमंत्रण भेजेंगी और मैं समझता हूँ कि मुझको वहाँ आपके पुनः दर्शन करने और आपके चमत्कारिक अनुभवों को सुनने का अवसर मिलेगा।

''डॉक्टर साहब! मैं आपका अत्यंत आभारी हूँ, जो आपने इतनी कृपा कर मुझको अपने विषय में कुछ अधिक जानने का अवसर दिया हैं क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि साधना बहन से आपका परिचय करा सकूं?''

''हम,'' डॉक्टर सदाशिव का कहना था—''प्रोफेसर सुदर्शन और बहन साधना से पहले ही परिचत है। परिचय तो यहीं दवाखाने में ही आरम्भ हुआ था। धीरे-धीरे साधना देवी मेरे परिवार में आने-जाने लगी हैं। हम उनके घर जाने का सौभाग्य प्राप्त कर अति प्रसन्न होंगे।''

पद्मदेव लौटा तो प्रोफेसर सुदर्शन उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। पद्मदेव को आते देख बोला, ''कहाँ रह गये थे? चलिये, भोजन को बहुत देर हो गई है।''

''भोजन तो मैं कर आया हूँ।'' उसने साधना की तरफ देखते हुए कहा।

''कहाँ किया है भोजन?'' साधना ने उठ, खाने के कमरे की ओर जाते हुए पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव भी उसके साथ चल पड़ा। साथ चलते-चलते उसने बताया—"डॉक्टर सदाशिव के घर पर। कुछ ऐसी वार्त्तालाप में उलझ गया था कि भोजन का निमंत्रण मिल गया और उस वार्त्तालाप को समाप्त करने के लिए, उसके घर पर ही भोजन करने बैठ गया।"

"ओह! तो आप रजनी देवी से मिले हैं?"

"हाँ! भोजन का निमंत्रण उसने ही दिया था। पहले तो मैं समझा था कि डॉक्टर की नौकरानी है, परन्तु पीछे पता चला कि वह तो वहाँ की मलिका है।"

"तो आप भी उस स्त्री के सम्मोहन में आ गये न? वह तो जादूगरनी है।"

पद्मदेव हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा—"है तो, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उसका जादू किसी का अनिष्ट नहीं करता। वह दूसरों की भलाई के लिए ही प्रयोग हो रहा है।"

"तो क्या आपका भी कुछ कल्याण किया है उसने?"

"हाँ, बहुत स्वादिष्ट भोजन से तृप्ति हुई है। साथ ही एक स्पष्ट, सुन्दर तथा सुघड़ मन में झांकने का अवसर मिला है।"

भोजन की मेज पर बैठते ही नौकर ने भोजन लगा दिया। पद्मदेव ने कहा, "हाँ, एक अनिष्ट भी हो गया है। वह यह कि आपको इतनी देर तक भूखा रखने में वह कारण बन गई है।"

"दादा!" साधना ने कह दिया, "इस स्त्री से सावधान रहना। कहीं यह तुमको उड़ाकर ही न ले जाये।"

सुदर्शन और पद्मदेव हँसने लगे। सुदर्शन ने कहा, "वैसे तो सबकी सब स्त्रियाँ न्यूनाधिक मात्रा में जादूगरनी होती हैं। वे अपने जादू का प्रभाव अपने चारों ओर फैलाती रहती हैं, परन्तु मेरा अनुभव है कि रजनी का जादू अपने सम्पर्क में आने वालों के लिए अनिष्ट का कारण नहीं होगा।"

"यह तो उसके सम्मोहन में फँस चुके हैं। इसी कारण उसकी इतनी प्रशंसा कर रहे हैं।"

"तो साधना बहन को उससे ईर्ष्या हो रही है? इस अवस्था में तो प्रोफेसर जी के विषय में सत्य ही चिन्ता करनी चाहिए, परन्तु मैं अपने विषय में साधना बहन को आश्वासन दे सकता हूँ कि एक के स्थान मेरी दो बहनें हो जाने पर भी, किसी को घाटा नहीं रहेगा। स्नेह का भंडार सूखेगा नहीं।"

इस पर तो तीनों ही हँसने लगे। सुदर्शन और साधना भोजन करने लगे। पद्मदेव बोला, "मैं रजनी देवी को कह आया हूँ कि उसको प्रोफेसर साहब की पत्नी साधना देवी को कह आया हूँ कि उसको प्रोफेसर साहब की पत्नी साधना देवी भोजन पर आमंत्रित करेंगी। मैंने उसको बता दिया है कि मेरी पत्नी मुझसे रूठी हुई है। इस कारण मेरा डेरा आजकल बहन साधना के घर पर ही है।"

"तब तो सब घुटाला कर दिया है। वह अब आयेगी और अपना जादू इन पर चलायेगी। परिणाम यह होगा कि यह सप्ताह-भर उसके विषय में विचार करते रहेंगे, जिससे मेरी तथा घर की सुध भूल जायेंगे।"

"तब तो उसको यहाँ बुलाना ठीक न होगा। मैं उनको किसी होटल में निमंत्रण दे दूँगा। साधना बहन तो उस दावत पर आयेंगी और सुदर्शन भैया को घर पर रूई में लपेटकर रख आयेंगी, जिससे उसका जादू इन पर न चल सके।"

"परन्तु श्रीमतीजी को यह पता नहीं कि रजनी के पिता पंडित सरस्वतीनाथ मेरे संस्कृत के अध्यापक रहे हैं।" सुदर्शन ने कह दिया—"साथ ही मैं रजनी से उनके घर पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिलता रहा हूँ। मेरा तो उससे नाता, गुरु-कन्या होने से बहन का है।''

''अब बताओ साधना बहन! यहाँ तो काम बहुत ही बिगड़ गया प्रतीत होता है।''

''क्या करें? आप पुरुष लोग तो लपेटकर रखे नहीं जा सकते। इसीलिए यह कहकर 'भगवान आपका भला करे' संतोष करना पड़ता है।''

पद्मदेव भी अनुभव करता था कि सत्य ही रजनी में एक आकर्षण है, जिससे वह एक अति विद्वान् और धनी पति पर अपना मोहनी मन्त्र चला कर, उसके नाक की नकेल बनी हुई है।

लाहौर में रहते हुए उसका सम्पर्क अपने पूर्व मित्रों से भी हो रहा था। सुदर्शन के बाद उसका सम्पर्क डॉक्टर शिवलाल से था। डॉक्टर शिवलाल किसी सरकारी नौकरी के लिए प्रत्याशी था, परन्तु उसका नंबर सबसे ऊपर होने पर भी, वह लिया नहीं जा रहा था। अतः उसने प्राइवेट प्रैक्टिस से भी कुछ प्राप्त करने का यत्न आरम्भ कर दिया था।

पद्मदेव उसके क्लिनिक में जाया करता था। डॉक्टर शिवलाल की पत्नी रामप्यारी अब तीन बच्चों की माँ थी। वह भी पद्मदेव से सहानुभूति रखती थी। पद्मदेव उनके घर में प्रायः आमन्त्रित होता रहता था।

उक्त घटना के तीन-चार दिन के पश्चात् वह शिवलाल से मिलने गया तो शिवलाल ने कह दिया, ''पद्मदेव! तुम लाहौर में रहकर भी लापता रहते हो। देखो, मैंने तुमको कितनी बार कहा है कि होटल को छोड़ो और हमारे घर में आकर रहना आरम्भ कर दो। सुदर्शन के घर में तुमको इतनी शांति न मिल सकेगी, जितनी हमारे घर में मिल सकती है।''

''शिवलाल! यह मैं जानता हूँ, परन्तु मैं अपने आराम की बात नहीं, तुम्हारी और भाभी की सुख-सुविधा की बात सोच रहा हूँ। देखो, मुझको तो कोई कष्ट नहीं। इसके साथ ही मुझे पढ़ने-लिखने की सुविधा भी वहाँ पर प्राप्त है। दिन का अधिकांश समय तो यूनिवर्सिटी लायब्रेरी में व्यतीत होता है। रात को सोने भर के लिए होटल में जाना होता है।''

''सुनाओ! बच्चे का क्या हाल है?''

''उसकी होम्योपैथिक चिकित्सा आरम्भ कर दी है?''

''किसको दिखाया है?''

''डॉक्टर सदाशिव को, जो शाही मुहल्ले में रहता है।''

''ओह! कैसा लगा है वह डॉक्टर?''

''अच्छा है। बच्चे का रोना कम हो गया है और टट्टी भी नित्य आने लगी है।''

''नहीं, पद्मदेव! मैं उसकी चिकित्सा के विषय में नहीं पूछ रहा। मैं तो डॉक्टर के विषय में पूछ रहा हूँ।''

''डॉक्टर के विषय में? क्या है उसको?''

''वह नीम पागल नहीं मालूम हुआ तुमको?''

''तो तुम उसको जानते हो?''

''ठहरो, भाभी को बुलाता हूँ। वह ही उसके विषय में बताएगी?''

''क्या हुआ है उसको? मैं तो उसकी पत्नी से भी मिला हूँ और····।''

शिवलाल ठहाका मारकर हँस पड़ा। हँसकर बोला, ''तो तुम संसार के आठवें चमत्कार से मिल चुके हो।'' शिवलाल ने सामने रखी घण्टी बजाई। घण्टी बजते ही चपरासी, जो बाहर बैठा था, चला आया। शिवलाल ने हाथ पर बंधी घड़ी देखकर कहा, ''जाओ, घर पर कह दो कि पद्मदेवजी खाना यहीं पर खायेंगे। हम साढ़े आठ बजे घर पर पहुँच जायेंगे।''

जब चपरासी चला गया तो शिवलाल ने कहा, ''अब यह बात घर पर चलकर करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
डॉक्टर सदाशिव की पत्नी, संसार के आठवें चमत्कार की, रामप्यारी ही वर्णन करेगी। मैंने उसको देखा है और एक बार देखने के पश्चात् इच्छा नहीं हुई कि दुबारा उसके दर्शन करूं।''

''परन्तु शिव! मैं उसके साथ एक ही मेज पर बैठ भोजन कर आया हूँ। लगभग एक घण्टा उससे बातें भी हुई हैं। मेरी रुचि तो उससे पुनः मिलने की एवं उसके विषय में अधिक जानने की हो रही है।''

''गुड! तब तो रामप्यारी से मिलने का तुमको लाभ होगा। वह भी उसके प्रशंसकों में है।''

''तुम यह बताओ, विलायत कब जाने का विचार है?''

''पासपोर्ट के विषय में अभी कोई सूचना नहीं मिली। उसके मिलते ही चल दूँगा।''

''पुस्तक के विषय में सुदर्शन से चर्चा हो गई है?''

''हाँ! सुदर्शन ने कई बहुत ही मजेदार सुझाव दिये हैं।''

''मैं चाहता हूँ कि जाने से पहले, तुम अपने सब मित्रों को एक दावत दो और उस समय हम सबको बताओ कि यह कौन-सी मुहिम है, जो तुम लन्दन जाकर, सर करना चाहते हो?''

''यह भी होगा। दावत होगी और मैं उसमें अपनी पुस्तक का सारांश भी बताना चाहूँगा। यदि तुम मेरी तुस्तक का विशेष परिचय पाना चाहते हो, तो अगले मास की दस तारीख को डी०ए०वी० कॉलेज के अनुसंधान विभाग में मेरे साथ चलना। वहाँ मैं, इसके विषय पर एक विशेष व्याख्यान देना चाहता हूँ।''

''किस समय व्याख्यान होगा?''

''दिन के तीन बजे। एक घण्टा व्याख्यान होगा और आधा घण्टा प्रश्नोत्तर होंगे।''

''समय तो ठीक है। मेरी चिकित्सा का समय सायं छः बजे आरम्भ होता है।''

''सुदर्शन तो चलेगा ही, उसकी पत्नी साधना भी चलेगी। साधना यह भी कह रही थी कि तुम्हारे आठवें चमत्कार श्रीमती रजनी को वह ले चलेगी।''

''तब तो कदाचित् मैं न जाऊं?''

''डॉक्टर! एक सरल चित्त औरत से इतना डरते हो?''

''यह बात नहीं। मैं असुन्दर वस्तुओं से परहेज करता हूँ। यहाँ तक कि कोई कुरूप अंगहीन व्यक्ति मुझसे चिकित्सा कराने आये तो भी मैं उसमें ध्यान नहीं दे सकता।''

''ओह! भले ही वह व्यक्ति पूरी फीस देने वाला हो?''

''उसकी जेब में फीस उसको सुन्दर बना देती है, परन्तु पद्मदेव! उस लड़की की जेब में तो धन भी नहीं।''

पद्मदेव देख रहा था कि शिवलाल की मनोवृत्ति में भारी अन्तर पड़ रहा है। वह इस सबका कारण जानने के लिए पूछने लगा, ''शिवलाल! आज कल कुछ आर्थिक कठिनाई तो अनुभव नहीं हो रही?''

''कठिनाई तो नहीं, बाहुल्यता भी नहीं है। वह देखो, तुम्हारा साला महमूद! एक दमड़ी की अक्ल नहीं रखता, पर सरकारी नौकरी लगने पर लखपती बन गया है।''

''मैं एक दिन उससे मिलने गया था।'' पद्मदेव ने गम्भीर होकर कहा—''तीन मोटरें हैं, कोठी में सहस्रों रुपये का फर्नीचर लगा हुआ है। सूसन ने एक नेकलेस पहना हुआ था, जो दस सहस्र रुपये से कम दाम का न होगा। बड़ी शानोशौकत थी। इस पर भी महमूद के मुख पर भिनभिनाहट थी। वह पहले से दुर्बल और ओज-विहीन हो रहा था।''

''यह तो मानसिक अवस्था के कारण है। देखो न, मुझको 'असिस्टैण्ट डायरेक्टर ऑफ हेल्थ' बनना चाहिये था, बन गया वह। सब सिफारिश की महिमा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''वह ऐश करता है और मैं यह प्राइवेट प्रैक्टिस के नरक में पड़ा हूँ। इस पर भी यदि मैं हृष्ट-पुष्ट हूँ और वह भीतर-ही-भीतर गल रहा है तो कारण यह है कि मेरा मन साफ है। मैं खुश रहता हूँ। वह कुटिल हो गया है और भीतर-ही-भीतर घुटता जाता है।''

''मैंने उससे कहा था कि अब तो वह धनवान हो गया प्रतीत होता है। उसको मेरी कोठी मोल ले लेनी चाहिये।

''इस पर वह कहने लगा, ''क़िसने कहा है आपको कि मैं धनवान हूँ?''

'यह तुम्हारी तीन मोटरें, शानदार फर्नीचर, तुम्हारी पत्नी के आभूषण इत्यादि। इन सबको देखकर कोई भी तुमको लखपति कह देगा।'

'पद्मदेव जी! यह देखो।' उसने अपनी बैंक की पास बुक दिखाई। पास बुक में दस रुपये पन्द्रह आने बकाया रकम लिखी थी।'

'यदि वह किताब ठीक कहती है तो यह तीन गाड़ियाँ क्यों रखी हुई हैं? दस-दस हजार के नैकलेस क्यों खरीदे जाते हैं?'

'यह सब सोसन का है। उसकी माँ मेरी, तो दस लाख अपनी लड़की के लिए छोड़ गई। वह अब बेलगाम घोड़े की भांति जहाँ चाहती है, जाती है। यह सबसे बड़ी मोटर उसकी अपनी है। भूषण उसने अपने खरीदे हैं। अपने मित्रों को वह दावतें देती है और उनकी दावतों पर जाती है। प्रायः रात को मियाँ इफ्तिखार हुसैन की कोठी पर सोती है। दिन को यहाँ आ धमकती है। रफीका बेचारी पर्दे मे पड़ी रहती है और बहुत ही सादा जिन्दगी बसर कर रही है।'

''मैंने उसको कहा, 'भाई जान! यह दूसरा विवाह भूल नहीं है क्या?'

'मैं समझता हूँ कि पहला भूल थी। दूसरे से दो औलाद भी हो गई हैं। वह एक गरीब, की लड़की है। निहायत शरीफ है। सादा और कम बोलने वाली है।'

''मुझको सोसन भी मिली थी। वह अपनी चमक-दमक से मिलने वालों को चकाचौंध करती रहती है। इस पर भी उसके मुख के पाऊडर और लेप के नीचे उसके मुख पर मुर्दानी दिखाई दी है। मैंने उससे भी कहा कि वह मेरी कोठी मोल ले ले। इस पर वह कहने लगी, 'क्या जरूरत है?'

''मैंने बताया, 'मैं इंग्लैण्ड जा रहा हूँ और कदाचित् वहाँ से न लौटूं। इसलिए यहाँ की सम्पत्ति को बेचना चाहता हूँ।'

'क्या दाम लेंगे इसका?'

'चालीस हजार रुपया।'

'दस हजार लेना हो तो इसी समय सौदा होता है।'

'मैं इसको नीलाम करवा दूँगा।''

'तब हम देखेंगे कि क्या किया जा सकता है।'

'मैं कहने वाला था कि महमूद ने तो कहा है कि उसके पास रुपया नहीं है, परन्तु वह कहने लगी—'मेरा मतलब है मियाँ इफ्तिखार हुसैन साहब हक शुफा कर देंगे।'

'वह क्या होता है?' मैंने पूछ लिया।

'तब पता चल जायेगा।'

''देखो शिवलाल! यह है उनके धनी होने का प्रमाण और कारण।''

''कुछ भी हो, वे इस समय धन में लोट-पोट हो रहे हैं और मैं समझता हूँ कि मुझको उनसे अधिक धन मिलना चाहिये। सरकार मुसलमानों को लूटने का खूब अवसर दे रही है। साथ ही उनकी सहायता कर रही है। मैं यह समझता हूँ कि हमको सरकार की सहायता तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं मिल सकेगी, इस कारण हमको अपने पाँव पर खड़ा होना चाहिए। मैं आजकल केवल धन एकत्रित कर रहा हूँ।''

''इसमें आपत्ति नहीं। आपत्ति तो तब होगी, जब तुम यह कार्य अधर्मयुक्त उपायों से करोगे।''

''धर्म क्या है?''

''प्रथम, देश का कानून। द्वितीय आधारभूत दस प्रकार के धर्म। देश का कानून उस प्रकार की आय को अनियमित बतायेगा, जो आप उसकी अवहेलना करके पैदा करेंगे, परन्तु यदि आप धर्म के दस लक्षणों की अवहेलना करेंगे, तब भी तो अधर्मयुक्त कमाई करेंगे।''

''देश का कानून तो मैं जानता हूँ और उनका उल्लंघन भी नहीं करता। यह तुम्हारे धर्म के दस लक्षणों को मैं नहीं मानता। इनका मेरे व्यवसाय से कोई सम्बन्ध नहीं है।''

''सम्बन्ध तो है। धर्म का सम्बन्ध मनुष्य की प्रत्येक बात से है। मान लो तुम्हारे पास कोई धनी आदमी आता है। तुम उसको औषधि देना नहीं चाहते, परन्तु उससे कुछ आय करने लिये 'डिस्टिल्ड वाटर' का इंजेक्शन दे देते हो। इस समय तुम असतय भाषण कर अधर्म के भागी होते हो। इसी प्रकार धर्म के अन्य लक्षणों के विषय में भी है। एक निर्धन तुम्हारे पास आता जाता है। आकर तुमसे राय करता है। तुम उस समय खाली हो, परन्तु बिना फीस लिये उसको राय नहीं देते। भले ही यह कानून से उचित है, परन्तु दया के विपरीत होने से अधर्म है।''

''यह सब व्यर्थ की बातें हैं। मैं धर्म तो अन्य ढंग से भी कर सकता हूँ। दान-दक्षिणा देता रहता हूँ। अपना व्यवसाय तो पैसा कमाने के लिए करता हूँ। यहाँ पर दया-धर्म की आवश्यकता नहीं।''

: 7 :

रात को शिवलाल के घर खाना खाते हुए शिवलाल ने अपनी पत्नी से कहा, ''तनिक अपनी सहेली रजनी के विषय में इनको बताना।''

''क्यों, ये उसको कैसे जानते हैं?''

''मैं कुछ दिन हुए सुधीर को दिखाने के लिए डॉक्टर सदाशिव के पास गया था। वहाँ किसी विषय पर विवाद चल पड़ा और डॉक्टर के खाने का समय हो गया। इस पर मुझको भी वहाँ भोजन का निमंत्रण मिल गया। वहाँ उनकी पत्नी रजनी से परिचय हो गया। उस जैसी स्त्री से डॉक्टर सदाशिव कैसे निर्वाह करता है, यह एक विस्मय की बात थी। मैंने उसका अध्ययन किया और पीछे साधना से उसके विषय में जाना तो उसको सत्य ही एक चमत्कार पाया है।''

''देखिये पद्मजी!'' रामप्यारी ने बताया, ''चमत्कार इसमें कुछ नहीं है। वह अति शील स्वभाव रखती है और मन सदा सन्तुलित रहता है। इससे वह अपने तथा दूसरों के कार्यों का यथार्थ मूल्य लगा लेती है।

''उसके विषय में मेरा ज्ञान तो सुमित्रा के द्वारा हुआ था। उसने बताया था, 'माताजी! रजनी बहनजी बहुत ही अच्छी हैं। बहुत ही प्रेम और लग्न से हमें पढ़ाती हैं। वे किसी को भी पीटती नहीं। उसका कहना सभी लड़कियाँ मानती हैं।'

''मैंने सुमित्रा की बात को अनसुनी कर रखा था, परन्तु जब डॉक्टर सदाशिव उसकी प्रशंसा के पुल बांधने लगे, तो उससे मिलने की इच्छा उत्पन्न हो गयी। एक दिन सदाशिव के कहने पर ही मैं उसको देखने और उसके विवाह के विषय में विचार जानने के लिये वहाँ जा पहुँचा। बहुत बातें हुईं। उसकी बातें सुनकर ही मैंने यह अनुमान लगा लिया कि उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
श्रेष्ठता उसके मन के सन्तुलन और शील स्वभाव के कारण ही है।

"मैं डॉक्टर सदाशिव से विवाह के पश्चात् मिली हूँ। वह बहुत प्रसन्न है। मेरे पूछने पर कि, 'वह कैसी है?' वह कहने लगे, 'बहुत अच्छी, अद्वितीय। अच्छा गा लेती है, सदा हँसती रहती है। बातें करती है तो फूल झड़ते प्रतीत होते हैं।'

"एक अन्य दिन मैंने कह दिया, 'कहीं उस जैसी ही भेंगे लड़के-लड़कियाँ पैदा न कर देना?"

'रूप तो कई बातों पर निर्भर करता है।' उसने कहा, 'यह आवश्यक नहीं कि माता के समान रूप-रंग वाली ही सन्तान हो। मैं यत्न कर रहा हूँ कि बच्चे सुन्दर हों, परन्तु शारीरिक सौन्दर्य तो तब तक ही मूल्य रखता है, जब तक बच्चे दस वर्ष से छोटे हों। कौमार्यावस्था में शारीरिक सौन्दर्य का मूल्य कम होता जाता है। उस समय से मन के सौन्दर्य का मूल्य बढ़ता जाता है। पूर्ण यौवन आने तक तो शारीरिक सौन्दर्य और मानसिक सौन्दर्य लगभग समान मूल्य के हो जाते हैं। यौवन व्यतीत होते-होते मन की श्रृखला शारीरिक सौन्दर्य को ढांप लेती है। मैं समझता हूँ कि रजनी की प्रौढ़ावस्था अब आरम्भ हो चुकी है और उसके मन की विकसित अवस्था अपना प्रभाव दिखाने लगी है। शरीर गौण होता जाता है। साथ ही मन प्रधानता में आता जाता है।'

"मैं समझती हूँ कि सदाशिव अपनी पत्नी के मन की अवस्था को जानता है और उससे प्रभावित है।"

"तो भाभी और भैया में रजनी के विषय में मतभेद है?"

"ऐसा मतभेद तो और भी कई बातों में रहता है, परन्तु यह हमने निश्चय कर रखा है कि हम गम्भीर से गम्भीर मतभेद होने पर भी अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों में अन्तर आने देंगे।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है, परन्तु भाभी! एक बात मैं तुमको अपने अनुभव की बताना चाहता हूँ। व्यक्तिगत सम्बन्ध तो बिना मतभेद के भी बिगड़ सकते हैं। इनके बिगड़ने में मतभेद नहीं, प्रायः व्यवहार भेद सहायक होता है। सरस्वती के घर से जाने से पूर्व तो हमारा मतभेद किसी भी विषय में नहीं था। हाँ, व्यवहार भेद कुछ काल से चला आ रहा था। वह ही सम्बन्ध विच्छेद का कारण बन गया।"

"मेरा यही कहना है कि हम अपना व्यर्वहार तो सामाजिक व्यवस्थाओं के अनुसार रखते हैं। मत अपना-अपना है। मैं आपको एक और बात बताती हूँ। आपके दादा आजकल धन के बहुत लोभी हो गये हैं। मैं इसको पसंद नहीं करती। इस पर भी मैं यत्न कर रही हूँ कि इनके व्यवहार में बाधक न बनूँ।"

पद्मदेव हँस पड़ा। उसने डॉक्टर शिवलाल से कह दिया, "दादा! देखना लोभ का व्यवहार कहीं भाभी की उदारता में बाधक न बन जाये। नहीं तो जीवन की विषमता नग्न हो सामने आ जायेगी।"

"पद्म! अपनी समेटो तुम। तुम सरस्वती के अनुकूल व्यवहार नहीं बना सके न? मैं तुम्हारी जैसी भूल नहीं करूंगा।"

रामप्यारी ने रजनी की प्रशंसा की तो पद्मदेव के मन में उस स्त्री के विषय में और अधिक जानने के लिए इच्छा उत्पन्न हो गई। उसने सदाशिव को सपत्नीक अपने व्याख्यान में निमंत्रण दे दिया। उस व्याख्यान पर बुलाने का परिणाम यह हुआ कि रजनी को पता चल गया कि पद्मदेव एक योग्य विद्वान् पुरुष है। अतः प्रति रविवार वह उसके घर भोजन पर आमंत्रित होने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यों-ज्यों पद्मदेव का परिचय रजनी और सदाशिव से गहरा होता गया, त्यों-त्यों शिवलाल अधिक और अधिक रजनी और सदाशिव की निन्दा करने लगा। कभी अवसर मिल जाता तो शिवलाल रजनी पर व्यंग भी कस देता। पद्मदेव इस मन की विकृत अवस्था का कारण नहीं समझ सका।

एक दिन शिवलाल अपने बच्चों सहित प्रोफेसर सुदर्शन के घर पर आमन्त्रि था और सदाशिव और रजनी भी वहाँ पर आये हुए थे। पद्मदेव को भी उस दिन भोजन पर उपस्थित होना था, परन्तु किसी कारण-वश वह समय पर नहीं आ सका। जब सब लोग वहाँ पर एकत्रित हो गये तो प्रोफेसर सुदर्शन ने मेहमानों को बताया कि पद्मदेव का टेलीफोन आया है कि उसको देरी हो जायेगी और वह चाहता है कि हम समय पर भोजन आरम्भ कर दें। वह यदि भोजन के समय पर आ गया तो खा लेगा।

जब शिवलाल ने सुना तो कह दिया, "तो पद्मदेव नहीं आ रहा?"

"उसके समय पर आने की आशा बहुत कम है।"

अब शिवलाल ने रजनी की ओर देखकर कह दिया, "आज आप इस दावत में साथी-विहीन ही रहेंगी।"

"ऐसा क्यों होगा? आप जो हैं।"

"नहीं भाभी रजनी! मुझको तुम्हारा साथ नहीं निभेगा।"

"क्यों?"

"तुम जैसी सुन्दर महिला तो सुन्दर पुरुषों की ही साथिन बन सकती है। मैं इस सौभाग्य के योग्य नहीं हूँ।"

सब समझ रहे थे कि शिवलाल रजनी पर व्यंग कस रहा है। फिर भी वे उसकी बात की अवहेलना कर परस्पर बातें करने में लीन होना चाहते थे। रजनी ने इस बात का उत्तर देने के स्थान पर केवल मुस्करा भर दिया। रामप्यारी, जो रजनी के पास बैठी थी, रजनी को सांत्वना देने के लिए कहने लगी, "डॉक्टर साहब को अपना सौभाग्य मानना चाहिए कि उन जैसे कुरूप पुरुष को सब पढ़े-लिखे विद्वान् अपनी संगत में स्थान देते हैं।"

"मैं कुरूप हूँ?"

"आपने ही तो अभी माना है कि पद्मदेव अति सुन्दर है; अर्थात् आप कुरूप हैं?"

"वाह! यह कैसे हो गया? मैं सुन्दर नहीं तो कुरूप भी तो नहीं। यदि सर्वथा कुरूप होता तो तुम्हारी कृपा का पात्र कैसे होता?"

"मेरी बात छोड़िये! मेरे पिताजी ने तो आपकी विद्वत्ता पर लट्टू हो, अपनी लड़की आप पर न्यौछावर कर दी है। आप अपने भाग्य की सराहना कीजिये कि रजनी जैसी स्त्री आपकी संगत में बैठना स्वीकार कर लेती है।

"और आप जैसों के लिये ही तो यह कहावत बनी है—'बंदर को अदरक का अचार।' रजनी-जैसी श्रेष्ठ स्वभाव की लड़की आप-जैसे निम्न कोटि के व्यक्ति की मित्रता को सहन करने की कृपा करती है।"

एक पति के लिये ऐसे वाक्य, वह भी अपनी पत्नी के मुख से प्रिय होने तो दूर, सदा के लिये विच्छेद में कारण बन सकते हैं, परन्तु शिवलाल को अपनी पत्नी रामप्यारी की डांट-फटकार सुनने का स्वभाव बन गया था। इस कारण वह अपनी पत्नी से बंदर की उपाधि प्राप्त कर हँस पड़ा। सुदर्शन यद्यपि बातें तो शिवलाल की लड़की से कर रहा था, परन्तु उसके कान शिवलाल और रामप्यारी की ओर लगे हुए थे। साधना डॉक्टर सदाशिव से बातें कर, उसका ध्यान शिवलाल से दूसरी ओर करने के प्रयत्न में लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस समय रजनी मुस्कराते हुए पति-पत्नी के विवाद को सुन रही थी। जब बात सीमा से बाहर जाती प्रतीत हुई तो रजनी ने पति-पत्नी के विवाद की दिशा बदलने के लिये कह दिया—"आज पद्मदेवजी नहीं हैं, तभी भैया शिवलाल अपने मुकाबिले का कोई व्यक्ति न देख, हमारी संगत में असन्तोष अनुभव कर रहे हैं। प्रोफेसर साहब! आप इनको इतिहास में ही कोई ऐसा मोड़ निकालकर बतायें, जिससे इनके चित्त में विवेक उत्पन्न हो सके।"

"तो मैं अविवेकी हूँ?" शिवलाल ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा—"कदाचित् टेढ़ी आँखों वाले को सब कुछ टेढ़ा ही दिखाई देता है।"

यह तो हद हो गई थी। रामप्यारी का मुख, अपने पति के इस असभ्यतापूर्ण व्यंग पर, लज्जा से लाल हो गया। सुदर्शन सुमित्रा से बातें करनी छोड़, इनकी बातों में दखल देकर कहने लगा, "डॉक्टर! किसी के पास चाहे कौड़ियाँ हैं या लाखों रुपये, इससे दूसरे को ईर्ष्या करने की आवश्यकता नहीं। तुम अपनी निधि का ध्यान रखो। कहीं ऐसा न हो कि सरस्वती भाभी की भांति रामप्यारी भाभी भी हवा में उड़ने में ही अपना कल्याण मानने लगें। रजनी बहन के विषय में तो मैं जानता हूँ कि वे मस्त हाथी की चाल चलना जानती हैं।"

इस पर रजनी ने हँसते हुए कह दिया—"भैया! हथनी हूँ तो आपको भोजन व्यवस्था बदलनी होगी। यहाँ भिंडी और पकौड़ी से काम नहीं चलेगा।"

इस पर सब हँसने लगे। शिवलाल को यह एक अन्य गाली समझ आई। यद्यपि सुदर्शन ने हाथी की मस्त चाल वाली कहावत का दूसरा अंध कि 'कुत्ता तो भौंका करता है।', नहीं कहा था। इस पर भी शिवलाल को समझ आया कि यह बात स्वतः कही गई मानी जानी चाहिये।

इस कारण उसने कह दिया, "एक श्रीमती हैं, जो मुझको बंदर की उपाधियाँ दे चुकी हैं। दूसरे मित्र हैं, जो मुझको कुत्ते के नाम से अलंकृत करना चाहते हैं। मैं समझता हूँ कि इस सभ्य समाज में मेरा अब कुछ काम नहीं।"

सुदर्शन अब मन से चाहने लगा कि यदि डॉक्टर शिवलाल चला जाये तो ठीक रहे, परन्तु रजनी ने पुनः बात टालने का यत्न किया। उसने कह दिया, "दादा! बस इतने मात्र से ही घबरा गये हो। अभी तो इस सभ्य समाज में आपकी आँखों के सौन्दर्य पर विवेचना नहीं हुई। यह तो बहन रामप्यारी ही कर सकती हैं और यदि आप नाराज होने लगेंगे तो वह बिचारी पतिव्रता होने के कारण कुछ कह न सकेगी।"

"नहीं कह सकेगी तो क्या होगा?"

"होगा यह कि आपकी सुन्दर आँखें, जो स्त्री जगत को अपने सम्मोहन में डाल रही हैं, अपना प्रशंसनीय स्थान इस समाज में पा नहीं सकेंगी।"

इस अरुचिकर वार्त्तालाप को बदलने के लिये सुदर्शन ने उठते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि भोजन के लिये अब साथ के कमरे में चलना चाहिये।"

"मैं समझता हूँ," सदाशिव ने जाने के लिये कह दिया, "मेरा एक रोगी को देखने का समय हो गया है। यदि सुदर्शन जी स्वीकृति दें तो मैं रोगी देख आऊं।"

"तो आप लौट आयेंगे?"

"यत्न करूंगा। यद्यपि आशा बहुत कम है। मैं शिवलाल से क्षमा चाहता हूँ कि मैं उनकी सुन्दर आँखों का बखान, उनकी पत्नी श्रीमती रामप्यारी के मुख से न सुन सकूंगा।"

इतना कह वहाँ से उठ, वह कमरे के बाहर चला गया। इस पर रजनी और रामप्यारी, दोनों उठकर बाहर सदाशिव के पीछे चली गईं। रामप्यारी ने डॉक्टर सदाशिव से कह दिया, "डॉक्टर साहब! क्षमा करियेगा। यह सब अप्रियता मेरे पति के कारण उत्पन्न हो गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ।" सदाशिव का कहना था—"आपके पति मेरी पत्नी पर मुग्ध हो गये हैं। वे इनसे प्रेम करने लगे हैं। प्रायः अत्यंत इच्छित वस्तु के न मिलने पर, उस वस्तु को ही गालियाँ देने लगना, मनुष्य के स्वभाव में है।

"निर्धन धनियों को गालियाँ देते ही हैं। अयोग्य आदमियों की निन्दा करते हैं। भाग्यहीन भाग्यशाली को, झूठ बोलकर सुख-सुविधा सम्पन्न हो गया मानते ही हैं।"

इतना कहते-कहते सदाशिव ने अति प्रेमभरी दृष्टि से अपनी पत्नी रजनी की ओर देखा। वह समझ गई और मुस्कराकर रामप्यारी को एक ओर ले जाकर कहने लगी, "मत समझना भाभी! कि मुझको किंचित् मात्र भी तुमसे रोष है। मैं संसार की निन्दा सुनने का स्वभाव बना चुकी हूँ।"

रामप्यारी भीतर चली गई तो रजनी ने अपने पति से कहा, "आप अब भोजन कहाँ करेंगे?"

"देखो रजनी! इस शिवलाल को पीटने के लिये मेरे भुजदण्ड फड़कने लगे थे। प्रोफेसर साहब के घर में यह मल्लयुद्ध ठीक न समझ, मैंने यहाँ से चला जाना ही उचित समझा है। इस पर भी मैं समझता हूँ कि तुम चाहो तो यहाँ ठहर सकती हो। मैं प्रोफेसर साहब से लड़ना उचित नहीं समझता।"

"तो ठीक है। मैं अभी वाक्‌युद्ध समाप्त हुआ नहीं समझती। साथ ही इस युद्ध में पीठ दिखाना तो भीरूता है। आप निश्चिन्त रहें। मैं पराजित होकर घर नहीं आऊंगी।"

"तो शिवलाल के साथ ही चली जाओगी?" सदाशिव ने मुस्कराकर कह दिया।

"जी नहीं! मैं उसको अखारे से भगाकर ही जाऊंगी।"

सदाशिव हँसता हुआ चला गया। इसी समय पद्मदेव टैक्सी में सवार वहाँ आ पहुँचा। रजनी ने उसको आते देखा तो वहीं बरामदे में उसकी प्रतीक्षा में खड़ी हो गयी। पद्मदेव टैक्सी से उतरा और रजनी को खड़े देख, पूछने लगा, "तो क्या भोजन समाप्त हो गया है? डॉक्टर साहब अभी अपनी गाड़ी से जाते मिले हैं।"

: 8 :

पद्मदेव के आने पर सुदर्शन को सन्तोष हुआ। जब वह भीतर ड्राइंगरूम में पहुँचा तो शिवलाल उठकर जाने का हठ कर रहा था। वह कह रहा था, "जब सुमित्रा की माँ जा रही है, तो मैं कैसे पीछे बैठा रह सकता हूँ?"

"परन्तु वह नहीं जा रही। मुझको विदित है कि भाभी आपसे परास्त हो जाने वाली नहीं है।" सुदर्शन कह रहा था।

इस समय रामप्यारी भीतर आ गई। सुदर्शन ने कह दिया—"लो भाभी आ गई हैं अब आप निश्चिन्त होकर बैठिये।"

इस पर सब हँस पड़े। अभी सब हँस ही रहे थे कि पद्मदेव की आवाज सुनाई दी। पद्मदेव रजनी के साथ अन्दर आया तो साधना ने कह दिया, "लीजिये डॉक्टर साहब! आपका प्रतिस्पिर्धी तो अभी मैदान में डटा है।"

पद्मदेव ने बात को समझते हुए कहा, "तो आज फिर वाक्‌युद्ध हो रहा है? शिवलाल! मैं समझा नहीं कि आप एक स्त्री से लड़कर क्या लेते हैं? यह शौर्यता नहीं है।"

"ये लड़ते नहीं हैं।" रजनी ने हँसते हुए पद्मदेव की ओर देखकर कहा।

अब सुदर्शन ने सब को खाने के कमरे में चलने के लिये कहा।

सुमित्रा इस समय दसवीं श्रेणी में पढ़ती थी। वह पूर्ण वार्तालाप को समझ, आनन्द ले रही थी। सुमित्रा के तीन भाई-बहन भी आये हुए थे। वे तो अभी बच्चे ही थे। इस क्रोध, हँसी-मजाक और माथे पर त्योरी चढ़ाने आदि को वे समझ नहीं सके थे। साधना का अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़का अब छः वर्ष का था। वह भी इन बातों से अलिप्त ही बैठा था। यदि यह क्रोध अथवा प्रसन्नता का प्रवाह एकसमान चलता होता, तो कुछ तो वह समझ जाता।

बड़ों में अब केवल सुदर्शन, उसकी पत्नी साधना, शिवलाल, उसकी पत्नी रामप्यारी, रजनी तथा पद्मदेव ही थे। ये सब डाइनिंग टेबल पर जा बैठे। अब आक्रमण रजनी ने आरम्भ किया। उसने कहा, ''मेरे पतिदेव, भैया शिवलाल के मन की बात इस प्रकार समझे हैं कि ये अपनी बहन रजनी से प्रेम करने लगे हैं। यही कारण है कि वे अपने मुखकमल से बहन के लिये इतने सुन्दर और प्रेमभरे शब्द बोला करते हैं। उनको भैया पर दया आ गई, इसी कारण उनके लिये मैदान खाली छोड़ गये हैं। वह कह गये हैं कि मुझको यह अपना सौभाग्य मानना चाहिये कि इतने बड़े महापुरुष का प्रेम-प्रसाद मुझको मिल रहा है।''

''और रजनी बहन क्या समझती है?''

''मुझको तो भैया शिवलाल स्नेहमय भाई ही प्रतीत होता है। प्रत्यक्ष में तो यह भी मेरे लिये स्नेह ही दिखाने लगते हैं। रही इनके मन की भीतरी बात, सो तो यही बता सकते हैं।''

अब रामप्यारी ने अपने पति से कहा, ''देखिये जी, जब कोई स्त्री किसी पुरुष को भाई कह कर पुकारती है, तो यह सम्बन्ध अस्वीकार नहीं किया जा सकता। साथ ही भाई के मन में तो बहिन के प्रति सदा आदर और स्नेह बना ही रहता है।''

नौकर भोजन परस रहा था। पद्मदेव ने पूर्व वार्त्तालाप की शृंखला तोड़ दी। उसने कहा—''देखिये, मैं आज समय पर नहीं आ सका। जब मैं प्रातःकाल उठा और समाचार-पत्र पढ़ने के लिये बैडरूम से निकला तो मेज पर समाचार-पत्र के साथ एक विजिटिंग कार्ड पड़ा मिला। यह ए०डी०सी० टू दि गवर्नर ऑफ पंजाब का था।

''मैंने घण्टी बजाई बैरा आया तो मैंने उससे पूछ लिया—'ये साहब कब आये थे?'

'वे अभी आपके जागने की प्रतीक्षा में बैठे हैं।'

'तो जाओ, बुला लाओ।'

''सरदार सुन्दर सिंह ए०डी०सी० आये तो मैंने उठकर उनका स्वागत किया। वे बैठते हुए कहने लगे, 'मैं इतने सुबह इस कारण आया हूँ कि 'हिज ऐक्सिलेंसी' आपसे आज बारह बजे मिलना चाहते हैं। वे आज काश्मीर की यात्रा पर जा रहे हैं और जाने से पूर्व आपसे एक अत्यावश्यक विषय पर बात करना चाहते हैं।'

'ठीक है। मैं सेवा में उपस्थित हो जाऊंगा।'

'तो किस समय?'

'बारह का समय दिया है न?'

'हाँ, परन्तु मैं आपको यहाँ होटल पर साढ़े ग्यारह बजे लेने आऊंगा। आप उस समय तैयार रहें। हम पौने बारह बजे वहाँ पहुँच जाएँगे और आपका वार्त्तालाप ठीक बारह बजे आरम्भ होगा। आशा है कि आप पौने एक बजे तक अवकाश पा जायेंगे। तत्पश्चात् आपको, जहाँ आप जाना चाहेंगे, पहुँचा दिया जायेगा।'

''मैंने प्रोग्राम को स्वीकार किया तो पीछे मैंने सुदर्शन को फोन कर दिया। मैं नहीं चाहता था कि आप इतनी देर तक मेरी प्रतीक्षा करें, परन्तु अभी आपने आरम्भ ही नहीं किया। अब सवा बज रहा है।

''क्या बात थी? पद्मदेव!'' सुदर्शन ने पूछा।''

''उस दिन के व्याख्यान की रिपोर्ट गवर्नर बहादुर ने पढ़ी है। सिविल मिलिटरी गैजेट ने इस पर एक विस्तृत समाचार छापा था। ठीक पौने बारह बजे मुझको एक कमरे में ले जाकर बैठा दिया गया। बारह बजने से एक मिनट पूर्व गवर्नर बहादुर वहाँ पधारे। जब औपचारिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बातचीत हो चुकी तो वह कहने लगे, 'मैंने आपके व्याख्यान का संक्षिप्त विवरण सिविल मिलिटरी गैजेट में पढ़ा है। इससे मेरे मन में कुछ अधिक जानने की रुचि उत्पन्न हो गई है। इस कारण ही मैंने आपको यहाँ आने का कष्ट दिया है।

'मैं भी अपने काल में इतिहास का विद्यार्थी रहा हूँ। मैं इतिहास और मनोविज्ञान को राज्य की आधारशिला मानता हूँ। इस कारण आपके विषय में रुचि रखता हूँ।'

आपने कहा है कि भारतवर्ष का इतिहास भारत के अन्दर उपस्थित साधनों से ही लिखा जाना चाहिये। उन साधनों से, हम को विदेशी साधनों की तुलना में, अधिक विस्तृत ज्ञान मिलने की आशा करनी चाहिये।

'मेरा प्रथम प्रश्न है कि क्या इतिहास की तिथियों के विषय में अधिक विश्वस्त प्रमाण मिल सकते हैं?''

इस समय भोजन आरम्भ हो गया था। अतः शिवलाल और रामप्यारी के हृदयों में धधकते ज्वालामुखी, कुछ तो भोजन करने में लीन होने के कारण और कुछ पद्मदेव की गवर्नर से भेंट का विवरण सुनने में, शान्त हो गये थे।

पद्मदेव ने आगे बताया, ''मैंने श्रीमान् जी को बताया कि इतिहास का उद्देश्य केवल तिथियाँ लिखना ही नहीं है। वास्तव में तिथियाँ तो इतिहास का अति गौण एवं अनावश्यक अंग हैं। इन तिथियों को जानने से इतिहास के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकती।

''मेरा कहना था, 'भारतवर्ष का इतिहास लाखों वर्षों का है। यदि इतने वर्ष का इतिहास अपने साहित्य में उस भांति लिखा जाता, जैसे युरोप में पिछले कुछ वर्षों से लिखा गया है, तो यह इतना बड़ा हो जाता कि न तो कोई इसे खरीद सकता, न ही कोई अपने जीवन-काल में पूरा पढ़ सकता। कदाचित् इसको रखने के लिये किसी पुस्तकालय में स्थान ही न होता। अतः भारतीयों ने इतिहास में से क्रोनौलोजी (तिथि विज्ञान) को पृथक् कर दिया है। इसमें समाज में होने वाले समस्त परिवर्तनों का ही उल्लेख हो सका है और मैं समझता हूँ कि इतने लम्बे इतिहास में यही जानने योग्य तथ्य है।'

'तो यह जानने की आवश्यकता नहीं कि प्लैटो किस शताब्दी में उत्पन्न हुआ अथवा उससे पहले लोगों के विचार कैसे थे और अब कैसे हैं?

'आपने दो सर्वथा असंगत बातों को मिला दिया है। प्लेटो की जन्मतिथि जानना एक बात है और उससे पूर्व के विचार जानना दूसरी बात है। दोनों में साधारण-सा सम्बन्ध है। यदि पहली बात का ज्ञान न भी हो तो भी दूसरी बात अपना मूल्य रखती है। जातियों का इतिहास उसमें उत्पन्न महापुरुषों की जन्म तिथियों से नहीं, प्रत्युत उनकी वाणी से पता चलता है।

'मानव समाज में उत्थान-पतन, राजा-महाराजाओं तथा संत-महात्माओं की जन्म-तिथियों से नहीं, प्रत्युत उनके आचार-विचार से पता चलते हैं।

'देखिये। श्रीमान्!' मैंने बताया—'हमारे यहाँ कालिदास की जन्मतिथि अथवा जन्म स्थान के विषय में कोई भी नहीं जानता, परन्तु कालिदास के लेखों एवं उसकी कविता की बहुत महिमा है।

''इसी प्रकार राम और कृष्ण के कार्यों का उल्लेख तो जन-जन के मुख पर है, परन्तु उनकी जन्म-तिथि आदि की इतनी महिमा नहीं है।

''इस पर गवर्नर महोदय विस्मय प्रकट करने लगे। कहने लगे, 'आपका यह कथन मौलिक है, परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि इस प्रकार तो इतिहास रसहीन हो जायेगा।'

'जी नहीं! इतिहास में रस तो, भूतकाल में घटी घटनाओं के वर्णन से आ जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इतिहास का लाभ उन घटनाओं की विवेचना से होगा।

'उदाहरण के रूप में मैं आपको एक कथा सुनाता हूँ। हिरण्यकशिपु एक राजा हुआ है। उसने विपुल प्रयत्न से राज्य-वैभव और ऋद्धि-सिद्धि पायी थी। हमारे इतिहास में किसी प्रभुत्व को पाने के लिये उचित ढंग से किये गये यत्न को तपस्या कहते हैं।

''अतः हिरण्यकशिपु ने तपस्या की और भगवान की कृपा से उसको सब प्रकार का सुख-वैभव प्राप्त हुआ। ऐसा होने पर प्रायः दानवों की भांति उसके मन में विकार उत्पन्न होने लगे। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार उसके मन में ठाठें मारने लगे। परिणाम यह हुआ कि वह अपने सम्मुख किसी की भी गणना नहीं करता था। वह अपने को महा बुद्धिमान और बलशाली मानने लगा। उसको कुछ ऐसा समझ आया कि वह अजेय है। भगवान भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

'भाग्यवश उस अहंकारी राजा के घर में एक लड़का उत्पन्न हुआ। उसका नाम प्रह्लाद था। वह आरम्भ से ही पूर्ण संसार को एक परमात्मा की ही सन्तान मानता था। जब कभी उसके गुरुजन अथवा उसके मित्र-सम्बन्धी उसको बताते कि उसका पिता ही भगवान का स्वरूप है तो वह समझता था कि चाटुकार लोग उसके पिता को प्रसन्न करने के लिये ऐसा कहते हैं।

'इससे वह कह देता, 'नहीं, उनसे भी बलशाली परब्रह्म-परमेश्वर, सर्वज्ञ सर्वान्तरयामी, सर्वव्यापक, अनादि, अनन्त है।' यह समाचार जब हिरण्यकशिपु को मिला तो वह बहुत नाराज हो गया। उसने प्रह्लाद को बुलाकर समझाया कि वह भूमण्डल का राजा है। लोक-लोकान्तर में उसके बल और बुद्धि की महिमा है। उसको वर प्राप्त है कि कोई भी उसको मार नहीं सकता।

'जब प्रह्लाद ने पिता की सब युक्तियाँ काट दीं और अगाध विश्वास परमात्मा हरि में बताया तो पिता रुष्ट हो गया और उसने उसको, अपने जीवन में दुःख देने वाला, अपने प्रभाव और सम्मान को कम करने वाला और अपनी प्रतिष्ठा में बाधक मान, उसकी हत्या कर देने का निश्चय कर लिया।

'प्रजा में इस अन्याय पर रोष उमड़ पड़ा और प्रजा का एक नेता उत्पन्न हो गया। वह नृसिंह था, अर्थात् नरों में सिंह। वह प्रजा का नेता बन हिरण्यकशिपु से लड़ पड़ा और उसको मारकर वह भू-भार को कम करने वाला सिद्ध हुआ।

'अब श्रीमान् जी! देखिये। यह इतिहास की एक सत्य कथा है। जितने भी संसार में तानाशाह हुए हैं, वे सिद्धि प्राप्त करने का यत्न करते हैं। तपस्या से वे अगाध धन और वैभव एवं राज्य प्राप्त कर लेते हैं। पश्चात् वे परमात्मा को भूल उच्छृल प्रकृति के बन जाते हैं, जिससे भगवान् उनका हनन करता है। सत्य और जानता की जय होती है।

'बताइये यह जानना कि प्रह्लाद कहाँ उत्पन्न हुआ और कब हुआ आवश्यक है अथवा यह जानना आवश्यक है कि वास्तव में पिता-पुत्र में झगड़ा क्यों था? उसमें दोष कहाँ था? फिर किस प्रकार और किसने उस अभिमानी का नाश किया था?

'मैं तो इसी को इतिहास मानता हूँ और क्रोनोलौजी के लिए मस्तिष्क खराब करने को पानी मथने के समान समझता हूँ।'

''इस प्रकार हमारी बातें पौने घण्टे तक चलती रहीं। जब घड़ी में ठीक पौन बजे, तो वह उठ खड़े हुए और मुझसे हाथ मिलाते हुए कहने लगे, 'आपके लिए पासपोर्ट के कागज लखनऊ जा चुके हैं। यथासमय आपको मिल जायेंगे। आप इंग्लैण्ड में कितनी देर रहने का विचार करते हैं?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैं पासपोर्ट मिलते ही चला जाऊँगा और विचार है कि दो वर्ष वहाँ लग जाएँगे। पश्चात् मैं यूरोप तथा अमेरिका का भ्रमण कर लौटने का विचार रखता हूँ।'

'मैं आशा करता हूँ कि आपसे मैं इंग्लैण्ड में मिलूँगा। आप इंडिया औफिस से सम्पर्क रखियेगा। मैं सैक्रेटरी ऑफ स्टेट के नाम आपको एक 'पर्सनल लैटर' भेज दूँगा। वह आपको कल तक होटल में मिल जायेगा।''

पद्मदेव की गवर्नर से भेंट की कथा समाप्त हुई और इधर भोजन समाप्त हुआ। सब उठ खड़े हुए। शिवलाल को रजनी को लांछन का प्रतिवाद करने का अवसर नहीं मिला। तदनन्तर सब विदा हो गये।

पद्मदेव, सुदर्शन तथा साधना पीछे रह गईं। जब शिवलाल और रजनी चले गये तो पद्मदेव ने कहा, ''प्रोफेसर साहब! ये आग और पानी इकट्ठे मत बुलाया करिये। आग-पानी मिलाकर अतुल बलशाली वाष्प बन कर, कभी भयंकर विस्फोट उत्पन्न कर देगा।''

साधना ने कहा, ''पद्म दादा! आज तो शिवलाल का ही दोष था। मैं तो यह समझने लगी थी कि वह पागल हो गया है। इसने अपने व्यवहार से रजनी का अपमान तो किया ही है, साथ ही हमारा भी भारी अपमान किया है। हमारा मेहमान होकर, हमारे मित्र की पत्नी को, उसके मुख पर, हमारे ही घर में गालियाँ दीं। यह तो हमारा अपमान है। वे गालियाँ तो हमको दी गई समझनी चाहिएँ।'

''मुझको शिवलाल की दशा देखकर दया आती है। उसकी चिकित्सा कम हो रही है। उसकी शक्ति क्षीण हो रही है। भाभी रामप्यारी भी उससे सन्तुष्ट नहीं है।''

साधना ने बताया—''उसकी लड़की सुमित्रा भी कहती थी कि उसके पिताजी का मस्तिष्क बिगड़ रहा है। वे आज कल तो कभी-कभी मरीजों से भी लड़-झगड़ पड़ते हैं।''

सुदर्शन ने कहा, ''तो यह निश्चय हुआ कि शिवलाल को न तो हम यहाँ आमंत्रित करेंगे और न ही उसका निमंत्रण स्वीकार करेंगे।''

''पर बिचारी रामप्यारी का क्या होगा? मैं समझती हूँ कि यह प्रतिबंध उसके विषय में न हो।''

''एवमस्तु।'' सुदर्शन ने कह दिया और बातें समाप्त हो गईं।

: 9 :

पासपोर्ट मिला तो पद्मदेव जाने की तैयारी में लग गया। जब वह पासपोर्ट लेने लखनऊ पहुँचा तो दिसम्बर का महीना आ चुका था। इस समय तक अन्तर्राष्ट्रीय संगीत समारोह हो चुका था। सरस्वती भारत में बनी स्वागत समिति की अध्यक्षा थी। इसके लिए लखनऊ और भारत के अन्य भागों में उसको बहुत आना-जाना पड़ा था। इसी भाग-दौड़ के कारण उसका अपना संगीत-विद्यालय चल न सका। खर्चे के लिए वह राजा साहब रामपुर से ऋण लेती रही।

संगीत समारोह में भी उसको वह स्थान न मिल सका, जो वह चाहती थी। उसके गाने और नृत्य की प्रशंसा हुई थी, परन्तु भारत में प्रथम पुरस्कार मिला था एक कर्नाटक की नर्तकी को और बंगाल की गायिका को। अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार एक इटली की गायिका और फ्रांस की नर्तकी को मिला।

इस सबसे सरस्वती निराश ही हुई थी। नौ मास की भाग-दौड़ और साथ ही अनथक परिश्रम के पश्चात् वह ख्याति की दृष्टि से लखनऊ तथा भारत के धनीमानी रसिकों से परिचय प्राप्त कर सकी थी। यह परिचय इस बात का द्योतक न था कि वह एक श्रेष्ठ नर्तकी अथवा गायिका है। वह केवल संगीत और नृत्य कला की प्रेमी समझी जाती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जहाँ तक आर्थिक स्थिति का सम्बन्ध था, वह दस सहस्र रुपये की ऋणी हो चुकी थी।

राजा साहब, जो इस सरस्वती संगीत-नृत्य विद्यालय के ट्रस्ट के अध्यक्ष थे, इस विद्यालय में रुचि छोड़ बैठे थे। उन्होंने एक दिन कह दिया—"आप इस विद्यालय में अपना समय नहीं दे सकतीं। इस कारण ट्रस्ट का यह निर्णय है कि आपका वेतन पांच सौ रुपया मासिक देना बंद कर दिया जाये।"

सरस्वती को पता चला हरिशरणानन्द पाण्डे के प्रस्ताव पर ही यह निर्णय हुआ है। वह भी ट्रस्ट का एक सदस्य था। सरस्वती विद्यालय के खुलने एवं चल निकलने से उसके अपने विद्यालय को हानि होने की सम्भावना थी। पाण्डे ने सब सदस्यों से मिलकर और ट्रस्ट का धन सुरक्षित रखने का बहाना बनाकर यह प्रस्ताव स्वीकार करा लिया था।

जिस दिन यह प्रस्ताव राजा साहब द्वारा सरस्वती को मिला, उसी सायंकाल पाण्डे उससे मिलने के लिये आया। जब से यह निर्णय हुआ था कि सरस्वती अपना विद्यालय चलायेगी, तब से पाण्डे ने सरस्वती के पास आना-जाना बन्द कर दिया था।

अतः तीन महीने के पश्चात् उसको आया देख सरस्वती आगबबूला हो गई। वह मद्रास से स्वागत समिति के कार्य से लौटी ही थी कि विद्यालय के अध्यक्ष का पत्र मिला था। यात्रा की थकावट से और उस पत्र से वह अपने चित्त में असंतोष-सा अनुभव कर रही थी। ऐसे समय में हरिशरणानन्द का आना उसके लिये आग पर घृत का काम कर गया।

उसने पंडितजी को बैठने के लिये भी नहीं कहा। वह स्वयं खड़ी हो पूछने लगी—"कैसे आना हुआ है आपका?"

"ट्रस्ट की मीटिंग में इस प्रस्ताव की उपस्थिति में कि आपका वेतन बंद कर दिया जाये, मैं आपसे एक प्रस्ताव करने आया हूँ।"

"क्या?"

"आप पुनः हमारे विद्यालय में काम करें। आपको डेढ़ सौ मासिक वेतन मिलेगा। साथ ही आपको छः मास की वेतन सहित छुट्टी भी मिल जायेगी, जिससे आप संगीत-समारोह का प्रबंध भली-भांति कर सकें।"

"तो आपने यहाँ वेतन बंद करने का प्रस्ताव उपस्थित ही क्यों किया था?"

"यह एक पब्लिक ट्रस्ट है। यदि किसी असंगत खर्चे की शिकायत सरकार के पास हो गई तो हम पकड़े जाकर जेल में भेजे जा सकते हैं। अपने विद्यालय का सर्व-सर्वा मैं ही हूँ। मैंने इधर प्रस्ताव करने से पूर्व आपके विषय में अपने विद्यालय में स्थान देने का विचार कर लिया था।"

"परन्तु मैं अपने विद्यालय को कॉन्फ्रेंस के पश्चात् चालू करना चाहूँगी।"

"यह तो नहीं हो सकेगा?"

"मैं डेढ़ सौ रुपये मासिक पर निर्वाह नहीं कर सकती।"

"मैं तो पचास रुपया मासिक पर निर्वाह कर रहा हूँ। मेरा वेतन दो सौ रुपया है। इसमें से पचास मैं अपनी पत्नी को भेज देता हूँ। पचास मेरी रोटी आदि का खर्चा है। बीस रुपये मासिक मकान का भाड़ा देता हूँ तथा शेष सत्तर-अस्सी रुपये मैं जमा करता रहता हूँ।

"आपको मकान का भाड़ा नहीं देना पड़ेगा। आप मेरे मकान में ही रह सकती हैं। रोटी बीस-पच्चीस में ही चल जायेगी। शेष बचत ही है। इसके अतिरिक्त किसी समारोह इत्यादि में पारिश्रमिक भी मिल जाया करेगा।"

सरस्वती को क्रोध चढ़ आया। उसने कह दिया, "पाण्डे! तुम बहुत ही बेईमान हो। मैंने अपना सर्वस्व तुम्हारे लिये बरबाद कर दिया है और तुम बीस रुपये मासिक मेरा मूल्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लगा रहे हो। वह भी जब तुम्हारे घर चलकर रहूँगी। निकल जाओ यहाँ से।''

''देखिये सरस्वती देवी! मैं तो यह बहुत साधारण स्थिति का व्यक्ति हूँ। इस पर भी जो मेरे वश में है, वह सब आपकी सेवा के लिये हाजिर है। कुछ धनी-मानी, राजा-रईसों ने आपको मेरे विपरीत कर दिया है, परन्तु वे आपकी सहायता नहीं कर सके।''

''पाण्डे!'' सरस्वती ने क्रोध में कह दिया, ''यहाँ से चले जाओ, नहीं तो ठीक न होगा।''

''क्या ठीक न होगा?''

''जूते से पिटवाकर यहाँ से निकलवा दूँगी।''

''परन्तु मैं तो इस विद्यालय के ट्रस्ट का एक सदस्य हूँ। बात उल्टी हो जायेगी।''

अतः सरस्वती को अपना क्रोध भीतर-ही-भीतर पी जाना पड़ा। जब वह कुछ कह न सकी तो हरिशरण ने पुनः पूछा, ''तो अब निर्वाह कैसे होगा?''

''इसकी चिन्ता तुमको नहीं करनी चाहिये।''

''तो मेरा प्रस्ताव अस्वीकार है?''

''बिल्कुल।''

''अच्छी बात है। मैं चलता हूँ, पर इतना बता देना चाहता हूँ कि डेढ़ सौ रुपया मासिक, कुछः मास की वेतन सहित छुट्टी, रहने को अपने मकान में एक कमरा, भोजन के साथ भोजन—जब भी यह प्रस्ताव लाभ का प्रतीत हो, तो चली आना।''

यह प्रस्ताव सरस्वती को अत्यंत अपमानजनक प्रतीत हुआ। इसके पश्चात् राजा साहब आये और एक सहस्र रुपया सहायता के लिए छोड़ गये। राजा साहब बोले, ''मुझको आपके वेतन बंद किये जाने के प्रस्ताव का समर्थन करना पड़ा है। अतः प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा है, परन्तु मैंने यह उचित समझा है कि आपको आर्थिक सहायता तो मिलनी ही चाहिए। अभी आप इतना रखिये, फिर और भी दूँगा। यह मेरी ओर से ऋण रहेगा। जब आपको सुविधा हो दे दीजियेगा। यदि किसी समय आवश्यकता पड़े तो टेलीफोन कर दीजियेगा। यथा शक्ति सहायता करता रहूँगा।''

कॉन्फ्रेंस नवम्बर में हुई और दिसम्बर में कॉन्फ्रेंस का सब लेखा-जोखा किया गया। इसके साथ ही सरस्वती ने अपना हिसाब भी देखा। वह यह देखा कि पिछले आठ मास में वह दस सहस्र रुपये के लगभग ऋण ले चुकी है, आश्चर्यचकित रह गई। उसने कभी गिनती न की थी। सब प्रकार के खर्चे मिलाकर बारह सौ रुपया मास के हिसाब से वह खर्चा करती रही थी।

कॉन्फ्रेंस में सरस्वती को किसी प्रकार का पुरस्कार अथवा पद न मिला था। इससे भी विद्यालय के ट्रस्टियों को भारी निराशा हुई थी। इस निराशा में भी हरिशरणानन्द का विशेष हाथ था। वह यह विख्यात करता रहता था कि सरस्वती इतनी उच्च कोटि की कलाकार नहीं, जितनी उच्च कोटि की सुन्दरी है। उसका सदा यह कहना होता था—''एक सुन्दर स्त्री होने के नाते ही वह पसंद की जाती है, एक कलाकार होने के नाते नहीं।''

इस प्रकार के कथन का ट्रस्टियों के मन पर एक तो यह प्रभाव पड़ रहा था कि उनको विद्यालय की मुख्याधिष्ठात्री किसी अन्य को बनाना चाहिये और दूसरी ओर वे सरस्वती के सौन्दर्य का भोग करने के लिए लालायित रहने लगे।

इस प्रकार की दो परस्पर विरोधी भावनाओं में आठ मास निकल गये। अब सरस्वती विद्यालय के लिए भाग-दौड़ करने लगी, परन्तु इस समय भले घर की लड़कियाँ वहाँ आने में आना-कानी करने लगीं। पांडे ने नगर भर में यह विख्यात करना आरम्भ कर दिया था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उसके पति ने सरस्वती को चरित्रहीन जान घर से निकाल दिया है।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह लखनऊ चीफ कोर्ट के एक जज के घर उसकी लड़कियों को विद्यालय में भरती कराने के लिए कहने गई तो उसको अपनी वास्तविक परिस्थिति का ज्ञान हुआ।

जस्टिस सक्सेना की पत्नी रूक्मणी को जब सरस्वती ने अपना परिचय दिया तो रूक्मणी ने सिर हिलाते हुए कहा, "पद्मा और ऊषा आजकल भारतीय संगीत नाटकर विद्यालय में जाती हैं।"

"मैं ही वहाँ सिखाती थी। वहाँ वेतन कम मिलने के कारण मैंने अपना ही विद्यालय खोल लिया है। विद्यालय सुदृढ़ आधारों पर बनाया गया है। इसका एक ट्रस्ट है।"

"मैं यह सब जानती हूं। साथ ही यह भी जानती हूँ कि आप अपने पति से अपने चरित्र के कारण, घर से निकाली हुई हैं। मैं आपके सम्पर्क में अपनी लड़कियों को नहीं आने देना चाहती।"

"परन्तु यह असत्य समाचार आपको किसने दिया है?"

"किसने देना है! नगर भर में आपकी चर्चा है। उस दिन पाण्डेजी भी आपकी 'प्रशंसा'कर रहे थे।"

: 10 :

सरस्वती ने बहुत यत्न किया कि विद्यालय किसी तरह चल निकले, परन्तु सब परिस्थितियाँ विपरीत सिद्ध हुईं। इस समय राजा साहब उसको मिलने चले आये। उन्होंने अपने ऋण की ओर संकेत करते हुए कहा, "अब आपको अपने विद्यालय को चलाने में ध्यान देना चाहिये। मैं अब और ऋण नहीं दे सकूंगा। साथ ही पिछला ऋण लौटा देने के लिये कहने आया हूँ। मुझको जनवरी में लगान देना है। उस समय रुपयों की बहुत आवश्यकता पड़ेगी।"

सरस्वती इस माँग को सुनकर अवाक् बैठी रह गई। उसे चुप देखकर राजा साहब ने पूछ लिया—"अब आपका क्या कार्यक्रम है?"

"मैं ट्रस्टियों को यह राय दूँगी कि वे विद्यालय के विषय में विज्ञापन आदि दें, जिससे इसका कार्य चलने लगे। मैं स्वयं भी प्रान्त की सरकार से विद्यालय के लिये कुछ सहायता पाने का यत्न करूंगी।"

"देखिये सरस्वती देवीजी! विद्यालय को सरकारी सहायता की कुछ भी आशा नहीं। साथ ही अब तो ट्रस्टी किसी अन्य मुख्याधिष्ठात्री की नियुक्ति के विषय में विचार कर रहे हैं। उनके मन में यह धारणा बैठती जाती है कि यह विद्यालय आपके मान का नहीं है।"

"तब तो मुझको अपने विषय में विचार करने की आवश्यकता पड़ेगी।"

"हाँ, और उसके साथ ही मेरे रुपये के विषय में भी कुछ विचार करना होगा।"

"वह मैं इतनी जल्दी दे न सकूंगी।"

"उसके देने की यह योजना पर मैं विचार कर रहा हूँ। यदि आपको रुचिकर हो तो मैं उपस्थित कर सकता हूँ।"

"बताइये! उसको जानकर ही तो रुचि-अरुचि की बात कह सकती हूँ।"

"मेरी एक कोठी जौनपुर में है। सब प्रकार के सामान से सुसज्जित है। यदि आप वहाँ चलकर रहना पसंद करें तो पांच सौ रुपया मासिक जेब खर्चा और पिछला ऋण नये खाते में।

"मैं वर्ष में छः मास उस कोठी में रहूँगा। हाँ, पर्दे में रहना होगा। हम लोग पसंद नहीं करते कि घर की औरत को बाहर की सर्दी-गर्मी लग सके।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती अवाक् बैठी रह गई। इस प्रकार का नग्न प्रस्ताव या तो पांडे ने किया था या अब राजा साहब ने। पांडे का तो उससे सम्बन्ध पहले था, परन्तु राजा साहब ने उसको धन दिया था। इस अवस्था में वह अपने को बहुत ही पतितावस्था में पाती थी।

उसने इस समय राजा साहब को टालने के लिए कह दिया, "मैं आपके प्रस्ताव पर विचार कर कुछ दिनों में निवेदन करूंगी।"

"इसमें विचार करने की क्या बात है? आपको रुपया तो देना ही है। बिना दिये ऋण से मुक्त होने का यही सहज उपाय है। भविष्य के लिये एक निश्चित वेतन, रहने को स्थान, वस्त्राभूषणादि का भी प्रबन्ध हो जायेगा। साथ ही फिर एक माननीय महिला की भांति जीवन चल सकेगा। यदि आपका व्यवहार ठीक रहा तो मैं स्थायी रूप में आपके नाम कुछ करा दूँगा।"

"यह सब ठीक है। मैं आपके इस प्रस्ताव के लिये आपकी बहुत आभारी हूँ। इस पर भी कुछ एक बातें हैं, जो राजा साहब भद्री से विचार करनी हैं। उनके कहने पर ही मैंने यह विद्यालय खोलने का विचार किया था। उनसे राय करने पर ही मैं इस विद्यालय को छोड़ सकती हूँ। एक बार तो यहाँ से मुक्त होना ही होगा। ऐसे ही यहाँ से लापता हो जाना तो उचित न होगा।"

"तो कब तक पता करूं?"

"मैं आज विद्यालय के सब ट्रस्टियों से मिलकर बात करने का यत्न करूंगी। इस पर भी आप एक सप्ताह तक मिलियेगा।"

"देखिये! जौनपुर पहुँचते ही आपके लिखे प्रोनोट आपको वापस कर दूँगा। शेष प्रबन्ध भी शीघ्र ही हो जायेगा।"

राजा साहब श्रीरामपुर चले गये तो सरस्वती हताश होकर पलंग पर लेट गई और विचार करने लगी कि क्या करना चाहिए।

दो दिन के विचार के बाद वह इस परिणाम पर पहुँची कि उसको अपने पति प्रोफेसर पद्मदेव के घर लौट जाना चाहिये। उसने एक दिन प्रातःकाल उठ, एक पत्र प्रोफेसर सुदर्शन को लिखा—

"प्रिये प्रोफेसर साहब! मेरे जीवन ने एक और करवट ली है। अन्तर्राष्ट्रीय संगीत-नृत्य कांफ्रेंस में संलग्न रहने में मैं विद्यालय चलाने में असफल रही हूँ। मुझको अपनी अदूरदर्शिता पर पश्चात्ताप लग रहा है और पुनः अपने पूर्व के जीवन में लौट आने के लिये इच्छा करने लगी हूँ।

"आपको इस कारण लिख रही हूँ कि आपने एक समय कहा था कि प्रोफेसर साहब, मेरे पति मेरे लिए घर का द्वार खुला रखेंगे। अतः आप उनसे पता करें कि मैं लाहौर चली आऊं या वे लखनऊ वापस आने वाले हैं, जिससे मैं अपनी भूल के लिये क्षमा माँग सकूं और प्रायश्चित्त कर सकूं।

"असफलता में कारण विस्तार से स्वयं उपस्थित होकर ही बता सकूंगी। मेरी आशाएँ, जो मैं उक्त कांफ्रेंस से लगाये हुए थी, फलीभूत नहीं हुई। यह भी एक कहानी है, जो पत्र में नहीं लिखी जा सकती।"

जैसा कि वह आशा करती थी, पत्र का उत्तर तीसरे दिन ही आ गया। पत्र में लिखा था :

"पद्मजी यहाँ से लखनऊ चले गये हैं और कदाचित् वह वहीं से इंग्लैण्ड चले जायेंगे। मैंने तुम्हारा पत्र उनको भेज दिया है और साथ में अपनी सम्मति भी भेज दी है। तुमको भी मेरी सम्मति है कि तुम स्वयं उनसे जाकर मिलो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे पूर्ण आशा है कि पद्मदेव जी तुमसे सुलह कर लेंगे। वह तुम्हारे लिये अभी भी अपने मन में आदर रखते हैं। वह आदर क्यों है? यह तो वह स्वयं ही तुम्हें बता सकेंगे।"

सरस्वती को यह पत्र मध्याह्न के समय मिला। वह स्वयं पद्मदेव के सम्मुख उपस्थित होने में लज्जा अनुभव करती थी। लखनऊ में सब नौकरों के सम्मुख जाकर क्षमा याचना करने में वह संकोच अनुभव करने लगी थी।

वह विचार करने लगी थी कि किस समय, किस प्रकार और कैसे वस्त्र पहन कर जाये। वहाँ जाकर वह कैसे बात को आरम्भ करे और अपनी असफलता और निर्लज्जता की कथा, किस सीमा तक वर्णन करे। इन्हीं विचारों में खोये हुए सायंकाल का समय हो गया। उसको समझ आया कि रात हो जाने पर खाने के समय वहाँ जाये तो ठीक रहेगा।

सायं साढ़े सात बजे वह घर से निकली। जब वह टैक्सी स्टैण्ड पर जाने लगी तो उसका दिल भीतर-ही-भीतर बैठने लगा। वे सब बातें, जो वह अपने मन में कहने के लिए विचार कर चुकी थी, व्यर्थ, प्रभावहीन और झूठी प्रतीत होने लगीं। वह आधा मार्ग तयकर वापस लौट आई, परन्तु जब अपनी कोठी के बाहर पहुँची तो राजा साहब श्रीरामपुर की मोटर कोठी में देख ठिठक गई। उसका चित्त कोठी में वापस जाने को न किया। वह पुनः टैक्सी स्टैण्ड की ओर चल पड़ी।

उसको कुछ ऐसा समझ आया कि श्री रामपुर के राजा साहब अपने रुपयों का प्रतिकार भोगने आये हैं। उसके मन में उसके लिये और अपने कुकर्मों के लिए ग्लानि अनुभव होने लगी थी।

सरस्वती को टैक्सी स्टैण्ड तक का मार्ग, जो पांच मिनट का था, पूरा करने के लिए आधा घंटा लग गया। वह पांव उठाकर चलना चाहती थी, परन्तु पांव में पत्थर बंधे प्रतीत होते थे। पांव चलते ही न थे।

जब वह टैक्सी-स्टैण्ड पर पहुँची तो एक बार साहस कर टैक्सी में बैठ कोठी का पता बताने लगी। उसे एक बार पुनः झिझक आई, परन्तु अब लौटने को स्थान नहीं रहा था। अपनी कोठी में उससे अपने रुपयों और अन्य सहानुभूति के कामों का प्रतिकार पाने कोई आया हुआ था।

टैक्सी वाले को उसने कोठी का पता बताया तो टैक्सी चल पड़ी। कोठी का द्वार बन्द था। सरस्वती ने टैक्सी वाले को कहा कि हॉर्न बजाए। पांच-छः बार हॉर्न बजाने पर सुन्दर आया और फाटक खोल, टैक्सी के पास आ देखने लगा कि कौन है और क्या काम है?

सुन्दर को, फाटक खोलते और उधर आते देख, सरस्वती ने टैक्सी की 'हैडलाईट' में पहचान लिया था। सुन्दर ने टैक्सी में झांककर यह जानने का यत्न किया कि कौन आया है।

'सुन्दर! बाबू साहब कहाँ हैं?" सरस्वती ने पूछा।

सुन्दर ने पहचान लिया। उसने कहा, "मालकिन! नमस्ते। बाबूजी से मिलने आई हैं?"

"हाँ! सुना है वह लाहौर से लौट आये हैं?"

"लाहौर से आये उनको एक सप्ताह से ऊपर हो गया था। आज प्रातः की गाड़ी से वह बम्बई चले गये हैं। वहाँ से विलायत जा रहे हैं?"

सरस्वती का पूर्ण शरीर ठंडा पड़ गया। वह समझ न सकी कि क्या करे। उसने पूछा, "और यह कोठी?"

"बाबूजी मुझको इस कोठी की चाबियाँ दे गये हैं और इसकी देखभाल के लिये मुझे छोड़ गये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा! चलो भीतर, तुमसे काम है।" सरस्वती समझती थी कि उसकी अपनी कोठी में तो राजा साहब रामपुर बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। वहाँ जाने का अर्थ स्पष्ट था, परन्तु वह इतना मूल्य देने के लिए अपने मन को तैयार न कर सकी।

कोठी में जाकर उसने सुन्दर से कहा, "मुझको मेरा कमरा खोल दो।"

सुन्दर घर का पुराना नौकर था और मालिक और मालकिन के परस्पर के सम्बन्ध के विषय में भी जानता था। वह उनके मनोभावों से अनभिज्ञ होने के कारण यही समझता था कि मालिक इस औरत का, घर में रहना पसंद नहीं करेंगे।

"क्यों, क्या विचार कर रहे हो?"

"बाबूजी इस विषय में कुछ कह नहीं गये।"

"मैं कहती हूँ कि तुम कोठी खोल दो। भले-बुरे की मैं जिम्मेदार हूँ।"

"मालकिन! मैं आपकी बात मानने को तैयार हूँ। मगर हुक्म-अदूली से डरता हूँ।"

"चिन्ता मत करो। कुछ होगा नहीं। यदि तुमको भय है कि मैं कुछ लेकर कहीं भाग न जाऊं, तो पिछले बरामदे में पलंग लगा दो। उनके पत्र आने तक मैं वहीं ठहर जाऊंगी।

सुन्दर ने बहुत देर तक विचार कर कहा, "मालकिन! बाहर बरामदे में तो सर्दी अधिक है। आप भीतर बाबूजी के कमरे में सो सकती हैं। फिर मैं कल प्रातःकाल तक विचार कर लूँगा।"

"ठीक है।"

सरस्वती रात वहाँ ही रह जाने का निश्चय कर चुकी थी। सुन्दर ने दरवाजा खोला तो सरस्वती ने टैक्सी वाले को भाड़ा दे विदा कर दिया।

अगले दिन वह प्रातःकाल उठ, खाने-पीने का सामान जुटाने लगी। सुन्दर के अतिरिक्त अन्य सब नौकर निकाल दिये गये थे। सुन्दर को यह कहा गया था कि उसको कोठी में दो-तीन वर्ष तक रहना पड़ेगा। अतः वह अपनी पत्नी और दोनों बच्चों को भी कोठी में ले आया था। अब सुन्दर नौकर और चौकीदार, दोनों ही था।

सरस्वती ने पुनः लाहौर में सुदर्शन को पत्र लिखा। उसने बताया कि वह अपने पति से मिल नहीं सकी। उसके आने से पूर्व ही वह यहाँ से बम्बई के लिए रवाना हो चुके थे। अब वह सुन्दर की कह कोठी खुलवाकर उसमें रहने लगी है। प्रोफेसर पद्मदेव का पता उसको लिख भेजा जाये, जिससे वह अपनी पूर्ण अवस्था लिखकर, उनसे क्षमा माँग ले।

इसके पश्चात् उसने राजा साहब श्रीरामपुर को लिख दिया कि वह उनका रुपया छः मास के पश्चात् दे सकेगी। उसको उस रुपये के प्रतिकार में उनके पास अपना मान बेचना रुचिकर नहीं है। रुपया उसके पतिदेव के विलायत से लौट आने पर सूद सहित दे दिया जायेगा।

उसने अपनी कोठी का सामान बेच डाला। साथ ही सुदर्शन को कुछ आर्थिक सहायता के लिये लिख दिया। पद्मदेव अपनी लाहौर वाली कोठी का किराया सुधीर के खर्चे के लिए नियत कर गया था। सुदर्शन ने वह सारा सरस्वती को भेजना आरम्भ कर दिया। ❑

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम परिच्छेद

: 1 :

पद्मदेव को, गवर्नर से भेंट होने के पश्चात् भी, पासपोर्ट प्राप्त करने में दो मास लग गये थे। तब तक पद्मदेव उन लोगों से परिचय-पत्र लेता रहा, जिनके जान-पहचान के लोग लंदन में थे।

दिसम्बर के आरम्भ में उसको लखनऊ से सूचना मिली कि उसका पारपत्र तैयार रखा है, वह आकर ले सकता है। इस समय उसने पंजाब के गवर्नर को एक पत्र लिखकर उसको याद दिलवाया कि उन्होंने उसको एक परिचय-पत्र देने का प्रस्ताव दिया था। उसने वह परिचय-पत्र माँगा। इस पर उसको गवर्नर बहादुर से एक और भेंट करने का अवसर मिल गया। लगभग पौन-घण्टा इस भेंट के अवसर पर भारत के प्राचीन इतिहास पर वार्त्तालाप हुआ।

इस वार्त्तालाप से विशेष बात जो उसने गवर्नर के मस्तिष्क पर अंकित करने का यत्न किया, वह यह थी कि आदि सृष्टि में ही सब प्रकार के जानवरों के कोषाणु बन गये थे। हिरण्यगर्भ, जिसका पर्यायवाचन 'नेबुला' है, यह पहले बना। ऐसा पुराणों में सृष्टि उत्पत्ति के विषय में लिखा मिलता है। इस नेबुला में आदि प्रकृति 'प्रिमोर्डियल मैटर' वेग से घूमने लगा। इस गति का कारण आज कल का विज्ञान नहीं जानता। इसको उत्पन्न करने वाली शक्ति का नाम हमारे यहाँ ब्रह्म परमेश्वर है। वह ऐसा क्यों करता है, यह सब हमारे ज्ञान की सीमा से बाहर की बात है। इस पर जो शक्ति की सुषुप्ति अवस्था अर्थात् 'ऐट-लो-पोटेन्शल' होती है, वह परमात्मा की इच्छा से जागृत अर्थात् 'ऐट हाई पोटेन्शल' पर पहुँच जाती है। इस 'हाई पोटेन्शल' से यह फिर प्रवाह के रूप में बहती है और परिवर्तन उत्पन्न करती है।

इस हिरण्यगर्भ से भगवान् विराट रूप में प्रकट होते हैं। इसका अर्थ यह है, नेबुला घनत्व को प्राप्त होता है। पश्चात् उस विराट रूप से भिन्न-भिन्न प्रकार की सृष्टि एक ही समय में उत्पन्न होते हैं। जो स्थल, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश पर रहते हैं। ये प्राणी सब प्रकार के और सब स्तरों में उत्पन्न होते हैं। ये 'यूनि सैल्युलर' अथवा, पिंड रूप में अर्थात् कोषाणुओं के समूह के रूप में, बने होते हैं। तदनन्तर उन कोषाणु समूहों में भिन्न-भिन्न कार्य करने वाले भिन्न-भिन्न कोषाणु बनते हैं।

"तो क्या?" गवर्नर बहादुर का प्रश्न था, "ऐसा पुराणों में लिखा मिलता है?"

"जी हाँ! एक स्थान पर लिखा है—

'कालाद् गुणष्यति करः परिणामः स्वभावतः
कर्मणो जन्म महता, पुरुव्यधिष्ठादभूत।।'

"फिर कहा है—

'तदा संहत्य चान्योन्यं भगवच्छक्तिचोदिताः
रुद सत्व पुदा दाम चोभयं ससृजुर्ह्यदः।।
काल कर्म स्वभावस्थो जीवोऽजीवम् जीवयत्
स एव पुरुषस्तस्यादंड निर्मिद्य निर्गतः।।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"इसके आगे लिखा है—

'पिषासतो जक्षतश्य प्रांड़न्मुखं निरभिद्यत
मुखतस्तालु निर्भिन्नं जिह्वा तत्रोप जायते।।'
....
नाना रसो जज्ञें जिह्वया योऽधि गम्यते'

"इस सबका अर्थ है—

"काल आने पर तीनों गुणों में क्षोभ (ऐजिटेशन) उत्पन्न हुआ। स्वभाव से रूपान्तर (ट्रान्सफॉर्मेशन) हुआ और कर्म (ऐजिटेशन) से महातत्व 'प्रिमौर्डियल मैटर' उत्पन्न हुआ।

"पंचमहाभूत, इन्द्रिय, मन परस्पर संगठित हुए तो शरीर (सैल्युलर-ऑर्गेनिज्म) बना।

"तदनन्तर काल, कर्म और स्वभाव से, अर्थात् समय आने पर और आन्दोलन होने पर तथा स्वभाव से जीवों की उत्पत्ति हुई।

"ये जीव एक-एक कोषाणु के थे और कई कोषाणुओं के पिण्ड भी थे। पीछे जब भूख प्यास लगी तो मुख बन गया। इसमें जिह्वा और मुख-तालु बन गये। तत्पश्चात् बोलने की इच्छा हुई तो शब्द यँत्र (वाक् इन्द्रिय) बन गई। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न अंग बने। इसका अर्थ है कि उस कोषाणु पिंड में कार्य-भिन्नता से अंग भिन्नता (डिविजन ऑफ लेबर) हो गई।"

गवर्नर महोदय पर इस भेंट से प्रभाव और भी गहरा हो गया। उन्होंने 'सैक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया' के नाम एक परिचय पत्र दे दिया। इसके अतिरिक्त भी कुछ अन्य परिचय पत्र दिये। इस प्रकार अपनी तैयारी पूरी कर पद्मदेव अपनी लखनऊ वाली कोठी का प्रबन्ध करने के लिये वहाँ जा पहुँचा। लखनऊ में सुन्दर कोठी की देख-भाल के लिये रह रहा था। वह अपनी स्त्री और बच्चों को अपने गांव से वहाँ ले आया था और कोठी के पिछवारे बनी हुई एक कोठरी में रहता था। उसके वेतन का प्रबन्ध बैंक से कर, उसको कोठी की सफाई और पुस्तकालय आदि की सफाई के लिये चाबियाँ दे, वह एक दिन वहाँ से बम्बई को चल पड़ा।

सुदर्शन का पत्र, जिसमें सरस्वती के पश्चात्ताप का पत्र भी था, जब लखनऊ पहुँचा था तो उससे पूर्व ही वह वहाँ से चल पड़ा था।

झांसी में उसकी गाड़ी में एक जर्मन दम्पति आ बैठे। इन्होंने भी बम्बई जाना था। जब परस्पर परिचय हुआ और कुछ काल तक बातें हुईं तो पता चला कि वे किसी जर्मन व्यापारी संस्था के प्रतिनिधि हैं।

मिस्टर जैरियर अपनी कम्पनी के काम से भारत आया तो अपनी पत्नी को भी, भारत भ्रमण के लिये साथ ले आया। कैटेलिना जैरियर ने ही सबसे पहले वार्त्तालाप आरम्भ की थी। इस वार्त्तालाप में जब वह पता चला कि पद्मदेव इंग्लैण्ड जा रहा है, तो उसने भी अपनी यूरोप जाने की बात बता दी। घटनावश दोनों एक ही जहाज से मारसेल्ज तक जा रहे थे।

बम्बई पहुँचने तक परिचय गहरा हुआ तो मिस्टर जैरियर ने पद्मदेव को जर्मनी में अपने घर पर, 'स्ट्रैसबर्ग' में आने का निमंत्रण दे दिया। इसके साथ ही उसने यह सुझाव भी दिया कि उसके लिये यह अधिक हितकर होगा यदि वह लंदन के स्थान बर्लिन के पुस्तकालय में अपना काम करे। उसका कहना था कि बर्लिन के पुस्तकालय में अधिक साहित्य मिलेगा, जिससे पद्मदेव अपनी पुस्तक में मूल्यवान सुधार कर सकेगा।

यह सुझाव पद्मदेव को बहुत ही पसंद आया और वह अपने कार्यक्रम को बदलने के लिये तैयार हो गया। उसने यह निश्चय कर लिया कि वह मारसेल्ज में अपने जहाज से उतर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पैरिस भ्रमण कर 'स्ट्रेसबर्ग' चला जायेगा और वहाँ कुछ दिन रहकर बर्लिन जा पहुँचेगा। कुछ मास बर्लिन में रहकर वह लंदन चला जायेगा।

मिस्टर जैरियर का यह प्रस्ताव था कि वह स्ट्रैसबर्ग में तो उसके मकान पर ठहरे ही। बर्लिन में उसका लड़का और लड़की हैं और वे उसका, वहाँ पर ठहरने का भली-भांति प्रबन्ध कर देंगे।

इस प्रकार यात्रा आरम्भ होते ही उसको यूरोप में स्वागत का आश्वासन मिल गया। वह मिस्टर जैरियर के साथ ही बम्बई ताज होटल में ठहरा और निश्चित तिथि को वहाँ से पी०एण्ड ओ० के जहाज में चल पड़ा।

मिसेज जैरियर बर्लिन यूनिवर्सिटी की ग्रेजुएट थी और इस समय पचास वर्ष से ऊपर की आयु की थी। उसका पति साठ वर्ष से ऊपर हो चुका था। दोनों हृष्ट-पुष्ट और हँसमुख व्यक्ति थे। सदा नये मित्र और परिचय बनाने के लिये तैयार रहने वाले ये दम्पति भारतवर्ष में कई बड़े-बड़े लोगों से मिलकर, अपने सम्बन्ध स्थापित कर चुके थे।

वे भारत में छः मास तक रहे थे और अपनी कम्पनी का पचास करोड़ से ऊपर का काम कर चले थे। इनकी कम्पनी चीनी की मिलों से लेकर सूई-सलाई तक बेचती थी और अब वह भारी बिक्री करके चले थे। उनको अपने काम पर संतोष था। इस पर भी भारत की स्थिति पर वे शोक प्रकट किये बिना न रह सके।

भिन्न-भिन्न राजनीतिक विचार, उद्योग-धन्धे सम्बन्धी और सांस्कृतिक विषयों पर वे अपनी जानकारी को पुष्ट करने के लिये पद्मदेव से इन विषयों पर बातें कर रहे थे। कैटिलिना जैरियर अपने पति से अधिक राजनीति में रुचि रखती थी, परन्तु उसका पति भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक समस्याओं में रुचि रखता था। दोनों गांधीजी के विषय में सहमत रहते थे। दोनों के लिये महात्मा गांधी एक विलक्षण समस्या बनी हुई थी।

जब-जब भी वे गांधीजी के विषय में पूछने लगते, पद्मदेव वार्त्तालाप की दिशा जर्मनी की ओर घुमा देता। एक दिन जहाज के डैक पर, बैंत की कुर्सियों पर बैठे हुए कैटेलिना ने पूछ लिया, "यह गांधी जी तो राजनीति में असफल हुए हैं न?"

"हाँ, अभी तक तो सफलता प्राप्त नहीं हुई।" पद्मदेव का उत्तर था।

"क्या आप समझते हैं कि इनके उपायों के सफल होने की कभी भविष्य में आशा भी है?"

"सफलता क्या है? जब तक इसका निर्णय न हो जाये, तब तक गांधीजी के उपायों के विषय में सम्मति देनी कठिन है।"

"तो गांधीजी किस प्रकार की सफलता के लिये यत्न कर रहे हैं?"

"वे भारत में भारतीयों का राज्य चाहते हैं।"

"मैं भी यही कह रही हूँ।"

"इसमें वे सफल हो जायेंगे।"

"तो असफल किसमें होंगे?"

"मानवता के आन्दोलन में, जिसके लिये मनुष्य चिरन्तन यत्न कर रहा है। वे न केवल उसमें असफल होंगे, प्रत्युत भारत को कुछ पीछे की ओर ले जाने वाले सिद्ध होंगे।"

इस पर मिस्टर जैरियर बोल उठे, "वाह! मैं तो इससे सर्वथा उलट ही बात की आशा करता हूँ। अंग्रेजों जैसी समझदार जाति से इस प्रकार के अहिंसात्मक आन्दोलन से राज्य नहीं मिल सकेगा। हाँ, मानव-उत्थान के कार्य में गांधीजी का एक भारी और स्थायी भाग रहेगा। उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में जो भी ईमानदारी, धर्म और श्रेष्ठता को लाकर बैठा दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गांधीजी, की रामधुन, वास्तव में राजनीति की एक महान् देन है।''

''यह ठीक है।'' पद्मदेव ने जैरियर के आशय को समझकर बताया, ''परन्तु आप अंग्रेजों की विशेष परिस्थिति को नहीं समझते। यह कौम तो बहुत ही समझदार है। ये जाति अभिमानी लोग कुछ ऐतिहासिक विषमताओं के कारण अपने को ऐसी स्थिति में पा रहे हैं, जैसे कोई अपने मुख के आकार से बड़ा ग्रास ले ले। इनका मुख इतना भर गया है कि वे इसको अब चबा नहीं सकते। परिणाम यह हो रहा है कि इनको अपने मुख के ग्रास को निकालकर फेंक देना होगा।

''अंग्रेज एक छोटी-सी जाति है और इसने दुनियाभर के देशों में टांग अड़ा ली है। इतना बड़ा साम्राज्य इनके मान का नहीं है। इसका कुछ अंश इनको छोड़ना ही पड़ेगा।

''महात्मा गांधी का शान्तिमय आन्दोलन हो अथवा सावरकरजी का हिंसात्मक आन्दोलन, दोनों सफल होंगे। गांधीजी को सफलता का श्रेय मिलेगा, यह इस कारण कि लड़ने वाले सिपाही मारे जाते हैं और नगरों में रहने वाले शान्तिप्रिय नागरिक उस लड़ाई से प्राप्त सफलता का भोग करने के लिए जीवित रहते हैं।

''भारत इस सफलता में मानवता की असफलता छुपी है और उसका प्रकटीकरण स्वराज्य मिलने पर मानव के घोर पतन में प्रकट होगा।''

पद्मदेव की इन बातों पर दोनों विस्मय में उसका मुख देखते रह गये। उनको प्रश्नभरी दृष्टि से अपनी ओर देखते पा, पद्मदेव ने अपने कथन की व्याख्या कर दी। उसने बताया, ''अहिंसा का अर्थ महात्माजी यह लगाते हैं कि अपने विपक्षी के दृष्टिकोण को स्वीकार कर लेना।

''आज तो भारत में हिन्दू-मुसलमान समस्या उत्पन्न हो रही है। मुसलमान हिन्दुओं के साथ स्वराज्य आन्दोलन में सम्मिलित नहीं हो रहे। महात्मा गांधी जी ने उनको अपने साथ सम्मिलित करने के लिये उनके टर्की के खलीफा का समर्थन कर दिया है।

''खलीफा किसी प्रकार भी, किसी भी, देश का शासक होने के योग्य नहीं था। इस पर भी मुसलमान उसको वहाँ पर रहने देना चाहते हैं। यह इस कारण कि वह संसार की इस्लामी शक्ति का संगठन करता है। दोनों बातें मानवता में ह्रास लाने वाली हैं। व्यक्तिगत विचार से खलीफा एक वासना प्रिय, दुशासक और मूर्ख था। समष्टिगत विचार से इस्लाम के संगठन में सहायक होना एक निकृष्ट मनोवृत्ति को प्रोत्साहन देना है। शान्ति के मनमोहक आवरण में धार्मिक असहनशीलता और घृणा की सहायता की जा रही है।''

कैटेलिना ने इतिहास में मुसलमानों के कारनामों को पढ़ा था। अभी भी उनकी, अन्य धर्मो के प्रति घृणा को वह जानती थी। इस कारण गांधीजी की इस दूषित नीति को समझ बोल उठी, ''मैं तो पहले ही इस धर्म के ढोंगी गांधी के विषय में यही विचार रखती थी।''

''एक्सक्यूज मी मैडम!'' पद्मदेव ने उसको बीच में रोकते हुए कहा, ''मैं गांधीजी को ढोंगी नहीं मानता। इस पर भी उनको मिथ्या पथगामी मानता हूँ। मैं उनको मन, वचन और कर्म से एक रस तो पाता हूँ, परन्तु उनका अविकिसित होने से, उनके वचन और कर्म भी भ्रममूलक हैं। ढोंगी तो हम उनको कहते हैं, जो मन से कुछ और माने और प्रकट कुछ और करें। मैं महात्मा जी को ऐसा नहीं मानता।

''इसमें विशेष बात यह है, कि देश का एक भी हिन्दू विद्वान् उनके साथ सहमत नहीं है। देश के नास्तिक, विदेशीय संस्कृति के भक्त, हिन्दू जाति के विरोधी और प्रत्येक प्रकार के नैतिकता से हीन होने गांधी जी के समर्थन के लिये तैयार हो रहे हैं।

''देश का एक और अंश है, जो गांधीजी की जय-जयकार बुलाने वाला है। वह है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहाती जनता। यह वर्ग अनपढ़ और रूढ़ियों में बंधा हुआ वर्ग है। यह अंश न तो राजनीति को समझता है न ही धर्म-संस्कृति आदि। भारत में बौद्ध, जैन तथा वैष्णव सम्प्रदायों के अवशेषों पर गांधीवाद पनपने लगा है।''

जैरियर दम्पति पद्मदेव की विवेचना से सन्तुष्ट होते हुए भी, उसका खण्डन नहीं कर सके।

: 2 :

पद्मदेव ने अब बात यूरोप की राजनीति पर चला दी। उसने कहा—''जहाँ आन्दोलन का प्रश्न है, यह गांधीजी का अपने ढंग का है, परन्तु यह आन्दोलन तो साधन है, उद्देश्य नहीं। साधन ठीक होने पर भी उद्देश्य ठीक नहीं माना जा सकता। इस कारण यह उल्लेखनीय है कि गांधीजी भारत के शासन को उस पथ पर ले जाने का यत्न कर रहे हैं, जिस पर यूरोप कई सौ वर्षों से चल रहा है।

''बताइये! क्या यूरोप में शासन युक्तियुक्त आधार पर चल रहा है?''

इस विषय पर पति-पत्नी में मतभेद था और वह प्रकट हो गया। मिस्टर जैरियर डेमोक्रैट था और उसकी पत्नी कैटेलिना सोशियलिस्ट। पति प्रजातन्त्रात्मक विधि-विधान में विश्वास रखता था और पत्नी नेतागिरी में। इस प्रकार गांधीजी की विवेचना से हटकर वार्त्तालाप रूस में वोलशिविजम और जर्मन में प्रजातन्त्र पर चल पड़ा।

दोनों में वार्त्तालाप की धुरि बन गई कि शासक केवल देश के शासन का उत्तरदायित्व ले अथवा देश में मनुष्य के प्रत्येक कार्य में भाग ले। समाजवादी कैटेलिना का विचार था—''बलशाली, धूर्त और धनवान लोग निर्वाचनों में सफल होकर शासक बन जाते हैं। शासक बनकर वे दुर्बलों, ईमानदारों एवं सब निर्धनों का रक्त चूसने लगते हैं। उससे ऐसे लोगों से जनता की रक्षा के लिये, शासन को समाज के सब सूत्रों को अपने हाथ में लेकर, सब को फलने-फूलने का अवसर देना चाहिए।''

जैरियर का कहना था—''जो निर्वाचनों में असफल होते हैं, वे लोग सफल व्यक्तियों को गालियाँ देने लगते हैं। वे ही सफल व्यक्तियों को धूर्त आदि नामों से सम्बोधन करते हैं। वास्तव में व्यक्ति सफल तो अपनी योग्यता के ही आधार पर होता है। धन, बल एवं युक्ति तीनों सफलता के आधार हैं, परन्तु यह तीनों भी तो योग्यता के ही लक्षण हैं।

''प्रजातन्त्रात्मक पद्धति का आधार ही यह है कि समाज में प्रतिस्पर्धा के लिये अवसर सब के लिये हो। इस प्रकार योग्य व्यक्ति ही ऊपर आते हैं। ऐसे प्रबन्ध में प्रत्येक को आगे बढ़ने का अवसर होता है।

''समाजवादी ढांचे में खुले चुनाव न हो सकने के कारण, सब के लिये अवसर नहीं होता। वहाँ शासक पार्टी किसी आदमी को अपना प्रतिनिधि चुन लेती है। शासक पार्टी के अतिरिक्त अन्य कोई पार्टी वहाँ बन नहीं सकती। अतः पार्टी का विरोध कोई व्यक्ति, व्यक्तिगत रूप में, नहीं कर सकता। वह अपने समर्थन के लिए कोई पृथक् पार्टी नहीं बना सकता।

''यह निर्वाचन तो किसी भी प्रकार से स्वतंत्र निर्वाचन नहीं माने जा सकते। पूर्ण पार्टी के सदस्य पार्टी के प्रतिनिधि को ही अपना मत देते हैं। यदि वे पार्टी की आज्ञा न मानें तो पार्टी से बाहर भी निकाल दिये जाते हैं।''

जब इस प्रकार युक्तियों पर युक्तियाँ दी जा रही थीं, पद्मदेव मुस्कराता हुआ दोनों की बातें सुन रहा था। अन्त में अपना मत देते हुए उसने कहा—''शासक के निर्वाचन की विधि तो गौण है। मुख्य बात है शासकों के अधिकार तथा शासक का कर्त्तव्य किस-किस क्षेत्र तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सीमित रहना चाहिए। यहाँ तो एक विचारणीय बात है।

"यदि शासक मनुष्यों के विचारों और मनोभावों पर भी नियंत्रण करने लगे, यदि शासक मनुष्य की ऐसी गतिविधियों पर, जिनका उसके अपने साथ ही सम्बन्ध है, प्रतिबन्ध लगाने लगे, यदि शासक मनुष्य की जीविका प्राप्त करने पर प्रतिबन्ध लगाये और अन्त में यदि शासक मनुष्य की उन्नति की सीमा बांधने लगा, तो उसका कार्य अपने अधिकार की सीमोल्लंघन कर जायेगा।

"इन सब और अन्य ऐसे कामों में, जिनमें मनुष्य रुचि रखता हो, सबको स्वतंत्रता हो। इस स्वतंत्रता में केवल एक सीमा होनी चाहिए। वह यह कि कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे की स्वतंत्रता का हनन करने वाला न हो। इस सीमा को देखभाल करना ही शासक और शासन का कार्य है।

"शासक का यह और केवल यह कार्य हो जाये तो फिर शासक किसी भी प्रकार से चुन लिया जाये, हानि नहीं।"

"वाह!" कैटेलिना का कहना था—"बात तो वहाँ ही आकर खड़ी हो गई। शासक की अनधिकार चेष्टाओं पर नियंत्रण कौन रखे?"

जैरियर ने कहा, "यह नियंत्रण समय-समय पर होने वाले निर्वाचन ही रख सकते हैं। निर्वाचन प्रशस्त अधिकारों पर और खुले अर्थात् सब के लिए अवसर वाले होने चाहिएँ।"

इस पर पद्मदेव ने यह बात स्पष्ट कर दी, "यदि कोई दल एक बार शासक बन जाये और निर्वाचन के समय अपनी राज्य-सत्ता को अपन दल के पक्ष में प्रयोग करे तो क्या हो?"

"निर्वाचनों के पहले दल शासन छोड़ दे।"

"कितने समय पहले?"

"पन्द्रह दिन।"

"अर्थात् तब तक वह राज्य-सत्ता का प्रयोग दल के पक्ष में कर ले।

"देखिये मिस्टर जैरियर! शासक की अनधिकार चेष्टाएँ न तो निर्वाचनों से रुक सकती हैं और न ही पार्टी के बल पर नियुक्तियों से।

"इसके लिए देश में एक व्यक्ति ऐसा निर्माण करना पड़ेगा, जो केवल देश के विधान का संरक्षक हो। वह व्यक्ति देश के नागरिकों के मनों का सम्राट हो। वह अपने चरित्र और व्यवहार से दलबन्दियों और विचार-सम्बन्धी गुटों से ऊपर हो।

"किसी काल में ऐसा व्यक्ति जन्म से राजा होता था। इंग्लैण्ड में अभी भी इस प्रथा के अवशेष दिखाई देते हैं। ऐसा व्यक्ति देश में सर्व-साधारण के मत से भी निर्वाचित हो सकता है। इसमें कोई भी व्यक्ति उम्मीदवार बन सके और किसी भी पार्टी को इस निर्वाचन में हस्तक्षेप करने की स्वीकृति न हो। इस निर्वाचन में दलबन्दी वर्जित हो।

"यह व्यक्ति, जिसको राजा अथवा राष्ट्रपति का नाम दिया जाये, विधान का संरक्षक हो। अपनी सहायता के लिए सेना, पुलिस, राज्य के कर्मचारी नियुक्त करने का इसे अधिकार हो, परन्तु यह सब देश की शान्ति तथा रक्षा के लिए ही हो; अर्थात् केवल मात्र शासन इसके अधिकार में हो।

"शेष जनता अपने-अपने कार्य से, जब तक कोई किसी दूसरे की स्वतंत्रता में बाधक न हो, अबाध विचार सके।

"विधि-विधान निर्माताओं के लिए आदेश हो कि वे कोई ऐसा विधान न बना सकें, जिससे किसी भी व्यक्ति की उक्त सीमाओं में स्वतंत्रता छिन जाये।

"विधि-विधान बनाने वाले, देश के विद्वानों द्वारा निर्वाचित विद्वान लोग हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"इस प्रकार के ढांचे का आधार है ज्ञान। ज्ञान-प्राप्ति में किसी भी दिशा में बाधा अवैधानिक हो।"

मिस्टर जैरियर को पद्मदेव एक सुलझे हुए, मस्तिष्क वाला व्यक्ति समझ आया था। कैटेलिना को वह एक रूढ़िवादी, पक्षपात से ग्रस्त विद्वान लगा था। यद्यपि वह युक्ति से पद्मदेव की बातों का खण्डन नहीं कर सकी थी, फिर भी वह अपनी शिक्षा से बने संस्कारों के अधीन उसको मति-भ्रष्ट समझती थी।

इस प्रकार पूर्ण यात्रा में वाद-विवाद चलते रहे। इस पर तीनों में मित्रता घनिष्ठ होती जाती थी। जब ये लोग मारसेल्ज में उतरे तो वहाँ से रेल द्वारा पैरिस जा पहुँचे।

मिस्टर जैरियर को पैरिस अपनी कम्पनी के काम पर जाना था। उसकी कम्पनी के प्रतिनिधि का कार्यालय पैरिस की कॉनिस स्ट्रीट पर था। वह वहाँ गया तो उसको तुरन्त वापिस स्ट्रैसबर्ग जाने का आदेश मिल गया। कैटेलिना के सम्बन्ध पैरिस की कम्युनिस्ट संस्थाओं से था। वह उनसे मिलने के लिए ठहर गई।

जैरियर ने जाने से पूर्व अपना पता पद्मदेव को दे दिया था। पैरिस में कैटलिना पद्मदेव को कुछ अधिक न मिल सकी। वह एक जर्मन होटल में ठहरी थी। पद्मदेव जैरियर की सम्मति से एक मैट्रोपौलिटन होटल में ठहर गया था। वहाँ रहता हुआ वह पैरिस के तथा आस-पास के दर्शनीय स्थानों को देखता रहा।

पद्मदेव को पैरिस में पहुँचे एक सप्ताह हो चुका था। वह लगभग सभी मुख्य-मुख्य स्थानों को देख चुका था। वह स्ट्रेसबर्ग के लिए रवाना होने वाला ही था कि कैटेलिना उसको पूछने चली आई—"अब आपका कार्यक्रम क्या है?"

"मैं अब पैरिस से बाहर जाने के लिए तैयार हूँ। दो दिन स्ट्रैसबर्ग में ठहर, तदनन्तर बर्लिन के लिये चला जाऊंगा।

"बर्लिन में कुछ मास तक रहना होगा। वहाँ से लन्दन जाऊंगा। वहाँ एक-आध मास में अपनी पुस्तक पर पुनरावलोकन कर छपने के लिये किसी प्रकाशक से बातचीत कर, अमेरिका और फिर चीन, जापान होता हुआ भारत लौट जाऊंगा।"

"मैं आज स्ट्रैसबर्ग जा रही हूँ। मिस्टर जैरियर का तार आया है कि मैं वहाँ शीघ्र पहुँच जाऊं।"

"मैं भी चलने को तैयार हूँ। कब चलेंगी?"

"आज सायंकाल पांच की गाड़ी से। कल दोपहर तक हम घर पर पहुँच जाएँगे।"

"ठीक है। मैं स्टेशन पर पहुँच जाऊंगा।"

"टिकट आप अभी मंगवा लीजिये। अपने होटल के मैनेजर को कहिये। वह आपके लिये प्रबन्ध कर देगा।"

"सन् 1933 में स्ट्रैसबर्ग विशाल उद्योगों का केन्द्र था। जिस ओर देखो, उस ओर ही कारखानों की धुएँदार चिमनियाँ दिखाई देती थीं। जिस ओर भी निकल जाओ, मशीनों के चलने की गड़गड़ाहट सुनाई देती थी। कोयले के धुएँ से सड़कें काली पड़ गई थीं। मकानों की दीवारें काली हो गई थीं। पूर्ण नगर ही एक बड़ी मशीन की भांति चलता दिखाई देता था। इस पर भी उन मकानों के भीतर मानव हृदय की धड़कन और संवेदना अनुभव होती थी।

पद्मदेव और कैटेलिना के स्वागत के लिए जैरियर स्टेशन पर आया हुआ था। वह अपनी मोटर गाड़ी में आया था और उन्हें मोटर में बैठाकर घर जा पहुँचा। पद्मदेव ने देखा, वह घर छोटा-सा था। उसमें छोटे-छोटे चार कमरे थे। खाना खाने के लिए और बैठक के रूप में प्रयोग करने के लिये पृथक् कमरे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन चार कमरों में एक में पद्मदेव को ठहरा दिया गया। वहाँ पहुँच उसको पता चला कि स्ट्रैसबर्ग के कई कारखानों में मजदूरों ने हड़ताल कर रखी है और इसी कारण उसके मालिकों ने जैरियर को बुला लिया था।

"परन्तु आप हड़ताल को तोड़ने में क्या कर सकते हैं?"

जैरियर ने अपने पैरिस से चले आने का कारण बताते हुए हड़ताल का उल्लेख किया था। जहाज में उसने पद्मदेव को पैरिस दिखाने का वचन दिया था और वह अपने वचन का पालन नहीं कर सका था। पद्मदेव ने जब उक्त प्रश्न पूछा तो वह कुछ परेशान-सा दिखाई दिया। इस पर पद्मदेव ने अपने प्रश्न के लिए क्षमा माँगते हुए कहा, "क्षमा करिये, मुझको यह प्रश्न नहीं पूछना चाहिये था।"

इस पर जैरियर ने कह दिया, "यह बात नहीं, आप पूछ सकते हैं। अब इस विषय में कोई रहस्य नहीं रहा। कम्युनिस्ट पार्टी आने वाले निर्वाचनों में भाग लेना चाहती है। इसके लिए वह कारखानों के मालिकों को बदनाम करना चाहती है। अतः वह, साधारण-सी बात के लिए हड़ताल कर यह प्रकट करना चाहती है कि वह है मजदूरों की वास्तविक रक्षक है, जिससे वे उसके प्रत्याशी को ही मत दें। कैटेलिना कम्युनिस्ट पार्टी की सेक्रेटरी है और मालिक चाहते हैं कि मैं, उसका पति होने से, किसी समझौते को कराने में यत्न करूं। अब कैटेलिना आई है, जिससे मैं कुछ तो कर सकूंगा।"

कैटेलिना समीप बैठी सुन रही थी, परन्तु अगले दिन जब पद्मदेव घूमकर और वहाँ का म्यूजियम देखकर आया तो उनके मकान में एक कॉन्फ्रेंस हो रही थी, जिसमें बड़ी ऊंची आवाज में और क्रोध के साथ बात हो रही थी। वे सब जर्मन भाषा में बोल रहे थे। इस लिए पद्मदेव कुछ भी न समझ सका। अतः वह अपने कमरे में चला आया। यह वाद-विवाद रात के भोजन के समय तक चलता रहा। भोजन के समय जैरियर ने सब लोगों को भोजन वहीं पर करने का निमंत्रण दे दिया। वे लोग तैयार हो गये तो जैरियर ने पड़ोस के होटल में टेलीफोन कर सबके लिए भोजन वहीं पर मंगवा लिया। पद्मदेव को भोजन उसके कमरे में ही मिल गया।

भोजनोपरान्त पुनः वार्त्तालाप आरम्भ हो गया और यह वाद-विवाद उसके सोने तक चलता रहा। कभी-कभी तो सब कुछ ऊंचा-ऊंचा और क्रोध में बोलने लगते थे।

प्रातःकाल पद्मदेव उठा तो जैरियर अभी सो रहा था। कैटेलिना उठ चुकी थी और उसके लिए 'बैड-टी' बनाकर ले आई थी।

"गुड मॉर्निंग' के पश्चात् पद्मदेव ने औपचारिक बात करने के लिए कह दिया—"रात आप बहुत देर तक जागती रही हैं।"

"हाँ, परन्तु अन्त में शुभ परिणाम निकले हैं।"

"सत्य? तो मैं आपको बधाई देता हूँ।"

"मेरे लिए भारी मुसीबत खड़ी हो गई थी। मैं यहाँ की ट्रेड यूनियन की प्रधान हूँ और कम्युनिस्ट पार्टी की मंत्री भी हूँ। इस कारण मैं अपने पति का पक्ष तो ले नहीं सकती थी। वह यहाँ की बूर्जुआ समाज का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

पद्मदेव ने चाय का प्याला उठा लिया और सुरकी लगाते हुए कहा, "सत्य ही आपकी स्थिति एक समस्या है, परन्तु मिसेज कैटेलिना! आप इससे बाहर क्यों नहीं हो जातीं? या तो आप पार्टी को छोड़ दें अन्यथा अपने पति से कहें कि वह बूर्जुआ की नौकरी छोड़ दें।"

कैटेलिना हँस पड़ी और खड़े-खड़े ही बोली, "वर्तमान परिस्थिति में इनमें से कोई भी बात सम्भव नहीं। यह परिवर्तन का काल है। मैं श्रीमान् जैरियर से यह नहीं कह सकती कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह अपनी नौकरी छोड़ दे। उसके बिना हम भूखे मरने लगेंगे। साथ ही मैं कम्युनिस्ट पार्टी को छोड़ नहीं सकती। मैं उसके सिद्धान्तों में विश्वास रखती हूँ।'

परन्तु उस मध्याह्न काल में जैरियर से भिन्न बात का पता चला। उसने बताया, "मार्च मास में निर्वाचन होने वाले हैं और ये हड़तालें उन होने वाले निर्वाचनों की तैयारी में हैं। हम इनको आन्दोलन का उचित उपाय नहीं मानते। इससे जाति की आर्थिक स्थिति में हानि पहुँचती है। इस पर वास्तविकता यह है कि हड़तालों के लिये कोई कारण नहीं होता। कोई बहाना बना लिया जाता है, फिर मालिकों को निर्दयी एवं शोषाणुकर्त्ता घोषित कर दिया जाता है। साथ ही कहा जाता है कि प्रजातन्त्रात्मक राज्य इन पैसे वालों की उंगलियों पर नाचने वाला राज्य है। इसको हटाना चाहिये। हटाने का उपाय भी बता दिया जाता है कि अपने वोट कम्युनिस्ट पार्टी के प्रत्याशी को ही देने चाहियें।"

"यहाँ मजदूर दो लाख हैं और छोटे-बड़े मालिक मिलाकर कुल दो सौ। अतः स्पष्ट है कि जीत उनकी होने वाली है।"

"परन्तु आप कैटेलिना को इस झगड़े से पृथक् हो जाने के लिये क्यों नहीं कह देते? यह तो एक भयंकर विडम्बना है कि पति और पत्नी भिन्न-भिन्न दलों में काम करने वाले हों।"

"यह मेरी और मेरी पार्टी की प्रजातन्त्रात्मक प्रवृत्ति है। हम सबको अपने-अपने विचारों में स्वतन्त्रता देना चाहते हैं।"

पद्मदेव ने मुस्कराते हुए कहा, "यह विचार की स्वतंत्रता कैसे हो गई? यह तो कार्य की स्वतंत्रता है। ऐसे कार्य की, जो दूसरों की स्वतंत्रता में बाधक हो, जैसे अकारण हड़ताल कराना। यह तो बलपूर्वक अपनी बात मनाने के तुल्य है।

"यहाँ की सरकार क्या कर रही है?"

"निर्वाचन समीप होने के कारण सत्तारूढ़ दल कम-से-कम बल प्रयोग करना चाहता है।

"परन्तु आप और आपकी सरकार इस प्रकार की अवहेलना दिखाकर तो देश का सत्यानाश कर देगी। देश में यह किसी को अधिकार नहीं होना चाहिए कि वह बलपूर्वक दूसरे की स्वतंत्रता को छीन ले।"

जैरियर ने कंधों को झटका दे, असंतोष प्रकट कर दिया।

: 3 :

तीसरे दिन पद्मदेव बर्लिन में जा पहुँचा। जैरियर ने अपने लड़के और लड़की को लिख दिया था कि उनका एक हिन्दुस्तानी मित्र, जो कि इतिहास का प्रोफेसर है, बर्लिन में अपने अनुसन्धान कार्य के लिये आ रहा है। उसके वहाँ ठहरने का प्रबन्ध कर दिया जावे। इस सूचना का परिणाम यह हुआ कि जैरियर का लड़का एवं लड़की, दोनों ही स्टेशन पर पद्मदेव के स्वागत के लिये आये हुए थे। लड़के का नाम जे० शरोडर और लड़की का नाम ऐमालीन था। ऐमालीन अंग्रेजी बोल-लिख सकती थी। इस कारण उसने पद्मदेव को पहचानकर आगे बढ़कर पूछा, "आप स्ट्रैसबर्ग के मिस्टर जैरियर के मित्र हैं क्या?"

"हाँ; क्या मैं उनकी लड़की से मिलने का सौभाग्य रखता हूँ?"

इसके पश्चात् परिचय हुआ। ऐमालीन ने जे० शरोडर का परिचय भी करा दिया। साथ ही उसने बताया कि उसका भाई अंग्रेजी नहीं जानता। इसलिए वह ही उसकी गाइड का कार्य करेगी।

"तब तो मैं अपने को बहुत ही सौभाग्यशाली मानूँगा। मैं अपने-आप को पूर्णतया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आपके हाथों में सौंपता हूँ।"

ऐमालीन ने शरारत भरी दृष्टि से पद्मदेव को देखकर कहा, "आपका चार्ज लेकर मैं भारी प्रसन्नता अनुभव करूंगी। आप कितने मूल्य के होटल में ठहरना पसंद करेंगे?"

"मैं एक वर्ष में पांच हजार पौंड व्ययकर सकता हूँ।"

"ओह! यह तो बहुत है। आजकल जर्मनी के सिक्के की तो कुछ भी कीमत नहीं। अतः हम लोग उसका उल्लेख नहीं करते। जो वस्तु यहाँ पर एक शिलिंग की मिलती है, उसके लिये जर्मनी के सिक्के में पांच हजार फ्रैंक माँगे जाते हैं।

"अतः आप अपने पौंडों को जर्मन सिक्के में न बदलियेगा। यहाँ ऐसी दुकानें हैं, जो अंग्रेजी पौंड में वस्तुएँ बेचने को तैयार हैं।"

"तो आप मुझको किसी ऐसे होटल में ले चलिये जो पौंडों-शिलिंगों में ही बात करे।"

"ठीक है चलिये।" शरोडर ने पद्मदेव से कुछ जर्मन भाषा में कहा। ऐमालीन ने जिसका भावार्थ बता दिया कि बड़ा भाग्यहीन है जो उसका स्वागत खुलकर नहीं कर सकता।

"ऐमालीन! इनसे कह दो। इनका एक शब्द अंग्रेजी की पुस्तक से अधिक अर्थ रखता है। मैं शीघ्र ही बोलने योग्य जर्मन भाषा सीख लूँगा। तब मैं इनसे बात कर अपना सौभाग्य मानूँगा।"

इसके पश्चात् शरोडर चला गया। ऐमालीन ने बताया, "इसको अपने कार्यालय में जाना है। मेरी क्लास सायंकाल लगती है। इस कारण मैं आपको होटल में ठहराकर ही जाऊंगी।"

पद्मदेव को एक स्विस होटल में ठहरा दिया गया। एक कमरे का पन्द्रह शिलिंग भोजन-सहित तय हो गया। इस सब प्रबन्ध में मध्याह्न हो गया। इस समय लंच का समय हो गया था। पद्मदेव ने ऐमालीन को भोजन का निमंत्रण दे दिया। उसने कहा भी कि कॉलेज के होटल में उसके लिये भोजन तैयार होगा। यहाँ पर व्यर्थ में तीन शिलिंग खाने का खर्चा बढ़ जायगा, परन्तु पद्मदेव ने कह दिया, "मैं एक धनी आदमी हूँ और इससे कहीं अधिक व्यय करने की क्षमता रखता हूँ।"

ऐमालीन ने लंच उसके साथ लेना स्वीकार कर लिया। खाना खाते हुए पद्मदेव ने पूछ लिया, "कॉलेज किस समय लगता है?"

"तीन बजे से सायं आठ बजे तक।"

"और दिन के समय क्या करती हो?"

"प्रातःकाल मैं पढ़ती हूँ। दिन के समय कुछ पार्टी का काम करती हूँ और सायंकाल कॉलेज में जाती हूँ।"

"तो तुम भी पार्टी अर्थात् राजनीतिक पार्टी में भाग लेती हो?"

"हमारे देश की अवस्था अति दुर्बल हो गई है। पिछले युद्ध में हमारा पराजित होना इसमें कारण बन गया है। हमारे बड़े लोग तो इस पराजय का कारण नहीं जान सके। वे उसी पुराने ढर्रे पर चल रहे हैं। इससे देश की वही दुर्बलता बनी रहेगी और हमारे युद्ध चलते रहेंगे।"

पद्मदेव ऐमालीन के तर्क पर मुस्कराया। पद्मदेव को मुस्कराते देख वह विस्मय में उसका मुख देखने लगी। इस पर पद्मदेव ने अपने मुस्कराने का कारण बता दिया। उसने कहा, "ऐमालीन! तुम अयुक्तिसंगत बात कर रही हो?"

"क्या अयुक्तिसंगत बात की है?"

"तुमने कहा है कि जर्मनी के बूढ़े लोग देश को पुराने ढर्रे पर चला रहे हैं। इससे देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्बल होगा और विरोधियों के साथ युद्ध चलाते रहेंगे। ये दोनों बात परस्पर विरोधी हैं, दुर्बल लोग युद्ध नहीं कर सकते।"

"परन्तु दुर्बल पर आक्रमण तो किया जा सकता है?"

"ठीक! परन्तु आज तक जर्मनी पर किसी ने आक्रमण नहीं किया। नैपोलियन के पश्चात् जर्मनी ही दूसरों पर आक्रमण करता रहा है।"

ऐमालीन कुछ क्षण तक पद्मदेव का मुख देखती रह गई। फिर विचार कर बोली, "हम दुर्बल हो रहे हैं। इस कारण हमारे अधिकारों को अंग्रेज और फ्रांसीसी दबा रहे हैं।"

"परन्तु ये रूढ़िवादी नेताओं के करने से ही तो देश बलशाली हुआ था। अब भी वे इसे बलशाली बनाने का यत्न कर रहे हैं। इसमें समय लग रहा है, परन्तु किसी भी अच्छे काम को करने में समय लगता है।"

"बात यह है कि पहले यहाँ सम्राट कैसर का राज्य था। वह अधिनायक ढंग से राज्य चलाता था। वह देश को शक्तिशाली बनाने में सफल हुआ था। ये प्रजातन्त्रवादी जो 'डेल' में बैठ व्याख्यान देने में ही रुचि रखते हैं, देश को बलवान नहीं बना सकते। ये लोग अपने सिक्के की कीमत भी स्थिर नहीं रख सके।"

"तुम लोग क्या करना चाहते हो?"

"हम यहाँ मजदूरों का राज्य स्थापित करना चाहते हैं। इसको मजदूरों का अधिनायकवाद (डिक्टेटरशिप ऑफ दि प्रौलिटेरिएट) कहते हैं।"

"ओह! तो तुम भी अपनी माँ की भांति कम्युनिस्ट हो?"

"हाँ, हमको कम्युनिस्ट भी कहते हैं।"

"परन्तु ऐमालीन! अधिनायकवाद तो चाहे किसी का हो, विनाशकारी ही होता है।"

"नहीं जी! मजदूरों का अधिनायकवाद सुखकारी होगा।"

"रूस में तो यह कुछ अधिक सुखकारी नहीं हो रहा?"

"वहाँ पर अवस्था अभी निमार्ण काल की है। जैसे बच्चा पैदा होते समय कष्ट तो होता ही है, परन्तु फिर पीछे वह सुखकारी हो जाता है। ऐसे ही इस राज्य पद्धति में भी होगा।"

"यह तो तुम ऐसे कह रही हो, मानो इस प्रकार के राज्य का अनुभव तुमको हो।"

"अनुभव तो अभी नहीं है। केवल रूस में ही तो इसका परीक्षण हो रहा है। हम चाहते हैं कि रूस के साथ ही जर्मनी में भी इसका प्रयोग शुरू कर दें। हमारा कहना यह है कि पूर्ण सम्पत्ति और आय के स्रोत राज्याधीन हो जायें। राज्य मजदूरों का हो। वे ही तो धन के उपार्जन में कारण हैं। बस फिर सुख-समृद्धि और जीवन-स्तर ऊंचा हो जायेगा।"

"ऐमालीन! यह तुम्हारा पूर्ण कथन युक्तिहीन है। प्रथम यह कहना कि मजदूर ही धनोपार्जन में योग्य हैं, गलत है। कारखाने के मालिक जो सहस्रों मजदूरों और सैकड़ों मशीनों और माल का क्रयकर सब प्रबन्ध करता है, वह सब मजदूरों से अधिक धनोपार्जन में कारण होता है।"

"वह भी राज्य का नौकर होकर काम करेगा।"

"और यदि वह मजदूर की भांति कार्य करने से इन्कार कर दे तो?"

"तो उसको फांसी पर चढ़ा दिया जायेगा।"

"परन्तु वर्तमान राज्य में तो जब मजदूर काम नहीं करते, मेरा कहना है हड़ताल करते हैं, तो गोली से नहीं मार दिये जाते?"

"यह इस कारण नहीं कि मालिक गोली से उड़ा देना नहीं चाहते। इसमें कारण यह है कि वे ऐसा कर सकते नहीं। जाति में मजदूरों की संख्या अधिक है और वे, एक भी मजदूर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरने पर, विद्रोह कर देंगे और सैनिक मजदूरों के सम्बन्धी हैं, जो शासकों का सफाया कर देंगे।''

''कुछ भी हो। यह मार-काट तो अमानवीय है। मनुष्य जो काम न करे, उसको वेतन नहीं मिलना चाहिये। साथ ही उसको स्वीकृति होनी चाहिये कि वह कहीं अन्यत्र जाकर काम करे।''

''अन्यत्र का कया अर्थ?''

''अन्यत्र का अर्थ है किसी दूसरे देश में।''

''यह तो देशद्रोह (ट्रीजन) होगा। देश की जनता देश के लिये ही काम कर सकेगी।''

पद्मदेव ने सिर हिला दिया। उसने केवल यह कहा, ''यह बचपन है। जब तुम विवाह कर लड़के-लड़यिों की माँ बनोगी, तब तुम मेरे इस कथन का प्रमाण पाओगी। मानव पशु से भिन्न प्रकार का प्राणी है। इसमें मन अर्थात् वह मंत्र, जिससे मनन करता है, विशेष होता है। इसका मूल्य शरीर के अन्य सब अंगों से अधिक है। मन को दास बनाने का यत्न तानाशाहों ने बहुत ही किया है, परन्तु वे सफल कभी नहीं हुए।''

''आज जिन तानाशाहों का उल्लेख कर रहे हैं, वे भिन्न प्रकार के होते हैं। यह मजदूर वर्ग की तानाशाही अवश्य सफल होगी।''

खाना समाप्त हो चुका था। दोनों उठे और हाथ आदि धोकर, उस कमरे में चले गये, जो पद्मदेव को मिला था। पद्मदेव ने पूछा, ''क्या आप मेरी, बर्लिन लायब्रेरी में पुस्तकें प्रयोग करने के लिए स्वीकृति प्राप्त करने में सहायता कर सकती हैं?''

इसके लिए तो आपको अंग्रेजी दूतावास में जाकर वहाँ से परिचय-पत्र प्राप्त करना पड़ेगा।''

अगले दिन ऐमालीन उसको अंग्रेजी दूतावास में ले गई। वहाँ दूत के कलचरन अटैची से भेंट हुई तो पद्मदेव ने बताया कि उसके पास इंग्लैण्ड में सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार इंडिया के नाम और लंदन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ओग्लीन के नाम परिचय-पत्र हैं। पैरिस में उसको इस बात का पता चला था कि बर्लिन लायब्रेरी में हिन्दुस्तान पर विशेष साहित्य है, इस कारण उसको देखने वह यहाँ चला आया है।

वे पत्र देखे गये और यह देख कि उसके पास पंजाब के गवर्नर का परिचय-पत्र है, उसको एक पत्र मिल गया और उसी दिन वह पुस्तकालयाध्यक्ष के पास पहुँचा, पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की स्वीकृति पा गया।

बर्लिन पुस्तकालय एक महान् पुस्तक संग्रहालय था। जहाँ भारत के विषय में और भारत से प्राप्त अनेकों पुस्तकें थीं, उसको एक मेज-कुर्सी उस विभाग में लगाने को मिल गयी, जिसमें भारत-सम्बन्धी पुस्तकें रखी थीं।

बर्लिन पहुँचने के एक-दो दिन के भीतर ही पद्मदेव अपने काम में लग गया। यहाँ पर ऐमालीन प्रायः नित्य लंच के समय से पूर्व उसके पास आ जाती थी। वे दोनों होटल में जाते थे और भोजन करते थे। एक घंटा तक दोनों बातचीत करते। इसके बाद ऐमालीन अपने कॉलेज और पद्मदेव एक जर्मन टीचर से जर्मन भाषा सीखने के लिये चला जाया करता था।

पद्मदेव को बर्लिन में आये अभी पन्द्रह दिन ही हुए थे कि एक दिन ऐमालीन ने पूछ लिया, ''आप विवाहित हैं?''

''हाँ और नहीं भी।''

''क्या मतलब?''

''विवाह हुआ था। एक सन्तान, लड़का भी हुआ है, परन्तु मेरी पत्नी मुझसे रूठी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है। जहाँ तक मुझको ज्ञात है, वह आवारा हो गई है।''
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''इसका क्या अर्थ है?''

''उसका सम्बन्ध अन्य कई लोगों से हो चुका है।''

''तो आप उसको तलाक क्यों नहीं दे देते?''

''हमारे देश में तलाक का रिवाज नहीं है।''

''तो ऐसी अवस्था में क्या करते हैं?''

''पुरुष दूसरा विवाह कर लेता है।''

''तो पहली पत्नी को सुलह के लिये स्थान नहीं रहता?''

''ऐसी घटनाएँ हुई हैं कि दूसरा विवाह करने पर पहली पत्नी लौट आई हो और फिर दोनों सौकने इकट्ठी रहने लगती हैं?''

''यह तो 'होरेबल' है।''

''होरेबल क्या है?'' पद्मदेव ने मुस्कराते हुए कहा—''यदि दोनों पत्नियाँ परस्पर सुलह कर सकें, तो अपने पति की दोनों भागीदार बन जाती हैं।''

''और यदि सुलह न हो सके तो?''

''उस अवस्था में पत्नियाँ इकट्ठी नहीं रह सकतीं और यदि पति चाहे, या उसके पास सामर्थ्य हो तो दोनों को पृथक्-पृथक् मकान अथवा कमरे रहने को मिल जाते हैं।''

इस सूचना से ऐमालीन का मुख उतर गया था। पद्मदेव इसका कारण न समझ सका। वह केवल विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। इस पर भी वह यह बात समाप्त नहीं हुई। इसके दो दिन पश्चात् ऐमालीन ने पूछ लिया, ''क्या आपकी पत्नी देखने में सुन्दर है?''

''बहुत! उसके पतन का कारण भी यही था।'' शारीरिक सौन्दर्य के साथ उसकी बुद्धि और संस्कार सुन्दर नहीं रहे। यही कारण है कि वह मुझको छोड़कर चली गई है।''

''परन्तु आप भी तो सुन्दर हैं। फिर वह आपको क्यों छोड़ गई है?''

''इसके अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं कह सकता कि वह मूर्ख सिद्ध हुई है।''

''उसका बच्चा कहाँ है?''

''मेरे एक मित्र के पास। वह अपने लड़के को भी छोड़ गई है।''

''यहाँ एक लड़की है, जो आपसे प्रेम करने लगी है?''

''वह भी मुझसे प्रेम करती थी। मैं प्रेम को एक स्थायी भावना नहीं मानता।''

''क्या मतलब? आपके मन में अपनी पत्नी के लिये भी प्रेम नहीं था?''

''प्रेम का अर्थ तो पसंद के ही हैं। यह पसंद तो प्रायः सामयिक होती है और इसका पात्र बदलता रहता है।''

''आप भूल कर रहे हैं। प्रेम एक स्वाभाविक 'इंस्टिंक्ट' (अन्तरात्मा की रुचि) है। इससे अधिक स्थायी वस्तु संसार में कुछ भी नहीं है।''

''देखो ऐमालीन! मेरी माता जब ग्यारह वर्ष की थी, उसका विवाह हो गया था। उस आयु में तो उसको न प्रेम के अर्थ आते थे, न ही वह अपने मनोभावों का विश्लेषण करने की योग्यता रखती थी। इस पर भी मेरी माता जो इस समय सत्तर वर्ष की आयु के लगभग है, मेरे पिता के पास रहती है। वह पूर्ण जीवन में उनकी निष्ठावान पत्नी बनी रही है।''

''तो वह क्या बात है, जिसके कारण आपकी माता का मन अपने पति से ऊब नहीं रहा?''

''वह पति-पत्नी के परस्पर-धर्म बन्धन हैं। हमारे देश में रहने वालों में धर्म में भारी श्रद्धा रहती है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"धर्म क्या होता है?"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"धर्म उस व्यवहार को कहते हैं जो एक व्यक्ति अपने और समाज के कल्याण के अर्थ करता है। हमारे समाज ने कई परीक्षणों के पश्चात् यह निश्चय किया है कि पति-पत्नी का सम्बन्ध धर्म का है और यह स्थिर रहना चाहिये।"

"परन्तु आपके विषय में तो यह टूट गया है।"

"हाँ! यह ऐसे ही है, जैसे सत्य बोलना, चोरी न करना, समाज के हित के कार्य हैं। संसार भर की मानव समाज ने इसमें मानव-कल्याण माना है, इस पर भी कई लोग हैं, जो झूठ बोलते हैं तथा चोरी करते हैं।"

"प्रेम के विषय में भी क्या ऐसा ही माना जा सकता है?"

"परन्तु ऐमालीन! प्रेम एक भावना (इमेशन) है। इसका कार्य के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। धर्म एक कार्य है। इस कारण दोनों में अन्तर है।"

यह इतना कुछ था कि इस पर विचार करने के लिए और इसको हजम करने के लिए समय चाहिए था।

: 4 :

जर्मनी में राजनीतिक वातावरण बिगड़ रहा था। निर्वाचन समीप आ रहे थे और छोटी-सी गोष्ठियाँ, पार्कों में, भवनों में, होटलों में और साथ ही रैस्टोरां में हो रही थीं। एक दिन पद्मदेव और ऐमालीन पुस्तकालय से होटल में आये तो वहाँ विशेष चहल-पहल दिखाई दी। ऐमालीन का भाई शरोडर होटल के रिसैप्शन रूम के द्वार पर खड़ा था। पद्मदेव ने उसको पहचाना और उससे हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ गया। अब पद्मदेव कुछ-कुछ जर्मन भाषा समझने और बोलने लगा था। उसने 'गुड डे' जर्मन में कहा तो शरोडर ने प्रसन्न हो पूछा, "तो आप जर्मन सीख रहे हैं?"

"हाँ कुछ-कुछ। आपकी बहन ऐमालीन इसमें मेरी बहुत सहायता कर रही हैं।"

"तो मैं आपको यहाँ हो रही सभा में निमंत्रण देता हूँ। यद्यपि आप यहाँ के मतदाता नहीं, इस पर भी यहाँ की बात समझने में, आपको इस मीटिंग में आने से बहुत सहायता मिलेगी।"

"तो मैं लंच लेकर आता हूँ।"

"मीटिंग लंच समय के बाद ही हो रही है।"

पद्मदेव और ऐमालीन डाइनिंग हॉल में चले गये। वहाँ जाकर ऐमालीन ने बताया कि यह नाजी पार्टी की मीटिंग है।

"नाजी पार्टी का क्या अर्थ होता है?"

"ये अपने को राष्ट्रीय कहते हैं। ये राष्ट्रीय समाजवाद को चलाना चाहते हैं।"

"आपके समाजवाद और राष्ट्रीय समाजवाद में अन्तर क्या है?"

"हम इन्टरनैशनलिस्ट हैं। हम मजदूरों के अधिनायकवाद के पक्ष में हैं। हमारे लिये संसार भर के मजदूर एक हैं और उनकी ही बात देश-विदेश में चलनी चाहिये।

"नाजी पार्टी में देश सर्वोपरि है। देशवासियों का अधिनायकवाद ही चलेगा। इनके लिये मजदूर, मालिक, पैसे वाला, निर्धन सब देश के लिये ही हैं।"

"मुझको तो दोनों में कोई अन्तर समझ आ नहीं रहा।"

"वाह! अन्तर तो है। हम केवल मजदूरों का राज्य चाहते हैं। वे देशवासियों का, जिसमें धनी-मानी भी सम्मिलित हैं।"

पद्मदेव एक विदेश की राजनीति में राय देना नहीं चाहता था, इस कारण चुप रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह लंच के पश्चात् अपने कमरे में विश्राम के लिये जा रहा था कि एक युवक आया और उससे जर्मन में बोला, "मिस्टर शरोडर आपको सभा में आमंत्रित कर रहे हैं।"

पद्मदेव इस निमंत्रण से इन्कार नहीं कर सका और उसके साथ चलने के लिये तैयार हो गया। ऐमालीन ने कहा, "मुझे कॉलेज जाना है। मैं चली। हमारी परीक्षाएँ समीप हैं। मैं छुट्टी नहीं कर सकती।"

ऐमालीन गई तो पद्मदेव उस व्यक्ति के साथ, जो उसको सभा में बुलाने आया था, भवन में जा पहुँचा।

सभा-भवन खचाखच भरा हुआ था। होटल का मैनेजर मंच पर बैठा था। उसके साथ शरोडर और एक अन्य व्यक्ति, जिसकी मूंछें छोटी-छोटी परन्तु घनी थीं, बैठा था।

पद्मदेव को भी ले जाकर मंच पर एक ओर बैठा दिया गया। शरोडर ने पद्मदेव का परिचय उस व्यक्ति से करा दिया, जो घनी मूंछें रखता था। शरोडर ने बताया, "ये हैं पद्मदेव। मेरे पिता जैरियर के परम मित्र हैं। एक हिन्दुस्तानी अनुसंधानकर्त्ता हैं और यहाँ बर्लिन पुस्तकालय में एक विषय पर अध्ययन करने आये हुए हैं।"

उस व्यक्ति ने हाथ मिलाया तो शरोडर ने उसका परिचय भी करा दिया—"ये हैं हर्र हिटलर! हमारी पार्टी के नेता।"

इसके पश्चात् होटल के मैनेजर ने उठकर कहा, "हमारा देश इस समय एक भारी मुसीबत में से गुजर रहा है। हमारी मुद्रा का मूल्य इतना कम हो गया है कि एक साधारण व्यक्ति के लिये जीवन दुर्भर हो गया है। अतः वर्तमान डेमोक्रैटिक पार्टी, जो शासन कर रही है, शासन करने में सर्वथा असफल सिद्ध हुई है। उसको हटाकर हमको नये लोगों को शासन करने का अवसर देना है।

"इस समय डेमोक्रैटिक के अतिरिक्त दो दल हमारे सामने हैं। एक है सोशियलिस्ट ग्रुप और दूसरा है नाजी ग्रुप। हम फादरलैण्ड के नागरिक, दोनों की बातें सुनना चाहते हैं। इस कारण एक पार्टी के नेता की बात सुनने के लिये आज का उत्सव हो रहा है।"

इसके पश्चात् शरोडर ने बहुत ही संक्षेप में अपना परिचय दिया। उसका कहना था—"मैं एक युवक हूँ। एक फैक्टरी में मैनेजर हूँ। मैं आपके इस हल्के में डेल की सदस्यता के लिये प्रत्याशी हूँ। हम क्या करना चाहते हैं और किस प्रकार करना चाहते हैं, उसके लिये अपने दल के नेता हर्र हिटलर से मैं निवेदन करता हूँ कि वह आपको सविस्तार बतायें।"

इस पर हिटलर उठकर बोलने लगा। उसने कहा, "होटल के मैनेजर श्रीमान् हिम्लर ने देश की स्थिति और इसमें दोनों मुख्य दलों की ओर संकेत किया है। वर्तमान डेमोक्रैटिक पार्टी तो सर्वथा असफल रही है। पिछले पांच वर्ष में देश उत्तरोत्तर निर्धन होता चला जा रहा है। अतः मैं अपनी पार्टी और सोशियसिस्ट पार्टी में भेद बतलाना चाहता हूँ।

"सोशियलिस्ट पार्टी उसी ढंग का राज्य चलाना चाहती है, जैसा रूस में चल रहा है। वह राज्य वहाँ पर असफल सिद्ध हुआ है। वहाँ की जनता भूखी-नंगी हो गई है। गुलामों की भांति कोड़ों से पीट-पीटकर काम पर लगाई जा रही है। पिछले वर्ष दो करोड़ किसानों को इसलिये मार डाला गया, जिससे उनकी भूमि राज्य के अधिकार में आ जाये। वहाँ पर न तो कपड़े पर्याप्त हैं, न ही जूते। जो कोई इस अवस्था के विरोध में कहता है, उसको गोली से उड़ा दिया जाता है। यह सोशियलिस्ट पार्टी वैसी ही स्थिति इस देश में पैदा करना चाहती है?

"हम नाजी पार्टी के लोग, अपने देश की समस्या का सुझाव यह समझते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को मान से अपना कारोबार करने और अपना जीवन व्यतीत करने की स्वीकृति हो। राज्य उनके परिश्रम को उनके अपने प्रयोग में लाने की स्वीकृति दे। हमें अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धन-सम्पदा देश से बाहर जाने देने से रोकना है। इसके लिये देश में निर्यात-आयात पर प्रतिबन्ध रखकर, हम एक-दो वर्षों में ही खुशहाल हो जायेंगे।''

इसी लय में हिटलर भाषण करता रहा। एक घण्टे के भाषण के पश्चात् शरोडर उठा और वक्ता तथा जनता का धन्यवाद करते हुए कहने लगा, ''मैं अपने नेता की बात को दुहराने के लिए नहीं खड़ा हुआ। मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि यदि आप हमको सफल बना देंगे, तो हम एक वर्ष में जर्मन का नक्शा बदल देंगे।''

तालियों की गड़गड़ाहट के पश्चात् सभा विसर्जित हुई। सभा के बाद हर्र हिटलर ने पद्मदेव से पूछा, ''हमारी बात पसंद आई है?''

''सोशियलिस्टों से अधिक युक्तियुक्त प्रतीत हुई है।''

''धन्यवाद।'' इसके बाद नेतागण चले गये और पद्मदेव जर्मन पढ़ने के लिए टीचर के घर चला गया।

पद्मदेव ने अपना पाठ लेने के बादर अपने शिक्षक से हर्र हिटलर की बात बता दी। शिक्षक का कहना था, ''इस समय फादरलैण्ड भारी मुसीबत में फँसा हुआ है। इसमें एक कारण यह है कि पिछले युद्ध का हरजाना देने में जर्मन अपनी पैदावार का अस्सी प्रतिशत अमेरिका एवं इंग्लैण्ड और फ्रांस को दे रहा है। परिणाम यह हो रहा है कि हम भूखे मर रहे हैं और हमारी मुद्रा का मूल्य बहुत ही कम हो गया है।''

पद्मदेव को यह युक्ति और भी प्रबल सिद्ध हुई। वह भी समझता था कि नाजी पार्टी का प्रोग्राम सोशियलिस्ट पार्टी से देश के लिए अधिक हितकर है।

अगले दिन ऐमालीन से भी सभा के विषय में बातचीत हुई। पद्मदेव ने सभा में हर्र हिटलर के व्याख्यान का संक्षिप्त वर्णन किया। इस पर ऐमालीन बोली, ''यह बढ़ई का पुत्र एक पेन्टर का काम करता था। अब नेता बन बैठा है। यह न तो अर्थशास्त्र का ही ज्ञाता है; न ही इतिहास का।

''जिस दिन इसने इंग्लैण्ड और फ्रांस को धन देना बंद किया, दोनों देश हमारे फादरलैण्ड पर आक्रमण कर देंगे और सबकुछ यहाँ का बरबाद हो जायेगा।

''हम कर्ज देने से इन्कार नहीं कर सकते। ऐसा करने के लिए किसी पड़ोसी सुदृढ़ देश के साथ समझौता आवश्यक है। हमारे पड़ोस में रूस ही एक ऐसा देश है, जो हमारी सहायता कर सकता है। उससे सहायता लेने के लिए हमको यहाँ मजदूरों का राज्य स्थापित करना होगा।''

ऐमालीन की यह युक्ति कुछ तो आधार रखती थी। इस पर भी पद्मदेव को उसमें दोष दिखाई दिया और उसने कह दिया, ''मैं समझता हूँ कि रूस की सहायता का यह मूल्य कि यहाँ केवल मजदूरों का अधिनायकवाद स्थापित हो, बहुत अधिक है। इसके स्थान तो इंग्लैण्ड तथा फ्रांस से सीधी बात कर, यह कर्जा देना रोका जा सकता है।''

''यह असम्भव है।''

''इस पर भी इसका यत्न करना हितकर ही होगा।''

इसी कारण तो आप लोग अंग्रेजों की पिछले डेढ़ सौ वर्षों से दासता कर रहे हैं।''

''मैं ऐसा नहीं समझता। हम दास नहीं हैं, इस कारण कि हमारे मन स्वतंत्र हैं। किसी भी दिन, अवसर मिलने पर, हम अंग्रेजों को भगा देंगे।''

''हाँ, आपके स्वतंत्र मन का प्रदर्शन तो गांधी के आन्दोलन से ही पता चल गया है।''

''गांधी जी अपने को असफल नहीं मानते। वे समझ रहे हैं कि हमने नौकरशाही के दुर्ग पर आक्रमण किया था। दुर्ग बहुत सुदृढ़ है, इस कारण उसको भेदने के लिए कई बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आक्रमण करना होगा।" Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर ऐमालीन ने हँसते हुए कहा, "आक्रमण और बिना सेना और अस्त्र-शस्त्र के? हा! हा!!"

पद्मदेव ने पुनः कहा, "महात्मा जी के पास मनोबल है। उस बल की उपस्थिति में सैनिक बल स्वयंमेव उत्पन्न हो जाता है।"

इस कथन पर ऐमालीन विस्मय में मुख देखती रह गई। वह नाजी पार्टी की उन्नति देख कर कुछ ऐसा ही अनुभव करने लगी थी। जर्मनी सेना वोनहिन्डन बर्ग के अधीन थी। वोनहिन्डन बर्ग 'सुप्रीम कमाण्डर' था। वह भी सोशियस्टिों का विरोधी था। उसके प्रयत्न से ही सेना में सोशियलिस्ट नहीं घुस पाये थे। न ही उनका लिटरेचर वहाँ तक पहुँचने पाया था। इसके विपरीत नाजी पार्टी देशभक्ति के आवरण में सेना तक पहुँच रखती थी। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि कैसर का पोता प्रिंस हर्बर्ट नाजी पार्टी का सदस्य हो गया था और अभी भी जर्मनी में कैसर की प्रतिष्ठा बनी हुई थी।

इधर पद्मदेव ने कह तो दिया था कि मानसिक बल हो तो सैन्य बल स्वयंमेव उत्पन्न हो जाता है, परन्तु वह गांधीजी के मानसिक बल को ऐसा नहीं समझता था। गांधीजी के मानसिक बल में दो विशेषताएँ, जिनको वह अवगुण समझता था, विद्यमान थीं। एक तो यह कि इस मानसिक बल के लिये गांधीजी विदेशों से अपने को पृथक् कर रहे थे। उन्होंने अपना दृष्टिकोण तक विदेशों के सम्मुख रखने से इन्कार कर दिया था। भारत की कांग्रेस का, किसी प्रकार का, किसी भी विदेशी से सम्पर्क नहीं था।

दूसरी विशेषता यह थी कि जब भी सैन्यबल का प्रस्ताव गांधीजी को मिला, उन्होंने उसको ठुकरा दिया? इससे वह, अपने मन में विश्लेषण कर रहा था कि जिस मानसिक बल का उसने उल्लेख किया है, वह तो गांधीजी में नहीं है।

वह अपने मन में मनन कर रहा था कि मानसिक बल, क्या सैन्य बल से पृथक् रह कर, कुछ भी मूल्य रखता है? वह अभी मनन ही कर रहा था कि ऐमालीन ने पूछ लिया, "मानसिक बल का सैन्य बल से समझौता हो सकता है। इस अवस्था में सैन्य बल ही प्रबल होगा और अन्त में मानसिक बल को अपना दास बना लेगा।"

"हाँ! यह भी हो सकता है, परन्तु वह मानसिक बल झूठा होगा। देखो! मनुष्य में मन भी है और इन्द्रियाँ भी। मन और इन्द्रियों में एक समझौता अथवा सामंजस्य बना रहता है। मन विचार करता है, इन्द्रियों को कार्य करने का आदेश देता है। कभी इन्द्रियाँ मन के विचार को नहीं मानतीं और अपने विषयों के पीछे भाग खड़ी होती हैं। यदि मन में बल वास्तविक होगा, तो इन्द्रियों को, विषयों से हटाकर, युक्ति-युक्त व्यवहार करने में लगा देगा। जब मन दुर्बल होता है तो वह इन्द्रियों को, अपने विषयों के पीछे भागने से रोक नहीं सकता।

"ऐसी ही बात जातियों की होती है। जातियों में भी मानसिक बल होता है। जाति के विद्वान लोग ही उसका मानसिक बल हैं। विद्वान लोगों का जाति की सैन्य शक्ति से सामंजस्य होना चाहिए। कभी जाति में झूठ अर्थात् धोखेबाज विद्वान् वास्तविक विद्वान माने जाने लगें तो वह जाति सैन्य बल पर अपना अधिकार खो बैठती है। उस अवस्था में पहले विद्वान और फिर पूर्ण जाति सैन्य बल की दास बन जाती है।

"भारत में—वह घटना घट चुकी है। हमारे यहाँ जाति को चार बड़े भागों में विभक्त किया गया था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। ब्राह्मण जाति के मस्तिष्क माने जाते थे। शेष तीनों विभागों को इनके अधीन रहकर कार्य करने को कहा जाता था। ब्राह्मणों की बहुत महिमा थी। वे जाति के बेताज बादशाह होते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ब्राह्मणों में विकार उत्पन्न हुआ। उन्होंने ऐसी प्रथा चला दी कि ब्राह्मण का पुत्र ही ब्राह्मण हो सकता है। दूसरे यह कि वेद पढ़ने का अधिकार केवल ब्राह्मणों को ही है। इसके सुनने का अधिक अन्य वर्गों अर्थात् क्षत्रिय तथा वैश्यों को दे दिया और शूद्रों को वेद वाणी सुनने से भी वंचित कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मणों में विद्वत्ता क्षीण होने लगी। क्षत्रिय वर्ग, जो सेना निर्माण करते थे, प्रबल हो गये। ऐसी अवस्था में प्रबल क्षत्रि ब्राह्मण के कथन के विपरीत आचरण करने लगे। अतः हम पहले राजा-महाराजाओं के दास हुए, पश्चात् क्षत्रिय भी, पूर्ण देश के साथ विदेशियों के अधीन हो गये।

"अतः जब मैं मानसिक बल संचय करने की बात कहता हूँ तो मेरा अभिप्राय देश के विद्वानों के संगठन से है। देश में राष्ट्रपति तो कोई क्षत्रिय ही होना चाहिए, परन्तु विधान सभा केवल विद्वानों की, विद्वानों द्वारा ही निर्वाचित होनी चाहिए। उन विद्वानों को सेना का अर्थात् राष्ट्रपति का पथ-प्रदर्शन करना चाहिए।"

: 5 :

ऐमालीन की परीक्षा समाप्त हुई तो वह अपने जीवन के दो कार्य और भी लग्न से करने में लग गई। एक तो उसके मस्तिष्क में सोशियलिज्म का, जैसा रूस में कार्य कर रहा था, प्रभाव था। वह आने वाले निर्वाचनों में अपने दल का बहुमत चाहती थी। अतः वह इसके लिए संगठन कार्य में दिन-रात संलग्न रहने लगी। दूसरे वह अपने लिए जीवन-साथी अर्थात् अपना पति ढूंढने में लग गई।

पहले ही दिन से, जब उसने पद्मदेव को स्ट्रैसबर्ग एक्सप्रेस से बर्लिन स्टेशन पर उतरते देखा था, वह उसकी ओर आकर्षित हो रही थी। उसके विचारों और सुलझे हुए मस्तिष्क का परिचय पा, तो वह उससे प्रेम करने लगी थी। पीछे जब उसको पता चला कि पद्मदेव की एक पत्नी पहले है और वह उसको छोड़ चुकी है, परन्तु फिर लौट सकती है, तो वह अपने मन के भावों को समझ नहीं सकी थी।

उसके अपने दल में कई युवक थे, जो उससे सम्बन्ध बनाना चाहते थे, परन्तु जब भी वह किसी से विवाह के विषय में बात करती, तो वे हँस देते। प्रगतिशील विचारों के मानने वाले विवाह-प्रथा को भी एक गये-जमाने की बात समझते थे।

एक दिन वह पार्टी के कार्य से बर्लिन के एक 'सबर्ब' में गई तो देर हो जाने के कारण, उस रात वहीं एक युवक मित्र के निवास-स्थान पर ठहर गई। उस युवक ने उसे अपने ही बिस्तर पर सोने का निमंत्रण दे दिया। इस समय उसको पद्मदेव की बात स्मरण हो आई कि मन दुर्बल हो तो इन्द्रियों को अपने विषयों के पीछे भागने से मना नहीं कर सकता।

वह विचार करने लगी थी कि अपने मित्र के निमंत्रण को स्वीकार करने के लिए उसका मन क्या कहता है? मन यही कहता था कि बिना विवाह के सहवास उचित नहीं। इस पर भी उसके शरीर में वासना व्याप्त हो रही थी। वह इस स्थिति पर विचार करने लगी तो उसको समझ आया कि बिस्तर में इकट्ठे सोने के पश्चात् वासना का वेग इतना प्रबल हो जायेगा कि वह मन से विचार की हुई बात की अवहेलना कर बैठेगी। अतः वह 'बाथ-रूम' में गई और उसने भीतर से चिटखनी लगा ली। उसने रात वहाँ ही बिताने का निश्चय कर लिया।

कुछ काल के पश्चात् मित्र ने दरवाजा खटखटाया तो उसने बिना दरवाजा खोले ही कह दिया—"सो जाओ। प्रातःकाल मिलेंगे।"

"परन्तु ऐमालीन! भीतर सर्दी से ठिठुर कर मर जाओगी।"

"चिन्ता न करो। मैं मरती नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"पर तुम बाहर क्यों नहीं आती?"

उसको हँसी सूझी तो उसने कह दिया, "भीतर एक और मित्र मिल गये हैं।"

"उसको भी बाहर आ जाने दो।"

"उसको लज्जा लगती है।"

ऐमालीन का मित्र कुछ न समझ, विवश हो अपने बिस्तर पर लेट तो गया, परन्तु वह क्रोधवश सो न सका। आधी रात को वह उठा और अपने कमरे से निकल, पड़ोस में एक अन्य लेडी फैलो-ट्रैवलर के द्वार पर जा पहुँचा।

अगली प्रातःकाल जब ऐमालीन गुसलखाने से निकली तो यह देख कि उसके मित्र का बिस्तर खाली पड़ा है, वह विचार करने लगी कि वह कहाँ होगा? पश्चात् एकाएक उसने कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द किया और उसके बिस्तर पर जा लेटी और सो गई। रात भर जागने के पश्चात् वह अत्यंत थकी हुई थी। इस कारण खूब सोई। उसकी नींद प्रातः नौ बजे, जब कमरे का दरवाजा किसी ने बाहर से खटखटाया, तो टूटी। उसने उठकर दरवाजा खोला और मुस्कराकर अपने मित्र से पूछने लगी, "कहाँ चले गये थे आप?"

"मैं मिस स्टुअर्ट के पास चला गया था।"

"रात आनन्द में गुजरी?" ऐमालीन ने हँसते हुए पूछा।

"खाक आनन्द में गुजरी। वह पैंतालीस वर्ष की बूढ़ी 'स्पिन्स्टर' (अविवाहित कुमारी) है।"

इस पर तो ऐमालीन खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसके मित्र ने पूछ लिया, "और वह गुसलखाने वाला मित्र किधर है?"

"वह तो बहुत ही प्रातः चला गया।"

"किधर से? मैं तो बाहर से कमरा बन्द कर गया था! कमरा मेरे आने पर भी बन्द था!"

"वह जिधर से आया था, उधर से ही चला गया था।"

इतना कह ऐमालीन हँसती हुई कमरे से निकल गई। मकान के नीचे उतर, उसने पहली बस पकड़ी और अपने होटल में पहुँच, अपने कमरे का द्वार बन्द कर गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगी कि जो कुछ उसने उस रात किया है, वह उचित था अथवा अनुचित?

उसका मन कहता था कि वह 'भली बची है'। इस पर शरीर कहता था कि एक आनन्दमय रात को व्यर्थ गंवा आई है। उसका मन कहता था कि वह मित्र तो सर्वथा पशु था। एक मदीन नहीं मिली तो दूसरी ढूंढने को चल पड़ा था। वह जो मिली, कैसी थी, वह जान नहीं सका। एक कामान्ध सांड की भांति जो मिला, उससे ही वासना-तृप्ति करने लगा।

इससे उसके मन में अपने मित्र के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई। अब उसको पुनः पद्मदेव का कहना स्मरण हो आया। पद्मदेव ने कहा था, "विवाह एक धर्म का सम्बन्ध है। धर्म लोक कल्याण के कार्य को कहते हैं।" यह कथन सर्वथा स्पष्ट नहीं था। अतः वह धैर्य से उस समय की प्रतीक्षा करने लगी, जब वह उससे पुस्तकालय में मिलने के लिये जाया करती थी।

होस्टल के डाइनिंग हॉल में जाकर उसने एक प्याला कॉफी का पिया और अपने कमरे में आ, अपनी सब से बढ़िया पोशाक निकालकर पहनने लगी। आज उसने अपने बालों को ध्यान से संवारा और होठों पर हलकी-सी सुर्खी लगा ली। पश्चात् गालों और गर्दन पर पाउडर का हल्का-सा लेप कर, पद्मदेव से मिलने के लिये चल पड़ी।

वहाँ पहुँचने में अभी समय था। इस कारण वह अगले बस-स्टैण्ड तक पैदल ही चल पड़ी। मार्ग में वह विचार करती जा रही थी कि प्रगतिशील विचार के लोगों का कहना कि यौन क्रिया एक सोडास-लैमोनेड की बोतल पीने से अधिक कुछ भी महत्व नहीं रखती, सत्य है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या? उसकी पिछले पांच वर्ष की शिक्षा और अपने पुराने संस्कारों में संघर्ष चल रहा था। पद्मदेव ने उसके अपने धार्मिक संस्कारों की कि विवाह परमात्मा द्वारा निश्चय होते हैं, पुष्टि की थी।

बस स्टैण्ड पर खड़ी वह यही विचार कर रही थी कि यह मजहब का नशा मात्र है अथवा कोई युक्तियुक्त विधान है।

वह जब पुस्तकालय के द्वार पर पहुँची तो पद्मदेव वहाँ से निकल रहा था। उसने पूछ लिया, ''आप आज समय से पूर्व आ रहे हैं?''

''हाँ, मिस्टर शरोडर का पत्र आया था कि वह मुझको लंच के समय मिलने आयेगा और लंच मेरे साथ लेगा।''

''कुछ काम बताया है?''

''नहीं, कुछ नहीं।''

''तो मैं आपके साथ चल सकती हूँ न?''

''हाँ-हाँ; क्यों नहीं?''

''मैंने समझा कि कोई राजनीतिक कार्य हो तो मैं न चलूँ। आप तो जानते ही हैं कि मैं उसके विरोधी पक्ष में हूँ।''

''मैं आपकी राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। मैं यहाँ जर्मन जाति का अतिथि हूँ। एक अतिथि को अपने मित्र के घरेलू विषयों में कहना या सुनना नहीं चाहिये।''

''परन्तु हम तो इसमें विदेशों से सहायता माँग रहे हैं और हमें मिल भी रही है।''

''यह तो बहुत ही बुरी बात है।''

इस समय दोनों बस स्टैण्ड पर पहुँच चुके थे। बस आई और दोनों सवार होकर होटल पर जा पहुँचे। शरोडर वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। तीनों डाइनिंग हॉल में जा बैठे और लंच के लिये ऑर्डर दे दिया।

खाना खाते हुए शरोडर ने कहा, ''मिस्टर पद्मदेव! मैं आपके पास आज एक विशेष कार्य के लिए आया हूँ।''

''हाँ बताइये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?''

''आप तो जानते हैं कि मैं चुनाव लड़ रहा हूँ। यह चुनाव बहुत ही महंगा सिद्ध हो रहा है। मेरे पास जो रुपया था, सब व्ययकर चुका हूँ। मैंने कुछ पिताजी से भी मंगवाया था, पर वह भी समाप्त होने वाला है। चुनाव में अभी एक सप्ताह शेष है। क्या आप मुझको एक सौ अंग्रेजी पौंड उधार दे सकते हैं?''

पद्मदेव जानता था कि वह इतनी सहायता दे सकता है। इस पर भी वह एक विदेशी राज्य की राजनीति में हस्तक्षेप करना अनुचित मानता था। उसने अपने मन के भाव शरोडर को बताते हुए कहा—''एक मित्र के नाते मैं इतना कुछ दे सकता हूँ, परन्तु यह इसलिए नहीं समझ लेना चाहिये कि मैं आपकी राजनीति का समर्थक हूँ।''

''मित्र! यह तो उधार है। मैं दो मास में वापस कर दूँगा।''

''परन्तु'', ऐमालीन बोल पड़ी—''यदि आपकी पार्टी सफल न हुई तो कहाँ से दीजियेगा?''

''इसमें पार्टी के सफल-असफल होने का सम्बन्ध नहीं है। मैं एक फर्म में नौकर हूँ और शीघ्र ही अपना वेतन पौंडों में लेकर दो मास में ही ऋण उतार दूँगा।''

''परन्तु मिस्टर पद्मदेव!'' ऐमालीन ने पद्मदेव से कहा—''आपका इस प्रयोजन के लिए ऋण देना भी तो उचित नहीं। यदि शरोडर ने न बताया होता तो बात दूसरी थी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु तुम्हारी पार्टी को भी तो रूस से सहायता मिल रही है। साथ ही वहाँ से कार्यकर्त्ता भी आ रहे हैं।" शरोडर ने कह दिया।

"यह सत्य नहीं है।"

पद्मदेव जानता था कि ऐमालीन ने कुछ देर ही पहले स्वीकार किया था कि उसका दल विदेशों से सहायता प्राप्त कर रहा है। इससे वह हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "ऐमालीन! शरोडर सत्य कह रहा है अथवा नहीं, यह तो पीछे देखेंगे। मुख्य बात तो यह है कि तुम सत्य नहीं कह रहीं। कुछ समय पहले तुमने ही मुझको बताया था कि तुम्हारा दल विदेशों से सहायता माँग रहा है और सहायता आ भी रही है।"

इस पर ऐमालीन ने कह दिया, "शरोडर के कहने में सत्य इस कारण नहीं है कि सहायता रूस से नहीं आ रही, प्रत्युत फ्रांस और स्विट्जरलैण्ड से आ रही है।"

"बात एक ही है, परन्तु ऐमालीन! राजनीति और देश-भक्ति से ऊपर मनुष्य की मानवता है। मैं शरोडर को सहायता दे रहा हूँ, एक मित्र के नाते। मेरा इसकी राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं।"

"तो मुझको भी सहायता दे दीजिये।"

"तो तुम भी निर्वाचन में खड़ी हुई हो क्या?"

"नहीं, मैं अपने किसी अन्य काम में सहायता माँग रही हूँ।"

"हाँ, माँगो। यदि सम्भव हुआ तो यथाशक्ति दूँगा।"

"शरोडर के जाने के पश्चात् कहूँगी।"

पद्मदेव ने लंच के पश्चात् अपने कमरे में जा, मेज के दराज में से चैक बुक निकाली और बैंक ऑफ इंग्लैण्ड के नाम सौ पौंड का एक चैक काट दिया।

शरोडर ने चैक लिया, उसी होटल के मैनेजर से वह तुड़वाया और रुपया ले चला गया।

जब शरोडर गया तो पद्मदेव ने प्रश्न-भरी दृष्टि से ऐमालीन की ओर देख, पूछ लिया, "ऐमालीन! मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?"

"यह मैं बताऊंगी। पहले आप यह बताइये कि आपने एक दिन मुझको कहा था कि विवाह धर्म का सम्बन्ध होता है। क्या धर्म यह नहीं कि पुरुष-स्त्री का सम्बन्ध बने?"

"इसको धर्म नहीं कहते। इसको स्वभाव कहते हैं। शरीर का यह एक स्वभाव है कि यौन-सम्बन्ध हो, परन्तु स्वभाव को धर्म के अधीन रखना आवश्यक है। धर्म, जैसा मैंने उस दिन बताया था, व्यक्ति और समाज के कल्याण-कार्य का ही दूसरा नाम है।"

"यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री को यह समझ आये कि एक रात का सम्बन्ध समाज-कल्याण और व्यक्ति के कल्याण में है तो फिर यह धर्म हो गया क्या?"

"हाँ, परन्तु समझने के भी तो कुछ नियम हैं। प्रायः वासना में फँसा हुआ व्यक्ति उल्टा समझने लगता है।

"समझने अर्थात् युक्ति करने के लिए मन विकार रहित होना चाहिये। मन के विकार हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। काम-वासना का दूसरा नाम है। वासना रहित हो सोचो कि एक रात के सहवास से कौन समाज का कल्याण किया जा रहा है। तभी समझ में आएगा कि इस प्रकार के अस्थायी सम्बन्ध से स्थायी सम्बन्ध अधिक लाभकारी है अथवा नहीं।"

ऐमालीन इसको समझती थी। उसको डर था कि यदि वह मित्र के बिस्तर पर सोने का निमंत्रण स्वीकार कर लेती तो सहवास से अपने को रोक न सकती। वासना से बाहर रहने के लिये ही वह रात-भर गुसलखाने में बंद रही थी और यही ठीक समझती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने दूसरा प्रश्न पूछ लिया, 'आप यह बताइये कि यदि किन्हीं कारणों से विवाह की रस्म सम्भव न हो तो यौन-सम्बन्ध नहीं होना चाहिये क्या?''

''मैं विवाह, रस्म को नहीं समझता। विवाह उस वचन का नाम है, जो पुरुष-स्त्री परस्पर देते हैं और जिस वचन से दोनों को विश्वास हो जाता है कि उनका सम्बन्ध स्थायी और जीवन-भर का हो रहा है।''

''यह किस प्रकार हो सकता है? क्या विवाह करने से अधिक विश्वास होता है अथवा परस्पर वचन-मात्र देने से?''

''जो लोग परमात्मा में विश्वास रखते हैं, उनके लिये रस्म, जो एक प्रकार से परमात्मा को साक्षी रखकर की जाती है, अधिक प्रभाव युक्त होती है। दूसरों के लिये उन सम्बन्धियों के सामने वचन अधिक प्रभाव युक्त होते हैं, जिनके लिये उनके मन में अगाध श्रद्धा हो। इन दोनों के अभाव में मैजिस्ट्रेट का भय भी प्रभावशाली होता है। यह मैजिस्ट्रेट का भय है, जो उनको वचन पर दृढ़ रहने में सहायक होता है।''

''मैं आज रात एक भयंकर परिस्थिति में से बचकर आई हूँ।'' इसके पश्चात् ऐमालीन ने रात की घटना सविस्तार वर्णन कर दी।

''अतः मैं पुनः ऐसी स्थिति में पड़ने से बचने के लिये आपसे सहायता ही माँगने आई हूँ।''

''मैं इसमें क्या सहायता दे सकता हूँ? व्याख्या सहित बताओ, तभी मैं बता सकता हूँ कि वह सहायता मेरे बस की है अथवा नहीं।''

''आपके बस में है। जैसे आपने शरोडर के विषय में उदारता दिखाई है, इस विषय में भी आपको कुछ उदार बनना पड़ेगा।''

''हाँ, बताओ।''

''आप मुझको अपनी पत्नी बना लीजिये।''

: 6 :

पद्मदेव इस प्रकार की बात की ही आशा कर रहा था। ऐमालीन उससे एक-दो बार विवाह के विषय में घनिष्ठता के प्रश्न पूछ चुकी थी। इस पर भी वह बात के इस प्रकार उपस्थित होने की आशा नहीं करता था। यह तो उसको गाजर-मूली खरीदने के समान बात समझ में आई थी। गाजर खाने को जी न हुआ तो मूली खरीदने को चल पड़ी। यही प्रतीत हो रहा था। वह विस्मय से ऐमालीन के मुख पर देखने लगा।

ऐमालीन पद्मदेव को चुप देखकर कहने लगी—''मैं आपसे विवाह करना चाहती हूँ। आज रात की भांति पुनः प्रलोभनों में नहीं पड़ना चाहती, इस कारण मैं अपने जीवन में स्थिर होना चाहती हूँ।''

''परनतु,'' अब पद्मदेव ने कहा, ''इतने मात्र से तुम्हारा जीवन स्थिर हो सकेगा क्या? तुम विवाह के विषय में अभी कुछ नहीं जानती। मेरा कहना मानो, अपने को प्रलोभनों से दूर रखने का निश्चय करो। तभी तुम बच सकोगी। भला विवाह कैसे इस प्रकार के प्रलोभनों से बचा सकेगा?''

इसके पश्चात् पद्मदेव ने ऐमालीन को अपने सरस्वती से सम्बन्ध बनाने और छोड़ जाने की कथा सुना दी। पश्चात् उसने बताया, ''सरस्वती ने अपने को प्रलोभनों से बचाकर नहीं रखा। परिणाम यह हुआ कि वह पतित हुई और जब यह रहस्योद्घाटन हुआ तो लज्जा के मारे भाग गई। यदि उस समय भी अपने मन को शुद्ध रख, प्रायश्चित्त करने का यत्न करती तो उसके अनन्तर होने वाले पतन से तो अवश्य ही बच जाती।

''अतः मेरा तो यह मत है कि प्रलोभनों से बचना एक बात है और विवाह दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बात। विवाह करने पर भी प्रलोभनों से सुरक्षित हो जाओगी, सम्भव नहीं। उसके लिए तो पृथक् से प्रयत्न करना होगा।''

''तो इन प्रलोभनों से कैसे बचा जा सकता है?''

''वह दल छोड़ना होगा, जिसमें पति-पत्नी के सम्बन्ध को एक पैग शराब पीने से अधिक महत्व नहीं दिया जाता।''

''निर्वाचनों के पश्चात् मैं पार्टी से पृथक् हो जाऊंगी।''

''तभी तुम किसी के साथ विवाह का प्रस्ताव कर सकती हो।''

''किसी से क्या मतलब?''

''जिसके साथ तुम स्थायी रूप में पत्नी बनकर रहने का निश्चय करोगी।''

''वह तो मैंने कर लिया है। यह एक मनोद्गार मात्र नहीं है, बल्कि कई दिन के विचार करने के पश्चात् किया निर्णय है। मैं इसमें जल्दी तो इस कारण कर रही हूँ, जिससे पुनः मैं ऐसी परिस्थिति में न पड़ सकूं, जैसी रात पड़ गई थी। आपसे विवाह का निर्णय ही मुझको उस परिस्थिति से सुरक्षित रख सका है।''

''देखो ऐमालीन! मैं तुम्हारे इस प्रस्ताव में कोई भूल नहीं समझता। मैं अपने को भाग्यवान मानता हूँ, जो तुम जैसी सुन्दर, सुशिक्षित और बुद्धिमान लड़की मुझसे विवाह के लिए कह रही है। इस पर भी मैं समझता हूँ कि मेरा तुमसे विवाह सम्भव नहीं।

''एक तो मेरी पहली पत्नी है। तुम्हारे देश में दूसरा विवाह करना अपराध है। दूसरे, वह पत्नी वापस आ सकती है, जिससे तुम अपने देश के संस्कारों के कारण उससे ईर्ष्या और द्वेष करने लगोगी। इससे तुमको दुःख होगा। तीसरी बात यह है कि मैं ऐसे मित्र से कोसों दूर रहना चाहूँगा, जो किसी दूसरे की पत्नी का भोग करना एक साधारण बात मानते हों।''

''मैं आज प्रातःकाल से, जब से उस मित्र के घर से आई हूँ, इन सब बातों पर विचार कर रही हूँ। ये तीनों बातें मेरे मन में आई थीं और तीनों का मैंने समाधान किया है। आप कानूनन ढंग से तब तक विवाह नहीं कर सकते, जब तक पहली पत्नी को तलाक न दे दें। मैं यह बात समझ चुकी हूँ कि यह आप नहीं करेंगे। वह इस कारण कि आप किसी भी पतित व्यक्ति को उभारने और उसको भूल से मुक्त कराने में सहायक होना चाहते हैं। आप उसके पुनः लौटने पर और पश्चात्ताप करने पर, उसे वापस भी ले लेंगे। तीसरी बात पर भी मैंने विचार किया है। मैं दल से बाहर हो जाऊंगी। मैं सोशियलिस्ट पार्टी में इसलिए सम्मिलित हुई थी कि इसका आर्थिक कार्यक्रम मुझको पसंद आया था। मैं समझती थी कि सोशियलिस्ट समाज जर्मनी की दशा सुधारने में अधिक योग्य है। मैं उन लोगों से व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध में सहमत नहीं थी। अतः मैंने उनसे पृथक् होने का निश्चय कर लिया है।

''मैं बिना कानून विवाह के आपकी पत्नी बनना चाहती हूँ, मैंने अपने मन को एक अन्य स्त्री से सांझे में पति रखने के लिये तैयार कर लिया है। मैं पार्टी को भी छोड़ दूँगी, परन्तु यह तभी हो सकेगा, जब निर्वाचन हो जायेंगे। इस समय छोड़ना तो दगा करना होगा।''

''मैं समझता हूँ कि विवाह निर्वाचनों के पीछे ही हो। तुम्हारा उन सब लोगों के साथ घूमना, अनेक प्रकार के भय और प्रलोभनों में डालने वाला होगा। साथ ही कानूनी विवाह को तो मैं कुछ अधिक महत्व नहीं देता। उसमें तो विवाह के साथ-ही-साथ तलाक के लिए भी मार्ग खुला है। इसका अर्थ मैं यह समझता हूँ कि विवाह के साथ-साथ उसको तोड़ने का भी विचार उपस्थित है। रस्मी विवाह हो नहीं सकेगा। यह तो भारत में जाकर ही सम्भव है। इन दोनों का भी विकल्प मैंने तुमको बताया है। वह तुम्हारे सम्बन्धियों के सम्मुख वचन देने से हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सकता है। परमात्मा के अस्तित्व में तुमको विश्वास नहीं, अतः उसकी साक्षी तुम मान नहीं सकतीं।

"तुम्हारे सम्बन्धियों के यहाँ आने और उनके सम्मुख बातचीत होने में समय लगेगा। मैं तुमको अपनी पत्नी बनाने के पश्चात् विचार-स्वतंत्रता देना चाहूँगा।

"परन्तु विचार-स्वतंत्रता के साथ ऐसे कार्यों की स्वतंत्रता नहीं दे सकता, जिनके कारण मेरे अधिकारों में कमी हो। अतः तुमको उन लोगों के साथ घूमने की स्वीकृति अपने अधिकारों में कमी तथा उनमें हानि की सम्भावना ही मानता हूँ। यह मैं नहीं होने दूँगा।"

सबसे कठिन समस्या ऐमालीन के लिए अपने सोशियलिस्ट दल को छोड़ने की थी। वह अनिश्चित मन थी। पद्मदेव ने हाथ की घड़ी देखी और कहा, "मेरा जर्मन भाषा के अध्यापक के पास जाने का समय हो गया है।"

"ठीक है।" ऐमालीन ने उठते हुए कहा, "यदि आपकी ये सब बातें हो जायें, तो आप मुझको स्वीकार कर लेंगे?"

"मुझको इसमें बहुत प्रसन्नता होगी।"

"मैं अभी अपने माता-पिता और भाई को टैलिग्राम भेज रही हूँ। आशा है कि वे सब कल प्रातःकाल तक यहाँ एकत्रित हो जायेंगे और बात तय हो जायेगी।"

पद्मदेव उससे दूर हो, अपने मन के भावों का विश्लेषण करना चाहता था। इस कारण उसने कह दिया, "उनको आने तो दो।"

पद्मदेव आज अपने जर्मन के अध्यापक के पास नहीं गया। उसके मन में अनेक प्रकार के विचार उत्पन्न हो रहे थे। ऐमालीन इतनी सुन्दर नहीं थी, जितनी सरस्वती। ऐमालीन से सम्बन्ध बिगड़ा तो वह बदला लेने का यत्न करेगी। सरस्वती की तरह वह चुपचाप घर से न जा सकेगी। सोशियलिस्ट, विशेष रूप से मार्क्सियन विचारधारा को मानने वाले तो कार्य-सिद्धि में प्रत्येक उपाय के प्रयोग करने को उचित मानते हैं। अतः उन विचारों को मानने वाली लड़की तो उससे रूठने पर, उसकी हत्या करने पर भी तैयार हो जायेगी।

इस पर भी वह ऐमालीन को एक अच्छी, समझदार पत्नी बनने के योग्य मानता था। इस पर उसका विचार सरस्वती के लौट आने की सम्भावना पर गया। वह सरस्वती के रसिक मित्रों की संख्या और रुचि का ध्यान कर, उसके लौट आने की सम्भावना की आशा नहीं रखता था।

वह वहाँ से स्टेट गार्डन में एक बैंच पर जाकर बैठ गया और विभिन्न विचारों के ताने-बाने में लीन सायंकाल तक वह वहीं बैठा रहा। जब कुछ सर्दी होने लगी तो समीप के रेस्टोरैण्ट में चला गया। वहाँ एक प्याला कॉफी पी, पैदल ही होटल की ओर चल पड़ा।

रात को भोजनोपरान्त वह ऐमालीन के विषय में विचार करता रहा। प्रातः कुछ देरी से उठा और पुस्तकालय जाने के लिये जल्दी-जल्दी से तैयार होने लगा।

बर्लिन पुस्तकालय में, अपनी पुस्तक में सम्मिलित करने के लिये, अपने विचार से अन्य अनेक प्रमाण उसको मिले थे। साथ ही उसने अपनी पुस्तक के दूसरे भाग के लिये बहुत-सी सामग्री भी एकत्रित कर ली थी। उसका अनुमान था कि वह दो मास में ही दूसरे और तीसरे भाग के लिए पर्याप्त सामग्री प्राप्त कर लेगा। तब वह लंदन को रवाना हो जायेगा। लन्दन में करने को कुछ अधिक काम न था, केवल प्रकाशक ढूंढने की ही बात थी।

इस प्रकार के विचारों में वह स्नानादि से छुट्टी पा पुस्तकालय जा पहुँचा। वहाँ वह जब कार्य में लीन हुआ तो ऐमालीन के विषय को भूल गया। ठीक बारह बजे उसने अपने कागज समेटे, पुस्तकें शैल्फ में रखीं और पुस्तकालय से बाहर निकला। वहाँ जैरियर, कैटेलिना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ऐमालीन और शरोडर को खड़े देख, पिछले दिन की बातें समझ, वह भौचक्का-सा खड़ा हो गया।

अपने को संभालकर वह आगे बढ़ा और जैरियर से हाथ मिलाने लगा। पश्चात् कैटेलिना और शरोडर से मिला। बात जैरियर ने कह दी, "शरोडर अपनी मोटर गाड़ी लेकर आया है। हम अब तुम्हारे होटल में ही चलेंगे।"

पद्मदेव इस बात से यह समझा था कि ऐमालीन अपने माता-पिता को अपनी योजना के अनुकूल कर चुकी है। वह एक भी शब्द बोले बिना, उनके साथ मोटर में बैठ गया। वह शरोडर के साथ बैठा था। ऐमालीन और उसके माता-पिता पीछे की सीट पर बैठे थे।

होटल में जाकर जैरियर ने भोजन कमरे में लगाने के लिये कह दिया।

भोजन आने से पूर्व ही वार्त्तालाप आरम्भ हो गया। जैरियर ने कहा, "मैं तो एक 'रिलिजस' (साम्प्रदायिक) विचारों का आदमी हूँ। हम यहूदी हैं। अपने इस मजहब पर पूरा विश्वास रखते हैं। हम यह समझते हैं कि 'सिनागौग' के बाहर किया विवाह नहीं कहलाता, परन्तु ऐमालीन मजहब-विहीन है। इस कारण जो कुछ यह करना चाहती है, उसको हमने स्वीकार कर लिया है।"

"मिस्टर जैरियर!" पद्मदेव ने कहा, "मैं समझता था कि आप आकर अपनी लड़की को समझाने का प्रयत्न करेंगे और सफल हो सकेंगे। मैं ऐमालीन को पसंद तो करता हूँ, परन्तु मैं ऐसी स्थिति में हूँ कि नियम से विवाह नहीं कर सकता। इस कारण मैं समझता हूँ कि आप इस विषय में इसको समझाने का यत्न करें।"

"इस अवस्था में इसको मेरे भारत में लौट जाने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। वहाँ हमारे देशीय ढंग से विवाह हो सकता है।"

"हमारे लिये उस विवाह में और जो यह करने जा रही है, कोई अन्तर नहीं है। हम तो अपने सिनागाग में तुमको ले चलते और वहाँ यह विवाह हो जाता। हमारे धर्म वाले अन्य धर्म वालों के विवाह को विवाह नहीं मानते। इस प्रकार आपको वहाँ वचन देना पड़ता है कि आप इसके पश्चात् किसी दूसरी स्त्री को पत्नीपद प्रदान नहीं करेंगे। हमको विदित हुआ है कि आप ऐसा वचन नहीं दे सकते। इस कारण हम अपनी लड़की के हठ का विरोध नहीं कर सके।

"यूं तो आप ऐमालीन के लिये योग्य वर हैं।"

पद्मदेव ने कह दिया, "तो ठीक है। मेरे विचार इसने आपको बता दिये हैं। इसको आपके सम्मुख वचन देना होगा।"

इस पर कैटेलिना ने कह दिया, "इसने आपकी तीन शर्तों के विषय में बताया है। पहली और दूसरी हमने मान ली है। आप अपनी पहली पत्नी तो तलाक नहीं देंगे। आप उसके लौट आने पर उसको भी पत्नी बनाकर रखेंगे। जब ऐमालीन ने इन दो बातों को मान लिया है तो हमको भी आपत्ति नहीं हो सकती। यह एक विचित्र बात है, परन्तु हम जानते हैं कि आपके देश में ऐसा होता है।

"रही तीसरी बात। वह तो ऐमालीन आपसे विवश होकर ही स्वीकार कर रही है। वह निर्वाचनों के पश्चात् ही पार्टी छोड़ना चाहती थी।"

"मैं पार्टी से सहमत होने के विषय में कुछ नहीं कह रहा। यह अपने विश्वास जैसे भी चाहे, रख सकती है। मैं तो केवल, उन विश्वासों के कारण, अपने पति के अधिकारों में हस्तक्षेप नहीं चाहता। इसके उन लोगों की संगत में घूमने से मुझको इसी बात संदेह है।"

"यह वचन देती हूँ कि ऐसा नहीं होगा। आपको इसका विश्वास करना ही चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर भी पार्टी के कार्य में दिये जाने वाले समय को सीमित तो करना ही होगा।"

"यह तुम दोनों परस्पर निश्चय कर लेना।"

इस प्रकार बात तय हो गई। जैरियर होटल के मैनेजर के पास गया और सिंगल रूम के स्थान डबल रूम का प्रबन्ध कर आया। पश्चात् पूर्ण परिवार पद्मदेव को साथ लेकर बाजार चला गया। वहाँ पद्मदेव ने ऐमालीन को एक अंगूठी और एक गले का हार खरीद दिया।

जैरियर और कैटेलिना ने अपनी लड़की को इस अवसर पर भूषण भेंट में दिये।

उसी सायंकाल कैटेलिना ने पद्मदेव को बताया, "वास्तव में, मैं भी अब सोशियलिस्ट पार्टी से ऊब गई हूँ। मेरे पति मिस्टर जैरियर नाजी पार्टी का समर्थन कर रहे हैं। वे एक प्रबल वक्ता हैं और संगठन-कार्य में सिद्धहस्त हैं। उस स्ट्रैसबर्ग, जो मजदूरों का नगर है, मैं भी हम सोशियलिस्ट दुर्बल पड़ रहे हैं। मिस्टर जैरियर के वचनों का प्रभाव और जर्मन नागरिकों में अपने फादरलैण्ड के प्रति स्नेह, दोनों मिलकर, हमारे दल का उन्मूलन कर रहे हैं।

"मैंने यह यत्न किया है कि पार्टी के नेताओं को समझाऊं कि उनका अन्तर्राष्ट्रीय नारा यहाँ नहीं चल सकता, परन्तु वे प्रायः विदेशों से प्राप्त धन पर जीवित हैं और इस कारण अपने मेनिफेस्टो में से अन्तर्राष्ट्रीय नारा निकाल नहीं सकते। इसके विपरीत वे अपनी असफलताओं का दोष मुझ पर लगाने लगे हैं।

"इस पर यदि ऐमालीन ने इस अवसर पर पार्टी का काम छोड़ दिया तो हम दोनों को पार्टी का द्रोही मान, हम पर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जायेगी।"

"अर्थात् पार्टी से बाहर कर दिया जायेगा न?"

"इतना होना होता तो हम चिन्ता न करते। होगा यह कि हमको मार डालने का निर्णय हो जायेगा। इस समय शासन इतना दुर्बल हो चुका है कि वह हमारी रक्षा नहीं कर सकेगा।"

"यह तो बहुत ही भयंकर बात है?"

"हाँ! विशेष रूप में जब वे सफल हो गये तो न जाने क्या कर दें। किस-किसको गोली से उड़ा देंगे, कोई नहीं कह सकता।"

"तो आप इसमें सम्मिलित ही क्यों हुई थीं?"

"इस समय फादरलैण्ड की जो दुर्दशा डेमोक्रैट्स ने कर रखी है, उससे मुक्ति पाने का यही मार्ग दिखाई दिया था। वास्तव में अभी भी हमको समझ नहीं आता कि जर्मनी में कोई नेता ऐसा है, जो इसकी डूबती नौका को पार लगा सकेगा।"

"हर्र हिटलर के विषय में आपका क्या विचार है?"

"वह एक अनपढ़ सिपाही मात्र है। उसके दल की सफलता की हमको आशा ही नहीं। सफल होने पर भी वह क्या कर सकेगा, यह कहना बहुत कठिन है।

"हाँ, सेना अध्यक्ष हिंडन बर्ग यदि चाहे तो यहाँ शान्ति स्थापित हो सकती है, परन्तु वह डेमोक्रैट है। वह अपने दल की नीति में संशोधन नहीं कर सकता।"

"यह सब इतना अव्यवस्थित है कि इसमें से कोई मार्ग सूझ नहीं रहा। मैं तो समझता हूँ कि समय रहते आप दोनों, माँ-बेटी को यहाँ से चला ही जाना चाहिये।"

"कहाँ?"

"फ्रांस, इटली इंग्लैण्ड में।"

"आपको विदित है कि ट्राटस्की की हत्या कहाँ जाकर हुई थी?"

"मैक्सिको में।"

"हाँ और मैक्सिको इंग्लैण्ड की तुलना में रूस से अधिक दूर है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव चुप कर रहा। वह मन में कुछ और ही विचार कर रहा था। वह समझता था कि यहूदी परिवार दोनों पक्षों के साथ सम्बन्ध बनाये हुए है। ये अपनी अन्तरात्मा में यह विचार रखते हैं कि कोई भी दल सफल हो, वह इनकी रक्षा कर सकेगा।

पद्मदेव अब अपने विवाहित जीवन में लीन हो गया। ऐमालीन दिन-भर पार्टी के कार्य में संलग्न रहती थी और रात के भोजन के समय होटल में आ जाती थी। तत्पश्चात् कहीं नहीं जाती थी।

पद्मदेव ऐमालीन से किसी प्रकार से भी असन्तुष्ट नहीं था। हाँ, वह उसको सोशियलिस्ट पार्टी की त्रुटियाँ बताता रहता था।

: 7 :

बर्लिन पहुँचकर पद्मदेव ने सुदर्शन को पत्र लिख दिया था कि अपना कार्यक्रम बदल कर, वह इंग्लैण्ड जाने के स्थान यहाँ आ पहुँचा है और लगभग तीन मास तक उसका यहाँ रहने का विचार है।

पद्मदेव का ऐमालीन से विवाह हुए अभी एक सप्ताह ही व्यतीत हुआ था कि उसको प्रो० सुदर्शन और सरस्वती का पत्र मिला। सरस्वती ने अपने पत्र में अपना पूर्व वृत्तान्त लिखकर, अपने व्यवहार के लिये क्षमा-याचना की थी। इस पत्र और सुदर्शन की बात ने उसको गम्भीर विचार में डाल दिया। दोनों पत्र पढ़, वह अपना व्यवहार निश्चय करने में लीन हो गया।

ऐमालीन के विवाह के पश्चात् उसने जर्मन भाषा सीखने के लिये जाना बन्द कर दिया था। वह समझता था कि जितना उसको सीखना चाहिये, उतना वह सीख चुका है। इससे अधिक की आवश्यकता होगी तो ऐमालीन सिखा देगी। यह समय उसने अपनी पुस्तक को पुनः लिखने में लगा दिया। वह अब स्वयं ही पुस्तक को टाइप करने लगा था।

जिस दिन हिन्दुस्तान से पत्र आये, वह अपना पुस्तक का कार्य भी न कर सका। सरस्वती ने लिखा था कि वह उसको यूरोप में आकर मिलने की स्वीकृति चाहती है। सुदर्शन ने लिखा था कि उसको अपनी पत्नी को अब अपने साथ रखना चाहिये।

इस अवस्था में वह इन दोनों पत्नियों को साथ लिये घूमना नहीं चाहता था। इस पर भी वह उसको न आने के लिये लिखे तो किस प्रकार लिखे? अपने नवीन विवाह के विषय में कैसे लिखे? इन सब बातों पर विचार करते हुए वह अपने काम में चित्त न लगा सका।

रात को भोजन के समय ऐमालीन आई। वह आज बहुत प्रसन्न प्रतीत होती थी। अगले दिन निर्वाचन होने थे। उसके दल के लोगों ने पुसिल से सांठ-गांठ कर ली थी। पुलिस ने वचन दिया था कि निर्वाचन में बेईमानी नहीं होने दी जायेगी।

इससे सोशियलिस्ट दल वाले समझ रहे थे कि उनकी सफलता निश्चित है। शरोडर को मिले कई दिन हो चुके थे। वह दिन-रात अपने हल्का में लोगों से मिल रहा था।

जब ऐमालीन वहाँ आई तो पद्मदेव को गम्भीर और विशेष रूप में चुप देख, अपनी विजय की बात बताने के स्थान, चिन्तित हो उसका मुख देखने लगी।

"क्या बात है? ऐसा प्रतीत होता है कि आप रोते रहे हैं?"

"पहले भोजन कर लो। पीछे रोने-धोने की बात पर विचार कर लेंगे।"

"तो कुछ बात है?"

"हाँ, हिन्दुस्तान से पत्र आया है।"

"आपकी पहली पत्नी का न?"

"हाँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो चिन्ता किस बात की है?"

ऐमालीन ने टाइप-राइटर की ओर देखा। वह नित्य के विपरीत आज बंद पड़ा था। इस पर उसने कह दिया, "तो आपने आज पुस्तक का काम भी नहीं किया। क्या उसने भी दूसरा विवाह कर लिया है?"

"कर लेती तो चिन्ता न थी। उसने क्षमा माँगी है। साथ ही यहाँ आने की स्वीकृति चाहती है।"

"तो आप क्या लिखने जा रहे हैं?"

"अभी कुछ निश्चय नहीं किया। तुमसे राय किये बिना, निश्चय हो भी नहीं सकता। चलो, भोजन कर लें।"

जब वे डाइनिंग हॉल में गये तो शरोडर वहाँ पर, अपने कुछ कार्यकर्त्ताओं के साथ, एक मेज पर बैठा भोजन कर रहा था। वह इनको आते देख, उठकर इनका अभिवादन करने लगा। पद्मदेव ने उससे पूछ लिया, "कहो कैसी तैयारी है?"

"मैं तो सफल हो जाऊंगा। पार्टी की बात नहीं कह सकता। बड़े-बड़े वक्तव्य निकल रहे हैं। उनका क्या प्रभाव होगा, कोई कह नहीं सकता।"

"यह कहती हैं," पद्मदेव ने अपनी पत्नी की ओर संकेत कर कहा, "कि नाजी पार्टी चारों खाने चित्त हो जायेगी।"

"वैसे तो हमारे कार्यकर्त्ता भी यही कह रहे हैं। वास्तव में इस समय इनके दल के लोग हमारे दल के लोगों से अधिक हैं, परन्तु अपने फादरलैण्ड की अधिकांश जनता किसी दल के साथ नहीं है। वे ही किसी भी दल का वारा-न्यारा करने वाले हैं। उनके लिए हम भी यत्न कर रहे हैं और ये भी। देखें, ऊंट किस करवट बैठता है!"

जब पद्मदेव और ऐमालीन भोजन करने लगे तो शरोडर अपने साथियों के साथ खाना समाप्त कर, बिल चुका चला गया। उनको जाते देख ऐमालीन ने पहली बार कहा, "हमारे दल वालों ने यह निश्चय कर रखा है कि वे बहुसंख्या में आये तो जर्मनी में न यह 'डैल' रहेगी, न ही डेमोक्रैट अथवा नाजी।"

"इनका क्या होगा?"

"डैल की इमारत को तो हम आग लगाकर फूंक देंगे और विरोधी पक्ष वालों को पकड़कर जेल में डाल देंगे।"

"यह क्यों?"

"हम इस प्रकार की डेमोक्रैसी में विश्वास नहीं रखते, जैसे इंग्लैण्ड, अमेरिका अथवा फ्रांस में चल रही है। हम तो सोशियलिस्ट पैटर्न का राज्य चाहते हैं। उसका नमूना रूस में उपस्थित है।"

पद्मदेव राजनीति पर अपनी पत्नी के साथ वाद-विवाद में पड़ना नहीं चाहता था, इस कारण चुप कर रहा।

भोजन के बाद जब दोनों अपने कमरों में पहुँचे तो पद्मदेव ने हिन्दुस्तान से आये दोनों पत्र उसको दिखाये। साथ ही उसने सुदर्शन का संक्षिप्त परिचय भी दे दिया।

ऐमालीन ने पत्र पढ़े। सरस्वती का पत्र पढ़ने पर, उसकी आँखें भी भीग गईं। पद्मदेव ने पूछा—"क्यों, क्या बात है?"

"बहुत ही 'पैथेटिक' (करुणाजनक) कथा है इसकी। वह वही भूल कर बैठी है, जो मैं करते-करते बची थी। उसने माना है कि उसका शरीर मन से अधिक बलवान सिद्ध हुआ है। मेरे साथ भी यही होने वाला था, परन्तु आपने सचेत कर रखा था। अतः मैं बच गई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु मैंने तो उसको भी कई बार सावधान किया था। वह समझी ही नहीं। साथ ही वह अपनी भूल ही मान जाती तो यह स्थिति उत्पन्न ही नहीं होती।"

"हाँ, आप उसको लेकर यूरोप आते और फिर आपका मुझसे भी सम्बन्ध न हो सकता। इसी को 'फेट' (भाग्य) कहते हैं।

"मैं समझती हूँ कि बिचारी को यहाँ बुला लीजिये। बहुत मजा आयेगा। तब हम दोनों की वार्त्ता का आप विषय बन जायेंगे।"

"परन्तु ऐमालीन! मैं यूरोप में दो पत्नियाँ लेकर घूम नहीं सकता। ऐसा करने से मैं यहाँ एक 'स्कैण्डल' (निन्दा का पात्र) बन जाऊंगा।"

"अच्छा ऐसा करिये। पत्र का उत्तर दो दिन ठहर कर दीजियेगा। कल चार बजे तक निर्वाचन समाप्त होंगे और रात-भर मत-गणना होती रहेगी। परसों हमारी पार्टी का विजय-दिवस होगा। तब मैं और आप अपना कार्यक्रम निश्चित करेंगे। उसमें उसका क्या स्थान होगा, हम निश्चय कर उसको लिख देंगे।"

पद्मदेव को भी कुछ ऐसा ही समझ में आया। उसने दोनों पत्रों को अपनी मेज की दराज में रख दिया। दोनों सोने की तैयारी करने लगे।

इस समय किसी ने दरवाजा खटखटाया। ऐमालीन ने आवाज दे पूछ लिया, "कौन है?"

"होटल का बैरा।"

"क्या काम है?"

"मिसेज से कोई मिलने आया है।"

"कहो, आती हूँ।"

ऐमालीन बाहर गई तो आई नहीं। एक घण्टे की प्रतीक्षा के बाद पद्मदेव बाहर वेटर के पास जाकर पूछने लगा—"मिसेज कहाँ गई हैं?"

"उससे मिलने दो युवक, एक मोटर में, जिस पर सोशियलिस्ट पार्टी का झंडा लगा हुआ था, आये थे। वे उसको लेकर चले गये हैं।"

इससे पद्मदेव को बहुत चिन्ता लग गई। उसने होटल के कार्यालय में पहुँच, सोशियलिस्ट पार्टी के कार्यालय में फोन किया और ऐमालीन के विषय में पूछा। वहाँ से कोई बोला—"कौन पूछ रहा है?"

पद्मदेव ने अपना परिचय देना उचित नहीं समझा। उसने कह दिया, "नाम बताना उचित नहीं समझता। एक कॉमरेड हूँ।"

"वह इस समय पार्टी की मीटिंग में बैठी है। वहाँ मीटिंग हो रही है।"

"मीटिंग कब तक समाप्त होगी?"

"आप कहाँ से आये हैं?"

"लंदन से।" पद्मदेव को यह बताना पड़ा। वह अंग्रेजी में बातें कर रहा था।

उत्तर मिला—"मीटिंग रात-भर चलती रहेगी।"

पद्मदेव को चिन्ता लगी रही। रात समाप्त हुई और सुबह हो गई, परन्तु ऐमालीन अभी भी नहीं आई। पद्मदेव ने पुनः पार्टी कार्यालय में फोन किया। इस बार वह अपनी टूटी-फूटी जर्मन में बात कर रहा था। उसने बता दिया, "मैं ऐमालीन का पति बोल रहा हूँ।"

इस पर उत्तर आया, "ऐमालीन लापता है।"

"परन्तु, रात एक अंग्रेज कॉमरेड के पूछने पर तो बताया गया था कि वह मीटिंग में बैठी है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, उस समय वह मीटिंग में थी। पश्चात् वह उसी कॉमरेड के साथ भाग गई प्रतीत होती है।"

विवश पद्मदेव ने पुलिस में रिपोर्ट कर दी। पुलिस ने रिपोर्ट तो लिख ली, मगर कह दिया, "आज निर्वाचन का दिन है। हमारे पास एक भी कांस्टेबल नहीं, जो हम तहकीकात के लिये भेज सकें।"

पद्मदेव इस दुर्घटना का अर्थ समझने में लगा हुआ था कि मिस्टर जैरियर आ पहुँचा। उसने बताया कि उसकी पत्नी कैटेलिना दो दिन से लापता है। पद्मदेव ने जब ऐमालीन के भी लापता होने की सूचना दी तो उसके मुख से निकल गया—"यह तो सोशियलिस्ट पार्टी की बदमाशी है। उन्होंने ही उनको कहीं बन्दी बनाकर रख छोड़ा है। उनको यह संदेह हो रहा था कि ये माँ और बेटी पार्टी के साथ दगा करेंगी। इस कारण दोनों को निर्वाचन के काल तक के लिये कैद कर लिया गया है।

जैरियर हवाई हजाज से आया था। उसको बताया गया था कि उसकी पत्नी मोटर से बर्लिन की ओर जाती देखी गई है। जैरियर हवाई जहाज से लौट गया। वह भी निर्वाचनों में उम्मीदवार था। इस कारण तुरंत वापस अपने मत-क्षेत्र में जा पहुँचा।

सायंकाल तक बर्लिन में इतना हल्ला-गुल्ला रहा कि पद्मदेव ने होटल से बाहर जाने का विचार ही नहीं किया। सायं चार बजे बैंडों के साथ पार्टियों के जुलूस निकले। इन जुलूसों में कहीं-कहीं झगड़ा भी हुआ, छुरे भी चले, परन्तु पुलिस ने शान्ति स्थापित करने के लिए पूरी कोशिश की।

सायंकाल शरोडर पद्मदेव से मिलने के लिये आया। उसने बताया, "चुनाव तो मैं जीत रहा हूँ, परन्तु इस जीत की कीमत बहुत अधिक देनी पड़ रही है। माँ और बहन दोनों लापता हैं। मेरा विचार है कि पार्टी के कार्यालय में ही बंदी हैं।"

"पिता के निर्वाचन का क्या समाचार मिला है?"

"उनका टेलीफोन आया था कि सोशियलिस्टों ने उनके कैम्प में आग लगा दी है। इस पर भी वे जीतेंगे।"

"पार्टी की क्या स्थिति है?"

"देखें! रात के बारह बजे तक पता चल सकेगा।"

पद्मदेव ऐमालीन के विषय में अंग्रेजी दूतावास में शिकायत नहीं कर सकता था। वह उसकी कानून से पत्नी न थी। साथ ही अविवाहित होने से वह जर्मन नागरिक थी। उसके विषय में अंग्रेजी दूतावास हस्तक्षेप नहीं कर सकता था।

अतः धैर्य से रात-भर वह ऐमालीन की प्रतीक्षा करता रहा। वह नहीं आई। प्रातः के समाचार-पत्रों में निर्वाचन के परिणाम छपे। नाजी पार्टी के एक सौ बीस सदस्य सफल हुए थे। कम्युनिस्ट (अन्तर्राष्ट्रीय सोशियलिस्ट) दल के एक सौ चालीस, स्वतंत्र और डेमोक्रैट नब्बे।

नाजी पार्टी के नेता ने प्रातः के समाचार-पत्रों में घोषणा की थी—"कम्युनिस्ट दल के लोग धोखे से और मारकुटाई तथा आग लगाकर सफल हुए हैं। वे डेल के स्वतंत्र सदस्यों को मार-पीट कर अपने पक्ष में करना चाहते हैं। हम उनको सचेत करते हैं कि वे जर्मनी को रूस की दासता में दे देंगे। इस कारण किसी भी स्वाभिमानी फादरलैण्ड के नागरिक को उन देशद्रोहियों से मिलना नहीं चाहिए।"

जर्मनी के राष्ट्रपति तथा सुप्रीम कमाण्डर ऑफ आर्मी ने यह घोषणा की कि अगले दिन डेल की बैठक होगी, जिसमें डेल के प्रधान का निर्वाचन होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस पर बर्लिन में भारी हलचल मची। बर्लिन के मेयर ने फौज से नगर में शान्ति रखने के लिए सहायता माँग ली। इस पर भी झगड़े हुए। पुलिस ने शान्ति रखने के लिए कई स्थानों पर गोली चलाई।

शरोडर और जैरियर दोनों निर्वाचन में सफल हुए थे। जैरियर मीटिंग में भाग लेने के लिये बर्लिन आया तो उसी होटल में ठहर गया, जहाँ पद्मदेव ठहरा हुआ था। भागदौड़ में इतनी बात पद्मदेव से हुई, कि वह अपने नेता से कैटेलिना और ऐमालीन के विषय में बातचीत करने का विचार रखती है।

पद्मदेव आज भी पुलिस थाने में गया और उसने सोशियलिस्ट कार्यालय में ऐमालीन के बंदी होने का वर्णन किया। पुलिस ने आज भी इस विषय में कुछ कर सकने में असमर्थता बताई। उनका कहना था कि नगर में प्रबन्ध करने एवं शान्ति रखने के लिये पुलिस लगी हुई है।

लोगों के जुलूस निकल रहे थे। वे वस्तुओं के मूल्यों में कमी चाहते थे।

पद्मदेव इस हलचल में न तो पुस्तकालय में जा सका, न ही अपने टाइप के काम में चित्त लगा सका। वह ऐमालीन को ढूंढने के लिये भी कुछ नहीं कर सकता था। यहाँ विदेश में वह किसी प्रकार से भी उसकी रक्षा करने में असफल हो रहा था।

शरोडर रात के एक बजे पार्टी की बैठक से आया। उसने पद्मदेव को बताया, ''हमने स्वतंत्र सदस्यों में से साठ को अपनी ओर कर लिया है। शेष तीस कहते हैं कि वे स्वतंत्र हैं, पर हमको संदेह है कि वे सब कम्युनिस्टों के साथ मिल जायेंगे।

''इस पर भी हम सफल होंगे। 'स्पीकर' हमारे दल का ही होगा।''

अगले दिन डेल में दोनों मुख्य दलों की उपस्थिति शत-प्रतिशत थी, परन्तु स्वतंत्र दल में से केवल दस उपस्थित थे।

कसम लेने के पश्चात् नाजी नेता ने कहा कि स्वतंत्र सदस्यों में से दस के लगभग उपस्थित हैं। हमारी सूचना के अनुसार शेष स्वतंत्र सदस्य अपने-अपने निवास-स्थान से उड़ा लिये गये हैं।

इस पर सोशियलिस्ट पार्टी के नेता ने भी कहा कि ये लोग अवश्य ही लापता कर दिये गये हैं, परन्तु ऐसा करने के लिये नाजी पार्टी उत्तरदायी है।

इस पर राष्ट्रपति ने कहा, ''यह आरोप-प्रत्यारोप पुलिस में और निर्वाचन याचिका द्वारा किया जा सकता है। मैंने सब सदस्यों को उपस्थित होने की सूचना दी थी और अब प्रधान का निर्वाचन होगा।''

निर्वाचन हुआ। दस-के-दस उपस्थित स्वतंत्र सदस्यों ने सोशियलिस्ट दल के प्रत्याशी को मत दिया। नाजी पार्टी का प्रत्याशी हार गया। स्पीकर अर्थात् डेल के प्रधान के चुने जाने की घोषणा हुई और वह प्रधान की कुर्सी पर बैठ गया। प्रधान ने अब घोषणा की कि डेल की बैठक तीन दिन के लिए स्थगित की जाती है।

जैरियर और शरोडर मुख लटकाये हुए होटल में आये तो पद्मदेव को पता चल गया कि उनकी पराजय हुई है। इस पराजय में कारण स्वतंत्र तथा डेमोक्रैटिक सदस्यों को उड़ा ले जाना था। उन्होंने नाजी पार्टी की ओर मत देने का वचन दिया था। बाप-बेटा दोनों पद्मदेव के कमरे में आये तो वहाँ पर बैठ भविष्य के विषय में विचार होने लगा। जैरियर का कहना था—''अब हमारे लिये इस देश में रह सकना असम्भव है। न ही मुझको आशा है कि कैटेलिना और ऐमालीन जीवित छूट सकेंगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस रात बर्लिन में बहुत बड़ी आग लगी। उस आग की लपटें आकाश तक उठती दिखाई दीं। पूर्ण नगर में इस आग की लपटें देखी गईं। पद्मदेव होटल की सबसे ऊपर वाली छत पर चढ़कर देखने लगा कि आग कहाँ लगी है। होटल में बहुत से रहने वाले भी यही देखने के लिये वहाँ एकत्रित थे। जैरियर और शरोडर भी वहीं थे।

जैरियर का निश्चित मत था—''यह आग 'डेल' के भवन को लगाई गई है। इस आग को कम्युनिस्टों ने लगाया हैं वे 'पार्लियामेन्टरी सिस्टम ऑफ गवर्नमेन्ट' को पसंद नहीं करते। अतः कल से 'डिक्टेटरशिप' (तानाशाही) चलेगी।''

अगले दिन समाचार-पत्रों में डेल को आग लगा दिये जाने का समाचार छपा। आग लगने के कारण भिन्न-भिन्न समाचार-पत्रों में भिन्न-भिन्न छपे थे। कम्युनिस्टों के पत्र में लिखा था कि आग नाजी पार्टी वालों ने लगाई है। वे पिछले दिन की, स्पीकर के निर्वाचन में अपनी असफलता पर, झल्ला उठे हैं।

नाजी पत्रों में छपा था—आग सोशियलिस्टों के दल ने लगाई है। वे यह संसदीय ढंग का राज्य पसंद नहीं करते। इन समाचार-पत्रों में यह भी लिखा था कि साठ के लगभग डेल के स्वतंत्र सदस्य, जिन्होंने नाजी पार्टी के साथ मत देने का वचन दिया था, सोशियलिस्ट पार्टी के बंदी हैं।

दोनों प्रकार के समाचार-पत्रों में 'स्पीकर' का वक्तव्य छपा था। उसने कहा था—''बहुमत के विरुद्ध प्रदर्शन करते हुए अल्पमत वाले नाजी दल ने संसद भवन को आग लगा दी है। इस अव्यवस्था को रोकने के लिये मैं संविधान को रद्द करता हूँ और देश का शासन अपने हाथ में लेता हूँ।''

समाचार-पत्र अभी वितरण ही हो रहे थे कि बर्लिन में सेना ने अधिकार कर लिया। जैरियर इत्यादि ने समझा कि 'स्पीकर' ने अपनी सहायता के लिये सेना बुलाई है। ये दोनों और होटल के मैनेजर, जो नाजी पार्टी के सदस्य थे, यह समझने लगे कि वे अन्य नाजी पार्टी के सदस्यों के साथ पकड़ लिये जायेंगे और गोली से उड़ा दिये जायेंगे। अतः वे तीनों वहाँ से भाग जाने की योजना बनाने के लिये कमरे में चले गये।

पद्मदेव ने यही उचित समझा कि वह चुपचाप बैठा रहे और आँधी को सिर के ऊपर से निकल जाने दे। वह अपने कमरे में गया और आराम से बैठ अपनी पुस्तक टाइप करने लगा।

उसको काम करते हुए अभी आधा घंटा भी नहीं हुआ था कि शरोडर वहाँ भागता हुआ आया। उसके हाथ में एक विज्ञप्ति थी। वह पद्मदेव को यह विज्ञप्ति दिखाने लगा।

पद्मदेव ने अपना टाइप का काम, जो वह अपने मन को वर्तमान काल की हलचल से दूर रखने के लिये कर रहा था, बंद कर दिया और विज्ञप्ति पढ़ने लगा। यह विज्ञप्ति सेना के सुप्रीम कमाण्डर वोन हिंडन बर्ग की ओर निकाली गई थी। इसमें लिखा था—

''पिछले दिन संसद के साठ से ऊपर सदस्य संसद की बैठक में सम्मिलित होने से रोके गये। रात संसद भवन को आग लगा दी गई। स्पीकर ने रात यह अनधिकार सूचना निकाली है कि संविधान रद्द किया जाता है। यह निश्चय करना उसका काम नहीं।

''इस सब अव्यवस्था को रोकने के लिये मैंने जर्मन राज्य का प्रबन्ध अपने अधीन कर लिया है। मैंने सेना को आज्ञा दी है कि वह किसी भी व्यक्ति को, जो किसी भी प्रकार से अशान्ति भंग करने का यत्न करे, गोली मार दे।

''पिछले दिन एवं रात की घटनाओं की जांच का परिणाम यह है कि इस पूर्ण अव्यवस्था की उत्तरदायी सोशियलिस्ट पार्टी है। अतः मैं सोशियलिस्ट पार्टी को अवैध घोषित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता हूँ। सेना को आज्ञा देता हूँ कि वे सोशियलिस्टों के सब कार्यालय अपने अधीन कर लें। सब कार्यालयों की तलाशी ले और सब संदेहात्मक व्यक्तियों को पकड़कर विशेष न्यायकर्त्ताओं के सम्मुख उपस्थित करें।

''जर्मनी से बाहर जाने के लिए विशेष आज्ञा-पत्र, जो सेना के कार्यालय से प्राप्त होगा, की आवश्यकता है। बिना आज्ञा-पत्र के किसी को जर्मनी छोड़ने की स्वीकृति न होगी।''

पद्मदेव ने यह पढ़ा तो शरोडर के मुख पर देखने लगा। शरोडर अति प्रसन्न था। उसने धीरे से कान के समीप मुख कर, पद्मदेव को कहा, ''हमारे दल के नेता संसद की बैठक के तुरंत पीछे सुप्रीम कमाण्डर से मिलने के लिये गये थे। हमको यह विश्वास हो रहा है कि नई बात उस भेंट का परिणाम ही है।''

''तो तुम सब जर्मनी नहीं छोड़ रहे?''

''अब तो कोई भी जर्मनी से बाहर जा नहीं सकता। कदाचित् अब जाने की आवश्यकता भी नहीं रहेगी।''

इस समय होटल का मैनेजर आया और शरोडर को बताने लगा—

''पार्टी के कार्यालय से फोन आया है कि दल के संसद-सदस्य तुरन्त पार्टी कार्यालय में एकत्रित हो जायें। वे आते समय अपनी भुजा पर काले रंग का बैज बांधकर आयें। यह बैज उनकी रक्षा करेगा।''

शरोडर ने पद्मदेव से कहा, ''मैं माँ और बहन का पता करने का यत्न करूंगा।'' पश्चात् वह अपने पिता के कमरे में चला गया।

पद्मदेव इतिहास का विद्यार्थी होने से यह समझ गया था कि यहाँ एक रात में क्रान्ति हो गई है। उसको शरोडर का कथन ठीक प्रतीत हुआ था कि पिछले दिन और रात की गड़बड़ कम्युनिस्ट दल की मचाई हुई थी और नाजी नेता हर्र हिटलर ने कम्युनिस्टों की चालों को भांपकर वोनहिन्डन बर्ग को अपनी ओर कर यह प्रतिक्रान्ति सम्पन्न की है।

वह विचार करता था कि अब ऐमालीन उसको मिल जानी चाहिये। ऐसा ही हुआ। दिन के भोजन के समय ऐमालीन और कैटेलिना दोनों होटल में आ पहुँची। वे दोनों कम्युनिस्ट केन्द्रीय कार्यालय में बन्दी थीं। वहाँ से प्रातः चार बजे उनको निकालकर सेना के कार्यालय में ले जाया गया था, जहाँ उनके बयान लिये गये थे। इस सब में ही दिन के बारह बज गये थे।

कैटेलिना का बयान था कि वह श्रीमान जैरियर, जो स्ट्रैसबर्ग से संसद् का सदस्य निर्वाचित हुआ है, की पत्नी है। उस पर कम्युनिस्टों का आरोप यह था कि उसने कम्युनिस्टों को धोखा देकर अपने पति को सफल बनाने में सहायता दी है।

ऐमालीन का बयान था कि उस पर अपने भाई शरोडर की सहायता करने का आरोप है। वह पहले कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्या थी, परन्तु पीछे उसके विचार बदल गये और वह कम्युनिस्ट विचारधारा को गलत समझने लगी थी।

ऐमालीन ने पद्मदेव को बताया—''उस रात जब मैं होटल-वेटर के साथ होटल से बाहर गई तो दो कॉमरेड मोटर लिये खड़े थे। एक उनमें वही था, जो अपने निवास-स्थान पर ले जाकर मुझे, अपने बिस्तर पर सोने का निमंत्रण दे चुका था। मुझको उस पर संदेह हुआ तो उसने कसम खाकर कहा—''ऐमालीन! वैसी कोई बात नहीं। दस मिनट का काम है। पार्टी का सेक्रैटरी तुमसे कुछ पूछना चाहता है। इसके बाद हम तुमको यहीं छोड़ जायेंगे।''

''मैं उसके आश्वासन पर उनके साथ जाने के लिये तैयार हो गई, परन्तु कार्यालय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाकर मुझको एक कमरे में अकेला कर बंद कर दिया गया। तब से ही मैं वहाँ पर बंद रखी गई थी। इन दिनों खाने को टोस्ट और उबले हुए आलू ही मिलते रहे हैं। आज प्रातः चार बजे, जब मुझको कमरे से निकाला गया तो कुछ सैनिकों को वहाँ देख, मुझे समझ आया कि मुझको गोली से उड़ा दिया जायेगा, परन्तु आर्मी हैडक्वार्टर में पहुँचकर नाजी नेता हर्र हिटलर के सामने मेरे बयान हुए, तो मुझको पता चला कि हम बच गये हैं।

"मुझसे कसम ली गई कि मैं अब कम्युनिस्ट नहीं हूँ और छोड़ दिया गया है। जब बाहर निकली तो अपनी माँ को भी वहाँ बन्दी के रूप में आयी देख खड़ी हो गई। उसके भी बयान हुए और वह भी छोड़ दी गई।

"इस प्रकार अब हम वहाँ से चले तो आये हैं, परन्तु यहाँ आकर हमको यह पता चला है कि अब हम जर्मन देश में बंदी हैं। यहाँ से कोई भी व्यक्ति बाहर नहीं जा सकता।"

पद्मदेव ने एक पत्र ऐमालीन की राय से सुदर्शन को लिखा। उसमें उसने केवल यही लिखा—"मेरी पुस्तक लिखने का कार्य समाप्त हो चुका है। मैं इंग्लैण्ड जाने के लिए तैयार बैठा हूँ, परन्तु राजनीतिक हलचल के कारण किसी भी व्यक्ति को देश छोड़ने की स्वीकृति नहीं। मैं यत्न कर रहा हूँ कि मुझको स्वीकृति मिल जाये। लन्दन पहुँचकर लिखूँगा।"

इस पत्र में जान-बूझकर पद्मदेव ने अपने ऐमालीन से विवाह के विषय में नहीं लिखा। इसी कारण सरस्वती के विषय में भी कुछ नहीं लिखा। इस विषय में अभी उसने चुप रहना ही उचित समझा।

बर्लिन में राजनीतिक परिस्थिति द्रुत गति से बदल रही थी। पार्टी की मीटिंग में हर्र हिटलर ने अपने साथियों को बताया कि उसकी पार्टी बहुमत में है। स्वतंत्रत सदस्य अब सब-के-सब, नाजी पार्टी में सम्मिलित हो गये हैं। अतः वह शीघ्र ही जर्मनी का 'चान्सलर' नियुक्त होने वाला है।

इसके लिए फोर्ट में कल से संसद की बैठक होगी और अपने चान्सलर नियुक्त होने के पश्चात् ही वह अपनी नीति की घोषणा करेगा।

अगले दिन संसद की बैठक फोर्ट में हुई। उसमें कम्युनिस्ट सदस्यों में से एक भी उपस्थित नहीं था। वे प्रायः पकड़ लिये गये थे। और जो नहीं पकड़े गये थे, भूम्यान्तर्गत हो गये थे। उनको भी पकड़े जाने का भय था।

हर्र हिटलर सर्वसम्मति से जर्मन 'चान्सलर' निर्वाचित हो गया। इसके पश्चात् उसने अपने देशद्रोहियों को द्रोह करने से रोकने के लिए सेना के सुप्रीम कमाण्ड्र वोनहिन्डन बर्ग को धन्यवाद दिया। उसने उसके कार्य का समर्थन भी किया और कहा कि उसका यह कार्य केवल मात्र फादरलैण्ड से प्रेम के कारण है।

इसके पश्चात् हिटलर ने कम्युनिस्टों के विरुद्ध आरोप लगाये और कहा—"वे अपराधी हैं। उन्होंने देशद्रोह किया है। विदेशियों से सहायता प्राप्त कर, यहाँ के संविधान को रद्द कर, अपनी तानाशाही चलाने का यत्न किया है। अतः संविधान एवं फादरलैण्ड की रक्षा के लिये मैं यह घोषणा करता हूँ कि इंग्लैण्ड और फ्रांस को जो युद्ध प्रतिकार में धन देना है, वह नहीं दिया जायेगा। यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ विशेष रूप में कम्युनिस्ट संस्थाएँ, नहीं चलने दी जाएँगी। हमारे देश का माल तब तक बाहर नहीं भेजा जायेगा, जब तक हमारे देशवासियों की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो जातीं। हम एक सुदृढ़ सेना का निर्माण करेंगे, जिससे अपने फादरलैण्ड एवं उसके हितों की रक्षा कर सकें।

"हमारा धर्म, हमरा ईमान, हमारा स्वार्थ सबकुछ फादरलैण्ड के ही हित में होगा। जो कोई संस्था अथवा जाति फादरलैण्ड के अहित में काम करेगी, वह समाप्त कर दी जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सम्बन्ध में मैं यहूदियों को सचेत कर देना चाहता हूँ। उनका पिछला व्यवहार फादरलैण्ड के साथ द्रोह का रहा है। उन्होंने अपनी सम्मति की रक्षा के लिए कभी देश के लिए हित-अहित का विचार नहीं किया है। उनको अपने पिछले कामों की सफाई देनी होगी। साथ ही भविष्य में ऐसा न करने का आश्वासन भी देना होगा।''

यह घोषणा पूर्ण देश-भर में प्रसन्नता और उत्साहवर्धक सिद्ध हुई। इसका विरोधी तो कोई रहा ही नहीं था। कम्युनिस्टों के बंदी बना लेने से, उनके कार्यालयों पर अधिकार कर लेने से तथा उनके समाचार-पत्रों को ताले लगा देने से उनका पक्ष उपस्थित नहीं हो रहा था।

इस घोषणा में यहूदियों के विपरीत भी विषवमन किया गया था। इसको पढ़कर देश-भर के यहूदियों के हृदय बैठने लगे और जर्मन जाति के हृदय प्रसन्नता से बल्लियों कूदने लगे।

संसद की बैठक से जैरियर और शरोडर उदास मन लौट कर आये और सब पद्मदेव के कमरे में एकत्रित हो, इस घोषणा के एक-एक अक्षर पर विचार करने लगे।

जैरियर ने बताया—''स्ट्रैसबर्ग में हिटलर का एक व्याख्यान हुआ था। उसमें उसने यह कहा था कि तानाशाही का मुकाबला करने के लिए तानाशाही ही स्थापित करनी पड़ेगी। उस समय हमको यह केवल एक स्टंट ही प्रतीत हुआ था। सार्वजनिक सभाओं में इस प्रकार की बातें की जाती हैं। पर आज की घोषणा से यह पता चलता है कि हमारा नेता अपने कथन को सत्य करने जा रहा है।''

''वह कैसे अनुमान लगाया है आपने?'' पद्मदेव का प्रश्न था।

''प्रथम तो यह कि इस घोषणा को कल पार्टी-मीटिंग में स्वीकार नहीं कराया गया। यदि यह वहाँ पर उपस्थित की जाती, तो हम यहूदियों की स्थिति का स्पष्टीकरण करवा लेते।''

''इस पर भी हिटलर कोई ऐसी बात नहीं कर सकेगा, जिससे उसके सदस्य नाराज हो जायें।''

''ठीक है, परन्तु मैं यह समझता हूँ कि अब वह चान्सलर बन गया है। साथ ही उसका गठजोड़ हिण्डन बर्ग से हो गया है। वह हमारी परवाह नहीं करेगा। वह यहूदियों का घोर विरोधी है। हिन्डन् बर्ग कैसर के काल का आदमी है। वह संसद की चिन्ता नहीं करेगा।"

अगले दिन पद्मदेव इंग्लैण्ड जाने के लिए आज्ञा-पत्र लेने सेना के कार्यालय में गया। वहाँ उसको बताया गया कि आज्ञा-पत्र का काम भी चान्सलरी में चला गया है। पद्मदेव पता कर चान्सलर के कार्यालय में पहुँचा। वहाँ उससे प्रार्थना-पत्र ले लिया गया और उसको बताया गया कि स्वीकृति होटल के पते पर भेज दी जाएगी।

पद्मदेव वहाँ से लौटकर होटल में पहुँचा तो उसको पता चला कि ऐमालीन पुनः पकड़ ली गई है। उसके विरुद्ध किसी ने बताया था कि वह कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्या है।

कैटेलिना को भी पकड़ने की आज्ञा जारी हो चुकी थी, परन्तु उसके विषय में यह बताकर बात टाल दी गई कि वह स्ट्रैसबर्ग में थी।

ऐमालीन को छुड़ाने का यत्न करने के लिए शरोडर चान्सलर से मिलने के लिये गया। हर्र हिटलर ने शरोडर को बताया कि जितने भी लोग पकड़े गये हैं, उनकी जांच-पड़ताल करने के लिए एक अधिकारी नियुक्त किया गया है।

शरोडर उस अधिकारी से मिलने गया। जब शरोडर ने उसको बताया कि वह संसद और नाजी पार्टी का सदस्य है तो अधिकारी ने सतर्क हो, ऐमालीन के विरुद्ध रिपोर्ट निकालकर पढ़ी। पढ़कर उसने शरोडर से पूछा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम यहूदी हो?"

"हाँ! मगर वह एक हिन्दुस्तानी की बीवी है।"

इस पर उसने कह दिया, "तुम्हारा कथन असत्य है। एक यहूदी की लड़की किसी गैर-यहूदी से विवाह नहीं करती।"

"यही सत्य है।"

"एक यहूदी के कथन का विश्वास नहीं किया जा सकता।"

"मैं तो नाजी पार्टी का एक प्रमुख सदस्य और संसद का, निर्वाचन में सफल सदस्य हूँ।"

"इस पर भी हमारी यह धारणा है कि यहूदी केवल मात्र धन का मित्र है। इसकी सदस्यता धन कमाने के लिए है।"

इसके पश्चात् उस अधिकारी ने ऐमालीन के विरुद्ध प्रार्थना-पत्र का एक अंश पढ़कर सुना दिया। उसने बताया, "जैरियर परिवार स्ट्रैसबर्ग ट्रेडर्ज की एक विशाल व्यापार संस्था का एजेण्ट हैं। यह संस्था यहूदियों की है, जिसके सब मालिक फ्रांस, इंग्लैण्ड, अमेरिका एवं भारत में रहते हैं। इन सबने युद्ध के दिनों में देश का बहुत-सा धन विदेशों में जमा करा दिया था।

"अब भी जैरियर स्वयं और उसका लड़का शरोडर तो नाजी पार्टी में शामिल हैं और जैरियर की पत्नी तथा उसकी लड़की कम्युनिस्ट पार्टी में है। यह इस कारण कि कोई भी दल सफल हो, ये घाटे में न रहे। ये दोनों हाथों से लड्डू खाना चाहते हैं। ये देशद्रोही हैं।"

इतना पढ़कर अधिकारी शरोडर का मुख देखने लगा। शरोडर ने बता दिया—"यह असत्य भाषण है। मेरी माँ और बहन कम्युनिस्ट विचारधारा की थीं, परन्तु निर्वाचनों से पूर्व ही वे अपनी भूल समझग गई थीं और कम्युनिस्ट दल से त्याग-पत्र दे चुकी थीं। यही कारण है कि उनको कम्युनिस्ट दल के अधिकारियों ने निर्वाचन के पूर्व बंदी बना लिया था।

"जहाँ तक मेरे पिता का सम्बन्ध है, हम स्ट्रैसबर्ग ट्रेडर्ज के मालिकों में से नहीं हैं। हम तो उनके नौकर हैं। इस पर भी कोई ऐसा प्रमाण नहीं कि हमने एक पैसा भी जर्मनी से बाहर भेजा हो। इसके विपरीत हम इंग्लैण्ड, फ्रांस, अमेरिका और भारत से करोड़ों पौंड जर्मनी में लाये हैं। उस संस्था के बैंकों का हिसाब इस बात की साक्षी है।

"हम पूर्ण यहूदी जाति के कामों के उत्तरदायी नहीं। न ही हमने कोई ऐसा कार्य किया है, जो किसी प्रकार से फादरलैण्ड के हितों के विरुद्ध हो।"

"अच्छी बात है। हम इस विषय में जांच कर तुमको बतायेंगे। तुम कहाँ पर ठहरे हो?"

शरोडर ने होटल का नाम बता दिया। इस पर वह मुस्कराकर बोला, "यह तो यहूदियों का होटल है।"

"इस पर भी," शरोडर ने कहा, "इस होटल ने नाजियों की सफलता में मानयुक्त भाग लिया है।"

: 9 :

शरोडर वहाँ से लौटकर आया तो उसने अपनी बात का ब्यौरा पद्मदेव और अपने पिता जैरियर को बता दिया। जैरियर भी चान्सलर से मिल कर आया था। उसने बताया—

"यह भेंट बहुत कठिनाई से हो सकी थी। जब मैंने बताया कि मैंने नाजी पार्टी के फंड में बहुत बड़ा भाग एकत्रित किया है तो मुझको भीतर बुलाया गया।

"मैंने चान्सलर को बताया कि मैं नाजी पार्टी की ओर से संसद का सदस्य हूँ तो उसने कह दिया, "संसद अब नहीं रही। उसका काम था चान्सलर का चुनाव करना। वह चुनाव हो गया। अब संसद स्थगित है और जब तक उसका अधिवेशन नहीं बुलाया जाता, उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सदस्य एक साधारण नागरिक के समान हैं।'
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'मैं नाजी पार्टी का एक प्रमुख कार्यकर्त्ता भी हूँ।'

'तीन-चार दिन में पार्टी की मीटिंग में आ जाना। वहाँ एक प्रस्ताव पर विचार होने वाला है कि सब यहूदियों को पार्टी से निकाल दिया जाये। मैं इसको पसंद नहीं करता, परन्तु यहूदियों के अपने कार्यों के कारण पूर्ण जर्मन जाति उनकी विरोधी हो गई है।'

''इस पर मैंने कहा, 'हम यहूदी होते हुए भी पार्टी के वफादार सदस्य रहे हैं। चान्सलर की रक्षा के अधिकारी हैं।'

''इस पर चान्सलर महोदय बोले, 'पार्टी मीटिंग में आना और अपनी सब सफाई देना। मैं सब वफादार जर्मनों की सुरक्षा का भार अपने पर ले लूँगा।''

पद्मदेव इस घटना को सुन, समझ, इस परिवार के सम्बन्ध में आने से अपने को भी अरक्षित पाता था। इस कारण वह जैरियर का मुख देखने लगा। इस पर जैरियर ने पद्मदेव को सम्बोधन कर कहा, ''आपने मेरी चान्सलर से भेंट और शरोडर की जांच के अधिकरी से भेंट सुनी। अब आप बताइये कि आप क्या करना चाहते हैं?''

''मैं इसमें न अपना कल्याण देखता हूँ, न ही जर्मन देश का। कोई मूर्ख आदमी जर्मनी का चान्सलर बन गया है और वह तानाशाही चलाने का विचार रखता है। मानव-समाज में यह घोर पतन का कारण है।

''मूर्खों के राज्य में रहने वाले सुखी नहीं हो सकते। मैं तो यहाँ से जल्दी-से-जल्दी चला जाना चाहता हूँ। इस पर भी मेरा मन कहता है कि ऐमालीन को लिये बिना मुझको यहाँ से नहीं जाना चाहिये। पर अभी मैं उसको छुड़ाने का कोई साधन नहीं पा रहा।''

जैरियर ने पद्मदेव के कथन से प्रसन्न होकर कहा—''ऐमालीन छूट जायेगी। कैटेलिना भूम्यान्तर्गत हो गई है और ऐमालीन को छुड़ाने का यत्न कर रही है। हम दोनों, बाप-बेटा अभी दस मिनट में यहाँ से चले जायेंगे। मैं आशा करता हूँ कि आज रात हम ऐमालीन को छुड़ाने में सफल हो जायेंगे।

''मेरी राय मानिये तो आप भी निकल सकेंगे। आप अपने साथ एक छोटा-सा अटैची केस ले जा सकेंगे। इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। बताइये चलियेगा?''

''कहाँ चलना होगा?''

''मैं तो यहाँ से हंगरी, वहाँ से रूमानिया और फिर टर्की जाऊंगा। टर्की से इजराईल जाने का विचारं रखता हूँ। मूर्ख ईसाइयों के राज्य की हमने दो सहस्र वर्ष से दासता सहन की है। हमारी जाति ने इस ईसाई राज्य की बहुत बड़ी-बड़ी सेवाएँ की हैं और इनको धन-दौलत से सम्पन्न किया है। इस पर भी ये कृतघ्न लोग हमारा विरोध ही करते रहे हैं। इनके हम पर जुल्म अनेक हैं। अब हमारा एक अपना राज्य बन गया है। हम यहाँ चल कर रहेंगे।''

पद्मदेव विचार कर रहा था कि हिटलर ने अंग्रेजों को अरबों रुपये देने से इन्कार कर दिया है। उनके साथ अपनी तिजारत भी बंद कर दी है। साथ ही अंग्रेजों से अपनी सब 'कालोनी' वापस लेने की घोषणा कर दी है। ऐसी अवस्था में उसके लिये इंग्लैण्ड जाना प्रायः असम्भव हो गया है। सम्भव है कि अंग्रेज और फ्रांस अपना रुपया लेने के लिये जर्मनी से राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ दें तब तो वह यहाँ बंदी बना लिया जायेगा। इस कारण उसने कह दिया, ''मैं ऐमालीन के साथ चलूँगा।''

''तब ठीक है। रात को बारह बजे से एक बजे तक हमारी प्रतीक्षा करना। बहुत शोर नहीं होना चाहिये। मैं आपके कमरे के द्वार पर नाखून से संकेत करूंगा। आप कमरे की रोशनी बुझाकर, अपना अटैची केस हाथ में लिये तैयार रहियेगा। एक-दो क्षण से अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समय नहीं लगना चाहिये।"

पद्मदेव ने उत्तर नहीं दिया। उसको चुप देख जैरियर और शरोडर वहाँ से चले गये। आधा घंटा पीछे पद्मदेव उनको उनके कमरे में देखने गया तो कमरा खाली पड़ा था और वे वहाँ नहीं थे।

पद्मदेव ने अपने को भाग्य पर छोड़ने से पूर्व एक बार अंग्रेज दूतावास में जाकर अपने छुड़ाये जाने का यत्न किया। वहाँ से उसको यह संकेत मिला कि उसको चाहिये कि चुपचाप अपने कमरे में बैठा रहे। यथासम्भव उसको यहाँ से जाने की आज्ञा दिलाने का यत्न किया जायेगा।

पद्मदेव को अंग्रेजी दूतावास की बात कुछ जंची नहीं। इससे वह जैरियर के प्रस्ताव को स्वीकार कर, अपनी बैंक की पास-बुक और अपनी पुस्तक की पांडुलिपि, अपने अटैची केस में बंद कर, अपने कम मैले होने वाले और मजबूत कपड़े पहन, रात को भागने के लिये तैयार हो गया।

रात का खाना खा, वह अपने कमरे का दरवाजा बंद कर और भीतर रोशनी बुझाकर, दरवाजे के समीप कुर्सी पर बैठ गया।

ठीक सवा बारह बजे दरवाजे पर नाखून से संकेत हुआ तो उसने दरवाजा खोल दिया। बाहर जैरियर अकेला था। बरामदे का लैम्प बुझा हुआ था, परन्तु सड़क के प्रकाश में वह जैरियर को पहचान सका था।

दरवाजा खुलते ही जैरियर ने पद्मदेव का अटैची केस पकड़ा और कहा, "बिना बोले पीछे-पीछे चले आओ।"

पद्मदेव उसके पीछे-पीछे होटल से निकल गया। होटल के द्वार पर दरबान खड़ा था। उसने उन दोनों को हाथ उठाकर सलाम किया। पद्मदेव ने सलाम का उत्तर दिया, "जैरियर ने सलाम का जवाब नहीं दिया।

द्वार पर मोटर खड़ी थी। शरोडर मोटर चला रहा था। जैरियर उसके पास जा बैठा। पद्मदेव पीछे की सीट पर बैठ गया। गाड़ी में ऐमालीन तथा कैटेलिना भी बैठी थीं।

ऐमालीन पद्मदेव के साथ थी। उसने पद्मदेव का हाथ पकड़कर दबाया। पद्मदेव समझ गया कि उसके आने का अभिवादन किया गया है।

गाड़ी वेग से पूर्व ही ओर चल पड़ी। आधा घण्टा में वे बर्लिन से बाहर हो गये। पश्चात् गाड़ी साठ मील की रफ्तार से चलने लगी।

अभी दिन निकलने वाला था कि वे जर्मनी के 'बॉर्डर' (सीमा) पर पहुँच गये। यह आस्ट्रिया की सीमा थी। यहाँ चौकी पर उनको कागज दिखाने थे। जैरियर ने ओवरकोट की जेब में से एक लम्बा-सा लिफाफा निकालकर, उसमें से पांच पार-पत्र बारी-बारी से दिखाये।

उनको देख नियमपूर्वक सबके हस्ताक्षर लेकर, उनकी मोटर की तलाशी ली गई। पद्मदेव के अटैची केस में कागजों का पुलिन्दा देख, उसमें की बात न समझ, छोड़ दिया गया। जब वे सीमा पार कर गये तो पहली बार ही जैरियर ने अपने मुख से आवाज निकाली—"प्रभु जहोवा का धन्यवाद है कि हम सब बचकर निकल आये हैं।

"मिस्टर पद्मदेव! ये देख रहे थे कि हम धन छिपाकर तो नहीं ले जा रहे।"

शरोडर ने बताया, "हम आस्ट्रिया में हैं, परन्तु हमारी यात्रा में एक अन्तर पड़ गया है, हम यहाँ से हंगरी तो जायेंगे, परन्तु रूमानिया नहीं जा सकते। हमको सोवियत क्षेत्र में से होकर जाना होगा। पासपोर्ट ऐसा ही बन सका है।"

पद्मदेव को यह परिवर्तन भला प्रतीत नहीं हुआ। इस पर भी अब पीछे लौटने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कोई स्थान था ही नहीं।

एक छोटे-से गांव के होटल में ठहरकर, वे शौचादि से छुट्टी पा, नाश्ता कर कुछ देर आराम करने के लिए लेट गये।

इस समय ऐमालीन ने बताया कि जो व्यवहार उसके साथ कम्युनिस्टों ने किया था, नाजियों ने तो उससे भी बुरा किया है। यदि माँ उसको छुड़ाने में सफल न होती तो जर्मन सिपाही उसको मार डालते। चौबीस घंटों में सात सिपाहियों ने उससे बलात्कार किया है।

पद्मदेव इस व्यवहार की कथा सुनकर क्रोध से भर गया, परन्तु यह विचार कर कि वह इस अत्याचार का कुछ भी प्रतिकार नहीं कर सकता पीतमुख बैठा रहा।

दो घंटे-भर विश्राम कर सब चलने को तैयार हो गये। शरोडर ने मोटर में तेल भरवाया और सब हंगरी की ओर चल पड़े। लंच उन्होंने बुडापेस्ट में लिया। तत्पश्चात् रूस की सीमा की ओर चल पड़े।

जर्मनी से निकलने की तुलना में रूस में प्रवेश अधिक कठिन सिद्ध हुआ। उनको मोटर से उतार दियाग या। मोटर की बहुत अच्छी तरह तलाशी ली गई। यहाँ तक कि मोटर की गद्दियाँ तक उलटा दी गई। पद्मदेव का अटैची केस जब्त कर लिया गया और उससे कहा गया कि यह निरीक्षण के पश्चात् माश्को में उसको मिल जायेगा। उसकी चैक बुक भी रख ली गई।

इस पर भी उनके पास साधन थे, जिससे वे रात को एक होटल में ठहर सके और सुबह मास्को के लिये रवाना हो गये।

मास्को में पद्मदेव और ऐमालीन पति-पत्नी के रूप में रूसी अधिकारियों से मिले। पद्मदेव ने जर्मनी से भागने की कथा बताई तो उन दोनों को जैरियर परिवार से पृथक् कर, एक स्टैट होटल में ठहरा दिया गया।

जैरियर परिवार को पृथक् कर उनको रूस का नागरिक बनने के लिये कह दिया गया। जैरियर परिवार अर्थात् जैरियर, उसकी पत्नी-कैटेलिना और पुत्र शरोडर ने रूस का नागरिक बन रहना स्वीकार कर लिया। पद्मदेव ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वह भारत का रहने वाला है। उसके पास वापस जाने के लिये और वहाँ रहकर अपना तथा अपनी पत्नी का खर्चा चलाने के लिये बहुत धन है। उसकी चैक बुक और उसकी पुस्तक की पांडुलिपि उसको मिल जानी चाहिये।

इस प्रार्थना के उत्तर में उसको कहा गया कि उसके बयान की जांच कर, उसको उसका सामान लौटा दिया जायेगा। इस समय तक उसको राज्य का मेहमान बनकर रहने का आदेश हो गया। पद्मदेव इसका अर्थ समझता था कि तब तक वह रूसी सरकार का बंदी है।

इस समय उसको मास्को विद्यालय के इतिहास के प्रोफेसर मिलने के लिये आने लगे। उनमें से, जो अंग्रेजी बोल और समझ सकते थे, वे उसकी थीसिज के विषय में बातचीत करते थे। उन प्रोफेसरों के कहने पर उसको अपनी पुस्तक की पांडुलिपि वापस मिल गई। उसकी चैक बुक अभी भी जांच का विषय बनी हुई थी, इसलिये वह अभी नहीं मिली।

पुस्तक की पांडुलिपि आने पर प्रोफेसरों के साथ वार्त्तालाप और भी अधिक विस्तार से होने लगा। मास्को यूनिवर्सिटी के प्रोफेसरों में एक निकोविस्की थे। वह खूब अंग्रेजी बोल लेता था और भली-भांति समझ लेता था। इस कारण पद्मदेव को उससे बातचीत करने में विशेष रस आता था।

निकोविस्की का मत था कि वास्तव में इतिहास की आर्थिक विवेचना ही माननीय होनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"क्या मतलब?" पद्मदेव का प्रश्न था।

"मतलब यह कि मानव-समाज में घटने वाली घटनाएँ रोटी, कपड़ा और मकान की माँग की प्रतीक ही हैं।"

इस पर पद्मदेव ने दुनिया के इतिहास में से अनेक महापुरुषों के उदाहरण देकर पूछा कि उनमें भूख तथा नग्नता का क्या अंश था? हजरत ईसा के जीवन-चरित्र के विषय में एक विस्तृत विवाद हुआ। निकोविस्की का कहना था कि हजरत ईसा की कहानी इतिहास नहीं है। यह धर्मान्ध ईसाइयों के लिये हुए उपन्यास मात्र है।

इस पर पद्मदेव ने कार्लमार्क्स की जीवन कथा सुना कर कहा, "यह महापुरुष रोटी-कपड़े के लिये निर्धनता का जीवन नहीं बिता रहा था।"

"वाह! यह क्यों नहीं? उनको अपने मजदूर वर्ग की भूख की चिन्ता लग रही थी।"

"प्रोफेसर साहब! प्रथम तो कार्लमार्क्स स्वयं मजदूर नहीं था। दूसरे वह स्वयं अपनी भूख के लिये चिन्तित नहीं था। जो दूसरों के कष्टों के निवारण के लिये चिन्ता करता है, वह भूख इत्यादि आवश्यकताओं से पीड़ित होकर नहीं करता, प्रत्युत मानव-हृदय के एक गुप्त भाव अथवा दया से प्रेरित होकर ही करता है। दया, न्याय, कर्त्तव्य इत्यादि मानव मन के गुण हैं। इनका भूख-प्यास, यौन-सम्बन्ध से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है।

"देखिये, एक अंग्रेज लड़का कैसावियानका अपना कर्त्तव्य पालन करता हुआ एक जलते हुए जहाज में भस्म हो गया था। इसमें भूख-प्यास की बात कहाँ से आ गई?"

"यह तो आप व्यक्तिगत चरित्र की बात बता रहे हैं। एक व्यक्ति का जीवन समाज की प्रवृत्ति का विकृत रूप होता है। वह सामाजिक जीवन का प्रतिबिम्ब नहीं कहा जा सकता। इतिहास तो सामाजिक उथल-पुथल का नाम है।"

पद्मदेव ने हँसकर बताया, "आप गाड़ी को घोड़े के आगे लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं। समाज व्यक्तियों से ही बनता है। वर्तमान यूरोपीय समाज यूपरोप के अठारहवीं शताब्दी के नास्तिक मीमांसकों की उपज है। वे मीमांसक नास्तिक थे, अतः उनके विचारों पर बनी समाज नास्तिक हो गई।

"नास्तिकों से मेरा अभिप्राय है वे व्यक्ति, जो मनुष्यों को केवल शरीर ही मानें, आत्मा के अस्तित्व को न मानें। ऐसा मानने वाले फिलौसोफर तो शरीर के विषयों को ही मनुष्य-जीवन की परम साधना मानते हैं। यही कारण है कि उनकी शिक्षा से प्रेरित समाज रोटी, कपड़ा और स्त्री वर्ग के लिए लिये प्रत्येक प्रकार के अनाचार करने लगता है। ये समाज में सुख की वृद्धि नहीं, अपितु केवल स्वार्थपूर्ति करना चाहते हैं।

"ये लोग मानव का इतिहास नहीं बनाते। इतिहास बनाते हैं वे, जो मनुष्य को इन वासनाओं से ऊपर उठाकर, सबके लिये कल्याण का मार्ग खोलने का यत्न करते हैं।

"शरीर की इच्छाओं से प्रेरित व्यक्ति केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति का ही यत्न करता रहता है जबकि वे लोग अपनी सुख-सुविधा को छोड़, संसार के सब प्राणियों के सुख के लिये प्रयत्न करते हैं।"

"बात एक ही है। दुष्ट कहिये अथवा मानवता से परिपूर्ण। जनता में अधिकांश लोग अपनी वासनाओं से प्रेरित होकर ही काम करते हैं और वही इतिहास के निर्माता हैं।"

"यह तो इस प्रकार हो गया जैसे एक चोर अथवा डाकू किसी गांव को लूटने के लिए वहाँ जा पहुँचा है। वह मान लूटकर ऐश तथा आराम करना चाहता है। उस चोर-डाकू को गांव के कुछ लोग अपनी जान जोखम में डालकर मार भगाते हैं। उनमें से लड़ने वाले प्रायः निर्धन लोग होते हैं, जिनको इस डाके से हानि नहीं होनी होती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपके विचार से तो इतिहास बनाया है चोर-डाकुओं ने, जो अपनी ही इच्छाओं की पूर्ति के लिये डाका डालने आये थे। वे लोग, आपके विचार से मूर्ख हैं, जो डाकुओं के कार्य में किसी प्रकार की अपनी हानि होती न देखकर भी, उनका विरोध करते हुए मर जाते हैं। वे अपने मन की प्रकृति से दया, न्याय परोपकार तथा अपना कर्त्तव्य-पालन करते हुए अपनी जान व्यर्थ में दे देते हैं। यही है न आपका मतलब?"

"बात तो आपने ठीक कही है, यद्यपि शब्द उचित नहीं हैं।"

"हम ऐसा नहीं मानते। हम समझते हैं कि ये चोर डाकू, तथा इसी प्रकार सामाजिक स्तर पर आक्रमणकारी देश, अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये दूसरे लोगों अथवा देशों पर जबर करने के लिये जाते हैं। यदि उनका मुकाबला न किया जाये तो मनुष्य पशु बन जाये। अतः मानव-समाज का कल्याण करने वाले व्यक्ति, अपनी हानि करके भी, अपने शारीरिक सुखों को तिलांजलि देकर भी, अनेक कष्टों को भोग कर भी, उन चोर-डाकुओं का मुकाबला करते हैं और मानव-समाज को एक पशु-समाज बनने से बचा लेते हैं। ये लोग हैं, जो मानव-इतिहास को मानव-कल्याण के निमित्त बना रहे हैं।"

निकोविस्की निरूत्तर होते हुए भी सन्तोष अनुभव नहीं कर रहा था। वह गम्भीर होकर विचार करने लगा था कि सत्य क्या है? इतिहास का निर्माण महापुरुष कर रहे हैं अथवा मनुष्य की पशु-वृत्तियाँ? उसने अपने मन के असन्तोष को प्रकट करते हुए पूछ लिया, "क्या मनुष्य-समाज उन्नति कर रहा है?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"इस कारण कि मनुष्य का मन और शरीर दुर्बल होते जा रहे हैं। दुर्बल शरीर की इन्द्रियाँ वासनाओं का बोझा संभालने के अयोग्य हो रही हैं। वे अनायास ही उत्तेजित हो जाती हैं। मन, जो कि इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने वाला यंत्र है, इन उत्तेजित इन्द्रियों को नियंत्रण में रखने के अयोग्य होता जाता है।"

"यह दुर्बलता क्यों आ रही है?"

"इस कारण कि हमने जीवन की मिथ्या मीमांसा स्वीकार कर ली है। विश्वविद्यालय का कोई विद्यार्थी यह समझने लगे कि वह किसी काल में अनपढ़ था और अब भी उसको अनपढ़ रहना चाहिए तो क्या होगा? वह यदि पुनः उन अनपढ़ बच्चों की भांति बातें करने लगे, उन जैसी क्रियाओं को करने लगे तो निस्संदेह वह पुनः उन जैसा दुर्बल, अशिक्षित और अनुभवविहीन हो जायेगा।

"इसके विपरीत यदि कोई चौथी-पांचवीं श्रेणी का बालक यह समझे कि वह एक विद्वान की सन्तान है। उसका पित अपनी योग्यता के कारण सबमें मान पाता था, तो कुछ तो वह भी वैसा ही बनने का यत्न करेगा।

"यही बात मानव-समाज की हो गई है।"

निकोविस्की ने समझा कि पद्मदेव को वह अब गलत सिद्धकर सकता है। इस कारण उसने कह दिया, "आप गलत कह रहे हैं। मनुष्य तो उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है।"

"हमने विज्ञान में इतनी उन्नति की है कि इसे देखकर पच्चीस-तीस वर्ष पहले के लोग भी चकित रह गए हैं।"

"यूरोपियन विद्वानों ने उन्नति की तो है, परन्तु यह उन्नति मानव में नहीं हुई, मानव के आवरण में हुई है। एक शरीर से रूग्ण तथा दुर्बल हो रहा मनुष्य बढ़िया वस्त्र पहनने की क्षमता प्राप्त कर ले, तो वह शरीर से पुष्ट हो गया नहीं माना जा सकता। इसी बात को इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रकार भी कहा जा सकता है कि एक स्त्री, जो बूढ़ी होने के कारण शरीर और तेज में क्षीण हो रही है, पाऊडर का आविष्कार कर ले और उससे अपनी दुर्बलता को ढांप ले, तो वह युवा हो गई नहीं समझी जा सकती।

"मनुष्य का मन, शरीर और बुद्धि तो दुर्बल हो रहे हैं, परन्तु उसने ऐसे आविष्कार कर लिए हैं, जो उसकी दुर्बलता को ढांपने के योग्य हो रहे हैं।"

निकोविस्को यद्यपि नहीं जानता था कि किस प्रकार इस युक्ति का उत्तर दे, इस पर भी वह पद्मदेव की युक्ति तथा प्रमाणों से अपने संस्कारों के अधीन सन्तुष्ट नहीं हुआ था।

: 10 :

छः मास होटल में प्रतीक्षा करने के पश्चात् राज्य का एक कर्मचारी पद्मदेव से मिलने के लिए आया। कर्मचारी ने बताया—"हमारी जांच का परिणाम यह है कि जैरियर परिवार जर्मन की नाजी पार्टी का मुख्य कार्यकर्त्ता है। वह वहाँ से रूस में भेदिये का काम करने के लिए आया है, अतः उस परिवार को राजाज्ञा से लेनिनग्रेड के समीप एक कन्सेन्ट्रेशन कैम्प में भेज दिया गया है। आपके विषय में यह तो पता नहीं चला कि आप किसी भी राज्य में रूस-विरोधी कार्य में सम्मिलित रहे हैं, परन्तु आपकी पत्नी जैरियर परिवार की सदस्या है। अतः आपके लिए एक सुझाव है। आप ऐमालीन को छोड़ दें। उसको अपने पिता के पास भेज दिया जायेगा। वहाँ पूर्ण परिवार पर भली-भांति निगरानी रखी जायेगी।

"यदि आप अपनी पत्नी को छोड़ना नहीं चाहते तो आपको रूस का नागरिक बन मास्को में रहना पड़ेगा। जो कार्य सरकार उचित समझेगी, आपको करना होगा।"

"अर्थात् मुझको भी कन्सेन्ट्रेशन कैम्प में रखा जायेगा?"

"हाँ; अन्तर केवल यह होगा कि आपको किसी ऐसे स्थान पर रखा जायेगा, जहाँ आपकी विद्वत्ता का लाभ उठाया जा सके। यहाँ रूस में बिना परिश्रम के किसी को खाने-पीने को नहीं मिलता। अतः काम तो आपको भी मिलेगा।"

ऐमालीन समीप बैठी रूसी अधिकारी की आज्ञा सुन रही थी। वह अपने परिवार की दुर्दशा की बात सुनकर रो पड़ी थी; परन्तु पद्मदेव को भी रूस में बंदी के रूप में रखे जाने की सम्भावना पर वह सतर्क हो बोली—"इस विषय में हमको पृथक् होकर राय करने दीजिये।"

"क्यों?"

"इसलिये कि मैं इनको समझाना चाहती हूँ कि ये मुझको, मेरी किस्तम पर छोड़, अपने देश को लौट जाने का प्रबन्ध कर लें।"

"मैं आपसे हाँ अथवा नहीं में उत्तर लेने से पूर्व पृथक् में राय करने नहीं देना चाहता। इसके लिए हमारे देश के कानून में स्वीकृति नहीं।"

"तो डीयर!" ऐमालीन ने पद्मदेव को सम्बोधन कर कहा, "आप मुझको मेरी किस्मत पर छोड़ दीजिये। आपका मुझसे कुछ अधिक प्रेम भी तो नहीं।"

"देखो ऐमालीन! तुम मेरे मन की अवस्था के विषय में कुछ मत कहो। मैं उसको जानने की योग्यता रखता हूँ। प्रेम-वेम की बात मैं नहीं जानता। मैं एक बात जानता हूँ कि मैंने तुमको अपनी पत्नी के रूप में ग्रहण किया है। पत्नी की रक्षा करना पति का कर्त्तव्य है। सो मैं करूंगा। तुम यह वताओ कि तुम मुझको पति मानती हो अथवा नहीं?"

ऐमालीन पद्मदेव की दृष्टि में दृढ़ता देख, भौंचक्की हो उसका मुख देखती रह गई। पद्मदेव ने उसे चुप देखकर कह दिया—"तो मेरा निर्णय यह है कि मैं अपनी पत्नी को छोड़ नहीं सकता। मैं, जहाँ तक मेरी शक्ति है, उसकी रक्षा करूंगा। मैं रूसी आज्ञा को न्याययुक्त न मानता हुआ भी, इसकी अवहेलना करने की शक्ति नहीं रखता। इस कारण मेरा यह उत्तर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि मैं ऐमालीन के साथ ही रहूँगा।

"मेरी रूस की सरकार के सामने प्रार्थना है कि मुझको अपनी पत्नी के साथ भारत को लौट जाने दिया जाये। यदि यह स्वीकृति किसी कारण से नहीं मिल सकती, तो मुझको पत्नी के साथ रहने की स्वीकृति दी जाये।

"इस दूसरी अवस्था में मुझको हिन्दुस्तान में सम्बन्धियों एवं मित्रों से पत्र-व्यवहार की स्वीकृति दी जाये।"

पद्मदेव के इस निश्चय को सुनकर राज्याधिकारी ने कहा—"तो ठीक है। आप, जैसी स्वीकृति चाहते हैं, उसके लिये प्रार्थना-पत्र लिखकर 'मिनिस्टर फॉर दि इन्टीरियर' के नाम भेज दें। जहाँ तक आपके काम और निवास का सम्बन्ध है, उचित अधिकारी आपसे मिलकर आपको बतायेंगे।"

वह अधिकारी चला गया। ऐमालीन मन में अभी भी इस नई परिस्थिति पर विचार कर रही थी। पद्मदेव ने उससे कहा, "प्रिय ऐमालीन, साहस न छोड़ो। हमको अपने उद्धार के लिए यत्न करना चाहिये। फल हमारे अधीन नहीं, अतः हमको उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये।"

इतना कह वह अपनी मेज पर बैठ, एक प्रार्थना-पत्र ड्राफ्ट करने लगा।

ऐमालीन अपने माता-पिता तथा भाई की बात स्मरण कर रो रही थी। वह वहाँ से उठी और अपने पलंग पर जाकर लेट रही।

पद्मदेव ने इस आशा का एक पत्र लिखा कि वह भारत का नागरिक है। उसने अभी तक रूस से बाहर तथा यहाँ आकर कोई कार्य सेवियत संघ के विरुद्ध नहीं किया। अतः वह चाहता है कि उसको अपनी पत्नी के साथ रूस से जाने की स्वीकृति दी जाये और उसकी चैक बुक, जो रूस की सीमा में प्रवेश करते समय, उससे ले ली गई थी, वापस कर ली जाये।

इस पत्र को लिख, उसने उसे लिफाफे में बन्द किया और होटल के मैनेजर को उचित पते पर भेजने के लिये दे दिया।

इस पत्र का उत्तर आने से पूर्व ही मास्को यूनिवर्सिटी के चान्सलर का एक पत्र उसको मिला। उसमें उसको यूनिवर्सिटी में आकर, उससे मिलने के लिए कहा गया था।

होटल के मैनेजर को इस निमंत्रण का ज्ञान था। अतः जब पद्मदेव ने चान्सलर से मिलने की इच्छा प्रकट की तो उसको वहाँ पहुँचाने का प्रबन्ध कर दिया गया।

इस होटल में उसके लिये हर प्रकार का प्रबन्ध था—खाना-पहनना तथा भ्रमण करना। बाहरी लोगों में वह उनसे ही मिल सकता था, जिन्हें मिलने की स्वीकृति होटल का मैनेजर देता था। इस कारण वह समझ रहा था कि वास्तव में यह होटल एक प्रकार का जेलखाना ही है। वह हर प्रकार से होटल के मैनेजर, जिसे जेल का दारोगा भी कहा जा सकता था, के अधीन था।

यूनिवर्सिटी के चान्सलर मिस्टर निकोलाई स्टोव ने पद्मदेव से अपने निजी कमरे में भेंट की। उसने पद्मदेव से हाथ मिलाते हुए कहा—"मुझको बहुत प्रसन्नता हो रही है कि आपने हमारी यूनिवर्सिटी में काम करना स्वीकार कर लिया है। आपको हम यूरोप के इतिहास का प्रोफेसर नियुक्त करते हैं।"

"परन्तु श्रीमान्! मैं तो रशियन भाषा जानता नहीं। उसमें बोल नहीं सकता। मैं पढ़ा कैसे सकूंगा?"

"पढ़ाने के लिये आपको क्लास रूम में नहीं जाना पड़ेगा। आप तो इतिहास की पुस्तकें लिखेंगे और उसका अनुवाद रशियन में दूसरे लोग करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''मैं यत्न करूंगा कि आपको संतुष्ट कर सकूं।''

''देखिये, मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ। वह यह कि मैं फिनलैंड का रहने वाला हूँ। मेरा विवाह एक रूसी लड़की से हो गया था। मेरी तीन सन्तानें हैं। मैं एक बार यहाँ नौकरी करने लगा तो पीछे जा नहीं सका। मेरी पत्नी को जाने की स्वीकृति नहीं मिली। मैं हैलशिंकी में सीनियर प्रोफेसर नियुक्त होकर जा रहा था कि मुझको बिना पत्नी के जाने का पासपोर्ट मिला। मैंने जब बताया कि मैं मानवता के लिये अधिक उपयोगी काम करने जा रहा हू, तो इन्होंने मेरी पदवी ऊंची कर दी, परन्तु मेरी बीवी को रूस से बाहर नहीं जाने दिया।

''अब इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि आपका कितना मान किया जा रहा है। प्रोफेसर निकोविस्की ने आपकी योग्यता की बहुत प्रशंसा की है।''

पद्मदेव चान्सलर महोदय की बात समझ गया। वह कह रहा था कि पत्नी को छोड़कर जाने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है।

पद्मदेव ने संयत भाषा में चान्सलर का धन्यवाद कर दिया, तो वह उसको लेकर, एक क्वार्टर दिखाने ले गया। तीन कमरे का क्वार्टर था। पद्मदेव के लिये अच्छा था। अतः अगले दिन वह ऐमालीन को लेकर उस क्वार्टर में आ गया। उसी दिन से उसको काम पर भी लगा दिया गया।

यूनिवर्सिटी के चान्सलर से नियुक्ति-पत्र उसको मिल गया। उसको 'प्रोफेसर ऑफ यूरोपियन हिस्ट्री' के रूप में नियुक्त किया गया था। साथ ही उसको लायब्रेरी कार्ड भी मिल गया।

पद्मदेव अपनी इस नई स्थिति के कारण चकाचौंध रह गया। अब एक तरह से निश्चिन्त हो, उसने सुदर्शन को एक पत्र लिखा। इसमें उसने संक्षेप में अपनी स्थिति समझाने का यत्न किया। उसने लिखा—

''मुझको आपका पत्र बर्लिन में मिल गया था, परन्तु एक सोशियलिस्ट परिवार से सम्बन्ध बन जाने के कारण मैं बर्लिन से निकाल दिया गया हूँ और अब रशिया में पहुँच गया हूँ। अभी शीघ्र ही यहाँ से लौट सकने की आशा प्रतीत नहीं होती। मैंने यहाँ पर मास्को यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर का काम स्वीकार कर लिया है।

''सरस्वती को मेरी आय का उचित भाग मिलता रहना चाहिए। लड़के के लिये भी आप प्रबन्ध करते रहिये। शेष हिन्दुस्तान पहुँचकर बताऊंगा।

''भाभी साधना और अन्य मित्रों को मेरी सादर नमस्ते देवें।''

इस पत्र में पद्मदेव ने न तो सरस्वती से अपने सम्बन्ध का उल्लेख किया और न ही यह लिखा कि उसने यहाँ एक विवाह कर लिया है। इस पत्र के साथ पद्मदेव ने बैंक के रुपये और अपनी सम्पत्ति के प्रबन्धकर्त्ता के रूप में सुदर्शन की नियुक्ति का एक सर्टीफिकेट भेज दिया।

वह पत्र भारत नहीं पहुँचा।

: 11 :

सरस्वती जब से पद्मदेव की कोठी में आकर रहने लगी थी, प्रोफेसर सुदर्शन निश्चित नहीं कर सका था कि उसके विषय में क्या करे। उसको पद्मदेव का कथन स्मरण था, कि उसके घर का द्वार सरस्वती के लिये सदा खुला रहेगा। इस कथन के आधार पर उसने सुन्दर को लिख भेजा था कि मालकिन को कोठी में रहने दिया जाये। इसके पश्चात् जब उसको पता चला कि पद्मदेव लंदन नहीं पहुँचा और लापता है तो, एक ओर उसके विषय में खोज के लिये उसने लंदन में 'सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया' को लिखा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दूसरी ओर भारत के विदेश विभाग को लिखा।

दो मास के पश्चात् बर्लिन से पत्र आया कि पद्मदेव वहाँ पर कार्य कर रहा है। सुदर्शन ने सरस्वती को तुरन्त सूचित किया और कहा कि वह उसको लिखे। दोनों ने पत्र लिखे।

इन पत्रों के उत्तर में बर्लिन से कोई पत्र नहीं आया। पद्मदेव का बर्लिन से लिखा पत्र हिन्दुस्तान नहीं पहुँचा, न ही रूस से लिखा कोई पत्र आया। लंदन-स्थित सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया ने जांच कर बर्लिन की सूचना की एक नकल भेज दी। उस सूचना में लिखा था—

"पद्मदेव नाम का एक व्यक्ति, यहाँ स्विस होटल में ठहरा हुआ, बर्लिन पुस्तकालय में काम कर रहा था। कुछ दिनों से उसका सम्पर्क सोशियलिस्टों से हो गया था और उसने एक कम्युनिस्ट लड़की से विवाह कर लिया था। नाजी पार्टी के शक्तिशाली हो जाने पर वह अपने कम्युनिस्ट मित्रों के साथ आस्ट्रिया की सीमा की ओर भाग खड़ा हुआ। सीमा पर चुंगी वाले से झगड़े के कारण गोली चल गई और पद्मदेव तीन अन्य कम्युनिस्टों के साथ मारा गया।

"होटल में उसका एक टाइप-राइटर और बिस्तर था। वह भारत वापस भेजा जा रहा है।"

इस समाचार के पहुँचते ही सुदर्शन ने सरस्वती को तार देकर लाहौर बुला लिया और उसको समाचार सुना दिया।

अब पंडित नीलकंठ, जो सरस्वती का मुख देखने से भी इन्कार कर चुका था, सुदर्शन से मिलने आया और सरस्वती को क्षमा कर पद्मदेव की सम्पत्ति का प्रबन्ध करने लगा।

पंडित नीलकंठ के यत्न से पूर्ण सम्पत्ति पद्मदेव के लड़के सुधीर के नाम कर दी गई। साथ ही सरस्वती के निर्वाह का प्रबन्ध कर दिया गया। उसको तीन सौ रुपये मासिक मिलने लगे।

सम्पत्ति का ट्रस्टी सुदर्शन नियत हो गया। सुदर्शन का कहना था कि सरस्वती ही अपने पुत्र की संरक्षक बना दी जाये, परन्तु नीलकंठ नहीं माना। उसने कहा, "मेरे लड़के महमूद सप्रू ने जो मेरे साथ व्यवहार किया है, वह मेरे लिए एक संकेत है।

महमूद की अंग्रेज बीवी तो भली-भांति हाथ रंगकर, महमूद और मियाँ इफ्तिखार हुसैन, दोनों को लूटकर तथा अपनी माँ हैनिरियाटा का सारा धन ले, इंग्लैण्ड चली गई थी। महमूद की मुसलमान पत्नी उसके साथ थी और अब दो बच्चों की माँ थी।

पंडित नीलकंठ का कहना था—"मैं सुधीर को उस वातावरण से, जो मेरा अपना निर्णय किया है, सर्वथा पृथक् रखना चाहता हूँ।" नीलकंठ ने सरस्वती के इस प्रबन्ध से निराश होने की सम्भावना का विचार कर, सांत्वना के रूप में उसको कह दिया—"सरस्वती! तुम चाहो तो मेरी कोठी में आकर रह सकती हो।"

सरस्वती को जब से पद्मदेव के देहान्त का समाचार मिला था, वह अपने पिछले जीवन पर पश्चात्ताप के आँसू बहा रही थी। वह समझती थी कि उसने स्वयं ही अपने पांव पर कुल्हाड़ी चलाई है। अतः इस दुर्घटना की वह स्वयं उत्तरदायी है। उसको अपने पुत्र की स्वयं संरक्षक न बन सकने का शौक न था। वह इसको उचित ही समझती थी।

इस पर भी सुदर्शन समझता था कि बच्चे को उचित वातावरण में रखने के लिए उसकी माँ का संरक्षण न सही, संगत अवश्य रहनी चाहिए। उसने सरस्वती से कह दिया, "देखो भाभी! पंडित नीलकंठ, तुम्हारे पिता, अपने जीवन-कार्य से निराश हो ऐसा कर रहे हैं, परन्तु मैं समझता हूँ कि बच्चे को तुम्हारे सम्पर्क में रखना, न केवल तुम्हारे कल्याण में होगा, प्रत्युत बच्चे के भी कल्याण का कारण होगा। अतः तुम पंडितजी की कोठी में रहो अथवा हमारे पास रहो, यह तुम्हारी इच्छा है, परन्तु बच्चे की संगत का तुमको और तुम्हारी संगत का बच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को लाभ मिलना चाहिए।''

जब सरस्वती लखनऊ से लाहौर आई थी तो पद्मदेव के परिचित उससे शोक प्रकट करने आये। इनमें रजनी और सदाशिव भी थे।

रजनी को सरस्वती की पूर्ण कथा विदित थी। इस कारण उसने सरस्वती से और भी अधिक हिल-मिलकर बात की। उसने एक दिन कह दिया—''तुम तो मुझको नहीं जानतीं। मेरी पद्मजी से भेंट उस काल में हुई थी, जब तुम उनसे पृथक् रहती थीं।

''पद्मजी वास्तव में हृदय के अति उदार और सहिष्णु थे। तब हम विचार किया करते थे कि कैसे कोई स्त्री उनको छोड़कर जा सकती है, परन्तु.....।''

सरस्वती की मोटी-मोटी आँखों में आँसू भर आये थे। वह चुपचाप आँखें नीचे किये बैठी अपनी निन्दा सुनने के लिए मन को तैयार कर रही थी। रजनी ने एक क्षण ठहरकर पुनः कहा—''परन्तु सरस्वती बहन! तुमको देख तो उनसे सहानुभूति के स्थान, तुमसे सहानुभूति उत्पन्न हो रही है। अब मैं विचार करती हूँ कि वे कैसे आदमी थे, जो तुम जैसी सुन्दर पत्नी को छोड़ सके थे।''

इस पर तो सरस्वती के आँसू उसके गालों पर लुढ़कने लगे। ''सत्य कहती हूँ बहन! यदि उनके स्थान पर मैं होती तो तुम्हारे मकान के बाहर धूनी रमा बैठ जाती। वहाँ अनशन कर देती। वहाँ से उठती ही नहीं, जब तक तुम घर आने को तैयार न हो जातीं।''

सरस्वती रजनी के कथन को अपने सौन्दर्य की प्रशंसा-मात्र समझती थी। यह उसकी रजनी से पहली वार्त्तालाप थी। वह उसको आयी देख पहले तो यही समझी थी कि वह डॉक्टर सदाशिव के बच्चे की आया है। एक बच्चा, एक वर्ष का, उनके साथ था, जिसको वे बाहर मोटर में छोड़ आये थे, परन्तु बच्चे को छोड़, इस कुरूप स्त्री को एक सुन्दर पुरुष के साथ आते देख, वह दोनों के सम्बन्ध के विषय में समझ नहीं सकी थी। जब रजनी उसके पास बैठ, उससे सहानुभूति प्रकट करने लगी, तो उसके कहने का ढंग ऐसा था कि बहुत रोकने पर भी उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

रजनी अपने कथन के इस परिणाम को उचित ही समझती थी। उसने आगे कहा—''वे तो चल बसे, परन्तु तुमको जलती आग में झोंक गये। इस पर भी मैं समझती हूँ कि तुम जैसी समझदार स्त्री को अपने जीवन में, उनको अपने भाग्य का केन्द्र मानकर ही चलना होगा।

''देखो बहन! जीवन का कुछ लक्ष्य बना लो। लक्ष्य ऐसा, जो मानयुक्त और तुमसे हो सकना सम्भव हो। उस लक्ष्य तक पहुँचने का यत्न करो। इससे जीवन सरस हो जायेगा।''

रजनी गई तो अपने पीछे एक आत्मविश्वास की झलक छोड़ गई। पीछे सरस्वती ने साधना से पूछा, ''यह कौन थी?''

साधना ने रजनी का पूर्ण परिचय दिया तो सरस्वती ने कह दिया, ''यह औरत तो अति कुरूप है। डॉक्टर कैसे इससे विवाह कर बैठा है?''

''हाँ, देखने वाले सब विस्मय करते हैं, परन्तु अब तो उनके घर में एक लड़का भी है। देखा है न, वही, जो बाहर मोटर में बैठा था?''

''लड़का तो सुन्दर है।''

''हाँ, पर डॉक्टर तो कहता है कि उसकी पत्नी भी बहुत सुन्दर है।''

सरस्वती यह कथन सुनकर मुस्कराई।

साधना से, कुछ दिन पीछे, रजनी मिली तो सरस्वती के विषय में बात चल पड़ी। रजनी का कथन था—''बिचारी के साथ भारी अन्याय हो गया है। भगवान् ने इतना सुन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कलेवर दिया है, तो उसके अनुरूप सुख नहीं दिया।"

"सुख तो भगवान् ने दिया था। उचित से अधिक ही दिया था। रजनी! तुम नहीं जानतीं कि पद्मजी इसका कितना मान करते थे। प्रत्येक सम्भव सुख-सुविधा इसको उपलब्ध थी, परन्तु इसने उसका दुरुपयोग किया और गंदे नाले का पानी पीने चल पड़ी।"

"नहीं साधना! यह बात नहीं। बिचारी की नौका जीवन के ज्वार में फँसकर उलट गई। यह सहानुभूति की पात्र है, घृणा की नहीं।"

इस प्रकार की बातों से साधना के मन से भी, सरस्वती के प्रति रोष विलीन होने लगा था।

जब तक पद्मदेव की सम्पत्ति का प्रबन्ध हुआ, सरस्वती पुनः अपने और अपने पति के परिचितों से हिल-मिल गई थी। अब उसको अमर-स्मृति का अवशेष समझ, उससे सब सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने लगे थे।

एक दिन सरस्वती ने अपने पिता पंडित नीलकंठ से, जब वह उसको मिलने आये, तो कह दिया—"मैं एक योजना चलाना चाहती हूँ। अपने तीन सौ रुपये मासिक में से डेढ़ सौ रुपये मासिक का एक मकान भाड़े पर लेना चाहती हूँ। वहाँ लड़कियों के लिए एक संगीत विद्यालय खोलने का मेरा विचार है। उस मकान में ही मैं रहूँगी। मेरा विचार है कि संगीत इत्यादि की योग्य-योग्य विद्यार्थिनियों को निःशुल्क शिक्षा दूँ। इससे मेरा जीवन का एक कार्य बन जायेगा।"

"ठीक है। यदि इस कार्य के लिए कुछ सहायता चाहो तो मैं दे सकूंगा। अच्छा देखो, मैं मकान का भाड़ा तुमको दे दिया करूंगा।"

"मैं इसके लिये यत्न कर रही हूँ।"

"इसमें भी मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"

निस्बत रोड पर एक विशाल मकान में सरस्वती संगीत भवन खुल गया। यह भवन रजनी की, सरस्वती को अपने जीवन का कुछ उद्देश्य बनाने के लिये दी सीख की प्रतिक्रिया थी।

इस भवन का बोर्ड लगा तो साथ ही प्रवेश के मुख्य नियम भी लिखकर लगा दिये गये।

उनमें लिखा था—संगीत तथा नृत्य की शिक्षा निःशुल्क मिलेगी। यह विद्यालय केवल लड़कियों के लिये होगा। केवल योग्य लड़कियाँ ही इसमें ली जाएँगी। पुरुषों को, जिनकी आयु सात वर्ष से ऊपर है, इसमें आने की स्वीकृति नहीं है।

सीखने वाली लड़कियाँ तो कई थीं, परन्तु प्रवेश पाने वाली सौ में, एक-दो ही होती थीं।

एक वर्ष के प्रयत्न से केवल दस लड़कियों को प्रवेश मिला और वे सीखकर कलाकार बनने लगीं।

सरस्वती अब श्रृंगार-शून्य सर्वथा श्वेत परिधान में प्रायः घर में ही रहती थी। घर में ही विद्यालय होने के कारण, किसी पुरुष को उसमें प्रवेश नहीं मिलता था। पूर्व-परिचित सुदर्शन भी इसमें नहीं जा सकता था। कभी किसी से मिलना होता, तो सरस्वती स्वयं दिन के समय जाती और मिल आती।

रजनी, साधना, रामप्यारी इत्यादि अवश्य आती रहती थीं। सरस्वती धीरे-धीरे अपने मन का संतुलन पाती जाती और अब भगवत-भजन तथा कीर्तन में अपने को लीन रखती थी।

इस सबमें प्रेरणा रजनी की ही थी। वह स्वयं भी सरस्वती के संगीत विद्यालय की विद्यार्थिनी थी। उसका विचार था कि लग्न ही मानव-जीवन की श्रेष्ठतम विभूति है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लग्न की दिशा स्थायी, स्थिर और सच्ची होनी चाहिए।

सरस्वती अपने जीवन का एक कार्य पा, अपने भाग्य से सन्तोष अनुभव कर रही थी। इस पर भी कभी-कभी उसको अपने किए पर पश्चात्ताप होने लगता था। जब उसको अपना पुराना जीवन स्मरण आता तो वह अपना तानपूरा ले, मन के भावों को अपने संगीत की भाषा में व्यक्त करने लगती।

एक ऐसे ही अवसर पर रजनी उससे मिलने आई तो उसको 'विहाग' राग की स्वर लहरी बहती सुनाई दी। सरस्वती की आवाज भर्राई हुई थी, परन्तु थी स्पष्ट।

रजनी ठिठक कर एक ओर खड़ी हो गई और सुनने लगी। सरस्वती गा रही थी—

'पिया रूठे घर नहीं आये अब मैं किससे करूं रिसाई।
मैं खेलन लगी खिलौने,
कलियों के से रंग-रंगौने।
कुसुम दलों के किये बिछौने,
इन खेलन में सुध बिसराई।
मैं भूली वे भी विलगाये, अब मैं किससे करूं रिसाई।।
मुग्ध हुई अपनी वाणी में,
सूरत अपनी मस्तानी में।
इस अपनी भरी जवानी में,
नहीं असल से लगन लगाई।
चले गये वे मुझे भुलाये, अब मैं किससे करूं रिसाई।।
स्वप्नों के तो मधुर मिलन में
मृगणतृष्णा के सम्मोहन में,
इन्द्रधनुष के लिये गगन में,
मैंने भी खलबली मचाई।
ढूंढन गयी पर वे न पाये, अब मैं किससे करूं रिसाई।।
भटक-भटक मैं भई दीवानी
पथ भूलन में की नादानी,
मस्ती में न किसी की मानी
गतिविधि मेरी किसे न भाई।
कुछ बने न पीछे पछताये अब मैं किससे करूं रिसाई।।

रजनी इस संगीत को सुन इसमें व्यक्त व्यथा को समझ वहीं खड़ी रही। वह इस समय सरस्वती का एकान्त भंग करना नहीं चाहती थी। अतः वह उस कमरे के बाहर, जिसमें सरस्वती बैठी गाना अथवा रोना गा या रो रही थी, भूमि पर ही बैठ गई और दीवार से ढासना लगाकर सुनने लगी। गाना कितनी देर तक चलता रहा और रजनी वहाँ बैठी, उस समय सरस्वती की मन की अवस्था की कल्पना करती हुई अपने आपको भूल गई। उसकी आँखों में आँसू बहने लगे थे।

उसके मन में अनेक विचार उठ रहे थे। सरस्वती कितनी सुन्दर है! इस पर भी उसको यह वियोग सहना पड़ रहा है। यह कितनी बुद्धिमती है, इस पर भी वह भूल कर बैठी है। इसकी तुलना में वह अपनी अवस्था पर विचार करती थी। वह कुरूप है, परन्तु एक सुन्दर, सुशील, शुद्ध, विचारवान् पुरुष की पत्नी है और वह सब कुछ जो एक पत्नी को प्राप्त होना चाहिए, उसको प्राप्त हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह विचार करती थी कि यह क्यों है? क्या यह एक घटना मात्र है? यदि घटना मात्र ही है तो भी बहुत मधुर है। इसके लिए वह जगत-निर्माता की अत्यंत आभारी है।

सरस्वती का गाना बंद हुआ, परन्तु रजनी का इस ओर ध्यान ही न था। वह अपनी कल्पनाओं में खोई हुई अपने को विस्मरण किये, वहाँ बैठी थी और अपने आँसुओं से अपना आँचल भिगो रही थी।

गाने में सरस्वती के मन को शान्ति मिली थी। वह अपने आसन से उठी और कमरे के बाहर आई। वहाँ रजनी को आँखें मूंदे, भूमि पर ढासना लगाये बैठे, अश्रु बहाते देख, विस्मय में खड़ी हो गई।

सरस्वती को समझ आया कि रजनी उसके गाने से, जो उसकी अन्तर्वेदना की हूक-मात्र थी, दुःखी हो आँसू बहा रही है। उसने रजनी को सचेत करने के लिए धीरे से आवाज दी—"रजनी!"

रजनी ने आँखें खोलीं। सरस्वती को सामने खड़ी देख, अपने स्वप्न-लोक से निकल वह उठ खड़ी हुई और अपने आँचल से अपनी आँखें और गाल पोंछने लगी।

दोनों कमरे में चली आईं और चुपचाप चटाई पर, जहाँ सरस्वती का तानपूरा रखा था, बैठ गई। रजनी के आँसू तो बंद हो गये थे, परन्तु उसकी आँखें अभी भी लाल थीं।

एकाएक सरस्वती ने पूछ लिया, "रजनी! रो क्यों रही थी?"

रजनी की आँखें पुनः डबडबा आईं। सरस्वती ने उसको अपने समीप खींच लिया और गले लगा लिया। इस पर रजनी विह्वल हो रोने लगी। वह अपने रूप और सरस्वती के रूप में तथा अपने भाग्य और सरस्वती के भाग्य में अन्तर देख रही थी।

सरस्वती की आँखों से भी आँसू गिरने लगे थे। वह अनुभव कर रही थी कि रजनी के इस ऊबड़-खाबड़ शरीर में अति कोमल आत्मा है जो अगाध प्रेम से परिपूर्ण है।

समाप्त

Central Library
167911
Gurukul Kangri (Deemed to be University), Haridwar
081
167911

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R089.9143 GUR-J आगत संख्या 167911

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKU
Access N
Class No
C
Tag
E.A.R.
Recomm.
Data Ent.
Checked

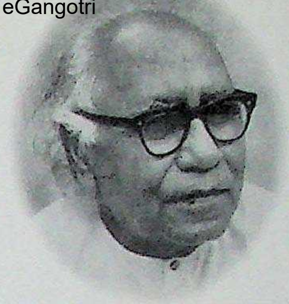

श्री गुरुदत्त

8 दिसम्बर 1894
से
8 अप्रैल 1989
शिक्षा : एम. एस-सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठिभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन ज्वार

जिस प्रकार समुद्र में ज्वार उठता है और कालान्तर में भाटा आता है । इस पर भी यह सागर के वश की बात नहीं है कि वह उठते ज्वार को भाटे में या भाटे को ज्वार में परिवर्तित कर सके।

उसी प्रकार कामनाओं का ज्वार जब जीवों में उठता है तो उसका विरोध भी प्रायः असम्भव हो जाता है। हाँ, मनुष्य में इस ज्वार का विरोध करने की शक्ति है। जिस प्रकार मनुष्य सागर के ज्वार व भाटे को नौका में बैठ कर झेलने में सक्षम है , उसी तरह वह अपने आत्म-बल द्वारा कामनाओं को वश मे करने में भी सक्षम है।

भारतीय शास्त्रो में माना है कि मानव में दस इन्द्रियां और ग्यारहवां मन विद्‌यमान होते है । इन्द्रियां विषयों को ग्रहण करती है। परन्तु मन इन इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखता है।

लेखक श्री गुरुदत्त ही हैं जो ऐसे गूढ़ विषयो को सामाजिक उपन्यास के माध्यम से अत्यन्त ही रोचक शैली में प्रस्तुत करते है। यही कारण रहा कि उपन्यासकार गुरुदत्त के पाठकों की निरन्तर मांग रहती है कि उनके सभी उपन्यास उपलब्ध रहने चाहियें।

निश्चित ही यह कृति अत्यन्त रोचक व प्रेरणाप्रद सिद्ध होगी । जो एक लेखक के अमर होने का प्रमाण है।

ISBN
81-88388-40-8

हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी.चैम्बर्स,
10/54, देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
Email : indiabooks@rediffmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar